खंड

5

वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा-रूप

इकाई 19
वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी की प्रयुक्ति 5

इकाई 20
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली 23

इकाई 21
पर्याय निर्धारण, शब्द निर्माण और प्रयोग 40

इकाई 22
वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन 57

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

प्रो. आर.एन. श्रीवास्तव
भाषाविज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-110 007

प्रो. निर्मला जैन
हिंदी विभाग
साउथ कैम्पस
दिल्ली विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. के.सी. भाटिया (सेवा निवृत्त)
लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय
प्रशासन अकादमी
मसूरी-249 179

प्रो. सूरजभान सिंह
अध्यक्ष,
वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली
आयोग, वैस्ट ब्लॉक-7,
आर.के पुरम, नई दिल्ली - 110 066

प्रो. यू. एन. सिंह
भाषा विज्ञान विभाग
हैदराबाद विश्वविद्यालय
हैदराबाद-500 134

प्रो. वी. रा. जगन्नाथन
इ.गां.रा.मु.वि.
नई दिल्ली

डॉ. मंजु गुप्ता
इ.गां.रा.मु.वि., नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

प्रो. सूरजभान सिंह
अध्यक्ष
वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग
नई दिल्ली-110 066
(इकाई 19-22)

संकाय सदस्य
डॉ. रीतारानी पालीवाल
श्रीमती स्मिता चतुर्वेदी
श्रीमती विमल खांडेकर

खंड संयोजक
डॉ सत्यकाम

पाठ्यक्रम संयोजक

डॉ मंजु गुप्ता
डॉ. सत्यकाम

मुद्रण प्रस्तुति

सुश्री पुष्पा गुप्ता
कॉपी एडिटर
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मई 1997 (पुनर्मुद्रित)

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 1994

ISBN-81-7263-711-X

सर्वाधिकार सुरक्षित । इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है ।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-68 से प्राप्त की जा सकती है ।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अनुमति से पुनः मुद्रित। उ०प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की ओर से डॉ. अरुण कुमार गप्त, कुलसचिव 2019

मुद्रक : चन्द्रकला यूनिवर्सल प्र.लि., 42/7 जवाहर लाल नेहरू रोड इलाहाबाद, 211002

UGHI-08/2
[FIFA-153]

खंड 5 का परिचय

हिंदी ऐच्छिक पाठ्यक्रम-08 "प्रयोजनमूलक हिंदी" का यह पांचवां खंड है। इसका शीर्षक है : "वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा रूप"। इससे पहले आपने "कार्यालय-हिंदी" के स्वरूप की जानकारी प्राप्त की। इस खंड में हम हिंदी के वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा रूप से आपको परिचित करवाने जा रहे हैं। आज का युग विज्ञान और तकनीक का युग है। भारत भी विज्ञान और तकनीक के विकास से जुड़ा हुआ है। यहां भी विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में अंग्रेजी भाषा का ही वर्चस्व है। पर हिंदी भी इस क्षेत्र में तेजी के साथ पदार्पण कर रही है। इस क्रम में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली का निर्माण और निर्धारण किया जा रहा है। वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग के तत्वावधान में यह कार्य तेजी से सम्पन्न किया जा रहा है। विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में हिंदी में भी लेखन किया जा रहा है। हिंदी के माध्यम से विद्यार्थियों को विज्ञान की शिक्षा दी जा रही है। इस क्षेत्र में हमने काफी प्रगति की है पर अभी हमें लम्बा रास्ता तय करना है।

प्रस्तुत खंड में चार इकाइयां हैं। इकाई 19 में वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी की प्रयुक्ति की चर्चा की गई है। इकाई 20 में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली को केंद्र में रखा गया है। इकाई 21 में इस शब्दावली की निर्माण प्रक्रिया को समझाया गया है। अंतिम इकाई 22 में हिंदी माध्यम से किए जा रहे वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन की चर्चा की गई है।

यह खंड हिंदी के वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा रूप की मुकम्मल तस्वीर पेश करती है। आइए, बारी-बारी से इस खंड में शामिल इकाइयों का अध्ययन आरंभ किया जाए।

इकाई 19 वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी की प्रयुक्ति

इकाई की रूपरेखा

19.0 उद्देश्य
19.1 प्रस्तावना
19.2 वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा का स्वरूप
  19.2.1 सामान्य और वैज्ञानिक भाषा-रूपों में अंतर
  19.2.2 विज्ञान विषयों की व्यवहार-क्षेत्रगत अपेक्षाएं
19.3 विषय-विशिष्ट तकनीकी भाषा-रूप
  19.3.1 मूल विज्ञान विषयों की भाषा
  19.3.2 सामाजिक विज्ञान विषयों की भाषा
19.4 वैज्ञानिक भाषा-रूपों में संदर्भगत भेद
  19.4.1 तकनीकी वैज्ञानिक लेखन
  19.4.2 लोकप्रिय वैज्ञानिक लेखन
19.5 वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा-रूपों की विकास-प्रक्रिया
  19.5.1 प्राकृतिक विकास-प्रक्रिया
  19.5.2 नियोजित विकास-प्रक्रिया
19.6 सारांश
19.7 शब्दावली
19.8 उपयोगी पुस्तकें
19.9 अभ्यासों के उत्तर

19.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा का स्वरूप समझ सकेंगे।
- विज्ञान, सामाजिक विज्ञान तथा साहित्य के भाषा-रूपों में अंतर कर सकेंगे।
- तकनीकी भाषा की विभिन्न व्यवहार-क्षेत्रगत शैलियों में भेद कर सकेंगे।
- वैज्ञानिक और तकनीकी भाषारूपों की विकास-प्रक्रिया को समझ सकेंगे।

19.1 प्रस्तावना

आपने पिछली इकाइयों में देखा कि हर विषय या व्यवहार-क्षेत्र में एक खास तरह के भाषा-रूप का प्रयोग होता है जो उस विषय या व्यवहार-क्षेत्र की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार विकसित होता है। इस भाषा रूप को तकनीकी भाषा या प्रयुक्ति कहते हैं, जैसे कार्यालय की भाषा, बैंकिंग की भाषा, पत्रकारिता की भाषा, विज्ञान की भाषा, आदि। कार्यालयी भाषा के संबंध में आप पिछली इकाइयों में पढ़ चुके हैं। इस इकाई में हम आपको विज्ञान की भाषा के संबंध में बताएंगे।

इस इकाई में हम देखेंगे कि वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा के ऐसे कौन-से लक्षण हैं जो इसे सामान्य भाषा, साहित्यिक भाषा तथा सामाजिक विज्ञान विषयों की भाषा से अलग करते हैं। विज्ञान विषयों की तकनीकी भाषा-शैली के विविध रूपों के नमूनों के साथ-साथ हम आपको अन्य विषयों या व्यवहार-क्षेत्रों के तकनीकी भाषा-रूपों के नमूने भी देंगे। हम इस इकाई में यह भी देखेंगे कि वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा के विकास की सामान्य प्रक्रिया क्या है और भारत में इसकी विकास प्रक्रिया क्या रही।

19.2 वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा का स्वरूप

जब हम 'वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा' की बात करते हैं तो हमारे मन में सहज यह प्रश्न उठता है कि क्या 'वैज्ञानिक' भाषा-रूप और 'तकनीकी' भाषा-रूप एक ही हैं या ये दो अलग भाषा रूप हैं। क्या कोई ऐसी भी वैज्ञानिक भाषा हो सकती है जो तकनीकी भाषा न कही जा सकती हो; या इसके विपरीत, क्या तकनीकी भाषा वैज्ञानिक भाषा नहीं हो सकती ?

सामान्यत: विज्ञान विषयों में प्रयुक्त होने वाले भाषा-रूप को हम वैज्ञानिक भाषा कहते हैं। इसे हम विज्ञान की भाषा भी कह सकते हैं। विज्ञान की भाषा में आपको ऐसे शब्द, वाक्यांश या वाक्य-रूप मिलेंगे जिनका अर्थ संबद्ध विज्ञान विषय के संदर्भ में विशिष्ट होता है जिसे उस विषय का जानकार या विशेषज्ञ ही समझ सकता है। तकनीकी भाषा के भी ये ही लक्षण होते हैं लेकिन तकनीकी भाषा का संबंध विज्ञान के अलावा अन्य विषयों या व्यवहार-क्षेत्रों से भी हो सकता है। शेयर बाजार, पत्रकारिता, कार्यालय तथा बैंकिंग आदि व्यवहार-क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा-रूप तकनीकी हैं। इसी प्रकार सामाजिक विज्ञान विषयों की भाषा भी तकनीकी हो सकती है। लेकिन इन्हें वैज्ञानिक या विज्ञान की भाषा नहीं कह सकते। दूसरे शब्दों में, हर विज्ञान की भाषा तकनीकी भाषा हो सकती है लेकिन हर तकनीकी भाषा अनिवार्यत: विज्ञान की भाषा नहीं हो सकती।

विज्ञान की भाषा के अंतर्गत हम किन-किन विषयों की भाषा को लेते हैं? सीमित अर्थ में देखें तो इसके अंतर्गत मूल विज्ञान विषयों तथा उनके अनुप्रयुक्त विज्ञान विषयों को हम शामिल कर सकते हैं। इन विषयों का एक मोटा-सा वर्गीकरण हम आपको नीचे दे रहे हैं जिससे विज्ञान की भाषा की व्याप्ति या विस्तार का आप अनुमान लगा सकें :

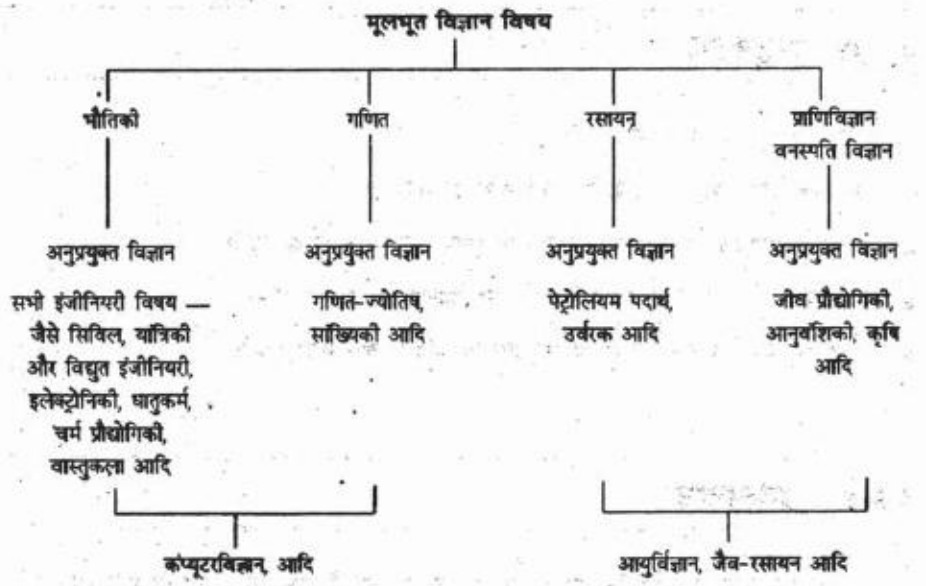

विज्ञान विषयों के संबंध में एक बात ध्यान रखने योग्य है। वह यह कि कोई भी विज्ञान विषय अपने अध्ययन-क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता। हर विज्ञान-शाखा दूसरी शाखा के क्षेत्र पर अतिक्रमण करती है और दो या तीन शाखाएं मिलकर एक पृथक ज्ञान शाखा को भी जन्म देती है, जैसे जैव रसायन (बायो केमिस्ट्री), कंप्यूटर विज्ञान, आयुर्विज्ञान आदि। यहाँ तक कि सामाजिक विज्ञान विषयों और विज्ञान विषयों में भी कई जगह यह सम्मिश्रण दिखाई देता है, क्योंकि सामाजिक विज्ञानों के कई विषय वैज्ञानिकता की ओर अग्रसर हो रहे हैं और अनेक वैज्ञानिक शब्दों को ग्रहण कर रहे हैं, जैसे गणितीय भाषाविज्ञान, प्रबंधविज्ञान, कंप्यूटेशन भाषाविज्ञान, मनोभाषा विज्ञान आदि विषय-क्षेत्रों में।

यहाँ सामाजिक विज्ञान विषयों की तकनीकी भाषा के स्वरूप के बारे में भी आपको जानकारी होनी चाहिए। जिस तरह विज्ञान विषयों की अपनी शब्दावली, और वाक्य-शैली है, इसी तरह सामाजिक

विज्ञानों और मानविकी के विषयों की भी अपनी शब्दावली, अभिव्यक्तियाँ और वाक्य-रूप होते हैं। सामाजिक विज्ञानों के अंतर्गत अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीतिविज्ञान, पुरातत्व, शिक्षा, मनोविज्ञान, वाणिज्य, प्रबंध विज्ञान, नृविज्ञान, प्रशासन आदि अनेक विषय आते हैं। मानविकी विषयों के अंतर्गत सामान्यत: साहित्य, कला, भाषा, दर्शन और इतिहास आदि विषय आते हैं जिनका संबंध मानव, मानव विचार, मानव कार्यों या संबंधों से होता है। लेकिन व्यापक अर्थ में कभी-कभी सामाजिक विज्ञान विषयों को भी मानविकी के अंतर्गत मान लिया जाता है। इन विषयों की भी अपनी विशिष्ट शब्दावली और अभिव्यक्ति-शैली होती है। याद रहे कि इस भाषा-रूप को भी हम तकनीकी भाषा कह सकते हैं, भले ही इनमें तकनीकीपन की मात्रा, विज्ञान की भाषा की तुलना में कहुत कम हो। नीचे दिए दो गद्यांशो पर गौर कीजिए :

(i) पृथ्वी के वायुमंडल में उपस्थित धूलकणों द्वारा सौर-प्रकाश का प्रकीर्णन हो जाने से दिन में सारा वायुमंडल आलोकित हो उठता है।

(भौतिकी)

(ii) स्थानीय अनाज मंडी में राजस्थान से आवक घटने, मध्य प्रदेश में पड़ता न खाने तथा महाराष्ट्र और दक्षिण से चना-दाल की भारी मांग अपने से इनके भाव 30/40 रुपए का उछाल खा गए।

(वाणिज्य)

पहले गद्यांश में 'वायुमंडल में उपस्थित धूलकण', 'सौर प्रकाश' तथा 'प्रकीर्णन ' आदि विज्ञान के तकनीकी शब्द हैं। यहाँ 'वायुमंडल' की जगह 'आकाश' नहीं कह सकते। 'धूलकण' की जगह 'धूल' नहीं कह सकते और 'प्रकीर्णन' की जगह 'फैलना' नहीं कह सकते। दूसरे, गद्यांश का संबंध वाणिज्य से है और उसमें भी मंडी या बाजार भाव से संबंधित सूचना दी जा रही है। इसकी भाषा अधिक बोधगम्य है और अखबारी भाषा में है जहाँ केवल कुछ अभिव्यक्तियाँ जैसे 'आवक घटना', 'पड़ता न खाना' तथा 'उछाल खाना' जैसे सरल तकनीकी शब्द है।

इससे एक निष्कर्ष यह भी निकलता है कि तकनीकी भाषा में तकनीकीपन की मात्रा एक समान नहीं होती। कुछ संदर्भों तथा विषयों में तकनीकीपन कम होता है और विषय का सामान्य-सा ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी उसे समझ सकता है। इसके विपरीत कुछ तकनीकी भाषा-रूपों में तकनीकीपन की मात्रा अधिक होती है और कुछ में बहुत ही अधिक, जैसे कंप्यूटर विज्ञान, उच्च विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की भाषाएं। इस प्रकार की अति तकनीकी भाषा को विषय का अच्छा जानकार या विशेषज्ञ ही पूरी तरह समझ पाता है। इस संबंध में हम आगे के अनुच्छेदों में चर्चा करेंगे।

19.2.1 सामान्य और वैज्ञानिक भाषा-रूपों में अंतर

जब हम कहते हैं कि सामान्य भाषा और विज्ञान की भाषा में कुछ अंतर होता है तो सामान्य भाषा से हमारा क्या आशय होता है ? जब हम अपनी बात को ऐसे शब्दों और वाक्यों के माध्यम से व्यक्त करते हैं जिनमें प्रचलित शाब्दिक अर्थ की अभिव्यक्ति होती है तो उसे हम सामान्य भाषा कहते हैं। यदि किसी भाषा-रूप के इच्छित अर्थ को समझने के लिए हमें उसके शब्दों या वाक्यांशों के गूढ़ या विशिष्ट अर्थों को ढूंढना पड़े या उनके लाक्षणिक अर्थों का सहारा लेना पड़े वह सामान्य भाषा से इतर होता है। इस दृष्टि से साहित्यिक भाषा और वैज्ञानिक भाषा दोनों सामान्य भाषा से किसी न किसी सीमा तक अलग सिद्ध होते हैं।

इसका अर्थ यह नहीं लगाना चाहिए कि सामान्य भाषा में लाक्षणिक प्रयोग बिल्कुल नहीं होता या उसमें विशिष्ट अर्थ देने वाले शब्द या वाक्यांश बिल्कुल नहीं होते। अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से संप्रेषित करने के लिए कभी-कभी हम शब्दों का लाक्षणिक प्रयोग भी करते हैं। लेकिन यह केवल प्रासंगिक रूप से ही होता है। लक्षणा, व्यंजना या अलंकार का प्रयोग मूलत: साहित्य की भाषा का गुण है। विशिष्ट या तकनीकी अर्थों में शब्दों और वाक्यांशों का प्रयोग विज्ञान की भाषा का गुण है। जैसे-जैसे किसी भी ज्ञान-क्षेत्र की गहराई में हम जाते है, हमारे विचार सरल से जटिल होते जाते हैं, एक ही संकल्पना के

अंतर्गत कई और उप-संकल्पनाएं जन्म लेती हैं। फलस्वरूप हमारे शब्दों के अर्थ विशिष्ट होते जाते हैं, शैली बदलती जाती है और नए शब्दों का जन्म होता जाता है। फलस्वरूप विज्ञान की भाषा सामान्य तथा साहित्यिक दोनों प्रकार के भाषा-रूपों से अलग होती जाती है। इन दोनों भाषा रूपों में निम्नलिखित अंतर महत्वपूर्ण है :

(क) वैज्ञानिक भाषा के शब्द और वाक्य-रूप हमेशा **अभिधा** में ही समझे जाते हैं, लक्षणा या व्यंजना में नहीं। इसके विपरीत साहित्यिक या काव्य भाषा में लक्षण, व्यंजना का बहुत अधिक प्रयोग होता है। वस्तुतः साहित्यिक भाषा सामान्य भाषा या अभिधार्थ से जितनी दूर होगी उतनी ही श्रेष्ठ और प्रभावशाली मानी जाती है। नीचे लिखे वाक्य देखिए :

(i) **साहित्यिक भाषा**

— डिब्बे में **ठसाठस** अंधकार भरा था।

— **झुकी** चोंचे अखबार पर नहीं, उनकी नींद में **सुराख भेद रही थी**।

— उसके एक-एक शब्द में उसकी जीवन की कथा और उसके आँसुओं की **ठंडी जलन** भरी होती थी। (प्रेमचंद)

(ii) **वैज्ञानिक भाषा**

जमीन और सागरों के असमान रूप से तपने के कारण ही हवाएं जन्म लेती हैं। सागरों की अपेक्षा जमीन अधिक तेजी से तपती है। जमीन के ऊपर की गरम हवाएं ऊपर उठकर सागरों की ओर बहती है और सागरों के ऊपर की हवाएं जमीन की ओर बहती हैं।

पहले अनुच्छेद में 'ठसाठस', 'सुराख भेद रही थी' और 'ठंडी जलन' अभिव्यक्तियों का प्रयोग जिन लाक्षणिक अर्थों के लिए हुआ है वह साहित्यिक भाषा में तो संभव है लेकिन विज्ञान की भाषा में नहीं। दूसरे अनुच्छेद की भाषा विज्ञान की भाषा है जिसमें हर शब्द या वाक्यांश अपने मूल शब्दिक अर्थ में ही समझा जाता है, लाक्षणिक अर्थ में नहीं।

(ख) अर्थ की **सूक्ष्मता** और **निश्चितता** विज्ञान की भाषा का दूसरा प्रमुख गुण है। साहित्यिक भाषा में शब्दों और वाक्यों को उनके मूल अर्थों से हटाकर विस्तारित अर्थों में प्रयोग करने की प्रवृत्ति होती है। 'टोडरमल अपनी कुर्सी पर बैठे हुए **गरजे**', या 'मुझ पर **दुख का पहाड़** टूट पड़ा' जैसी आलंकारिक अभिव्यक्तियाँ साहित्य की सशक्त भाषा के अंग हो सकती है, लेकिन विज्ञान की भाषा में केवल 'शेर' के संदर्भ में ही गरजने का प्रयोग होगा, व्यक्ति के संदर्भ में नहीं, और 'पहाड़' का तात्पर्य वास्तविक 'पहाड़' ही होगा, लाक्षणिक 'पहाड़' नहीं। इस प्रकार हम पाते हैं कि साहित्य में एक ही बात को कहने के एक से अधिक विकल्प उपलब्ध हो सकते हैं, लेकिन विज्ञान में यह विकल्प अत्यंत सीमित होता है। वस्तुतः विज्ञान में किसी वस्तु या विचार को व्यक्त करने की एक नियत पद्धति या शैली होती है और हर वैज्ञानिक लगभग इसी पद्धति और शैली के दायरे के अंतर्गत अपनी बात व्यक्त करता है। 'ओस' तथा 'तड़ित' बिजली के संबंध में एक कवि और एक वैज्ञानिक की वर्णन शैलियों का नमूना देखिए :

ओस : चांदनी का पालना मुझको झुलाता
फूल अपनी गोद में हँसकर सुलाता,
ओस हूँ मैं, रात ढलते जन्म मेरा
सूर्य का रथ सृष्टि से वापस बुलाता। (कवि विष्णु खन्ना)

वायुमंडल में वाष्प के रूप में मौजूद नमी के कारण शीतल सतहों पर निर्मित बूंदों को **ओस** कहते हैं। यह नमी, विशेषतः रात को, भूसतह पर स्थित जलाशयों और पौधों की पत्तियों से विस्तृत रिसाव के कारण होती है। (वैज्ञानिक)

तड़ित/ बिजली : झील में जी भर नहाकर चांदनी तट पर खड़ी
मेघ फिर आए अचानक लग गई रस की झड़ी
बादलों में ठन गई तो चांदनी हंसने लगी
वह हंसी **बन गई बिजली** एक जादू की छड़ी। (कवि वीरेन्द्र मिश्र)

दो भिन्न बादलों के समूहों के टकराव से उत्पन्न आकाशीय दमक या चौंध तड़ित कहलाती है। यह दमक वायुमंडलीय विसर्जन के फलस्वरूप पैदा होती है।

(ग) विज्ञान की भाषा **वस्तुनिष्ठ** होती है, साहित्यिक या सामान्य भाषा प्राय: व्यक्तिनिष्ठ होती है। साहित्य की भाषा और कथ्य में लेखक का अपना दृष्टिकोण या बोध परिलक्षित होता है। यह बोध या दृष्टिकोण हर लेखक का अपना हो सकता है, इसलिए भाषा-शैली में भी पर्याप्त भिन्नता हो सकती है। इसके विपरीत विज्ञान की भाषा या कथ्य में व्यक्तिगत दृष्टिकोण या बोध का स्थान नहीं होता या बहुत कम होता है। इसीलिए वैज्ञानिक लेखन में 'मेरा ख्याल है', 'मैं समझता हूं' जैसे व्यक्तिनिष्ट अभिव्यक्तियों का प्रयोग नहीं हो सकता, जब तक कि लेखक को निष्कर्ष के रूप में अपना मत व्यक्त करना अभीष्ट न हो। नीचे के उदाहरण देखिए :

(i) लाश को एक बार फिर देखकर डाक्टर ने सिर हिलाया और चला गया। **मौत की हजूरी में डाक्टर अपना समय नहीं बरबाद करते।**

(ii) पृथ्वी में कई प्रकार के धातु छिपे पड़े हैं। इनमें से सबसे अधिक महत्वपूर्ण धातु है लोहा। कुछ अलौह धातु जिनमें अल्मोनियम और जिंक भी शामिल हैं, विशेष महत्व के हैं। लौह में चुंबकीय तत्व भी होते हैं जिससे विद्युत शक्ति का विकास संभव है।

उद्धरण (i) में अंतिम मोटे अक्षरों में लिखा वाक्य लेखक का अपना दृष्टिकोण है। उद्धरण (ii) में लौह के संबंध में केवल वस्तुनिष्ट वर्णन है जो विज्ञान की भाषा की विशेषता है।

(घ) विज्ञान की भाषा का रूप सामान्यत: **कथनात्मक** या विवरणात्मक होता है। मनोभावात्मक भाषा-रूप विज्ञान की भाषा का गुण नहीं है। साहित्य की भाषा सामान्यत: मनोभावात्मक होती है। कथनात्मक भाषा-रूप विषयपरक होता है, वक्ता या श्रोतापरक नहीं, क्योंकि इसमें किसी विषय या वस्तु के बारे में सूचना संप्रेषित करना या कोई कथन प्रस्तुत करना ही अभीष्ट होता है। विज्ञान की भाषा इसी कोटि में आती है। इसके विपरीत मनोभावात्मक भाषा-रूप वक्ता परक होता है, क्योंकि लेखक के अनोभावों, विचारों या अनुभूतियों को व्यक्त करना ही इसका अभीष्ट होता है। साहित्यिक भाषा का बहुत बड़ा अंश इसी कोटि में आता है। वर्णनात्मक तथा मनोभावात्मक भाषा-रूप के दो उदाहरणों को दखिए :

(i) देखने में प्रोजेक्ट मुद्गर (डम्बेल) के आकर का लगता है और यह स्काई थियेटर के बीच रखा जाता रहता है। इसकी संरचना ऐसी होती है जिससे अर्धगोलाकार गुम्बद के भीतरी भाग, अर्थात् 'स्काई थियेटर' की छत पर आकाश का सही-सही निरूपण हो सके।

(कथनात्मक भाषा रूप)

(ii) जहाँ आजकल मैं हूं, वहां नौकरियाँ पेड़ों के साथ लगती हैं। तोड़-तोड़कर मैं तुम्हें पकड़ा जाऊँगा।

(मनोभावात्मक)

19.2.2 विज्ञान विषयों की व्यवहार-क्षेत्रगत अपेक्षाएं

हर विषय या व्यवहार-क्षेत्र की भाषा का रूप उस विषय या व्यवहार-क्षेत्र की आकांक्षाओं तथा आवश्यकताओं के अनुरूप ही होता है। विज्ञापन की माँग है कि निर्माता संभावित ग्राहकों को संबोधित करे, उसे आकर्षित करे और उनसे अपना माल खरीदने का आग्रह करे। अत: श्रोता केन्द्र में है। अत:

विज्ञापन की भाषा में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निर्देशात्मक वाक्यों का प्रयोग होगा, भाषा सरल व आकर्षक होगी कम शब्दों में ज्यादा बात कहने में समर्थ होगी। देखिए -

— नेरिसन की साड़ियाँ पहनिए ये सुंदर और टिकाऊ होती हैं।

— सफेदी की चमकार ज्यादा सफेद सुपर रिन से

— आज ही लीजिए 30 प्रतिशत की छूट पर

इसी प्रकार शेयर बाजार की भाषा, कार्यालय की भाषा, धार्मिक व्यवहार-क्षेत्र की भाषा, ज्योतिष की भाषा, टेंडर की भाषा, पत्रकारिता की भाषा, न्यायालय की भाषा, विज्ञान की भाषा, वाणिज्य की भाषा में भी किसी न किसी मात्रा में परस्पर अंतर दिखाई देता है। अपने-अपने व्यवहार-क्षेत्र की अपेक्षाओं के अनुसार इनमें खास तरह के भाषा-रूप विकसित हो गए हैं, जो अपनी अलग पहचान बनाए रखते हैं। नीचे कुछ नमूने देखिए :

(i) शेयर और मंडी बाजार की भाषा —

— चांदी, सोना नरम, सिक्का गिरा।

— शेयरों में तेजड़ियों ने पकड़ मजबूत की।

— लिवाली का दौर चलाकर शेयरों को ऊपर खींच दिया।

— चांदी हाजिर/चांदी डेलिवरी/चांदी सिक्का लिवाल, बिकवाल।

(ii) ज्योतिष की भाषा —

— यह राशि शीर्ष स्थानों से उदय होने वाली, दिन में बलवान तथा पूर्व दिशा की स्वामी है।

— यात्रा का योग प्रबल है। उत्तरार्ध में आकस्मिक हानि संभावित है। संतान पक्ष से प्रसन्नता मिलेगी।

— माह का पूर्वार्द्ध विशेष अनुकूल रहेगा। मित्रों की संख्या में वृद्धि होगी। स्त्री-वर्ग का सुख-सहयोग मिलेगा। यदि मनोबल बनाए रखकर कार्यप्रवृत्त होंगे तो आर्थिक क्षेत्र में आपको विशेष लाभ हस्तगत हो सकता है।

(iii) धार्मिक व्यवहार-क्षेत्र की भाषा —

— पूर्वकाल में जिनकी यह संपूर्ण वसुंधरा थी, उन्हीं इक्ष्वाकु कुल महात्मा राजाओं के वंश में महान कथानक रामायण की उत्पत्ति सुनी गई है।

— पूजन समाप्त कर ऋषि राजा दशरथ से बोले — हे राजन, सर्वथा आपको अभीष्ट पुत्रों की प्रप्ति होगी।

(iv) टेंडर की भाषा —

— दिल्ली विकास प्राधिकरण की ओर से अधिशासी अभियंता, उत्तरी प्रखंड सं. 2 द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु दि.वि.प्रा. की समुचित श्रेणी के स्वीकृत ठेकेदारों से 23-12-92 को अपराह्न 3 बजे तक मुहरबंद वस्तु-दर निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं।

(v) विज्ञान की भाषा

— कंप्यूटर वह यंत्र है जो सूचना को लेता है, उसे संसाधित करता है, व्यवस्थित ढंग से छानबीन करता है और उपयोगी सूचना प्रदान करता है।

आपने देखा कि एक ही भाषा का प्रयोग करते हुए भी हर विषय तथा कार्य-क्षेत्र अपनी शब्दावली और अभिव्यक्ति शैली को एक खास तरह से विकसित कर लेता है। कुछ खास तरह के शब्दों तथा उक्तियों

का बार-बार प्रयोग होता है, कुछ शब्द जो अधिक तकनीकी होते हैं, विशेष व्याख्या या परिभाषा की अपेक्षा करते हैं। कुछ खास तथ्यों को अभिव्यक्त करने की एक नियत शैली विकसित हो जाती है। इसी को भाषाविज्ञान में 'प्रयुक्ति' (रजिस्टर) कहते हैं। **प्रयुक्ति** भाषा का वह भेद या रूप है जो किसी संदर्भ या व्यवहार-क्षेत्र विशेष में प्रयुक्त होता है, जैसे वैज्ञानिक भाषा-रूप या प्रयुक्ति, धार्मिक प्रयुक्ति, विधि प्रयुक्ति, पत्रकारिता प्रयुक्ति, कार्यालयीन प्रयुक्ति आदि।

जिस प्रकार अन्य विषयों या व्यवहार क्षेत्रों की अपनी अपेक्षाएं हैं उसी तरह विज्ञान के कार्यक्षेत्र की भी अपनी अपेक्षाएं हैं। फलस्वरूप विज्ञान की कार्यपद्धति के सभी गुण विज्ञान की भाषा में किसी न किसी रूप से परिलक्षित होते हैं।

विज्ञान परीक्षण और प्रयोगों के माध्यम से किया गया प्रकृति तथा प्राकृतिक वस्तुओं का अध्ययन और उससे प्राप्त ज्ञान है। वैज्ञानिक अध्ययन हमेशा विश्लेषण, तर्क और परीक्षण-प्रयोगों पर आधारित होते हैं तथा सूत्रात्मकता तथा स्पष्टता इसके गुण होते हैं। विज्ञान के नियम सार्वभौम या जातिगत होते हैं। वैज्ञानिक अध्ययन के ये ही गुण विज्ञान के भाषा-रूपों में भी परिलक्षित होते हैं। यहां तीन गुण विशेष उल्लेखनीय हैं :

(क) **सार्वभौमिकता** : विज्ञान के नियम सार्वभौम या नित्य होते हैं। इसलिए इनको व्यक्त करने के लिए भाषा में सामान्यत: नित्यावाची क्रियाओं का प्रयोग होता है। हिंदी में 'ता है' (जाता है) या 'होता है' या 'है' नित्यावाची क्रियाएं हैं। वैज्ञानिक भाषा में नियमों तथा वस्तुओं के नित्य गुण-धर्मों का विवेचन करते समय इन्हीं क्रियारूपों का प्राय: प्रयोग होता है। देखिए —

इस वर्ग के कीटों का पिछला भाग प्राय: लंबा तथा अगला भाग छोटा **होता** है। इनके मुँह में विष ग्रंथियाँ **होती** हैं जब वे कीट किसी मनुष्य को **काटती** हैं तो ये विष ग्रंथियाँ क्रियाशील हो जाती हैं और इनसे जलन पैदा **होती** है।

(ख) **सूक्ष्मता** : जैसे-जैसे ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन गहन होता जाता है, वैसे-वैसे इसकी संकल्पनाएं तथा इनके सूत्र सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होते जाते हैं। इसका असर विज्ञान की भाषा पर भी पड़ता है। फलत: विज्ञान की भाषा में भी संक्षिप्तता और सूत्रात्मकता के गुण आ जाते हैं। विज्ञान की भाषा में सूक्ष्मता के साथ-साथ, स्पष्टता का होना आवश्यक होता है ताकि गुण-धर्मों के आधार पर हर कोटि को दूसरी कोटि से अलग किया जा सके। इसीलिए विज्ञान के अनेक विषयों में एक स्तर पर सूत्रों तथा फार्मूलों का प्रयोग होता है, जैसे :

परमाणु ऊष्मा : किसी तत्व का ग्राम परमाणु भार और उसकी विशिष्ट ऊष्मा का गुणन फल लगभग 6.3 ग्राम कैलोरी है; अर्थात्

परमाणु ऊष्मा = परमाणु भार × विशिष्ट ऊष्मा = 6.3 ग्राम कैलोरी

यद्यपि संक्षिप्तता हर विषय की भाषा का गुण हो सकता है लेकिन कुछ विषय स्वभावत: व्याख्यात्मक होते हैं जहाँ संक्षिप्तता का मापदंड विज्ञान की भाषा की संक्षिप्तता के मापदंड से अलग होता है। उदाहरणार्थ राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शन आदि सामाजिक विज्ञानों की व्याख्याओं में वैज्ञानिक सूत्रता, संक्षिप्तता या फार्मूलों का आग्रह नहीं होता। विज्ञान की भाषाओं में इसीलिए प्राय: वाक्य भी घुमावदार या जटिल नहीं होते। आग्रह केवल अधिक से अधिक तथ्यों को स्पष्टता के साथ छोटे से छोटे भाषिक कलेवर में प्रस्तुत करने का होता है। देखिए —

> पानी को हिमांक से नीचे ठंडा करने पर प्राप्त ठोस पदार्थ बर्फ है। शुद्ध अवस्था में यह पारदर्शक, रंगहीन, भंगुर पदार्थ है। बर्फ बनने पर पानी का आयतन लगभग 1/11 भाग बढ़ सकता है। सामान्य वायुमंडलीय दाब पर यह 0°C या 32°F पर बनता है।

(ग) **विशेष चिह्नों/आरेखों का प्रयोग** : किसी भी जटिल संकल्पना को समझाने के लिए शब्दों के साथ-साथ चित्रों तथा आरेखों के प्रयोग का बहुत बड़ा महत्व है। विज्ञान अपनी विषय-वस्तु को स्पष्ट

रूप से तथा संक्षिप्तता और सूक्ष्मता के साथ व्यक्त करना चाहता है। इसके लिए आरेखों, विशेष चिह्नों तथा चित्रों का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। ये युक्तियाँ शाब्दिक व्याख्या की पूरक हैं। उदाहरण के लिए, शब्दिक व्याख्या से एक त्रिकोण या वर्ग के बारे में जितनी सूचना मिलती है उससे कहीं अधिक इन आरेखों से इनकी अवधारणा स्पष्ट होती है, जैसे 'त्रिकोण' और 'वर्ग' की संकल्पना समझने के लिए बनाए गए ये आरेख

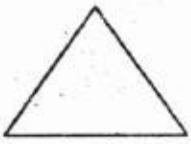

इसी प्रकार विज्ञान में विशेष चिह्नों का भी प्रयोग होता है जिससे चित्रात्मक विधि से तथ्य सूत्र रूप में स्पष्ट हो जाते हैं :

=	α
→	β
<	:
>	$\therefore$

19.3 विषय-विशिष्ट तकनीकी भाषा-रूप

आप इससे पूर्व पढ़ चुके हैं कि विस्तृत अर्थ में विज्ञान के अंतर्गत केवल मूल विज्ञान विषय (रसायन, भौतिकी, गणित आदि) ही नहीं आते बल्कि इंजीनियरी, प्रौद्योगिकी आदि जैसे अनुप्रयुक्त विज्ञान के विषय भी शामिल हैं। इनके अलावा सामाजिक विज्ञान के कुछ विषय भी, तकनीकी भाषा के स्तर पर, विज्ञान की अध्ययन पद्धति के अधिक निकट हैं। फलतः इन सभी विज्ञान विषयों के भाषा-रूपों में प्राथमिक समानता होते हुए भी अभिव्यक्ति के स्तर पर उनमें परस्पर थोड़ा-बहुत अंतर मिलता है। यहाँ पर हम केवल कुछ विशिष्ट विषयों के संदर्भ में ही उनके भाषा-रूपों की विशेषताओं का उल्लेख करेंगे।

19.3.1 मूल विज्ञान विषयों की भाषा

रसायन, भौतिकी आदि अनेक विज्ञानों में पदार्थों की संरचना और लक्षणों का और अन्य पदार्थों के साथ उनके मिश्रण के परिणामों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। इसलिए विभिन्न पदार्थों के जाति गुणों का वर्णन करना, उनके मिश्रण आदि की प्रक्रियाओं को स्पष्ट करना और उनके बीच परस्पर संबंधों का विश्लेषण, रसायन विज्ञान तथा जैविकी आदि के प्रमुख प्रकार्य हैं। इसलिए इन विज्ञान विषयों की भाषा में नित्यवाची वाक्य रूपों का प्रयोग बहुत अधिक होगा, यानी 'है', होता है जैसे क्रियाओं की अधिकता होगी :

कुछ नमूने देखिए —

(क) अम्ल (acid) एक ऐसा यौगिक है जिसमें हाइड्रोजन होता है और जो पानी में घुलने पर हाइड्रोजन आयन (H^+), अर्थात् प्रोटॉन उत्पन्न करता है और जलयोजित होकर हाइड्रोनियम आयन H_3O^+ और ऋणायन X^- में परिपत हो जाता है।

(रसायन)

(ख) सिंदूरी फासफोरस (scarlet phosphorus) सिंदूरी रंग का चूर्ण होता है जिसकी सक्रियता लाल और पीले फॉस्फोरस के बीच की होती है। इसका उपयोग दियासलाइयों में होता है।

(रसायन)

(ग) अल्बर्ट आइन्सटीन ने पदार्थ के द्रव्यमान और ऊर्जा में संबंध स्थापित किया और इसके लिए एक विशिष्ट सूत्र दिया -

$$E = mC^2$$

इसमें E ऊर्जा, m द्रव्यमान और C प्रकाश का वेग व्यक्त करता है। इस सूत्र के अनुसार पदार्थ को ऊर्जा में बदला जा सकता है।

(भौतिकी)

(घ) दो यंत्रों को जोड़ने के लिए इलेक्ट्रानिक सिग्नलों का क्रम और वोल्टेज स्वीकृत मानक के अनुसार होना चाहिए। कंप्यूटर के साथ आर एस 232 सी इंटरफेस स्वीकृत मानक है। सूचना का आदान-प्रदान उच्च-निम्न सिगनल पर आधारित है जिन्हें 0। सिग्नलों से पहचाना जाता है।

(कंप्यूटर विज्ञान)

19.3.2 सामाजिक विज्ञान विषयों की भाषा

सामाजिक विज्ञान विषयों की भाषा विज्ञान की भाषा की तुलना में कम तकनीकी होती है। इसका एक कारण यह है कि इनका संबंध प्राय: परिचित संदर्भों और शब्दावली से होता है। विज्ञान की तरह सामाजिक या मानविकी विषयों की संकल्पना एकदम नई नहीं होती। परिचित शब्दावली को ही अनेक बार नए अर्थों में रूढ़ कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए नीचे के पहले दो नमूनों में 'परिवार चक्र', 'पूंजी 'निवेश', 'निधि', 'वित्तीय वर्ष' आदि परिचित शब्द हैं लेकिन यहाँ एक खास तकनीकी अर्थ को व्यक्त करते हैं। इसी प्रकार तीसरे नमूने में 'रंजक क्रिया', 'प्रकार्यात्मक', 'कोशीय', 'अर्थ-रिक्तता', 'अर्थवान', 'लाभग्राही', 'केन्द्र बिंदु' आदि परिचित शब्द होते हुए भी खास तकनीकी अर्थों में प्रयुक्त हुए हैं। देखिए -

(क) व्यक्ति के जन्म, विवाह और मृत्यु से संबंधित क्रियाकलाप जो अनवरत रूप से चलते रहते हैं, परिवार चक्र (family cycle) कहलाते हैं। इस चक्र के अंतर्गत पहले और सबसे छोटे बच्चे के जन्म और विवाह की घटनाओं के अतिरिक्त उन बच्चों के पालन-पोषण की प्रक्रिया से लेकर वृद्धावस्था तक की सभी घटनाएं सम्मिलित हैं।

(समाज शास्त्र)

(ख) स्थायी संपत्तियों पर लगाई गई धनराशि पूंजी निवेश (capital investment) कहलाती है। पूंजी निवेश के अंतर्गत उन सब निधियों का निवेश सम्मिलित होता है जिनकी वापसी सामान्यत: एक वित्तीय वर्ष में होने की संभावना नहीं होती।

(वाणिज्य)

(ग) रंजक क्रियाओं की कोशीय अर्थ-रिक्तता इन्हें प्रकार्यात्मक स्तर पर अर्थवान और महत्वपूर्ण होने से नहीं रोकती। दूसरे, अपने मूल कोशीय अर्थ से च्युत होने पर भी कुछ रंजक क्रियाएं प्रकारान्तर से अपने मूल अर्थ के किसी तत्व से जुड़ी रहती हैं, जैसे 'लेना' क्रिया में वक्ता के लाभग्राही होने का भाव, 'आना' में केन्द्र-बिंदु की ओर अग्रसर होने का भाव।

(भाषाविज्ञान)

अभ्यास 1

(क) नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं जो कथ्य की दृष्टि से सही या गलत हैं। सही कथन के आगे (√) तथा गलत के आगे (×) का निशान लगाइए —

1. वैज्ञानिक भाषा और तकनीकी भाषा में अभेद है। ☐
2. शेयर बाजार की भाषा सामान्य भाषा होती है, तकनीकी भाषा नहीं। ☐
3. विज्ञान के नियम सार्वभौम होते हैं, स्थान विशिष्ट नहीं। ☐
4. 'प्रयुक्ति' के अंतर्गत तकनीकी भाषा को तो शामिल किया जा सकता है, लेकिन वैज्ञानिक भाषा को नहीं। ☐
5. सभी अनुप्रयुक्त विज्ञान किसी न किसी मूलभूत विज्ञान से जुड़े रहते हैं। ☐
6. सूत्रात्मकता साहित्यिक भाषा का प्रधान लक्षण है। ☐

(ख) कोष्ठक में दिए गए उत्तरों में से कोई एक उत्तर सही है। जो सही उत्तर हो उसे रिक्त में लीजिए —

1. सामाजिक विज्ञान विषयों की भाषा विज्ञान विषयों की भाषा की तुलना में ..... तकनीकी होती है।

(कम/अधिक/एक समान)

2. 'आवक घटना', 'उछाल खाना', 'पड़ता खाना', अभिव्यक्तियों का संबंध ..... से है।

(प्रबंधविज्ञान/राजनीतिविज्ञान/मंडी बाजार)

3. वैज्ञानिक भाषा के शब्द और वाक्य-रूप ..... में ही समझे जाते हैं।

(व्यंजना/लक्षण/अभिक्षा)

4. ..... वैज्ञानिक भाषा का एक महत्वपूर्ण लक्षण है

(अर्थ-विस्तार/अर्थ की सूक्ष्मता/व्यंजना)

5. ..... भाषा में एक ही अवधारणा को व्यक्त करने के लिए कई पर्यायों का प्रयोग संभव है।

(सामान्य/वैज्ञानिक/तकनीकी)

6. 'मेरा ख्याल है', 'मुझे लगता है', जैसी अभिव्यक्तियाँ ..... की भाषा से मेल नहीं खातीं।

(साहित्यिक/सामान्य/वैज्ञानिक)

7. आयुर्विज्ञान ..... घटकों से मिलकर बना अनुप्रयुक्त विज्ञान है।

(भौतिकी और गणित/गणित और रसायन/रसायन और प्राणिविज्ञान)

8. सांख्यिकी की भाषा में हमें ..... की शब्दावली बहुत अधिक मिलती है।

(गणित/भौतिकी/सिविल इंजीनियरी)

तीन-चार पंक्तियों में उत्तर दीजिए —

1. प्रयुक्ति किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

2. वैज्ञानिक भाषा के तीन गुणों को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

3. विज्ञान और विज्ञापन की भाषा में क्या अंतर होता है?

.....

.....

.....

4. वस्तुनिष्ठ भाषा-रूप से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

5. नित्यवाची और निर्देशात्मक भाषा-रूपों के दो-दो उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

19.4 वैज्ञानिक भाषा-रूपों में संदर्भगत भेद

इससे पहले वाले अनुच्छेद में हमने कहा था कि विज्ञान की भाषा में किसी भी तथ्य का वर्णन करने की एक नियत-सी पद्धति होती है। उसमें बहुत अधिक विकल्पों की गुंजाइश नहीं होती जैसा कि साहित्यिक भाषा में होता है। इसका यह अर्थ नहीं समझना चाहिए कि हर संदर्भ में विज्ञान की भाषा-शैली एक ही समान होती है। शोध पत्रिका के लिए लिखे गए लेख की भाषा-शैली का रूप उस लेख की भाषा-शैली से अलग होगा जो पाठ्य-पुस्तक या फिर लोक प्रसार के लिए लिखे गए लेख का होगा। इसी प्रकार लिखित और मौखिक रूप से प्रस्तुत वैज्ञानिक संवादों में अंतर होगा। यदि हमारा पाठक अल्पशिक्षित ग्रामीण या बिल्कुल सामान्य व्यक्ति है तो वैज्ञानिक संवाद की हमारी भाषा-शैली और अधिक अलग हो जाएगी। आइए देखें यह शैली परिवर्तन हम क्यों और कैसे करते हैं।

भाषा-रूप या शैली का परिवर्तन हम मुख्यत: तीन कारणों से करते हैं —

1. संवाद (या प्रोक्ति) का विषय-क्षेत्र
2. संवाद का माध्यम
3. संवाद के प्रतिभागी पात्र

विषय-क्षेत्र से तात्पर्य है वह विषय जिस पर संवाद हो रहा है या भाषा-व्यवहार का वह क्षेत्र जिससे संवाद जुड़ा है। उदाहरण के लिए यह विषय-क्षेत्र कार्यालय भी हो सकता है, रसायन भी, आयुर्विज्ञान भी, गणित भी, विज्ञापन भी, धर्म भी, खेलकूद भी या कोई भी अन्य विषय।

माध्यम से तात्पर्य है वह मंच, विधा या फारमेट, जिससे या जिसमें संवाद हो रहा है। उदाहरण के लिए यह माध्यम लिखित अभिव्यक्ति भी हो सकता है, मौखिक अभिव्यक्ति भी और वाचन भी। समस्त लेखन कार्य लिखित अभिव्यक्ति है। कक्षा में अध्यापक द्वारा शिक्षण या परिचर्चा मौखिक अभिव्यक्ति है। रेडियो या दूरदर्शन में समाचार बुलेटिन या राष्ट्रपति द्वारा प्रसारित संदेश, जो पढ़कर बोले जाते हैं, वाचन के अंतर्गत आते हैं। माध्यम के ही अंतर्गत संवाद का फारमेट भी शामिल है, जैसे संवाद का फारमेट समाचार-पत्र भी हो सकता है, बुलेटिन भी, लेख भी, पत्र भी, परिचर्चा भी, टिप्पणी भी और व्याख्यान भी। ये माध्यम या फार्मेट यह निर्धारित करते हैं कि संवाद की शैली कैसी हो, कितनी तकनीकी हो, कितनी रोचक हो, कितनी व्याख्यात्मक हो, किस प्रकार के शब्दों का इस्तेमाल किया जाए आदि।

प्रतिभागी पात्र से तात्पर्य है संवाद में भाग लेने वाले पात्र, यानी लेखक-पाठक या वक्ता-श्रोता। इन पात्रों के बीच परस्पर क्या संबंध है, यह संवाद के भाषा-रूप और उसकी शैली के निर्धारण के लिए महत्वपूर्ण है। यह संबंध औपचारिक भी हो सकता है, अनौपचारिक भी, दोनों पक्ष विषय के विशेषज्ञ भी हो सकते हैं और एक पक्ष विशेषज्ञ और दूसरा पक्ष सामान्य या प्रबुद्ध पाठक हो सकता है।

संवाद से जुड़े उपर्युक्त तीनों घटकों का संयोग ही यह निर्धारित करता है कि संवाद की भाषा कितनी तकनीकी हो, कितनी अर्धतकनीकी, किस प्रकार की शब्दावली का प्रयोग हो, भाषा-शैली में कितना सूत्रबद्धता हो, कितना कसाव हो और कितनी व्याख्यात्मकता। यह भी कि संवाद के प्रस्तुतीकरण में कितना बाह्य अंश जोड़ा जाए, कितनी वस्तुनिष्ठता या व्यक्तिनिष्ठता उसमें लाई जाए, कितने रोचक या कौतुहल के अंश जोड़े जाएं और कितनी तकनीकी सामग्री का समावेश हो और कितनी का परिहार।

यद्यपि इस दृष्टि से वैज्ञानिक लेखन के कई रूप या प्रकार संभव हैं, लेकिन सुविधा के लिए हम दो प्रकार के वैज्ञानिक लेखन या संवाद की यहाँ चर्चा करेंगे — तकनीकी वैज्ञानिक लेखन और लोकप्रिय

वैज्ञानिक लेखन। यह ध्यान रखने की बात है कि शोधपरक वैज्ञानिक लेखन के भाषारूप और विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों के भाषा-रूप में पर्याप्त अंतर होता है, लेकिन इन दोनों को हमने मोटे रूप से तकनीकी वैज्ञानिक लेखन के अंतर्गत ही स्वीकार किया है। इसी प्रकार सामान्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रस्तुत वैज्ञानिक लेखन और बाल-साहित्य में प्रस्तुत वैज्ञानिक लेखन के भाषा-रूपों में भी पर्याप्त अंतर होता है, लेकिन इन दोनों को हमने सुविधा के लिए लोकप्रिय वैज्ञानिक लेखन के अंतर्गत लिया है।

19.4.1 तकनीकी वैज्ञानिक लेखन

शोधपरक या उच्चस्तरीय वैज्ञानिक भाषा सूत्रात्मक होती है। इसमें कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक जानकारी देने का आग्रह होता है। इसमें अनावश्यक शब्दों, वाक्यांशों और प्रसंगों का प्रयोग नहीं होता। तकनीकी शब्दों का पर्याप्त प्रयोग होता है, उनकी व्याख्या या उन्हें व्याख्या के द्वारा समझाने का प्रयास नहीं होता। कई स्थानों पर भाषा परिभाषा के सूत्रों में बंधी रहती है। फलस्वरूप भाषा की बुनावट में एक खास तरह का कसाव रहता है। उदाहरण के लिए नीचे दिया गद्यांश देखिए

> **निर्देशित अस्त्र** (guided missile) एक ऐसा अस्त्र है जिसे उड़ान या गति के दौरान लक्ष्य की ओर निर्देशित किया जाता है। यह निर्देशन अस्त्र के अंदर पूर्व नियोजित स्वत: प्रक्रिया युक्ति के जरिए या अस्त्र के बाहर से प्राप्त रेडियो निर्देशों के द्वारा किया जाता है। ये अस्त्र वायु से वायु में, वायु से पृष्ठ पर, पृष्ठ से जल के अंदर, जल के अंदर से वायु में, जल के अंदर से प्रष्ठ पर और जल के अंदर से जल के अंदर फेंके जा सकते हैं।
>
> (इंजीनियरी)

इस गद्यांश में परिभाषा की शैली का उपयोग किया गया है। इसमें कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक सूचना देने का प्रयास है जिसके कारण वाक्यों में कुछ दुरुहता भी आ गई है। मिश्र और संयुक्त वाक्यों का प्रयोग अधिक है, विशेष रूप से अंतिम वाक्य (ये अस्त्र ..... सकते हैं) में कई वाक्यों की सामग्री को एक ही वाक्य में भर दिया गया है।

यदि इसी गद्यांश में दिए वैज्ञानिक तथ्यों को लोक प्रसार की भाषा में रोचक तथा सरल बनाकर प्रस्तुत किया जाता तो शायद इस प्रकार शुरू किया जा सकता था —

> आपने निर्देशित अस्त्र या गाइडेड मिसाइल के बारे में सुना होगा। जब आप कोई मिसाइल या अस्त्र मार करने के लिए छोड़ते हैं तो उसकी दिशा या लक्ष्य को आप बाहर से ही निर्देशित कर सकते हैं। इस अस्त्र के भीतर एक पूर्वनियोजित और स्वत:चालित यंत्र का विधान किया जाता है जो अस्त्र को पूर्व निर्धारित लक्ष्य की ओर ले जाता है। या फिर अस्त्र के बाहर से भेजे गए रेडियो निर्देश, के अनुसार यह अस्त्र अभीष्ट दिशा की ओर अग्रसर होता है।

वैज्ञानिक लेखन या संवाद का शुद्ध तकनीकी भाषा-रूप हमें जिन माध्यमों से मिलता है उनमें प्रमुख है — शोधपत्र, उच्चस्तरीय आलेख, तकनीकी पुस्तकें, संदर्भ ग्रंथ, परिभाषा कोश, विश्वकोश, तकनीकी पत्रिकाएं, इंजीनियरी तथा प्रौद्योगिकी संबंधी ग्रंथ, उच्चस्तरीय पाठ्यपुस्तकें आदि।

19.4.2 लोकप्रिय वैज्ञानिक लेखन

आज कोई भी देश विज्ञान के तथ्यों को केवल विशेषज्ञों तक ही सीमित नहीं रहने देना चाहता, बल्कि उनका प्रसार प्रबुद्ध पाठकों तथा आम लोगों के बीच करना चाहता है। भारत में भी न केवल छात्रों में बल्कि गाँव तथा शहरों के आम लोगों में भी विज्ञान के प्रति रुचि या जागरुकता पैदा करने का सामूहिक प्रयास किया जा रहा है। यह भी प्रयास है कि विज्ञान के तथ्यों की जानकारी भारतीय भाषाओं के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों तक पंहुचाई जाए। इसके लिए हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में सहज तथा उपयुक्त वैज्ञानिक भाषा-रूप का विकास ज़रूरी है। जिन माध्यमों से लोकप्रिय विज्ञान का प्रसार होता है वे हैं — समाचार-पत्र, सामान्य रुचि की पत्रिकाएं, स्कूल स्तर की पाठ्य पुस्तकें, लघु पुस्तकें, रेडियो तथा टेलविज़न वार्ताएं, फिल्म, वृत्त-चित्र, विडियों फिल्म आदि।

एक ही प्रकार के वैज्ञानिक तथ्यों को जब हम शुद्ध तकनीकी भाषा में लिखते हैं और उन्हीं को जब लोकप्रिय विज्ञान की भाषा में प्रस्तुत करते हैं तो दोनों भाषा-रूपों में क्या संरचनात्मक अंतर हम लाते हैं? शुद्ध तकनीकी भाषा को सहज और सरल बनाकर प्रस्तुत करने के लिए कुछ खास युक्तियों का प्रयोग किया जाता है। ये युक्तियां हैं —

(क) प्रतिपाद्य विषय के विस्तार को कम कर दिया जाता है। अति तकनीकी संकल्पना को या तो हल्का कर दिया जाता है या फिर हटा दिया जाता है।

(ख) जहाँ संभव हो अपरिचित या दुरूह तकनीकी शब्दावली के स्थान पर सुबोध या परिचित शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जहाँ जरूरत हो, तकनीकी शब्दों की जगह उनकी व्याख्या प्रस्तुत की जाती है। कभी-कभी सरलीकृत शब्द तकनीकी दृष्टि से पूर्णत: सटीक नहीं हो पाते लेकिन सामान्य स्तर पर संप्रेषण के लिए वे पर्याप्त होते हैं।

(ग) सामग्री के बीच-बीच के या वाक्यों में आगे-पीछे पाठक से तादात्म्य स्थापित करने वाले परिचित या रोचक प्रसंगों, वाक्यांशों, या शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जैसे 'आप जानते हैं कि' यह जानकर आपको आश्चर्य होगा 'यहाँ यह बताना जरूरी है कि ……' आदि।

(घ) कुछ खास तरह के बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखते हुए, सामग्री के प्रस्तुतीकरण की विधा में भी परिवर्तन कर दिया जाता है, जैसे कथा, आत्मकथा, संस्मरण, इंटरव्यू तथा रोचक विवरणों की शैली का उपयोग।

लोकप्रिय विज्ञान की सरस शैली के प्रस्तुत वैज्ञानिक विवरणों के कुछ नमूने देखिए —

(क) पिछले वर्षों में, मौसम के मनमौजीपन के विषय में वैज्ञानिकों को अत्यंत विचित्र तथा सनसनीखेज जानकारी प्राप्त हुई है। वैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों में पाया है कि 1987 की सर्दी में प्रशांत महासागर असाधारण रूप से गर्म हो गया था। मौसम विज्ञान की भाषा में *'एल नीनो' नाम से प्रसिद्ध घटना का कारण दक्षिण प्रशांत महासागर के ऊपर के वायुमंडल में हुआ कुछ असाधारण परिवर्तन समझा जाता है।*

(भूगोल/समुद्रविज्ञान)

इस गद्यांश में वैज्ञानिक सूचना केवल इतनी भर है : "1987 की सर्दी में प्रशान्त महासागर में घटी 'एल-नीनो' नामक घटना का कारण दक्षिण प्रशांत महासागर के ऊपर के वायुमंडल में हुआ कुछ असाधारण परिवर्तन था"। इस तथ्य को सामान्य पाठक के लिए रोचक तथा संप्रेष्य बनाने के लिए कुछ खास भाषिक युक्तियों का प्रयोग किया गया है। उदाहरण के लिए, 'पिछले वर्षों में …… प्राप्त हुई है' वाक्य का उद्देश्य पाठक में आगे दी जाने वाली सूचना के प्रति जिज्ञासा पैदा करना है। इसमें कोई नई सूचना नहीं है। 'एल-नीनो' तकनीकी अभिव्यक्ति है, इसलिए इसकी व्याख्या यह कहकर की गई है कि यह वही घटना है जिसमें 1987 की सर्दी में प्रशांत महासागर असाधारण रूप से गर्म हो गया था। यदि यह पाठ विशेषज्ञ को संबोधित होता तो उसके लिए 'ऐल-नीनो' कहना ही काफी था। इस प्रकार इसमें लगभग 25 प्रतिशत नई सूचना के लिए 75 प्रतिशत इतर सूचना दी गई है जो विशेषज्ञ के लिए तो महत्वपूर्ण नहीं लेकिन सामान्य पाठक को आकर्षित करने या उसे अतिरिक्त जानकारी देने के लिए आवश्यक है।

(ख) डाक्टरों का कहना है कि 500 मि.ग्रा. सोडियम और पोटेशियम सायनाइड खाने से व्यक्ति की 5 मिनट के अंदर मृत्यु हो जाती है। इसे खाने पर मानव शरीर की कोशिकीय क्रिया पूर्णत: बंद हो जाती है और माइटोकॉड्रिया अपंग हो जाते हैं। फलस्वरूप श्वसन क्रिया अवरुद्ध हो जाती है और रक्त को मिलने वाली आक्सीजन की आपूर्ति बंद हो जाती है और कुछ मिनटों में ही व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

(आयुर्विज्ञान)

इस गद्यांश में आयुर्विज्ञान के तकनीकी तथ्य को सरल तथा व्याख्यात्मक भाषा में प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि इसमें रोचक वाक्यांशों या प्रसंगों का समावेश नहीं है लेकिन अभिव्यक्ति की सहजता और परिचित शब्दावली के कारण तथ्य सामान्य पाठक के लिए भी बोधगम्य हो जाते हैं।

19.5 वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा-रूपों की विकास-प्रक्रिया

वैज्ञानिक या तकनीकी भाषा-रूप के संबंध में आपने अभी तक जो कुछ भी पढ़ा उससे इतना तो आपको स्पष्ट हो गया कि किसी भी प्रकार के भाषा-रूप के विकास में कम से कम तीन प्रकार के घटकों की भूमिका महत्वपूर्ण है :

(क) तकनीकी शब्दावली
(ख) तकनीकी अभिव्यक्तियाँ
(ग) तकनीकी वाक्य-शैली

इन तीनों के समुचित विकास से ही किसी भी विषय-क्षेत्र के तकनीकी भाषा-रूप का विकास होता है। इन घटकों के संबंध में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इनका विकास इनसे संबद्ध मौलिक विषय-ज्ञान के साथ जुड़ा है। इनका निर्माण तथा प्रयोग सर्वप्रथम उसी भाषा में होता है जिसमें इनके मौलिक ज्ञान का जन्म हुआ है। आधुनिक विज्ञान की तमाम नई संकल्पनाएँ अंग्रेजी (या जिस भी पाश्चात्य देशों में विकसित हुई, उन्हीं की भाषाओं) में विकसित हुई और उसी भाषा में इनके लिए आवश्यक शब्दावली, अभिव्यक्ति तथा वाक्य शैली का निर्माण और विकास हुआ। धीरे-धीरे सतत व्यवहार से इनके रूप प्रयोग सिद्ध हुए और इन्हें सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हुई। इस मौलिक ज्ञान को जो भाषा-समाज बाद में ग्रहण करता है (या उधार लेता है) वह मुख्यत: अनुवाद के माध्यम से ही इनके भाषा-रूपों को विकसित करने की कोशिश करता है। इस प्रकार तकनीकी तथा वैज्ञानिक भाषा-रूपों की विकास प्रक्रिया दो प्रकार की हो सकती है :

(1) प्राकृतिक विकास प्रक्रिया
(2) नियोजित विकास प्रक्रिया

19.5.1 प्राकृतिक विकास प्रक्रिया

किसी भी विषय-क्षेत्र के भाषा-रूप के विकास के लिए सबसे सहज और आदर्श स्थिति वह है जब किसी भी नए ज्ञान के साथ उसको अभिव्यक्त करने के लिए मौलिक चिंतक या लेखक आवश्यक शब्दावली तथा वाक्य रूपों का निर्माण करे, उनका प्रयोग करे। उनके सतत प्रयोग से उस विषय का भाषा-रूप स्थिर होता है और उसे सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है। यह ध्यान रहे कि हर नए विचार अथवा ज्ञान के संदर्भ में प्रयुक्त सभी शब्दावली तथा वाक्य-रूप अंतत: समाज द्वारा स्वीकृत हो ही जाए, यह जरूरी नहीं। जो शब्दावली और वाक्य रूप अंतत: सामाजिक मान्यता प्राप्त कर लेते हैं वे ही भाषा-रूप का निर्माण करते हैं। आज भारत में मुख्यत: अंग्रजी के वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा-रूपों को ही मॉडल के रूप में स्वीकार किया गया है और फलस्वरूप अधिकांशत: उन्हीं के आधार पर भारतीय भाषाओं में तकनीकी भाषा-रूप विकसित करने का प्रयास दिखाई देता है। कुछ उदाहरण देखिए —

Field strength of wave	तरंग की क्षेत्र-तीव्रता
Automatic volume expander	स्वचालित प्रबलता विस्तारक
Hypertension	अतितनाव
Only ideal gases obey gas laws fully	केवल आदर्श गैस ही गैस नियमों का पूर्णत: पालन करती है

19.5.2 नियोजित प्रक्रिया

जो भाषा-समाज किसी दूसरे भाषा-समाज में विकसित ज्ञान को ग्रहण करता है उसे उस ज्ञान से जुड़े भाषा-रूप को भी अपनी भाषा में किसी न किसी रूप में उतारने की ज़रूरत पड़ती है। उसे स्रोत भाषा के आधार पर अपनी भाषा में नई शब्दावली का निर्माण या निर्धारण करना पड़ता है, नई अभिव्यक्तियों

का विकास कर प्रयोग में लाना पड़ता है और वाक्य-रूपों में भी नए प्रयोग करने पड़ते हैं। यह सब प्रक्रिया सायास होती है, अर्थात् किसी संस्था या व्यक्ति को मूल भाषा के तकनीकी रूपों के आधार पर नया भाषा-रूप विकसित करने का प्रयास करना पड़ता है। इस प्रयास में एक तरह की कृत्रिमता होती है। यह भाषा के सहज या प्राकृतिक विकास की प्रक्रिया का अनुसरण नहीं करता। इसीलिए इस प्रकार के विकास को नियोजित करने की जरूरत पड़ती है ताकि भाषा-रूपों के विकास को सही दिशा दी जा सके। चूंकि इस स्थिति में शब्दावली या भाषा रूप का विकास मौलिक चिंतक या विज्ञानी नहीं करता बल्कि अन्य व्यक्ति या अनुवादक के द्वारा होता है, इसलिए इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि एक ही मूल शब्दावली या अभिव्यक्ति के लिए एक से अधिक तकनीकी पर्याय न प्रचलित हों। यदि ऐसा होता है तो वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली तथा अभिव्यक्तियों में अराजकता फैल सकती है। उदाहरण के लिए, यदि हिंदी में energy शब्द के लिए 'शक्ति', 'ऊर्जा ' या 'बल' तीनों का प्रयोग लोग करने लगें तो पाठक इस तकनीकी शब्द का अर्थ क्या समझेगा power, energy या strength। इसीलिए इस प्रकार के वैज्ञानिक भाषा-रूपों की विकास-प्रक्रिया किसी न किसी स्तर पर नियोजित करने की जरूरत पड़ती है।

इस प्रकार के नियोजित भाषा-विकास में अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। तकनीकी भाषा-रूप के विकास का समस्त कार्य अधिकांशत: प्रत्यय या अप्रत्यय रूप से अनुवाद पर टिका हुआ है। भारत के संदर्भ में देखें तो कहीं हिंदी तथा भारतीय भाषाओं पर इसका प्रभाव सकारात्मक हुआ है और कहीं नकारात्मक। यह इस दृष्टि से सकारात्मक है कि अंग्रेजी के कई भाषा-रूपों के लिए जहाँ हमारे पास शब्दावली या वाक्य-रूप नहीं थे हमने सहज रूप से अपनी भाषा में उनके पर्याय बनाकर अपनी भाषा को समृद्ध किया। इसका नकारात्मक प्रभाव यह पड़ा कि हमने अनुवादी भाषा-रूप का निर्माण किया जो कृत्रिम और जटिल होने के कारण सहज बोधगम्य नहीं हो पाता। अंग्रेजी की वाक्य संरचना और तकनीकी अभिव्यक्ति का इतना अधिक प्रभाव हमारी भाषाओं की संरचना पर पड़ा कि हमारी भाषा के वाक्य-रूपों की संरचना हमारी अपनी भाषा की सहज प्रकृति से दूर होती जा रही है।

किसी भी तकनीकी या वैज्ञानिक भाषा-रूप की सार्थकता उसके प्रयोग में है क्योंकि सतत प्रयोग से ही उसे सामाजिक मान्यता मिलती है और वह भाषा-व्यवहार का अभिन्न अंग बनता है। अनुवाद या नियोजित विकास प्रक्रिया में भाषा-रूपों को निर्माण से प्रयोग तक की प्रक्रिया में आने में काफी समय लगता है क्योंकि प्रयोक्ता के मस्तिष्क में पहले से ही मूल भाषा का रूप अंकित रहता है और वह उसी का अभ्यस्त होता है। अत: अपरिचित तथा नए भाषा-रूपों को स्वीकार करने में प्रयोक्ता हिचकता है।

अभ्यास 2

(क) नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं जो कथ्य की दृष्टि से सही या गलत हैं। सही कथन के आगे (√) तथा गलत के आगे (×) का निशान लगाइए।

1. वैज्ञानिक भाषा-रूप के अंतर्गत भाषा-व्यवहार के लिखित रूप को भी शामिल किया जाता है मौखिक रूप को नहीं। ☒
2. तकनीकी भाषा में कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक जानकारी देने का आग्रह रहता है। ☐
3. तकनीकी भाषा का प्रयोग केवल विशेषज्ञों के बीच ही संभव है, विशेषज्ञ और सामान्य व्यक्ति के बीच नहीं। ☐
4. वैज्ञानिक शोधपत्रों की भाषा और लोकप्रिय विज्ञान की भाषा दोनों ही समान तकनीकी शब्दावली का प्रयोग करते हैं। ☐
5. तकनीकी भाषा को हम वैज्ञानिक भाषा भी कह सकते हैं। ☐
6. मूलभूत विज्ञान के अंतर्गत गणित, रसायन, प्राणिविज्ञान और भौतिकी आते हैं। ☐

(ख) कोष्ठक में दिए गए उत्तरों में से कोई एक उत्तर सही है। जो सही उत्तर हो उसे रिक्त स्थान में लिखिए —

1. वह फारमेट जिसमें भाषा-व्यवहार संपन्न हो रहा हो, संवाद का ..... कहलाता है।
(विषय-क्षेत्र, सहीभागी पात्र, माध्यम)

2. दो विशेषज्ञों के बीच वैज्ञानिक संवाद ..... भाषा में होता है।
(अर्धतकनीकी/तकनीकी/गैरतकनीकी)

3. तकनीकी भाषा-रूप के अंतर्गत तीन घटक शामिल हैं — तकनीकी वाक्य शैली, तकनीकी अभिव्यक्तियाँ और तकनीकी .....।
(ज्ञान/संकल्पना/शब्दावली)

4. अंग्रेजी की वैज्ञानिक और तकनीकी वाक्य-संरचना का प्रभाव हिंदी की वाक्य संरचना पर ..... रहा है।
(सकारात्मक/नकारात्मक/सकारात्मक और नकारात्मक दोनों)

5. विज्ञान की भाषा में अभिव्यक्ति का रूप ..... होता है।
(व्यक्तिनिष्ठ, वस्तुनिष्ठ, लचीला)

6. इलेक्ट्रॉनिकी की पुस्तक के अनुवाद में ..... का शब्दकोश हमें अधिक सहायक सिद्ध होगा।
(भौतिकी/गणित/वनस्पतिविज्ञान)

7 पेट्रोलियम पदार्थों पर लिखी पुस्तकों का भाषा-रूप ..... के भाषा-रूप के अधिक निकट होता है।
(वनस्पतिविज्ञान/गणित/रसायन)

(ग) 1 निम्नलिखित गद्यांश में तकनीकी शब्द छाँटिए —

समान ताप और दाब पर गैसों के किसी मिश्रण का आयतन उसके घटकों के आयतन के योग के बराबर होता है।

2 वैज्ञानिक संवाद के भाषा-रूप को नियंत्रित करने वाले तत्वों को गिनाइए।

.....

.....

3. वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा के विकास की दो प्रक्रियाओं के नाम बताइए।

.....

.....

4. विज्ञान की भाषा के प्रमुख लक्षणों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

.....

.....

5. वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा में अंतर बताइए।

.....

.....

6. साहित्यिक भाषा और वैज्ञानिक भाषा में अंतर बताइए।

.....

.....

19.6 सारांश

आपने इस इकाई में वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी की प्रयुक्ति या विशिष्ट भाषा-रूपों के बारे में पढ़ा।

आपने पढ़ा कि —

- विज्ञान की भाषा में प्रयुक्त शब्दावली, अभिव्यक्ति-शैली और वाक्य-रूप साहित्यिक भाषा के रूपों से कुछ भिन्न होती हैं।
- वैज्ञानिक भाषा में तकनीकी शब्दों और वाक्यांशों का आधिक्य होता है और अपने विषय के संदर्भ में ये विशिष्ट अर्थ व्यक्त करते हैं। इस प्रकार का विशिष्ट भाषा-रूप प्रयुक्ति कहलाता है।
- मूलभूत विज्ञान के अंतर्गत मोटे रूप से चार प्रमुख विषय आते हैं — भौतिकी, गणित, रसायन, और प्राणिविज्ञान/वनस्पति विज्ञान। इंजीनियरी, आयुर्विज्ञान, कृषि आदि इन्हीं से निकले अनुप्रयुक्त विज्ञान हैं।
- वैज्ञानिक भाषा में सूक्ष्मता, वस्तुनिष्ठता, विश्लेषणात्मकता, सूत्रात्मकता और सार्वभौमिकता के गुण दिखाई देते हैं। इसमें लाक्षणिकता या व्यंजना के लिए कोई स्थान नहीं जो साहित्य की भाषा का गुण है।
- यद्यपि सामाजिक विज्ञानों की भाषा भी तकनीकी होती है, लेकिन तकनीकीपन् की मात्रा तथा अभिव्यक्ति शैली की दृष्टि से यह वैज्ञानिक भाषा से भिन्न होती है।
- वैज्ञानिक भाषा के दो प्रमुख रूप मिलते हैं - i) अनुसंधानपरक या तकनीकी वैज्ञानिक भाषा और ii) लोकप्रिय विज्ञान की भाषा। पहली कोटि का वैज्ञानिक संवाद विषय के जानकारों के बीच होता है और इसलिए इसमें तकनीकीपन तथा सूत्रात्मकता अधिक होती है। दूसरी कोटि का संवाद सामान्य या प्रबुद्ध पाठकों के लिए होता है और इसलिए इसमें तकनीकीपन की मात्रा कम होती है और भाषा-शैली सहज बोधगम्य होती है।
- वैज्ञानिक और तकनीकी प्रयुक्तियों का विकास दो प्रक्रियाओं से होता है — प्राकृतिक विकास प्रक्रिया और नियोजित विकास-प्रक्रिया। भारत में मुख्यत: दूसरी प्रक्रिया से वैज्ञानिक भाषा-रूप का विकास हो रहा है।

19.7 शब्दावली

प्रयुक्ति	भौतिकी
भाषा-रूप	रसायन
संवाद	वाणिज्य
प्रोक्ति	सांख्यिकी
माध्यम	प्राणिविज्ञान
प्रतिभागी पात्र	वनस्पतिविज्ञान
विषय-क्षेत्र	जीव-प्रौद्योगिकी
व्यवहार-क्षेत्र	जैव रसायन
फारमेट	आनुवंशिकी
सूत्रात्मकता	धातुकर्म
लक्षणा	वास्तुकला
व्यंजना	इलेक्ट्रॉनिकी
अभिधा	आयुर्विज्ञान
प्राकृतिक विकास प्रक्रिया	अनुप्रयुक्त विज्ञान
नियोजित विकास प्रक्रिया	नित्यवाची

19.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

हिंदी भाषा : संदर्भ और संरचना (1991)। साहित्य सहकार, ई/10-4, कृष्णनगर, दिल्ली-110005

19.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास 1

क) 1) × 2) × 3) √
4) × 5) √ 6) ×

ख) 1) कम 2) मंडी बाजार 3) अभिधा
4) अर्थ की सूक्ष्मता 5) सामान्य 6) वैज्ञानिक
7) रसायन और प्राणिविज्ञान 8) गणित

ग) इकाई में स्वयं जांच करें।

अभ्यास 2

क) 1) × 2) √ 3) ×
4) × 5) × 6) √

ख) 1) माध्यम 2) तकनीकी 3) शब्दावली
4) सकारात्मक और नकारात्मक दोनों 5) वस्तुनिष्ठ
6) भौतिकी 7) रसायन

ग) 1) ताप, दाब, गैस, मिश्रण, आयतन, घटक, योग
2) विषय-क्षेत्र, माध्यम और प्रतिभागी पात्र
3) प्राकृतिक विकास प्रक्रिया और नियोजित विकास-प्रक्रिया
4) (इकाई से स्वयं जाँच करें।)
5) (इकाई से स्वयं जाँच करें।)
6) (इकाई से स्वयं जाँच करें।)

इकाई 20 वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली

इकाई की रूपरेखा

20.0 उद्देश्य
20.1 प्रस्तावना
20.2 वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली का स्वरूप
  20.2.1 सामान्य और तकनीकी शब्द में अंतर
  20.2.2 वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों के लक्षण
20.3 वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के प्रकार
  20.3.1 पारदर्शी और अपारदर्शी शब्द
  20.3.2 पूर्ण तकनीकी और अर्ध-तकनीकी शब्द
20.4 वैज्ञानिक शब्दावली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  20.4.1 पश्चिम में वैज्ञानिक शब्दावली की विकास-प्रक्रिया
  20.4.2 भारत में वैज्ञानिक शब्दावली की निर्माण-प्रक्रिया
20.5 वैज्ञानिक शब्दावली संबंधी विचारधाराएँ
  20.5.1 शुद्धता विचारधारा
  20.5.2 हिंदुस्तानी विचारधारा
  20.5.3 अंग्रेजीवादी विचारधारा
  20.5.4 समन्वयवादी विचारधारा
20.6 शब्दावली निर्माण के सिद्धांत तथा भाषिक युक्तियाँ
  20.6.1 शब्दावली निर्माण के सिद्धांत
  20.6.2 शब्दावली निर्माण की भाषिक युक्तियाँ
20.7 सारांश
20.8 शब्दावली
20.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें
20.10 अभ्यासों के उत्तर

20.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली का स्वरूप समझ सकेंगे।
- वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों के विशिष्ट लक्षणों को समझ सकेंगे।
- तकनीकी शब्दों के प्रकार बता सकेंगे।
- भारत में वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण के लिए किए गए विभिन्न प्रयासों के बारे में बता सकेंगे।
- तकनीकी शब्दावली संबंधी विभिन्न विचारधारा की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- तकनीकी शब्दावली के निर्माण के सिद्धांत तथा उनकी युक्तियों के बारे में बता सकेंगे।

20.1 प्रस्तावना

आपने पिछली इकाई 19 में देखा कि वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा का रूप कैसा होता है, कैसे वह सामान्य या साहित्यिक भाषा शैली के स्वरूप से अलग होता है और कैसे वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा-रूप का विकास होता है। इस पाठ में आप वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के संबंध में विशेष जानकारी प्राप्त करेंगे। तकनीकी भाषा-रूप कई घटकों से मिलकर अपना आकार प्राप्त करता है, जैसे शब्द, विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ, वाक्य-रूप और पाठगत विन्यास पद्धति। इस पाठ में इनमें से केवल एक

ही पक्ष — तकनीकी शब्दावली — के विभिन्न आयामों के बारे में आप पढ़ेंगे। पिछली इकाई में आपने हिंदी के वैज्ञानिक भाषा-रूप के बारे में विस्तार से पढ़ा जिसमें कई प्रसंगों में तकनीकी शब्दावली का भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में जिक्र आया है। इसलिए इस इकाई को पढ़ने से पहले इससे पिछली इकाई (19) को ध्यान से पढ़ लें।

20.2 वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली का स्वरूप

आप पिछली इकाई में देख चुके हैं कि विज्ञान की भाषा किस प्रकार सामान्य तथा साहित्यिक भाषा से अपने स्वरूप में अलग है। जो तत्व वैज्ञानिक भाषा-रूप को साहित्यिक या सामान्य भाषा-रूप से अलग करते हैं उनमें प्रमुख है — शब्दों का चयन, विशिष्ट प्रकार की अभिव्यक्तियों का प्रयोग, वाक्य-रचना की शैली तथा कथ्य प्रस्तुत करने की विधा। इस इकाई में हम वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली की विशिष्टताओं पर विचार करेंगे। शेष के संबंध में हम पिछली इकाई में चर्चा कर चुके हैं।

हम सबसे पहले सामान्य शब्द और तकनीकी शब्द में अंतर देखेंगे और फिर तकनीकी शब्दों के विशिष्ट लक्षणों पर विचार करेंगे। तकनीकी शब्दावली के अंतर्गत हम मुख्यत: वैज्ञानिक शब्दावली की चर्चा करेंगे तथा जहाँ जरूरी होगा सामाजिक विज्ञान विषयों के तकनीकी शब्दों की भी चर्चा करेंगे।

20.2.1 सामान्य और तकनीकी शब्द में अंतर

सामान्य और तकनीकी शब्दों के बीच अंतर हम दो स्तरों पर कर सकते हैं — संरचना के स्तर पर और अर्थ के स्तर पर। **शब्द की संरचना** से तात्पर्य है शब्द के निर्माण की विधि से, यानी **शब्द-रचना से।** इस स्तर पर वस्तुत: सामान्य तथा तकनीकी शब्दों में कोई अंतर नहीं। शब्द-निर्माण की जो विधि सामान्य शब्दों के लिए हम अपनाते हैं वही विधि हम तकनीकी शब्दों के लिए भी अपनाते हैं। सामान्य शब्दों की रचना हम धातु के आगे-पीछे उपसर्ग और प्रत्ययों को जोड़कर करते हैं जैसे — विश्वास, अविश्वास, विश्वसनीय, विश्वसनीयता, अविश्वसनीय आदि। तकनीकी शब्दों की रचना भी हम इसी स्थापित पद्धति के आधार पर धातु के आगे-पीछे उपसर्ग और प्रत्ययों का योग करके करते हैं, जैसे — आदेश, निदेश, निदेशक, निदेशालय, उपनिदेशक, सहनिदेशक आदि। (ध्यान रहे, उपसर्ग धातु या शब्द के पहले जुड़ते हैं और प्रत्यय धातु या शब्द के बाद) दूसरे शब्दों में, तकनीकी शब्दों का अपना कोई अलग शब्द-व्याकरण नहीं होता। भाषा के सामान्य व्याकरण और संरचनात्मक नियमों के दायरे के भीतर ही तकनीकी या वैज्ञानिक शब्दों का निर्माण या विकास होता है।

यह बात अवश्य है कि विज्ञान तथा टेक्नालॉजी की तेजी से विकसित नई संकल्पनाओं और अविष्कारों को व्यक्त करने के लिए नए शब्दों की मांग बढ़ रही है जिसके फलस्वरूप शब्दों की रचना-पद्धति में कुछ नए प्रयोग भी करने पड़ रहे हैं। इसके अलावा धातुओं, उपसर्गों तथा प्रत्ययों को कुछ नए मूल्य और अर्थ प्रदान करने की आवश्यकता पड़ रही है, लेकिन ये सभी प्रयोग भाषा के मान्य व्याकरणिक विधानों के अंतर्गत ही किए जा रहे हैं, जैसे संकर शब्दों की रचना - अपीलकर्ता, वोल्टता, शेयरधारक रजिस्ट्रीकृत आदि।

तकनीकी और सामान्य शब्दों के बीच वास्तविक अंतर **अर्थ** के स्तर पर मिलता है। सामान्य तथा साहित्यिक शब्दों का प्रयोग हम अपने प्रयोजन और दृष्टिकोण के अनुसार अभिधा, लक्षणा तथा व्यंजना तीनों ही अर्थों में कर सकते हैं। साहित्य में शब्दों का प्रयोग जितना ही अधिक लाक्षणिक होगा उतना ही अधिक प्रभावशाली भाषा और भाव का संप्रेषण माना जाएगा। सामान्य भाषा में भी हम बीच-बीच में लाक्षणिक भाषा का प्रयोग करते हैं। देखिए:

— मन में भावनाओं की **लहरें** हिलोरें मारने लगीं।
— उनकी बातों में मुझे आशा की एक क्षीण **किरण** दिखाई दी।
— तभी शीला के परिवार पर दुख का **पहाड़** टूट पड़ा।
— उसे वहीं खड़ा देख पिताजी **गरजे** — तुम अभी तक नहीं गए ?

इन वाक्यों में 'लहरें', 'किरण', 'पहाड़', और 'गरजना' का प्रयोग अभिधा या शाब्दिक अर्थ में नहीं हुआ है। यहाँ इनका प्रयोग लाक्षणिक है। विज्ञान की भाषा में ये शब्द तकनीकी हैं और इनके अर्थ **शाब्दिक**

हैं। पाठक भी इन्हें अभिधार्थ में ही ग्रहण करता है। अत: जहाँ सामान्य तथा साहित्यिक भाषा में शब्दों के अर्थों को विस्तारित कर उनके मूल अर्थों से उन्हें विचलित कर देते हैं, वहाँ तकनीकी तथा वैज्ञानिक संदर्भों में शब्दों को उनके मूल अर्थ में स्थिर किया जाता है और उनके अर्थों में किसी भी तरह का विचलन नहीं आने दिया जाता। इस प्रकार तकनीकी शब्दों के अर्थों में एक प्रकार की वस्तुनिष्ठता होती है जिसमें लेखक या वक्ता के व्यक्तिगत भावों या दृष्टिकोणों के लिए कोई स्थान नहीं होता। आगे के अनुच्छेद में तकनीकी शब्दों की इन विशिष्टताओं पर हम विस्तार से चर्चा करेंगे।

20.2.2 वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों के लक्षण

अर्थ और प्रयोग के स्तर पर तकनीकी शब्दों के कुछ खास गुण-धर्म होते हैं जो इन्हें गैरतकनीकी शब्दों से अलग करते हैं। वैज्ञानिक और तकनीकी संदर्भों में सामान्य शब्द भी विशिष्ट अर्थ व्यक्त करने की क्षमता विकसित कर लेता है। वैज्ञानिक संदर्भों में अर्थों और संकल्पनाओं में सूक्ष्मता की आवश्यकता पड़ती है, इसलिए इन सूक्ष्म अर्थों को व्यक्त करने के लिए अनेक शब्दों की ज़रूरत पड़ती है जो किसी भी भाषा के शब्द भंडार में संभव नहीं। इसलिए जहाँ नए शब्द बनाने या सृजित करने की संभावना नहीं होती वहाँ प्रचलित शब्दों को ही एक नया अर्थ या अर्थ छटा प्रदान कर दिया जाता है। इस प्रकार तकनीकी शब्दों में नए अर्थों का आरोपण एक सतत प्रक्रिया है। अर्थों का सूक्ष्म और सूक्ष्मतर होते जाना तकनीकी शब्दों की विशेषता है। यहाँ हम तकनीकी शब्दों के कुछ विशिष्ट लक्षणों की चर्चा करेंगे :

(क) **अभिधार्थ प्रयोग** : वैज्ञानिक और तकनीकी शब्द हमेशा अभिधार्य में ही समझे जाते हैं। यह संभव है कि सामान्य प्रयोग में या अलग-अलग संदर्भों में किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ प्रचलित हों, लेकिन यदि वह तकनीकी शब्द के रूप में विकसित हो जाता है तो तकनीकी शब्द का एक विषय-क्षेत्र में एक तकनीकी अर्थ होगा। इसीलिए कहा जाता है कि तकनीकी शब्द 'एक शब्द एक अर्थ' के सिद्धांत का अनुसरण करता है। उदाहरण के लिए, भौतिकी में 'ऊर्जा' (energy) शब्द का एक ही विशिष्ट अर्थ होगा जो 'शक्ति', 'ताकत', 'स्फूर्ति' आदि शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता। यदि एक ही विषय या व्यवहार-क्षेत्र में एक ही तकनीकी शब्द के दो या अधिक अर्थ हों तो वह तकनीकी अर्थ व्यक्त करने के दायित्व का निर्वाह नहीं कर पाएगा।

(ख) **अर्थ की सूक्ष्मता** : सामान्य शब्द की अर्थ-व्याप्ति अधिक व्यापक होती है, क्योंकि इसमें मुख्य अर्थ के अलावा कई गौण अर्थ भी निहित होते हैं। इस प्रकार सामान्य या साहित्यिक शब्दों में अर्थ की संभावनाएं बहुत अधिक व्यापक होती हैं। तकनीकी शब्द न केवल एक अर्थ को व्यक्त करता है, बल्कि वह उस अर्थ के भी एक सूक्ष्म अंश का अर्थबोध प्रकट करता है। यह विज्ञान की विशेषता है जो भाषा में भी लक्षित होती है। जैसे-जैसे वैज्ञानिक और तकनीकी सोच और संकल्पना में परिमार्जन होता जाता है और नई मौलिक उद्भावनाएं सामने आती जाती हैं, वैसे-वैसे तकनीकी शब्द का अर्थ भी सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होता जाता है। अंग्रेजी शब्द 'प्रोग्राम' और 'मेमरी' के जो अर्थ लोक-व्यवहार में प्रचलित हैं वे कंप्यूटर विज्ञान के संदर्भ में अत्यंत सीमित हो गए हैं। 'संसद' का अर्थ संस्कृत में 'सभा' हुआ करता था लेकिन तकनीकी शब्द बनने के बाद इसकी अर्थ व्याप्ति केवल 'पार्लियामेन्ट' तक सीमित हो गई है।

(ग) **अर्थ भेदकता** : तकनीकी शब्दों के अर्थ न केवल सूक्ष्म होते हैं बल्कि निरंतर अनुसंधान के साथ-साथ उनके अर्थों के भेद-उपभेद विकसित होते चले जाते हैं। अर्थों के इन भेदोपभेदों में सूक्ष्म अर्थभेद होता है। इन अर्थभेदों को सुरक्षित रखने के लिए सबके लिए अलग-अलग तकनीकी शब्दों का विधान करना जरूरी हो जाता है। सामान्य व्यक्ति के लिए यह भेद महत्वपूर्ण न हो, लेकिन वैज्ञानिक या विशेषज्ञ के लिए यह भेद अत्यंत महत्वपूर्ण है। नीचे दिए शब्द देखिए —

वेग	velocity	किरण	ray
चाल	speed	विकिरण	radiation
गति	movement	किरण पुंज	beam
ऊर्जा	energy	महामारी	epidemic
शक्ति	power	विश्वमारी	pandemic
ओज	vigour	लघुमारी	endemic

जिस समय 'महामारी' (epidmic) शब्द बना उस समय pandmic और endemic शब्दों का अस्तित्व नहीं था। किसी समुदाय में रोग-विशेष के असामान्य रूप से फैलने को 'महामारी' कहते हैं। जब महामारी संसार के कई भागों या देशों में एक साथ फैली हो तो उसे तकनीकी अर्थ में pandemic कहा गया जिसके लिए हिंदी में 'विश्वमारी' शब्द बनाया गया। जब कोई बीमारी किसी छोटे क्षेत्र या समुदाय में छुटपुट रूप से लगातार मौजूद रहती है तो उसे endemic कहा गया जिसके लिए हिंदी शब्द बना 'लघुमारी'। इस प्रकार आप पाते हैं कि तकनीकी शब्दों के अर्थों में धीरे-धीरे नये मूल्य विकसित होते रहते हैं और उनमें परस्पर अर्थभेदकता का गुण मुखर होता जाता है।

(घ) **विषय सापेक्षता** : हर तकनीकी शब्द किसी न किसी विषय-क्षेत्र या शास्त्र से संबद्ध होता है। वह शब्द अपने विषय-क्षेत्र से ही अपना तकनीकी अर्थ और अपनी परिभाषा प्राप्त करता है। इसलिए किसी भी विषय के तकनीकी शब्द के पूर्ण अर्थ को समझने के लिए उस विषय की जानकारी ज़रूरी है। यही कारण है कि तकनीकी शब्दों को विशेषज्ञों की शब्दावली कहा जाता है जिन्हें अक्सर उस विषय से अनभिज्ञ सामान्य व्यक्ति नहीं समझ सकता। कोई भी तकनीकी शब्द अपने विषय-क्षेत्र से जो भी अर्थ प्राप्त करता है वह सब उसकी परिभाषा में निहित रहता है। इसलिए परिभाषा के माध्यम से ही तकनीकी शब्द की अर्थ-व्याप्ति को समझा जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो, हर तकनीकी शब्द परिभाषा की अपेक्षा करता है। इसीलिए इसे 'परिभाषिक शब्द' कहा गया है — अर्थात् ऐसा शब्द जो परिभाषा के माध्यम से ही पूर्ण रूप से समझा जा सकता है। 'कंप्यूटर वाइरस' 'प्रोग्रामिंग', 'हार्ड डिस्क' तथा 'फ्लापी' जैसे तकनीकी शब्द कंप्यूटर विज्ञान के संदर्भ में ही समझे जा सकते हैं। 'ओवर ड्राफ्ट', 'रेखित चैक' 'धारक चैक' आदि तकनीकी शब्द बैंकिंग व्यवहार-क्षेत्र के संदर्भ में ही समझे जा सकते हैं। यह संभव है कि एक ही तकनीकी शब्द एक विषय-क्षेत्र में एक विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त हो और दूसरे विषय-क्षेत्र में किसी और अर्थ में, लेकिन यह संभव नहीं कि एक ही विषय-क्षेत्र में एक ही तकनीकी शब्द दो भिन्न अर्थों में प्रयुक्त हो। 'सॉफ्टवेयर' का अर्थ समस्त कंप्यूटर विज्ञान क्षेत्र में एक ही होगा, 'ऊर्जा' शब्द का अर्थ समस्त भौतिकी में एक ही होगा। अंग्रेजी शब्द charge का अर्थ भौतिकी या रसायन में 'आवेश' या 'चार्ज करना' होगा (जैसे बैटरी चार्ज करना), वाणिज्य में 'व्यय', राजनीतिविज्ञान में 'धावा', विधि में 'आरोप' और प्रशासन में 'कार्यभार' या 'प्रभार' लेकिन एक ही विषय या प्रसंग में इसका एक ही रूढ़ अर्थ होगा।

(ङ) **अर्थरूढ़िता** : नए विचारों, आविष्कारों या संकल्पनाओं को व्यक्त करने के लिए जब हमें नए शब्दों की आवश्यकता होती है तो इसके दो प्रमुख उपाय हैं — नए शब्दों का निर्माण या फिर पहले से ही भाषा के शब्द-भंडार में मौजूद निकटतम अर्थ देने वाले शब्द का चयन कर उसे नया अर्थ प्रदान करना। दोनों ही स्थितियों में शब्दों में नए अर्थों का आरोपण किया जाता है। जो भी नया तकनीकी अर्थ शब्द में आरोपित किया जाता है वह सतत प्रयोग के कारण उस शब्द के साथ रूढ़ हो जाता है और लोग उसी अर्थ में उस शब्द को ग्रहण करने लग जाते हैं। कभी-कभी यह भी होता है कि उस तकनीकी शब्द से जो सामान्य अर्थ प्रकट होता है वह उसके तकनीकी अर्थ से पूरी तरह मेल नहीं खाता। उदाहरण के लिए, कंप्यूटर के पर्दे पर रेखाएँ खींचने के लिए एक चूहे की तरह के एक छोटे से उपकरण का इस्तेमाल किया जाता है जिसे 'mouse' नाम दिया गया है। इसे मेज पर रखे एक प्लेट पर इधर-उधर घुमाया जाता है और पर्दे पर इच्छित रेखाएं खिंचती चली जाती हैं। अंग्रेजी में mouse का यह मूल अर्थ नहीं। इस शब्द पर आविष्कारकर्ता ने एक नया अर्थ अरोपित कर दिया और एक नया तकनीकी शब्द बन गया। अत: तकनीकी शब्द और अर्थ के बीच का संबंध किसी तर्क या विधान के अंतर्गत स्थिर हो यह जरूरी नहीं। इस संबंध को स्थापित करने में मूल संकल्पना के आविष्कारकर्ता का सबसे बड़ा हाथ होता है। धीरे-धीरे सतत प्रयोग और व्यवहार से तकनीकी शब्द और अर्थ के बीच का संबंध रूढ़ हो जाता है।

20.3 वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के प्रकार

वैज्ञानिक या तकनीकी शब्दावली का वर्गीकरण हम दो स्तरों पर कर सकते हैं — अर्थ की स्वत: स्पष्टता और तकनीकीपन की मात्रा। अर्थ की स्वत: स्पष्टता के आधार पर पारिभाषिक शब्दावली को दो स्थूल वर्गों में बाँटा जा सकता है — पारदर्शी तथा अपारदर्शी शब्दावली। तकनीकीपन की मात्रा की दृष्टि से भी इन्हें दो स्थूल वर्गों में बाँटा जा सकता है — पूर्ण तकनीकी और अर्धतकनीकी शब्द।

20.3.1 पारदर्शी और अपारदर्शी शब्द

आपने ऊपर पढ़ा कि तकनीकी शब्द और उसके अर्थ के बीच कोई पूर्णत: सहज या तर्कसंगत कार्य-कारण संबंध हो यह ज़रूरी नहीं। किसी भी वस्तु की पहचान के कई गुण-धर्म हो सकते हैं। इसी प्रकार किसी संकल्पना के कई लक्षण हो सकते हैं। जब हम ऐसी किसी वस्तु या संकल्पना की परिभाषा करते हैं तो उस परिभाषा में उन सब लक्षणों या गुण-धर्मों का समाहार करने की कोशिश करते हैं। इसलिए हम जब किसी वस्तु या संकल्पना का नामकरण करने की कोशिश करते हैं तो इन्ही लक्षणों में से किसी एक या अधिक लक्षणों को आधार मानकर उपयुक्त नाम या शब्द ढूंढते हैं। यदि किसी शब्द से उनकी संकल्पना के अधिक से अधिक लक्षण या गुण-धर्म स्पष्ट होते हैं तो शब्द स्वत: व्याख्यान या पारदर्शी होता है। इसके विपरीत यदि कोई शब्द अपनी संपूर्ण संकल्पना का एक-आध लक्षण ही व्यक्त कर पाता है तो वह शब्द अपारदर्शी हो जाता है। ऐसा कई बार होता है कि किसी वस्तु या संकल्पना के एक छोटे से लक्षण को लेकर उसका नामकरण कर दिया जाता है जिससे सामान्यत: तब तक उस शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं होता जब तक उसका तकनीकी अर्थ परिभाषा के माध्यम से न समझा जाए। कभी-कभी दूसरी भाषा से आए तकनीकी शब्दों के अर्थ का बोध दुरूह हो जाता है क्योंकि हम उस भाषा के शब्दों की व्युत्पत्ति नहीं जानते और न ही उनकी मूल भाषा की शब्द-निर्माण प्रक्रिया को जानते हैं, जैसे लेटिन तथा ग्रीक धातु या प्रत्ययों से बने अंग्रेजी शब्द अन्य भाषा-भाषी के लिए सहज बोधगम्य नहीं होते।

हिंदी के कुछ पारदर्शी वैज्ञानिक शब्दों के उदाहरण देखिए जिनमें अंग्रेजी की तुलना में हिंदी के तकनीकी पर्याय अधिक बोधगम्य हैं।

mammal	स्तनधारी
chilling	हुतशीतन
chianophile	हिमसह
chianophobe	हिमभीरू
gyanaecology	स्त्री रोग विज्ञान
anatomy	शरीर-रचना
haemorrhage	रक्तस्राव

इसी प्रकार कुछ वैज्ञानिक और तकनीकी शब्द अपारदर्शी होते हैं, जैसे व्यक्ति के नाम पर बने शब्द, मिथ्यानाम शब्द या ऐसे शब्द जो विचित्र गुणों के आधार पर बने होते हैं। 'एम्पियर', 'फोरनहाइट', 'वोल्टमीटर' शब्द व्यक्तियों के नामों पर आधारित हैं। ऊपर हमने कंप्यूटर के संदर्भ में 'माउस' (mouse) शब्द का उदाहरण दिया था। जिस वैज्ञानिक ने इसका नामकरण किया उसने आकार की साम्यता या फुदकने के गुण के कारण ही इसे mouse कहा यद्यपि कंप्यूटर में इसका प्रकार्य बिल्कुल अलग है। यह शब्द अपारदर्शी है। इस प्रकार के तकनीकी शब्द केवल परिभाषा के माध्यम से या वास्तविक संदर्भ की स्थिति में ही अपना अर्थ व्यक्त करते हैं।

20.3.2 पूर्ण तकनीकी और अर्ध-तकनीकी शब्द

हर वैज्ञानिक और तकनीकी शब्द में तकनीकीपन की मात्रा एक समान नहीं होती। कुछ तकनीकी शब्दों में तकनीकी अर्थ अधिक गहन और जटिल होते हैं। उनके प्रयोग का दायरा सीमित होता है। उनका अर्थ अधिक सूक्ष्म होता है। उनका प्रयोग ज्ञान-विज्ञान के उच्चस्तर पर होता है। उनका अर्थ सामान्यत: विषय का विशेषज्ञ ही जानता है। ऐसे तकनीकी शब्दों को पूर्ण तकनीकी शब्द कहा जाता है। विकिरण (radiation), रेडियोएक्टिव (radioactive), प्रक्षेपास्त्र (missiles) आदि शब्द विशिष्ट वैज्ञानिक और तकनीकी संदर्भों में ही प्रयुक्त होते हैं।

इसके विपरीत, कुछ तकनीकी शब्द तकनीकी और गैर तकनीकी दोनों संदर्भों में प्रयुक्त होते हैं, या उनमें तकनीकीपन की मात्रा अपेक्षाकृत कम होती है। साम्यवाद, वामपंथी, एरियल, स्टीरियो आदि शब्द मूलत: तकनीकी हैं लेकिन इनका आमफहम प्रयोग होता है और इसलिए ये शब्द लोक व्यवहार में सामान्य शब्द के रूप में प्रयोग में आते हैं। विशिष्ट ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में जब इनका प्रयोग होता है तो वहाँ इनके तकनीकी अर्थों को सुरक्षित रखा जाता है। इसलिए जब भी जनसाधारण या सामान्य प्रबुद्ध पाठक

के बीच वैज्ञानिक संवाद होता है तो वहाँ यथासंभव शुद्ध तकनीकी शब्दों की जगह अर्धतकनीकी या अधिक बोधगम्य शब्दावली का प्रयोग किया जाता है। हम वैज्ञानिक लेखन में कहाँ शुद्ध तकनीकी शब्दों का प्रयोग करें और कहाँ अर्धतकनीकी या सुपरिचित शब्दों का, यह इस बात पर निर्भर करता है कि पाठक या श्रोता कौन और किस स्तर का है।

20.4 वैज्ञानिक शब्दावली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बीसवीं शताब्दी को विज्ञान का युग कहा गया है। आधुनिक विज्ञान और टेक्नालॉजी का विकास मुख्यत: पश्चिम में हुआ। जिन देशों में वैज्ञानिक आविष्कार हुए उन्हीं देशों में उनके लिए उनकी भाषाओं में तकनीकी शब्दों का विकास हुआ। जैसे-जैसे नए वैज्ञानिक विचारों और आविष्कारों का प्रसार हुआ, वैसे-वैसे उनकी शब्दावली का भी प्रसार हुआ। यह शब्दावली-विकास की प्राकृतिक प्रक्रिया है।

इसके विपरीत जिन देशों ने इस नए ज्ञान-विज्ञान को उधार में ग्रहण किया उन्होंने इन बने-बनाए तकनीकी शब्दों के लिए अपनी भाषा में पर्यायों का निर्माण किया। भारत सहित सभी विकासमान देश इसी कोटि में आते हैं। यहाँ वैज्ञानिक शब्दावली का विकास या निर्माण सायास किया गया। शब्दावली विकास की यह प्रक्रिया सहज या प्राकृतिक नहीं कही जा सकती। यह नियोजित प्रक्रिया है। इस प्रकार वैज्ञानिक शब्दावली के विकास को हम दो स्तर पर देखेंगे — पश्चिम के विकसित देशों में शब्दावली विकास तथा भारत में शब्दावली निर्माण प्रक्रिया।

20.4.1 पश्चिम में वैज्ञानिक शब्दावली की विकास-प्रक्रिया

पिछले पाँच-छ: दशकों के दौरान जिस तेजी से पश्चिम में विज्ञान और टेक्नोलॉजी का विकास हुआ, उसी तेजी से वहाँ तकनीकी शब्दावली का भी विकास हुआ। प्रतिदिन अनेक वैज्ञानिक विषयों पर नई पुस्तकें लिखी जाने लगीं। कंप्यूटर तथा इलेक्ट्रानिकी के अद्भुत विकास के साथ ही ज्ञान और उससे जुड़ी शब्दावली का भंडार तुरंत विश्वभर में फैलने लगा। संचार-प्रणाली के इस चमत्कार ने ज्ञान का तो सवर्त्र प्रसार किया ही, साथ ही तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली की भी एक बाढ़-सी आ गई। वैज्ञानिकों को अपने विषयों की नित नई विकसित शब्दावली से अपने को परिचित रखने के लिए असंख्य पुस्तकों, अनुसंधान पत्रिकाओं और लेखों का अध्ययन करना पड़ रहा है। इस असाध्य कार्य को सहज और सरल बनाने के लिए अब कंप्यूटर के माध्यम से 'इलेक्ट्रानिक न्यूज' का भी आविष्कार हो चुका है। 'इलेक्ट्रानिक न्यूज' के जरिए वैज्ञानिक तथा टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में हुए नए से नए आविष्कारों को एक केन्द्रीय स्थल से समस्त विश्व में प्रसारित किया जाता है जिसे उपग्रह सेवा के माध्यम से इच्छुक वैज्ञानिक अपने कंप्यूटर में तुरंत ग्रहण कर सकते हैं। नए ज्ञान के साथ ही नई शब्दावली का भी प्रसार उसी गति से होता है।

इस समस्त प्रक्रिया में एक बात ध्यान देने लायक है। नए तकनीकी शब्दों का निर्माण या निर्धारण करने वाले वो ही थे जिन्होंने इन शब्दों के पीछे निहित संकल्पना या विचार का आविष्कार किया। दूसरे शब्दों में, मौलिक चिंतकों तथा विचारकों ने ही अपने विचारों तथा संकल्पनाओं के लिए शब्द ढूंढे या निर्धारित किए। ये नए तकनीकी शब्द प्रयोग की प्रक्रिया से गुजरे। इस प्रक्रिया में सभी नए शब्द प्रयोग सिद्ध हो गए हों यह जरूरी नहीं। कई शब्द थोड़े समय चलकर स्वत: लुप्त हो गए और कई प्रचलन में बने रहे। जो नए तकनीकी शब्द प्रचलन में बने रहे उन्हें धीरे-धीरे सामाजिक स्वीकृत मिली और वे मानक तकनीकी शब्द के रूप में सिद्ध हो गए और वे उस विषय के शब्दकोश में स्थायी रूप से स्थिर हो गए। वैज्ञानिक शब्दावली के विकास की यह प्राकृतिक प्रक्रिया है जो उन देशों में मिलती है जो विज्ञान के क्षेत्र में विकसित या अग्रणी है। अविकसित या विकासमान देशों में वैज्ञानिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया का चित्र इससे अलग है।

20.4.2 भारत में वैज्ञानिक शब्दावली की निर्माण-प्रक्रिया

भारत में आधुनिक विज्ञान और टेक्नोलॉजी का ज्ञान मुख्यत: पश्चिम से आया। यह ज्ञान हमें मुख्यत: अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त हुआ। हर नई तकनीकी संकल्पना के साथ जुड़कर उसकी नामावली भी हमें मिली। जब देश स्वतंत्र हुआ तो निर्धारकों ने यह निर्णय लिया कि पश्चिम के इस समस्त ज्ञान को ग्रहण

कर लें। यह भी निर्णय लिया गया कि इस नए ज्ञान को हम अपनी भारतीय भाषाओं के माध्यम से लोगों तक पहुंचाएं क्योंकि अंग्रेजी का ज्ञान रखने वालों की संख्या केवल 4-5 प्रतिशत ही है। इसके लिए ज़रूरी था की हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक पुस्तकें लिखी जाएं या मानक वैज्ञानिक पुस्तकों का अनुवाद किया जाए। वैज्ञानिक लेखन या अनुवाद में सबसे पहले उपयुक्त तकनीकी शब्दों या पर्यायों की समस्या सामने आई। इन तकनीकी शब्दों का मानक होना ज़रूरी होता है क्योंकि मानक होने का तात्पर्य है कि उन शब्दों को हर व्यक्ति उन्हीं अर्थों में समझे जिन लेखकों ने उनका इस्तेमाल किया है। साथ ही यह भी कि हर लेखक उन अर्थों के लिए उन्हीं शब्दों का प्रयोग करे। निश्चित है कि प्रारंभिक अवस्था में अंग्रेजी शब्दावली के लिए हिंदी पर्यायों को स्थिर करने में लेखकों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा, क्योंकि इन नई वैज्ञानिक संकल्पनाओं के लिए हिंदी में शब्दावली की अपनी कोई परंपरा नहीं थी। अत: हर लेखक को अपनी तकनीकी शब्दावली अपने आप गढ़ने की जरूरत पड़ी। इससे धीरे-धीरे शब्दावली के क्षेत्र में अराजकता-सी उत्पन्न होने लगी।

शब्दावली के क्षेत्र में इस अराजकता को दूर करने के लिए हिंदी में व्यक्तिगत तथा संस्थागत दोनों प्रकार के प्रयास शुरू हुए और अंत में सरकार ने हस्तक्षेप कर 1961 में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना कर मानक शब्दावली के निर्माण तथा विकास का दायित्व उसे सौंपा। इस पर हम अगले अनुच्छेद में विस्तार से चर्चा करेंगे। यहाँ हम केवल यह देखने का प्रयास करेंगे कि हिंदी में वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण का प्रारंभिक कार्य किस प्रकार शुरू हुआ।

भारत में वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण का पहला प्रयास 1888 के आसपास प्रोफेसर टी.के. गुज्जर की कृतियों में मिलता है। उन्होंने गुजराती की पाँच वैज्ञानिक पुस्तकें प्रकाशित कीं जिनमें शब्दावली निर्माण से संबंधित समस्याओं पर गहराई से विचार किया। हिंदी में 1898-1906 के बीच काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने श्याम सुंदर दास आदि के संपादकत्व में विभिन्न विषयों की शब्दावली प्रकाशित की। 1909 में महेशचरण सिंह पुस्तक 'रसायन शास्त्र' सामने आई। इसमें उन्होंने रसायन के पारिभाषिक शब्दों की सूची भी प्रस्तुत की। सन् 1931 में नागरी प्रचारिणी सभा ने **हिंदी वैज्ञानिक शब्दावली** प्रकाशित की। सन् 1948 में दाते और कर्वे का **शास्त्रीय परिभाषा कोश** प्रकाशित हुआ जो अब तक प्रकाशित वैज्ञानिक हिंदी कोशों में सबसे महत्वपूर्ण था।

व्यक्तिगत प्रयासों से 1955 में प्रकाशित डा. रघुवीर की Comprehensive English Hindi Dictionary अब तक प्रकाशित कोशों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण और सबसे अधिक विवादस्पद तकनीकी शब्दकोश है। उन्होंने तकनीकी शब्दों के लिए शुद्ध संस्कृत के पर्यायों का निर्माण किया और किसी भी अंग्रेजी शब्द को नहीं स्वीकारा। हैदराबाद के निज़ाम ने इसके विपरीत उर्दू के आधार पर तकनीकी शब्दावली का निर्माण करने के लिए एक ब्यूरो की स्थापना की। इस प्रकार 1960-61 तक आते-आते हिंदी तकनीकी शब्दावली के निर्माण को लेकर दो-तीन तरह की विचारधाराएं विकसित हो गई थीं। आगे के अनुच्छेद में हम इन पर संक्षेप में विचार करेंगे।

अभ्यास 1

(क) नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं जो कथ्य की दृष्टि से सही या गलत हैं। सही कथन के आगे (√) तथा गलत के आगे (×) का निशान लगाइए —

1) संरचना के स्तर पर सामान्य तथा तकनीकी शब्दों के बीच कोई अंतर नहीं। ☐

2) प्रत्यय शब्द के बाद जुड़ते हैं पहले नहीं। ☐

3) वैज्ञानिक भाषा का व्याकरण सामान्य भाषा के व्याकरण से भिन्न होता है। ☐

4) एक ही तकनीकी शब्द एक ही विषय-क्षेत्र या संदर्भ में एक से अधिक तकनीकी अर्थ व्यक्त करने की क्षमता रखता है। ☐

5) तकनीकी शब्द और उसके अर्थ के बीच पूर्णत: स्पष्ट कार्यकारण संबंध होना ज़रूरी होता है। ☐

6) अर्थ का आरोपण केवल प्रचलित शब्दों पर ही संभव है, नए बने शब्दों पर नहीं। ☐

7) व्यक्ति के नाम पर बने वैज्ञानिक शब्द अपारदर्शी होते हैं। ☐

(ख) कोष्ठक में दिए गए उत्तरों में से कोई एक उत्तर सही है। जो सही उत्तर हो उसे रिक्त स्थान में लिखिए —

1. तकनीकी और सामान्य शब्दों के बीच वास्तविक अंतर के ..... स्तर पर मिलता है।
(अर्थ/संरचना/व्याकरण)

2. अर्थों का ..... होना वैज्ञानिक शब्दावली की विशेषता है।
(बहुअर्थी/विस्तारित/सूक्ष्म)

3. 'संसद' शब्द में इस शब्द के मूल अर्थ का ..... है।
(विस्तार/संकोच/अंतरण)

4. तकनीकी शब्दों को ..... की शब्दावली भी कहा जाता है।
(शिक्षितों/जनसाधारण/विशेषज्ञों)

5. वैज्ञानिक शब्द की अर्थ व्याप्ति और गुणधर्म को ..... के माध्यम से ही समझा जाता है।
(शब्दार्थ/संदर्भ/परिभाषा)

6. यदि किसी वैज्ञानिक शब्द से उनकी संकल्पना के अधिक से अधिक लक्षण स्पष्ट होते हैं तो उसे ..... शब्द कहा जाएगा।
(पारदर्शी/अपारदर्शी/पारिभाषिक)

7. पूर्ण तकनीकी शब्द का प्रयोग दायरा बहुत ..... होता है।
(व्यापक/सीमित/लचीला)

8. विज्ञान की दृष्टि से विकसित देशों में वैज्ञानिक शब्दावली का निर्माण या निर्धारण ..... करते हैं।
(भाषाविद/वैज्ञानिक/प्रबुद्ध पाठक)

(ग) तीन-चार पंक्तियों में उत्तर दीजिए -

1. सामान्य और तकनीकी शब्दों के अंतर को हम किन दो स्तरों पर समझ सकते हैं ? दोनों के दो-दो उदाहरण भी दीजिए।

.....

.....

2. 'एक शब्द एक अर्थ' की संकल्पना से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

3. वैज्ञानिक भाषा के चार लक्षणों के नाम गिनाइए और उनके एक-एक उदाहरण दीजिए।

.....

.....

4. तकनीकी शब्दों को पारिभाषिक शब्द क्यों कहा जाता है ?

.....

.....

5. अपारदर्शी तकनीकी शब्द से आप क्या समझते हैं ? दो उदाहरण भी दीजिए।

.....

.....

6. शब्दावली के क्षेत्र में ये नाम किसलिए जाने जाते हैं ?

क) प्रो. टी.के. गुज्जर .....

ख) दाते कर्वे .....

ग) डा. रघुवीर .....

घ) हिंदुस्तानी कल्चर सोसाइटी .....

ड) वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग .....

20.5 वैज्ञानिक शब्दावली संबंधी विचारधाराएं

जिस समय भारत में वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण का कार्य शुरू हुआ, उस समय हिंदी भाषा-भाषी क्षेत्र में भाषा संबंधी परिदृश्य कुछ असाधारण-सा था। शिक्षित-वर्ग अंग्रेजी भाषा तथा वैज्ञानिक शब्दों से परिचित था क्योंकि अंग्रेजी के माध्यम से उसने विज्ञान की शिक्षा हासिल की थी। इस वर्ग के लोगों की संख्या बहुत कम थी लेकिन इनका प्रभाव-क्षेत्र बहुत व्यापक था। दूसरी ओर देश की 95 प्रतिशत आबादी अंग्रेजी नहीं जानती थी। उनमें भी साक्षरों की संख्या बहुत कम थी। हिंदी-भाषी प्रदेशों की जनता हिंदी-उर्दू-हिंदुस्तानी से परिचित थी। इनमें से अधिकांश अपने निजी या पारिवारिक परिवेश में किसी अन्य बोली का प्रयोग करते थे और बाह्य कार्यों में यथासंभव हिंदी-उर्दू-हिंदुस्तानी का प्रयोग करते थे। हिंदी का एक रूप वह था जिसमें संस्कृत के शब्दों का अधिकतम प्रयोग होता था। इसका दूसरा रूप वह था जिसमें उर्दू शब्दों का अधिकतम प्रयोग होता था। इन दोनों के बीच के भाषा-रूप को सामान्यत: हिंदुस्तानी कहा जाता था। बोलचाल या आम भाषा-व्यवहार के लिए हिंदुस्तानी का ही प्रयोग अधिक होता था।

भारत के इस विविध-रूपी परिदृश्य में शब्दावली के निर्माण के प्रश्न को लेकर विद्वानों में मतभेद होना स्वाभाविक था। अत: उस अवधि के दौरान चार विचारधाराएँ स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आईं — शुद्धतावादी, हिंदुस्तानीवादी, अंग्रेजीवादी।

20.5.1 शुद्धतावादी विचारधारा

डा. रघुवीर इस विचारधारा के प्रवर्तक थे। उनका यह आग्रह था कि हमें अपनी भाषा को विदेशी शब्दों के प्रभाव से मुक्त रखना चाहिए। अत: उन्होंने यह संकल्प किया कि वे हिंदी के लिए ऐसे वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों का निर्माण करेंगे जिनमें अंग्रेजी या उर्दू का एक शब्द नहीं होगा। उन्होंने संस्कृत को आधार मानकर संस्कृत की धातुओं और प्रत्ययों-उपसर्गों की सहायता से हर अंग्रेजी शब्द के लिए हिंदी के पर्याय निर्धारित किए, जैसे engine के लिए 'गंत्र', motor car के लिए 'वहित्रयान', bicycle के लिए 'द्विचक्रिको, train के लिए 'संयान' आदि। उनके इन संस्कृतनिष्ठ शब्दों को हिंदी-भाषी समाज ने पूर्णत: स्वीकार नहीं किया। इनके कुछ शब्द अवश्य प्रचलित और स्वीकार्य हो गए जैसे engineer के लिए 'अभियंता', registration के लिए 'पंजीकरण' आदि, लेकिन अधिकांश शब्द प्रयोक्ताओं के लिए पूर्णत: अपरिचित और इसलिए दुरूह सिद्ध हुए।

20.5.2 हिंदुस्तानी विचारधारा

हिंदुस्तानी विचारधारा के प्रवर्तक थे पंडित सुंदरलाल, जो हिंदुस्तानी कल्चर सोसाइटी के अध्यक्ष थे। ये डा. रघुवीर के शुद्धतावादी विचारधारा के खिलाफ थे। इनका कहना था कि हमें हिंदी में नए वैज्ञानिक शब्दों का निर्माण बोलचाल की हिंदी-उर्दू मिश्रित शब्दावली के आधार पर करना चाहिए, संस्कृत के शब्दों के आधार पर नहीं। शब्द-निर्माण की पद्धति भी हमें बोलचाल की हिंदुस्तानी से ग्रहण करनी चाहिए। 1956 में इसी पद्धति के आधार पर उस्मानिया विश्वविद्यालय से एक शब्दकोश प्रकाशित हुआ जिसमें इस प्रकार के शब्द बनाए गए —

particularise	खासियाना (खास + याना)
undividualise	एकजनियाना (एक जना + याना)
standardise	स्टैन्डर्डियाना (सटैन्डर्ड + याना)
integeration	जोड़मेलन (जोड़ + मेलन)

हिंदीभाषी समाज ने इस प्रकार के शब्दों को भी स्वीकार नहीं किया। जिस प्रकार डा. रघुवीर शब्दावली को संस्कृत की दुरूहता के एक छोर पर ले गए, उसी प्रकार हिंदुस्तानी विचारधारा के पक्षधर शब्दावली को हल्की ग्राम्यभाषा के दूसरे दौर पर ले गए। प्रयोक्ताओं ने दोनों में से किसी भी विचारधारा को पूर्णत: स्वीकार नहीं किया।

20.5.3 अंग्रेजीवादी विचारधारा

इस विचारधारा के समर्थकों का प्रयास का यह आग्रह था कि हमें अधिक से अधिक वैज्ञानिक शब्द अंग्रेजी के ही ग्रहण कर लेने चाहिए, इन्हें अनूदित करने या इनके हिंदी पर्याय निर्मित करने की आवश्यकता नहीं। जिस प्रकार बोलते समय हम अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते हैं उसी तरह लेखन में भी हमें इन अंग्रेजी शब्दों को उन्हीं रूपों में ग्रहण कर लेना चाहिए। इस पद्धति पर Gray's Anatomy नामक पुस्तक का हिंदी अनुवाद किया गया जिसमें blood के लिए 'ब्लड' और mind के लिए 'माइन्ड' शब्दों का इस्तेमाल है। जो लोग इस विचारधारा के समर्थक थे उनमें अधिकांश अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त वैज्ञानिक, उच्च सरकारी अधिकारी, वकील आदि थे जो अंग्रेजी के शब्दों के अभ्यस्त होने के कारण हिंदी के नए शब्द सीखना नहीं चाहते थे। यद्यपि हिंदी में रचपच गए अंग्रेजी के वैज्ञानिक शब्दों को ग्रहण कर लेने के पक्ष में अधिकांश लोग सहमत थे लेकिन किस सीमा तक अंग्रेजी के शब्दों को सीधे ग्रहण किया जाए, इस पर मतभेद था। पुलिस, स्टेशन, रेडियो, प्लेटफॉर्म जैसे शब्दों को तो लिया ही जा सकता है, लेकिन क्या 'ब्लड', 'ट्रीटमेन्ट', 'कूलिंग-, 'पैरेलल' जैसे शब्दों को भी अंग्रेजी रूप में ही लेखन में ग्रहण किया जाए इसमें संदेह है। आज मौखिक स्तर पर हम भले ही बहुत से अंग्रेजी शब्दों का इस्तेमाल करते हों, लेखन में बहुत कम अंग्रेजी शब्दों को उन्हीं रूपों में हम लिखते हैं। हिंदी भाषा समाज ने इस विचारधारा को भी पूर्णत: स्वीकार नहीं किया।

20.5.4 समन्वयवादी विचारधारा

ये तीनों ही विचारधाराएँ अपने विचारों में अतिवादी थीं। भाषा-समाज ने इनको उसी सीमा तक स्वीकार किया जिस सीमा तक वे उस भाषा की प्रकृति में सहज रूप से समा सकती थीं। कोई भी भाषा-समाज न तो अतिशुद्धतावादी नियमों के आधार पर अपनी भाषा के शब्दों को परिवर्तित करता और न ही वह अपनी भाषा के सहज नियमों को तोड़मरोड़कर बनाए गए शब्दों को स्वीकार करता है। साथ ही वह अपनी भाषा को विदेशी शब्दों से अभिभूत भी नहीं करना चाहता। इसलिए विद्वान चाहे जो भी दिशा दें, भाषा-समाज की अपनी एक अव्यक्त आंतरिक नियमावली या प्रणाली होती है जो सहज और सम्यक दिशा की ओर अग्रसर होती है।

अत: शब्दावली के क्षेत्र में इस प्रकार की अराजकता को देखते हुए केन्द्रीय सरकार ने सन् 1961 में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की। इसका उद्देश्य यह था कि उक्त तीनों विचारधाराओं की उग्रवादिता के बीच एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाकर शब्दावली के निर्माण के ऐसे सिद्धांत निरूपित किए जाएं जो न केवल हिंदी बल्कि सभी भारतीय भाषाओं पर लागू हों। इसके पीछे मूल भाव यह था कि सभी भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक शब्दावली में यथासंभव समरूपता हो और उनमें अखिल भारतीयता की छाप हो।

अत: वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने उक्त तीनों विचारधाराओं से मूल तत्व ग्रहण किए और राष्ट्रीय लक्ष्य तथा भाषा-समाज की वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए मध्यम मार्ग अपनाया। इससे अंग्रेजी शब्दों को एक सीमा तक अपनाने का भी आग्रह है, हिंदुस्तानी तथा हिंदी-उर्दू के शब्दों को ग्रहण

करने का भी और संस्कृत के शब्दों और शब्द निर्माण प्रणाली को एक सीमा तक स्वीकार करने का आग्रह है। आगे के अनुच्छेद में हम इन सिद्धांतों पर कुछ अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे।

20.6 शब्दावली निर्माण के सिद्धांत तथा भाषिक युक्तियां

20.6.1 शब्दावली निर्माण के सिद्धांत

आप ऊपर पढ़ चुके हैं कि भारतीय भाषाओं की वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली में समरूपता लाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने 1961 में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की। इसे यह दायित्व भी सौंपा कि यह अखिल भारतीय स्तर पर वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण के ऐसे मार्गदर्शक सिद्धांत प्रतिपादित करे जिनके आधार पर हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली का निर्माण तथा विकास हो। आयोग ने राष्ट्र की सभी भाषाओं के प्रतिनिधियों, वैज्ञानिकों तथा भाषाविदों का सम्मेलन बुलाया और विविध विचारधाराओं के बीच संतुलित दृष्टिकोण अपनाते हुए कुछ सिद्धांत प्रतिपादित किए। इनमें से चार प्रमुख सिद्धांत नीचे दिए जा रहे हैं —

(1) अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को यथावत देवनागरी लिपि या भारतीय भाषाओं की अपनी लिपियों में ग्रहण कर लिया जाए, उनका अनुवाद न किया जाए। अंतर्राष्ट्रीय शब्दों के अंतर्गत से प्रमुख कोटियां शामिल हैं —

   क) तत्वों और यौगिकों के नाम, जैसे हाइड्रोजन, कार्बन-डाइआक्साइड आदि।

   ख) तौल और माप की इकाइयाँ जैसे मीटर, कैलोरी, एम्पियर आदि।

   ग) व्यक्तियों के नाम पर बने शब्द, जैसे मार्क्सवाद, ब्रेल, बायॅकाट, फारेनहाइट आदि।

   घ) वनस्पतिविज्ञान की द्विपदी नामावली।

   ङ) ऐसे शब्द जो भारतीय भाषाओं में रचपच गए हैं और आम प्रयोग में हैं, जैसे रेडियो, रडार, पेट्रोल, एलेक्ट्रान आदि।

   च) विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रतीक जो रोमन लिपि में अंतर्राष्ट्रीय रूप में ही रखे गए, जैसे cm।

   छ) अंकों के रोमन रूपों (1, 2, 3, 4) का प्रयोग, विशेषज्ञ: वैज्ञानिक लेखन में।

(2) अपनी भाषा के शब्द भंडार में उपलब्ध ऐसे शब्दों को जो अंग्रेजी के तकनीकी शब्दों के लिए पहले से ही प्रचलित हैं, पर्याय के रूप में स्वीकार कर लिया जाए, जैसे identification के लिए 'शिनाख्त' शब्द।

(3) आवश्यकतानुसार भारतीय भाषाओं से तकनीकी शब्द ग्रहण किए जाएं जिससे वैज्ञानिक शब्दावली को अखिल भारतीय रूप प्रदान किया जा सके।

(4) नए शब्दों के निर्माण के लिए संस्कृत शब्दों तथा धातुओं को आधार माना जाए।

(5) शब्दावली के चयन में उर्वर शब्दों को प्राथमिकता दी जाए। उर्वर शब्दों से प्रत्ययों तथा उपसर्गों के संयोग से अनेक शब्द व्युत्पन्न किए जा सकते हैं, जैसे 'विधि' से विधिवत, वैध, अवैध, विधान, विधायक, विधानसभा आदि। इसके विपरीत 'कानून' शब्द के केवल तीन-चार शब्द ही व्युत्पन्न हो सकते हैं, जैसे कानूनी, कानूनन, गैरकानूनी आदि।

वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने इस सिद्धांतों के आधार पर अब तक 5 लाख तकनीकी शब्द विकसित किए हैं जिनमें विज्ञान और टेक्नोलॉजी के शब्दों के अलावा सामाजिक विज्ञानों के सभी विषय शामिल हैं। इन शब्दों के प्रसार तथा अद्यतनीकरण के लिए एक कंप्यूटर-आधारित राष्ट्रीय शब्दावली बैंक की स्थापना की गई है जिसमें हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं के पर्यायों को

समाहित करने की भी क्षमता है। यह शब्दावली डाटा बैंक 'निकनेट' (NICNET) उपग्रह के साथ जोड़ा जाएगा जिससे देश भर में कंप्यूटर स्क्रीन पर तुरन्त किसी भी तकनीकी शब्द के भारतीय पर्याय उपलब्ध हो सकेंगे। इससे नए बने भारतीय तकनीकी शब्दों की जानकारी लोगों तक पहुँचेगी और इनका प्रयोग बढ़ेगा जिससे इन वैज्ञानिक शब्दों को सामाजिक स्वीकृत प्राप्त करने में मदद मिलेगी। शब्दावली आयोग द्वारा विकसित समस्त शब्दावली विभिन्न विषयों के पारिभाषिक शब्द संग्रहों के रूप में उपलब्ध हैं।

20.6.2 शब्दावली निर्माण की भाषिक युक्तियाँ

ऊपर बताए गए सिद्धांतों से शब्दावली निर्माण के कार्य को दिशा प्राप्त हुई, इसमें संदेह नहीं, लेकिन शब्दावली के निर्माण का वास्तविक कार्य भाषिक युक्तियों से ही संपन्न होता है। इसके लिए परंपरागत व्याकरणिक व्यवस्था को तो अपनाया ही जाता है, लेकिन कुछ नए प्रयोग भी करने की आवश्यकता पड़ती है। भारत में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्द-भंडार को विकसित करने के लिए 4 प्रमुख युक्तियों का सहारा लिया गया —

1) परंपरा से प्राप्त शब्दावली

हर भाषा में परंपरा से प्राप्त शब्द होते हैं जिनसे उस भाषा का शब्द-भंडार बनता है। यह शब्द-भंडार उस भाषा में सृजित ज्ञान-राशि से जुड़ा होता है। जिस देश में जिस ज्ञान का सबसे अधिक विकास होता है उस देश में उस ज्ञान से संबद्ध तकनीकी शब्दों का भंडार सबसे अधिक समृद्ध होता है। हमारे देश में धर्म, दर्शन, काव्यशास्त्र, सौंदर्य-शास्त्र, भाषाविज्ञान आदि सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी विषयों की एक समृद्ध परंपरा रही और इसलिए इन ज्ञान-क्षेत्रों से जुड़ी शब्दावली की भी एक दीर्घ परंपरा हमारे यहां मिलती है। विज्ञान के क्षेत्र में ऐसा नहीं है। चूँकि आधुनिक विज्ञान का जन्म पश्चिम में हुआ, इसलिए वैज्ञानिक शब्दावली का भंडार हमें परंपरा से प्राप्त न हो सका और हमें अंग्रेजी के आधार पर उनका नव-निर्माण करने को विवश होना पड़ा।

परंपरा से प्राप्त शब्दों के हमें मुख्यत: दो स्रोत मिलते हैं — संस्कृत तथा अरबी-फारसी। संस्कृत के आधार पर विकसित शब्दों के उदाहरण हैं :

भूमध्य रेखा	equator
शीतोष्ण	temperate
विषुवत् रेखा	terrestrial equator
त्रिकोण	triangle
वर्ग	square

अरबी-फारसी के शब्द भंडार से प्राप्त शब्दावली का एक बहुत बड़ा भाग विधि तथा प्रशासन से संबंधित है, जैसे -

शिनाख्त	identification
मुल्तवी	postponement
तसदीक	attestation
दस्तावेज़	document
आबकारी	excise

2) आगत शब्द

अंग्रेजी से आए अनेक वैज्ञानिक शब्द बिना अनुवाद के मूल रूप में ही ग्रहण कर लिए गए — केवल देवनागरी में उनका लिप्यंतरण कर दिया गया। यह लिप्यंतरण कहीं अंग्रेजी की प्रकृति के अनुसार किया गया और कहीं हिंदी की प्रकृति के अनुसार, यानी अंग्रेजी शब्दों को हिंदी के अनुसार अनुकूलित किया गया। यह व्यवस्था अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को यथावत अपनी भाषा में ग्रहण कर कर लेने के पूर्व उल्लिखित सिद्धांत के अनुकूल है। कहीं-कहीं आगत शब्दों को संकर रूप में भी ग्रहण किया गया है यानी आधा अंश अंग्रेजी का और आधा हिंदी का। इन तीनों प्रकारों के उदाहरण देखिए —

क) मूल रूप में अंग्रेजी शब्द : पेट्रोल, ऑक्सीजन, एसिड, फोटो, कार्बन, फ़िल्टर, सिगनल

ख) अंग्रेजी से अनुकूलित शब्द : अकादमी, तकनीक, अंतरिम, कामदी, त्रासदी

ग) संकर शब्द : मार्बल पत्र, आयनीकरण, वोल्टता (voltage) कोडीकरण, अपीलकर्ता

3) नए शब्दों का सृजन

जहाँ अंग्रेजी तकनीकी शब्दों के लिए कोई प्रचलित शब्द अपनी भाषा में उपलब्ध न हो वहाँ नए शब्दों का सृजन करने की आवश्यकता पड़ती है। नए शब्दों के सृजन के दो प्रमुख उपाय हैं -

क) पहले से ही भाषा के शब्द भंडार में उपलब्ध किसी अल्प प्रयुक्त शब्द को नए अर्थ में प्रतिष्ठित कर दिया जाए, जैसे संसद, जनगणना, ऊर्जा, वेग, बिजली आदि।

ख) किसी शब्द या धातु में उपयुक्त प्रत्यय और उपसर्ग का योग कर पूर्णत : नए शब्द का सजृन कर उसे अर्थ प्रदान किया जाए, जैसे अभियंता, प्रायोजित, परियोजना, संकाय आदि।

4) अनुवाद पर्याय

कुछ तकनीकी शब्दों की संकल्पना अपने में इतनी विशिष्ट होती है और शब्द के अर्थ के साथ इतने अभिन्न रूप से जुड़ी होती है कि उसे शब्द के अभिधार्थ से अलग करना मुश्किल होता है। दूसरी भाषा में उसके लिए जब पर्याय निर्धारित किया जाता है तो अनुवाद पद्धति का सहारा लेना पड़ता है। यह प्राय: शाब्दिक अनुवाद होता है लेकिन शाब्दिक अर्थ ही स्वयं इतना स्पष्ट होता है कि वह मूल भाषा के शब्द के तकनीकी अर्थ को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता है, जैसे -

हरित क्रांति	green revolution
वामपंथी	leftist
लाल फीताशाही	redtapism
कालाधन	black money

इस प्रकार आपने देखा कि अपनी शब्दावली का विकास करने के लिए किसी भी भाषा को अपने भाषिक परिवेश, सामाजिक यथार्थ तथा लक्षित उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए भाषा के भीतर से ही ऐसी युक्तियों का विकास करना पड़ता है जिनसे आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की भाषिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके और भाषा में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के निर्बाध विकास के लिए आवश्यक उपकरण प्राप्त हो सके।

अभ्यास 2

क) नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं जो कथ्य की दृष्टि से सही या गलत है। सही कथन के आगे (√) और गलत के आगे (×) का निशान लगाइए —

1. पंडित सुन्दरलाल अंग्रेजी तकनीकी शब्दों को यथावत ग्रहण करने के पक्ष में थे। ☐
2. व्यक्तियों के नाम पर बने तकनीकी शब्दों को अंतर्राष्ट्रीय शब्द माना गया। ☐
3. आयोग ने वैज्ञानिक लेखन में अंग्रेजी के अंक 1, 2, 3, 4 आदि और हिंदी के अंक १, २, ३, ४ आदि दोनों रूपों को मान्यता दी है। ☐
4. हिंदीभाषी समाज ने अंततः शुद्धतावादी विचारधारा को स्वीकार कर लिया। ☐
5. हमारे देश में विज्ञान विषयों की अपेक्षा सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी विषयों के तकनीकी शब्दों की परंपरा अधिक समृद्ध है। ☐
6. संस्कृत के शब्दों में शब्द व्युत्पन्न करने की उर्वरता बहुत सीमित है। ☐
7. 'परियोजना', 'राजपत्रित' तथा 'संकाय' शब्द नवनिर्मित हैं, पूर्वप्रचलित नहीं। ☐
8. जब अनुवाद के माध्यम से शब्दों का निर्माण किया जाए तो उसे अनुवाद पर्याय कहते हैं। ☐

ख) कोष्ठक में दिए उत्तरों में से कोई एक उत्तर सही है। जो सही उत्तर हो उसे रिक्त स्थान में लिखिए —

1. शुद्धतावादी विचारधारा के प्रवर्तक ..... थे।
(डा. रघुवीर/पंडित सुंदरलाल/प्रो. गज्जर)

2. ..... शब्द में प्रत्यय और उपसर्ग के माध्यम से अनेक शब्द व्युत्पन्न किए जा सकते हैं।
(विदेशी/हिंदुस्तानी/उर्वर)

3. वै.त. शब्दावली आयोग ने ..... लाख हिंदी तकनीकी शब्दों का विकास किया है।
(तीन/पाँच/चार)

4. 'हवाई जहाज' और 'विमान' शब्दों में से ..... शब्द अधिक उर्वर है।
(हवाई जहाज/विमान)

5. हिंदी के शब्द भंडार में विधि से संबद्ध तकनीकी शब्द अधिकांशतः ..... परंपरा से प्राप्त हुए हैं।
(अरबी-फारसी/संस्कृत/अंग्रेजी)

6. जिस शब्द का आधा अंश एक भाषा का हो और दूसरा आधा दूसरी भाषा का उसे ..... शब्द कहते हैं।
(आगत/संकर/परंपरागत)

ग) तीन-चार पंक्तियों में उत्तर दीजिए —

1) शब्दावली संबंधी चार विचारधाराओं और उनके प्रवर्तकों के नाम लिखिए।

.....

.....

2) भारत सरकार ने शब्दावली की अराजकता को दूर करने के लिए क्या किया ?

.....

.....

3) राष्ट्रीय शब्दावली बैंक से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

4) शब्द-निर्माण की चार युक्तियों के नाम गिनाइए और प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दीजिए।

.....

.....

घ) नीचे लिखे शब्दों के सामने उनके अंग्रेजी के पर्याय लिखिए —

1)	शिनाख्त	.....	6)	त्रिकोण	.....
2)	यातायात	.....	7)	तसदीक	.....
3)	ऊर्जा	.....	8)	भूमध्य रेखा	.....
4)	भौतिकी	.....	9)	परमाणु	.....
5)	हरित क्रांति	.....	10)	विकिरण	.....

20.7 सारांश

आपने इस पाठ में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के बारे में पढ़ा।

आपने पढ़ा कि -

- संरचना के स्तर पर सामान्य और वैज्ञानिक शब्द में कोई अंतर नहीं है, लेकिन अर्थ के स्तर पर दोनों में मिलता है।
- सामान्य तथा साहित्यिक शब्दों में अर्थ का विस्तार होता है जबकि वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों में अर्थ का संकोच होता है।
- तकनीकी शब्द हमेशा अभिधार्थ में ही समझे जाते हैं, लक्ष्यार्थ या व्यंग्यार्थ में नहीं। साहित्यिक शब्दों में लक्षण तथा व्यंजना का अधिकतम प्रयोग होता है।
- तकनीकी तथा वैज्ञानिक शब्दों के लक्षण हैं — अभिधार्थ प्रयोग, अर्थ की सूक्ष्मता, अर्थ भेदकता, विषय-सापेक्षता और अर्थरूढ़िता।
- अर्थ की स्पष्टता के आधार पर वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दों को दो स्थूल वर्गों में बांटा जा सकता है — पारदर्शी तथा अपारदर्शी।
- तकनीकीपन की मात्रा की दृष्टि से तकनीकी शब्दों को दो स्थूल वर्गों में बांटा जा सकता है — पूर्ण तकनीकी और अर्ध तकनीकी।

- विज्ञान की दृष्टि से विकसित पश्चिमी देशों में वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण का कार्य प्राकृतिक प्रक्रिया से संपन्न हुआ। भारत तथा अन्य विकासशील देशों में यह कार्य नियोजित प्रक्रिया से संपन्न हुआ।
- भारत में शब्दावली निर्माण कार्य में योगदान देने वाले प्रमुख विद्वान या संस्थाएं इस प्रकार हैं — प्रो. टी.के. गुज्जर, नागरी प्रचारिणी सभा, डा. रघुवीर, हिंदुस्तानी कल्चर सोसायटी तथा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- हिंदी शब्दावली के निर्माण कार्य को प्रभावित करने वाली चार प्रमुख विचारधाराएँ इस प्रकार रहीं — शुद्धतावादी विचारधारा, हिंदुस्तानी विचारधारा, अंग्रेजीवादी विचारधारा, समन्वयवादी विचारधारा।
- वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने पहली बार मानक तकनीकी शब्दावली के निर्माण के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत बनाए, जिनमें प्रमुख हैं — अंतर्राष्ट्रीय शब्दों का ग्रहण, परंपरा से प्राप्त प्रचलित शब्दों का चयन, भारतीय भाषाओं के तकनीकी शब्दों के बीच आदान-प्रदान और संस्कृत को आधार मानकर नए शब्दों का निर्माण।
- हिंदी के शब्दावली निर्माण में चार भाषिक युक्तियों का प्रयोग किया गया। परंपरा से प्राप्त शब्दावली, आगत शब्दों का ग्रहण, नए शब्दों का सृजन और अनुवाद पर्याय।

20.8 शब्दावली

शब्द-संरचना
उपसर्ग
प्रत्यय
व्याकरणिक विधान
लक्षणा
व्यंजना
अभिधा
अर्थछटा
अर्थ भेदकता
विषय सापेक्षता
अर्थरूढ़िता
पारदर्शी शब्द
अपारदर्शी शब्द
मिथ्यानाम
पूर्ण तकनीकी
अर्ध तकनीकी
प्राकृतिक विकास प्रक्रिया
नियोजित विकास-प्रक्रिया
इलेक्ट्रानिक न्यूज
राष्ट्रीय शब्दावली बैंक
मानकीकरण
शुद्धतावादी
हिन्दुस्तानीवादी
अंग्रेजीवादी
समन्वयवादी
भाषिक परिदृश्य
भाषिक परंपरा
आगत शब्द
शब्द सृजन
अनुवाद पर्याय

20.9 उपयोगी पुस्तकें

1. *हिंदी भाषा : संदर्भ और संरचना* (1991) साहित्य सहकार, ई/10-4, कृष्णनगर, दिल्ली-110005

2. *बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह* (मानविकी और सामाजिक विज्ञान) खंड-I और II (1992) वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग, पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-110066 (इस कोश की भूमिका पढ़ें)

20.10 अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास 1

क) 1) सही 2) सही 3) गलत
4) गलत 5) गलत 6) गलत
7) सही

ख) 1) अर्थ 2) सूक्ष्म 3) संकोच
4) विशेषज्ञों 5) परिभाषा 6) पारदर्शी
7) सीमित 8) वैज्ञानिक

ग) इकाई से स्वयं जाँच करें।

अभ्यास 2

क) 1) गलत 2) सही 3) गलत 4) गलत
5) सही 6) गलत 7) सही 8) सही

ख) 1) डा. रघुवीर 2) उर्वर 3) पाँच
4) विमान 5) अरबी-फारसी 6) संकर

ग) इकाई से स्वयं जाँच करें।

घ) 1) identification 2) traffic 3) energy 4) physics
5) green revolution 6) triangle 7) attestation 8) equator
9) atom 10) radiation

इकाई 21 पर्याय निर्धारण, शब्द निर्माण और प्रयोग

इकाई की रूपरेखा

21.0 उद्देश्य
21.1 प्रस्तावना
21.2 पर्याय का स्वरूप
  21.2.1 बहुपर्यायता
  21.2.2 अनुवाद प्रक्रिया का प्रभाव
  21.2.3 प्रयोक्ता का भाषाज्ञान
  21.2.4 शैलीगत भेद
21.3 पर्याय-निर्धारण
  21.3.1 समतुल्यता
    (क) अर्थ व्याप्ति
    (ख) प्रयोग वितरण
    (ग) सांस्कृतिक संदर्भ
  21.3.2 पर्याय-निर्धारण की स्थितियां
    (क) लेखक/अनुवादक के स्तर पर पर्याय निर्धारण
    (ख) पूर्वनियोजित पर्याय-निर्माण
21.4 शब्द निर्माण
  21.4.1 अर्थ-परिवर्तन द्वारा
    (क) अर्थ विस्तार
    (ख) अर्थ प्रतिस्थापन
  21.4.2 रूप परिवर्तन द्वारा
  21.4.3 अनुवाद पद्धति द्वारा
  21.4.4 शब्द लिप्यंतरण द्वारा (शब्द ग्रहण)
21.5 शब्दावली प्रयोग
  21.5.1 प्रयोग ग्राह्यता
  21.5.2 प्रयोग प्रसार के लिए किए जा रहे उपाय
21.6 सारांश
21.7 शब्दावली
21.8 उपयोगी पुस्तकें
21.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

21.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- तकनीकी शब्द और तकनीकी पर्याय के स्वरूप के बीच अंतर समझ सकेंगे,
- पर्याय निर्धारण करते समय समतुल्यता के महत्व को समझ सकेंगे,
- दो भाषाओं के तकनीकी शब्दों के अर्थों के बीच समतुल्यता के प्रकारों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे,
- पर्याय निर्धारण की प्रक्रिया में अर्थ व्याप्ति, प्रयोग वितरण और सांस्कृतिक संदर्भ का महत्व समझ सकेंगे,
- तकनीकी शब्द निर्माण की विभिन्न विधियों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे,
- तकनीकी शब्दावली की प्रयोग ग्राह्यता के लक्षणों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे,
- भारत में तकनीकी शब्दावली के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे उपायों के बारे में जान सकेंगे।

21.1 प्रस्तावना

आपने पिछली इकाई (20.6.2) में पढ़ा कि भारत में तकनीकी शब्दावली निर्माण के कुछ सिद्धांत बताए गए हैं। इन सिद्धांतों में सभी तरह की विचारधाराओं का संतुलन है — इनमें अंग्रेजी के शब्दों को ग्रहण करने तथा हिंदी-हिंदुस्तानी, उर्दू तथा परंपरा में प्राप्त शब्दों को स्वीकारने का आग्रह है। इसमें संस्कृत के आधार पर नई शब्दावली बनाने का भी निर्देश है।

इस इकाई में हम देखेंगे कि लक्षण और स्वरूप की दृष्टि से मूल तकनीक शब्द और उसके पर्यायों में क्या अंतर है। हम यह भी देखेंगे कि दूसरी भाषा में तकनीकी पर्याय निर्धारित करते समय हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। इस इकाई में आप यह भी पढ़ेंगे कि भाषा की किन युक्तियों का सहारा लेकर नए शब्दों का निर्माण किया जाता है। किस प्रकार अर्थ को विस्तृत तथा संकुचित कर शब्द को नया अर्थ दिया जाता है और किस प्रकार प्रत्ययों और उपसर्गों की सहायता से नए शब्द बनाए जाते हैं। हम यह भी पढ़ेंगे कि नए तकनीकी शब्दों के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए क्या-क्या उपाय किए जा रहे हैं और वे कौन-कौन से तत्व हैं जो नए तकनीकी शब्दों को प्रयोगसिद्ध बनाने में सहायक होते हैं।

21.2 पर्याय का स्वरूप

एक ही भाषा में समान अर्थ का बोध कराने वाले शब्द को हम सामान्यत: "पर्याय" कहते हैं, जैसे पानी, जल, नीर आदि शब्द हिंदी में एक दूसरे के पर्याय कहलाते हैं। एक भाषा के किसी शब्द के समान अर्थ का बोध कराने वाले दूसरी भाषा के शब्द को **समानार्थी शब्द** (equivalent) कहा जाता है, जैसे Post office का हिंदी समानार्थी शब्द है "डाकघर", economic का अर्थशास्त्र। अनुवाद के संदर्भ में कभी-कभी "पर्याय" तथा "समानार्थी शब्द" एक ही अर्थ में भी प्रयुक्त होते हैं, जैसे अंग्रेजी शब्द post office का हिंदी पर्याय "डाकघर" है। हम यहां दोनों शब्दों का प्रयोग समान अर्थ में करेंगे।

जब हम किसी भाषा में मौलिक रूप से विकसित **तकनीकी शब्द** के लिए दूसरी भाषा में समान अर्थ देने वाले शब्द का चयन या निर्माण करते हैं तो हम उसे **तकनीकी पर्याय** कहते हैं। मौलिक तकनीकी शब्द के लिए पर्याय या समानार्थी शब्द निर्धारित करने की यह प्रक्रिया उतनी सरल नहीं जितनी दिखाई देती है क्योंकि दोनों के स्वरूप में कुछ भिन्नता है।

21.2.1 बहुपर्यायता

जब किसी तकनीकी संकल्पना या वस्तु के लिए पहली बार किसी नाम का प्रयोग होता है तो वही नाम उसका रुढ़ शब्द (term) हो जाता है।

नया नाम तथा शब्द देने का यह कार्य वही वैज्ञानिक या चिंतक करता है जिसने उस संकल्पना या वस्तु की खोज की। उदाहरण के लिए, "कंप्यूटर", "फ्लापी" "प्रोग्राम", "हार्डवेयर", "साफ्टवेयर" आदि शब्दों का निर्धारण उन्हीं कंप्यूटर वैज्ञानिकों ने किया जिन्होंने इन वस्तुओं का अन्वेषण किया। इन तकनीकी शब्दों या नामों को भाषा-समाज निर्विवाद स्वीकार कर लेता है। इसके विपरीत, मौलिक तकनीकी शब्दों के लिए दूसरी भाषा में पर्यायों का निर्धारण करने वाला व्यक्ति वैज्ञानिक खोजकर्ता नहीं, बल्कि अनुवादक, लेखक या विषय विशेषज्ञ होता है जो एक भाषा के तकनीकी ज्ञान को दूसरी भाषा में लाने की प्रक्रिया से जुड़े हैं। इस प्रक्रिया में मूल तकनीकी शब्द का नहीं, बल्कि तकनीकी पर्यायों का निर्माण होता है। अत: सही तकनीकी पर्याय क्या हो इस विषय पर विद्वानों के बीच विवाद संभव है। फलस्वरूप एक ही मूल तकनीकी शब्द के लिए एक से अधिक पर्याय या विकल्प एक साथ सामाजिक स्वीकृति में बाधक हो सकते हैं।

21.2.2 अनुवाद प्रक्रिया का प्रभाव

तकनीकी शब्द और उनके पर्यायों की निर्माण प्रक्रिया को हम इस प्रकार चित्रित कर सकते हैं :

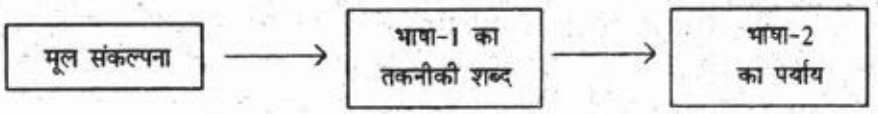

आप पाएंगे कि भाषा-1 का तकनीकी शब्द मूल संकल्पना से सीधे जुड़ा है जबकि भाषा-2 का पर्याय भाषा-1 के तकनीकी शब्द से सीधे जुड़ा है। इसका कभी-कभी एक दुष्परिणाम यह होता है कि बिना मूल भाव को समझे भी पर्याय बना दिया जाता है जो ठीक नहीं। उदाहरण के लिए, कंप्यूटर के Programme शब्द के लिए हिंदी का "कार्यक्रम" शब्द बिना सोचे-समझे किया गया अनुवाद है। Programme का वास्तविक अर्थ है "एक क्रम से दिए गए आदेश" जिसके लिए "क्रमादेश" शब्द अर्थ के अधिक निकट है।

कई बार लगातार प्रयोग के कारण अनुवाद पर्याय को भाषा-समाज स्वीकार भी कर लेता है, जैसे कालाधन (black money), स्वर्ण जयंती (golden jubilee), श्वेत पत्र (white paper), वायु प्रदुषण (air pollution), पीत पत्रकारिता (yellow journalism) आदि। इससे हम इस निष्कर्ष पर पंहुचते हैं कि पर्याय के निर्धारण में हम कई बार उसी प्रक्रिया से गुजरते हैं जिस प्रक्रिया से हम अनुवाद करते समय गुजरते हैं। "पर्याय" शब्द का तात्पर्य ही यह है कि उसी अर्थ के लिए कोई दूसरा शब्द पहले से मौजूद है और हमें उस शब्द के लिए एक दूसरा शब्द चाहिए जिसमें अनुवाद प्रक्रिया की प्रमुख भूमिका रहती है।

21.2.3 प्रयोक्ता का भाषाज्ञान

तकनीकी पर्यायों का निर्धारण करते समय उन पाठकों के भाषा ज्ञान को ध्यान में रखना जरूरी होता है जिनके प्रयोग के लिए ये पर्याय बनाए जा रहे हैं। यदि ऐसा न किया गया तो हो सकता है कि मनोवैज्ञानिक या भाषा संबंधी कारणों से वे पर्याय उन्हें स्वीकार्य न हों। उदाहरण के लिए भारत के संदर्भ में इन तथ्यों को ध्यान में रखना जरूरी है — पाठक को अपनी भाषा के शब्द भंडार का कितना परिचय है, वह भाषा के लिखित साहित्य से कितना परिचित है, उसे संस्कृत, उर्दू तथा अंग्रेजी शब्दों और रूपों की कितनी जानकारी है? वह उच्च साहित्य के अध्ययन व लेखन के लिए किस भाषा का व्यवहार करता है? वह तकनीकी शब्दों के अंग्रेजी रूपों से कितना पूर्व परिचित है? क्या उस भाषा में वैज्ञानिक तथा विषय संबंधी तकनीकी ज्ञान साहित्य की कोई दीर्घ परंपरा रही है या पहली बार उस भाषा में नया ज्ञान विदेशी भाषा से ग्रहण किया जा रहा है। इन्हीं तथ्यों को नजर अंदाज करने के कारण कई संस्कृतनिष्ठ तकनीकी शब्द आज तक पूरी तरह व्यवहार में नहीं आ सके।

21.2.4 शैलीगत भेद

अंग्रेजी तकनीकी शब्दों के हिंदी पर्यायों के तीन रूप हमें मिलते हैं — एक, जहां एक अंग्रेजी शब्द के लिए एक ही पर्याय होता है, जैसे energy ऊर्जा, no-confidence motion अविश्वास प्रस्ताव, constitution संविधान आदि। दूसरे, जहां एक तकनीकी शब्द के लिए हिंदी-उर्दू शैली के दो पर्याय एक साथ प्रयोग में मिलते हैं, जैसे identification "पहचान/शिनाख्त", aeroplane "वायुयान/विमान/हवाईजहाज", document "प्रलेख/दस्तावेज" आदि। तीसरे, जहां एक ही तकनीकी शब्द के लिए अंग्रेजी तथा हिंदी के शब्द दोनों प्रचलित हैं जैसे acid "एसिड/अम्ल", engineer "इंजीनियर/अभियंता" आदि।

21.3 पर्याय-निर्धारण

किसी भी शब्द के सामान्यत: प्रकट तथा अप्रकट दो अर्थ संभव हैं। तकनीकी शब्द की यह विशेषता है कि उसमें प्रकट अर्थ की तुलना में अप्रकट अर्थ अधिक होता है। इस अप्रकट अर्थ को संबंधित विषय

का जानकार या विशेषज्ञ ही समझ सकता है। यह अप्रकट अर्थ परिभाषा के जरिए ही स्पष्ट होता है। परिभाषा लक्षणों का समूह या पुंज है। तकनीकी शब्द अपने प्रकट अर्थ में उन विभिन्न लक्षणों में से किसी एक या दो लक्षणों को ही व्यक्त कर पाता है। शेष अर्थ शब्द के गर्भ में निहित रहता है।

उदाहरण के लिए, crossed cheque "रेखित चेक" का वास्तविक अर्थ क्रास्ड या रेखायुक्त चैक नहीं, बल्कि एक ऐसा चेक है जिसकी बाईं ओर ऊपर दो समानांतर रेखाएं खिंची हों जिनके बीच "& co". या "a/c payee" लिखा हो और जिसका भुगतान उसी व्यक्ति को या उसी खाते में हो सकता है। जिसका नाम चेक में लिखा हो आदि। रेखित चेक के इतने सारे लक्षण हैं जो शब्द के बाहरी आवरण से प्रकट नहीं होते। ये लक्षण उस शब्द की परिभाषा में निहित हैं। "रेखित चेक" के इन सभी लक्षणों में से शब्द बनाने वाले ने नामकरण के लिए केवल एक लक्षण चुना "रेखा का खिंचा" होना। शेष लक्षण छोड़ दिए। अधिकांश तकनीकी शब्द अपने प्रकट अर्थ के रूप में केवल एक दो ही लक्षणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। शेष लक्षण उस शब्द में आरोपित होते हैं। इस तरह "ओवरड्राफ्ट", "कंप्यूटर वाइरस", "लालफीताशाही", "श्वेत पत्र", दूरदर्शन, आकाशवाणी आदि अनेक शब्द अपने संपूर्ण अर्थ-लक्षणों में से किसी एक या दो लक्षणों को ही प्रकट रूप से व्यक्त करते हैं।

अत: जब किसी मूल तकनीकी शब्द के लिए दूसरी भाषा में पर्याय निर्धारित करने की कोशिश करते हैं तो हमारा प्रयास होता है कि हम जहां तक हो मूल भाषा के तकनीकी शब्द के प्रकट तथा अप्रकट दोनों अर्थों का बोध कराने वाला पर्याय चुनें। कभी ऐसा करना संभव हो जाता है और कभी नहीं हो पाता। हर भाषा की अपनी प्रकृति होती है। इस तरह हर भाषा के शब्दों की अभिव्यक्ति प्रणाली और अर्थ का दायरा अलग-अलग हो सकता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी के general शब्द के अर्थ का दायरा इतना व्यापक है कि इसके सभी अर्थ को व्यक्त करने के लिए हिंदी में कम से कम छ-सात पर्यायों की जरूरत पड़ती है। देखिए :

अंग्रेजी	हिंदी		
General	आम	General election	आम चुनाव
	सामान्य	General Principles	सामान्य सिद्धांत
	साधारण	General body Meeting	साधारण सभा की बैठक
	सार्वजनिक	General good	सार्वजनिक हित
	प्रधान	General editor	प्रधान संपादक
	महा	Secretary General	महासचिव
	जनरल	General (army)	जनरल

21.3.1 समतुल्यता

ऊपर के उदाहरणों में आपने यह देखा कि दो भाषाओं के समानार्थी शब्द पूर्णत: समान (identical) नहीं होते, वे एक दूसरे के समतुल्य (equivalent) होते हैं। दूसरे शब्दों में, स्रोत भाषा के तकनीकी शब्द के समूचे अर्थ को लक्ष्य भाषा के समानार्थी शब्द में नहीं लाया जा सकता। उनमें अर्थ का निकटतम सादृश्य होता है। अर्थ के इस निकटतम सादृश्य को **समतुल्यता** कहा जाता है। समानार्थी शब्दों का निर्माण या निर्धारण करते समय यह प्रयास रहता है कि दोनों शब्दों के बीच अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से अधिक से अधिक समानता या सादृश्य हो। कुछ समानार्थी शब्दों के संदर्भ में यह समतुल्यता अधिक हो सकती है और कुछ के संदर्भ में कम। यह भी संभव है कि एक संदर्भ में एक पर्याय सटीक या उपयुक्त प्रतीत हो और वही पर्याय संदर्भ में उपयुक्त न हो और वहां किसी दूसरे पर्याय की जरूरत पड़े, जैसे ऊपर के उदाहरणों में "general" शब्द के विभिन्न पर्याय।

दो पर्यायों के बीच समतुल्यता का यह सापेक्षिक अंतर प्रमुख रूप से तीन स्तरों पर दिखाई देता है — अर्थ व्याप्ति, प्रयोग वितरण तथा सांस्कृतिक संदर्भ।

(क) **अर्थ-व्याप्ति :** भाषा को मूल रूप से संकल्पनाओं का एक जाल कहा गया है। शब्द से पहले संकल्पना या वस्तु का जन्म होता है। इन संकल्पनाओं, भावों तथा वस्तुओं के लिए हम शब्दों का प्रयोग करते हैं। फलस्वरूप प्रतीक रूप में प्रयुक्त ये शब्द अर्थयुक्त हो जाते हैं। भाव तथा संकल्पनाएं सार्वभौम होती हैं। दुख, सुख, क्रोध, शर्म आदि भावों की अनुभूति हर भाषा-समाज में होती है। हर भाषा-समाज के मूल कार्य-व्यापार भी लगभग समान होते हैं, जैसे दौड़ना, खाना, पीना, हंसना, रोना, लिखना आदि। अधिकांश वस्तुएं या प्राणी भी हर समाज में होते हैं, जैसे पेड़, पौधे, मकान, दूध, पानी, कुत्ता, गाय आदि। इन सभी संकल्पनाओं के लिए हर भाषा-समाज में कोई न कोई नाम या शब्द होता है। यह नाम या शब्द हर भाषा में अलग-अलग हो सकता है, लेकिन इस शब्द से जो अर्थ व्यक्त होता है वह लगभग समान होते हुए भी पूर्णत: समान नहीं होता । ऐसा इसलिए कि हर भाषा-समाज की अपनी भौगोलिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विशिष्टता होती है जो भाषा में प्रतिबिंबित होती है। फलस्वरूप उस भाषा-समाज में एक विशिष्ट प्रकार का बोध विकसित होता है। अत: संकल्पनाओं की मूल समानता के बावजूद शब्द द्वारा प्रकट अर्थ में थोड़ा-बहुत अंतर रहता है।

उदाहरण के लिए, "गाय" का अंग्रेजी पर्याय cow है, लेकिन "गाय" शब्द से हिंदी भाषा-भाषी के मन में जो चित्र उभरता है वह उस गाय का है जो प्राय: सफेद रंग की होती है, जिसे गाय माता के रूप में पूजा जाता है और जो गांवों, जंगलों या सड़कों पर विचरण करती हैं "cow" शब्द से अंग्रेजी भाषी के मन में जो चित्र उभरता है वह ऐसी गाय का है जो लंबी-चौड़ी और काली-सफेद होती है जो प्राय: डेयरी में पाली जाती है और जिसके मांस का सेवन किया जाता है। अत: cow तथा गाय की संकल्पना लगभग समान होते हुए भी दोनों भाषाओं में इनका अर्थबोध आंशिक भिन्नता लिए हुए हैं।

इसी प्रकार हिंदी में "शोक" शब्द से जिस अर्थ का बोध होता है वह अंग्रेजी के किसी एक शब्द से पूर्णत: व्यक्त नहीं हो सकता। इसके अंग्रेजी पर्याय के रूप में mourning से जो प्रयोगगत अर्थ व्यक्त होता है उसे "शोक" शब्द पूर्णत: व्यक्त नहीं कर सकता। अत: जिन-जिन अर्थों तथा संदर्भों में हिंदी के "शोक" शब्द का प्रयोग-विस्तार है उन संदर्भों में अंग्रेजी में एकाधिक शब्दों का प्रयोग करने की जरूरत पड़ सकती है जैसे morning, grief, bereavement, condolence आदि। इस तथ्य को हम इस प्रकार चित्रित का सकते हैं:

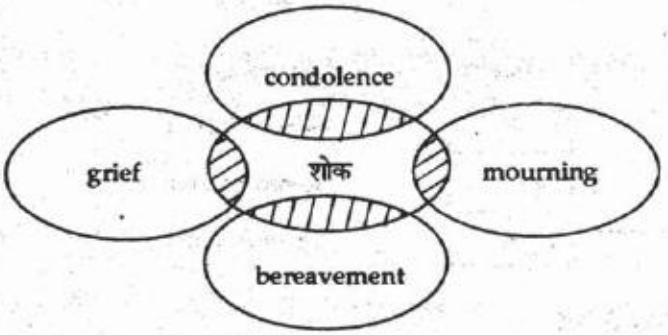

शोक मनाना	to observe mourning
शोक सभा	condolence meeting
शोकसंतप्त परिवार	bereaved family
बड़े शोक के साथ	with great grief

इस चित्र से आपको यह स्पष्ट होगा कि हिंदी के शब्द "शोक" की पूर्ण अर्थ-व्याप्ति को अंग्रेजी के चार पर्याय आंशिक रूप से व्यक्त कर पाते हैं।

(ख) **प्रयोग वितरण:** कुछ शब्दों के अर्थों के विभिन्न आयाम प्रयोग के बाद ही प्रस्फुटित होते हैं। इस कोटि के शब्द हर तरह के शब्दों की संगति में नहीं प्रयुक्त हो सकते, केवल कुछ शब्दों के साथ

ही इनका प्रयोग संभव है जहां इनका अर्थ विशिष्ट और एकांतिक हो जाता है। शब्दों की इस प्रकार साथ-साथ प्रयोग की प्रवृत्ति **सहप्रयोग** कहलाती है। वाक्यों में ऐसे शब्दों का वितरण नियंत्रित और सुनिश्चित होता है। उदाहरण के लिए, हिंदी शब्द "प्रकांड" अपने साथ "विद्वान" या "पंडित" की आकांक्षा करता है, जैसे "प्रकांड विद्वान" इसका अंग्रेजी समानार्थी शब्द "profound scholar" सटीक है लेकिन अंग्रेजी के profound ocean के लिए "प्रकांड सागर" स्वीकार्य नहीं। सहप्रयोग के इसी प्रकार के अन्य उदाहरण देखिए :

रमणीक स्थल	(लड़की/कमरा स्वीकार्य नहीं)
मंथर गति	(आवाज स्वीकार्य नहीं)
गगनचुंबी अट्टालिका/पर्वत	(विमान, बादल स्वीकार्य नहीं)

इसी प्रकार हिंदी शब्द "शुभ" के प्रयोग-वितरण को अंग्रेजी के संदर्भ में देखिए:

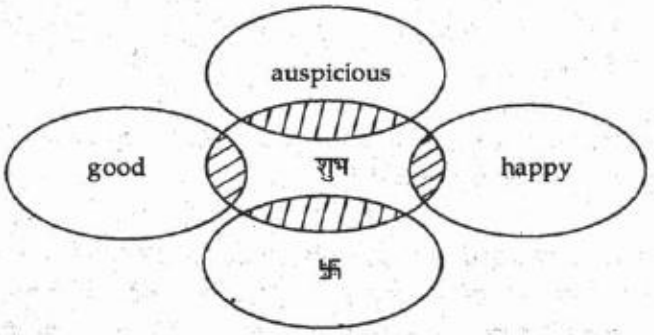

हिंदी	अंग्रेजी		प्रयोग
शुभ	auspicious	शुभ अवसर	auspicious occasion
	happy	शुभ दीवाली	Happy Diwali
	卐	शुभ नाम	name
	good	शुभ समाचार	good news
	卐	शुभ लक्ष्मी	

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि शब्दों का विभिन्न परिवेशों में वितरण अर्थ को नया आयाम देता है। यह वितरण पैटर्न दो भाषाओं में समान हो यह जरूरी नहीं। इसलिए दो पर्यायों के बीच परस्पर वितरण समतुल्यता में अंतर आना स्वाभाविक है।

(ग) **सांस्कृतिक संदर्भ** : हर भाषा में कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका अर्थ उस भाषा समाज की संस्कृति से बड़ी निकटता से जुड़ा रहता है, जैसे कर्मकांड, लक्ष्मण-रेखा, यज्ञोपवीत, मुंडन, सगाई, मंगनी, गौपूजन, फेरा, मांग, सिंदूर आदि। ऐसे शब्दों के अर्थ बिना सांस्कृतिक पृष्ठभूमि या व्याख्या के पूर्णत: स्पष्ट नहीं किए जा सकते। इसलिए ऐसे शब्दों के लिए दूसरी भाषा में समानार्थी शब्द निर्धारित करना सबसे कठिन होता है क्योंकि इनके बीच समतुल्यता का निर्धारण अर्थ के स्तर पर कम और सांस्कृतिक बोध के स्तर पर ज्यादा होता है। ऐसे शब्द अक्सर मुहावरों या अभिव्यक्तियों के रूप में आते हैं जहां इनके समानार्थी पर्याय दूसरी भाषाओं में सामान्यत: उपलब्ध नहीं होते, जैसे गोद भरना, मांग भरना, गंगा नहाना, जल चढ़ाना आदि। इसी प्रकार अंग्रेजी के संस्कृतिपरक शब्दों के समानार्थी रूप हिंदी में उपलब्ध नहीं होते, जैसे To kiss, good-bye, bestman, to confess (before the priest).

इस कोटि के शब्दों के लिए दूसरी भाषा में समानार्थी शब्दों का निर्धारण करते समय शब्दानुवाद संभव नहीं, बल्कि शब्द के भाव तथा प्रभाव को ध्यान में रखते हुए व्याख्यात्मक पर्याय का चयन करने की

आवश्यकता पड़ती है, जिनके विकल्प एक से अधिक भी हो सकते हैं, जैसे

पाँव भारी होना — to be pregnant

गंगा नहाना
a) to go to the ganges
b) to bathe in the ganges to wash away to the sins
c) to swim in the ganges to wash away the sins
d) to wash the sins in the ganges

ध्यान रहे कि इस कोटि के शब्द सामान्यत: साहित्यिक पाठों में आते हैं, तकनीकी तथा वैज्ञानिक पाठों में नहीं।

21.3.2 पर्याय-निर्धारण की स्थितियां

पिछले अनुच्छेद में आपने देखा कि पर्याय-निर्धारण करते समय किस प्रकार दोनों भाषाओं के तकनीकी शब्दों के बीच अधिक से अधिक अर्थ सादृश्य या समतुल्यता लाने की कोशिश की जाती है। इस अनुच्छेद में आप देखेंगे कि किन स्थितियों में और किस प्रकार पर्यायों के निर्माण तथा निर्धारण की आवश्यकता पड़ती है।

पर्यायों का निर्धारण सामान्यत: दो स्थितियों में होता है — (क) में लेखक/अनुवाद के स्तर पर पर्याय निर्धारण, ओर (ख) पूर्व नियोजित शब्दावली निर्माण —

(क) **लेखक/अनुवाद के स्तर पर पर्याय निर्धारण** : तकनीकी लेखन/अनुवाद के दौरान दूसरी भाषा के तकनीकी शब्दों के लिए लेखक या अनुवाद को उपयुक्त/पर्याय की आवश्यकता पड़ती है। यदि उन शब्दों के लिए पहले से कोई पर्याय प्रचलित है या मानक पारिभाषिक शब्दकोशों में उपयुक्त पर्याय उपलब्ध हैं तो वह उनका उपयोग करता है। यदि उसे ऐसे उपयुक्त पर्यायों की जानकारी नहीं है या उसे कोशों में वे पर्याय उपलब्ध नहीं होते तो उसे स्वयं तकनीकी पर्याय बनाने या निर्धारित करने की आवश्यकता पड़ती है। इस प्रकार लेखक तथा अनुवादक पर एक अतिरिक्त जिम्मेदारी आ जाती है। इस प्रकार बने पर्यायों का गुण यह है कि ये पर्याय वाक्य तथा संदर्भ से जुड़कर बनते हैं, इन्हें प्रयोग-परीक्षण का अवसर मिलता है और इसलिए प्राय: अधिक व्यावहारिक और बोधगम्य होते हैं। ऐसे पर्यायों का दोष यह होता है कि ये व्यक्तिनिष्ठ होते हैं और मानकता की कसौटी पर कभी कभी खरे नहीं उतरते। एक ही तकनीकी शब्द के लिए अलग अलग लेखक तथा अनुवादक अलग अलग पर्याय निर्धारित कर सकते हैं। फलस्वरूप पर्यायों की समरूपता, जो तकनीकी शब्दों का सबसे बड़ा लक्षण है, नष्ट हो जाती है जिससे शब्दावली के प्रयोग में अराजकता फैल सकती है। उदाहरण के लिए, executive engineer के लिए हिंदी में "कार्यपालक अभियंता", "कार्यकारी अभियंता" और "अधिशासी अभियंता" तीनों विकल्प मिलते हैं जो स्थानीय स्तर पर बने हैं। इसी प्रकार bearer के लिए (जैसे bearer cheque) धारक तथा वाहक दोनों का प्रयोग मिलता है जो भ्रामक है।

(ख) **पूर्वनियोजित पर्याय-निर्माण** : यदि कोई भाषा समाज किसी अन्य भाषा समाज द्वारा विकसित नए ज्ञान को बड़े पैमाने पर अपनी भाषा में ग्रहण या रूपांतरित करने का निर्णय लेता है तो आवश्यक तकनीकी पर्यायों के निर्माण को पूर्वनियोजित करने की आवश्यकता पड़ती है। यह कार्य प्राय: किसी विद्वत समाज, संस्था या शासकीय प्रयास द्वारा किया जाता है। इसका उद्देश्य यह होता है कि तकनीकी लेखकों तथा अनुवादकों की सुविधा के लिए पहले से नए तकनीकी शब्दों के लिए सुविचारित ढंग से पर्याय निर्धारित या निर्मित कर दिए जाते हैं जिन्हें पारिभाषिक शब्द संग्रह के रूप में उपलब्ध कराया जाता है। इस प्रकार बने पर्यायों का गुण यह है कि तकनीकी पर्यायों के प्रयोग में समरूपता बनी रहती है, और पर्यायों के निर्माण में पद्धति तथा सिद्धांत संबंधी एकरूपता रहती है जिससे उन्हें प्रामाणिक तथा मानक बनाना आसान हो जाता है। ऐसे पर्याय व्यक्ति सापेक्ष नहीं, विषय सापेक्ष होते हैं जिससे इनका प्रयोग क्षेत्र अधिक व्यापक हो जाता है। ऐसे पर्यायों का दोष यह है कि

संदर्भ और प्रयोग से कटे होने के कारण इस प्रकार बने कई शब्द कृत्रिम और अव्यावहारिक होते हैं। यदि इन शब्दों का बार-बार प्रयोग होता रहा तो ये प्रचलन में आ जाते हैं लेकिन यदि उन्हें प्रयोग का पर्याप्त अवसर नहीं मिला तो उन्हें सामाजिक स्वीकृति मिलने में कठिनाई होती है।

हिंदी के संदर्भ में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग को यह दायित्व दिया गया है कि वह विधि को छोड़कर ज्ञान जगत के सभी विषयों से संबंधित हिंदी तकनीकी शब्दावली का मानकीकरण व निर्धारण करे जिससे तकनीकी शब्दों के प्रयोग में समरूपता लाई जा सके।

स्मरण रहे कि पर्याय निर्धारण के कार्य में जनसंचार माध्यमों की भी एक विशिष्ट भूमिका है। समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, टेलीविजन, रेडियो आदि में कुछ खास विषय क्षेत्रों से संबंधित नए तकनीकी शब्द बड़ी तेज गति से आ रहे हैं। भारतीय भाषाओं में इनके लिए तुरंत पर्याय बनाने की जरूरत पड़ती है क्योंकि अनेक शब्द पारिभाषिक कोशों तथा शब्द संग्रहों में उपलब्ध नहीं होते या अनुवादकों को उनकी जानकारी नहीं होती। ऐसे मौकों पर पर्याय बनाते समय अधिक सोच विचार करने का समय नहीं होता है क्योंकि समाचार बुलेटिनों की मांग है कि समाचार तुरंत प्रसारित हों। ये पर्याय तुरंत संदर्भ में प्रयुक्त होकर बड़े पैमाने पर पाठकों या श्रोताओं के सामने पहुंचते हैं और सही या गलत धीरे-धीरे प्रचलन में आने लग जाते हैं। एक बार प्रचलन में आ जाने पर उन्हें अस्वीकार करना संभव नहीं।

बोध प्रश्न

(i) नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं जो कथ्य की दृष्टि से सही या गलत हैं। सही कथन के आगे (√) तथा गलत के आगे (×) का निशान लगाइए —

1. तकनीकी शब्दों के निर्धारण की प्रक्रिया अंग्रेजी तथा हिंदी में एक समान है।
2. तकनीकी पर्यायों के निर्धारण में प्राय: अनुवाद पद्धति का अनुसरण किया जाता है।
3. तकनीकी शब्दों में प्रकट अर्थ की अपेक्षा अप्रकट अर्थ अधिक होता है।
4. तकनीकी शब्द अपने प्रकट अर्थ रूप में अपने सभी लक्षणों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
5. दो भाषाओं के शब्दों की अभिव्यक्ति प्रणाली और अर्थ का दायरा अलग-अलग होता है।
6. तकनीकी पर्यायों का निर्धारण केवल अनुवादकों के द्वारा संभव है।
7. दो समानार्थी शब्दों के बीच अर्थ और वाक्य-वितरण साम्य तथा वैषम्य संभव है।

(ii) कोष्ठक में दिए गए उत्तरों में से कोई एक उत्तर सही है। जो सही उत्तर हो उसे रिक्त स्थान में लिखिए -

1. एक ही अर्थ का बोध कराने वाले दूसरी भाषा के शब्द को ..... कहते हैं।

(तकनीकी शब्द/समानार्थी शब्द/अनुवाद पर्याय)

2. दो भाषाओं के समानार्थी शब्द पूर्णत: एक समान नहीं होते, वे एक दूसरे ..... होते हैं।

(से अलग/के विपरीत/के समतुल्य)

3. दो भाषाओं के शब्दों के बीच समतुल्यता में भेद तीन स्तरों पर दिखाई देता है — अर्थव्याप्ति, प्रयोग वितरण, और ..... ।

(तकनीकीपन/सांस्कृतिक संदर्भ/बोधगम्यता)

4. मौलिक तकनीकी शब्दों का निर्धारण ..... करता है।
(भाषाविद्/मूलअन्वेषक/अनुवादक)

5. 'दो या अधिक शब्दों की साथ-साथ प्रयुक्त होने की प्रवृत्ति को ..... कहते हैं।
(समानार्थी शब्द/सहप्रयोग/पर्याय)

i) तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए -

1. तकनीकी शब्द और तकनीकी पर्याय में अंतर बताइए।

.....

.....

.....

2. अंग्रेजी तकनीकी शब्दों के हिंदी पर्यायों के हमें तीन रूप मिलते हैं। उनका उल्लेख कीजिए और एक-एक उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

3. तकनीकी शब्द के प्रकट तथा अप्रकट अर्थ में अंतर बताइए और दो-दो उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

4. समतुल्यता की परिभाषा दीजिए।

.....

.....

.....

5. "अर्थव्याप्ति" और "प्रयोग वितरण" के दो-दो उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

6. अंग्रेजी शब्द "post" के विभिन्न अर्थों में से किन्ही तीन अर्थों के संदर्भ में हिंदी पर्याय दीजिए।

.....

.....

.....

21.4 शब्द निर्माण

आप इकाई 20.6.2 में पढ़ चुके हैं कि तकनीकी समानार्थी शब्द हमें चार प्रकार से उपलब्ध होते हैं —

— परंपरा से प्राप्त शब्दावली से

— आगत शब्दों से (अंग्रेजी के शब्दों को यथावत ग्रहण करके)

— अनुवाद पर्याय बना कर

इस अनुच्छेद में हम देखेंगे कि अपनी भाषा में उपयुक्त प्रचलित समानार्थी शब्द उपलब्ध न होने पर हम किन तरीकों से नए तकनीकी पर्याय बनाते हैं।

ध्यान रहे कि तकनीकी शब्दों के निर्माण का अपना कोई अलग व्याकरण नहीं होता। सामान्य शब्दों की निर्माण-प्रक्रिया पर जो नियम लागू होते हैं वे ही नियम तकनीकी शब्दों की निर्माण प्रक्रिया पर भी लागू होते है।

हिंदी में नए तकनीकी शब्दों का निर्माण चार प्रकार से होता है:

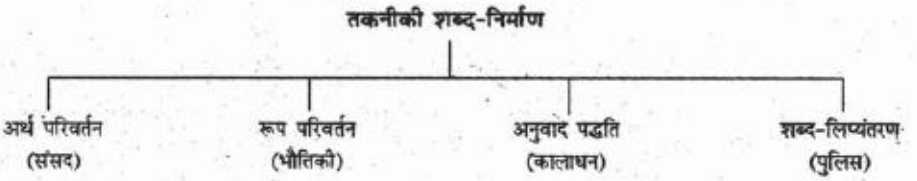

21.4.1 अर्थ परिवर्तन द्वारा

नया तकनीकी शब्द बनाने का सबसे अधिक प्रचलित तरीका है पहले से ही मौजूद किसी निकट अर्थ व्यक्त करने वाले शब्द के अर्थ में थोड़ा परिवर्तन कर नए अर्थ में उसका इस्तेमाल करना। अंग्रेजी में जितने नए तकनीकी शब्द आज मौलिक रूप से बन रहे हैं उनमें से अधिकांश तकनीकी शब्द अंग्रेजी के पूर्व प्रचलित शब्द हैं जिन्हें नये अर्थ देकर नए तकनीकी शब्द बना दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, programme, memory, recall, sorting, software, hardware आदि पूर्वप्रचलित अंग्रेजी शब्द हैं लेकिन इनमें नया तकनीकी अर्थ आरोपित कर इन्हें कंप्यूटर का नया शब्द बना दिया गया है। इसी तरह वाणिज्य के तकनीकी शब्द मुद्रा स्फीति (inflation), विनिमय (exchange), अग्रणी बैंक (lead bank) भी सामान्य शब्दों में अर्थ वैशिष्ट्य लाकर बनाए गए हैं। इसी तरह हिंदी में समानार्थी शब्दों का विधान करते समय भी प्राय: शब्द भंडार में पहले से मौजूद कुछ मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्दों में अर्थ परिवर्तन कर तकनीकी शब्दों के रूप में उन्हें ग्रहण कर लिया जाता है, जैसे :

बिजली	(electricity)
संसद	(parliament)
उछाला	(spurt)
सेवानिवृति	(retirement)
निगम	(corporation)
निवेश	(investment)
द्रव्य	(goods)
छूट	(rebate)

ऊपर दिए गए शब्दों को अगर आप ध्यान से देखेंगे तो आप पाएंगे कि जो शब्द अर्थपरिवर्तन के जरिए तकनीकी शब्द बने हैं उनमें अर्थ परिवर्तन की प्रवृत्ति दो प्रकार की रही है —

क) **अर्थ विस्तार,** जिसमें प्रचलित शब्दों को एक अतिरिक्त अर्थ प्रदान कर दिया जाता है। इस प्रकार वह शब्द अपने मूल अर्थ के साथ-साथ नए अर्थ में भी प्रयुक्त होने लगता है, जैसे ऊपर के उदाहरणों में बिजली शब्द का प्रयोग आसमान से गिरने वाली बिजली तो है ही, लेकिन तकनीकी प्रयोग में बिजली शब्द का प्रयोग electricity के लिए भी होता है। इस प्रकार के और शब्द हैं — आकाशवाणी, उपग्रह, आदि।

ख) **अर्थ प्रतिस्थापन,** जिसमें कुछ प्राचीन या प्रचलन से हट गए शब्दों को पुनर्जीवित कर उन्हें विशिष्ट अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। इस प्रकार के शब्दों का पुराना अर्थ प्राय: लुप्त हो जाता है और वह शब्द केवल नए अर्थ में ही प्रयुक्त होने लगता है। उदाहरण के लिए "संसद" शब्द संस्कृत में मूलत: किसी भी प्रकार की सभा के लिए प्रयुक्त होता था, जो धीरे-धीरे प्रचलन से हट गया था लेकिन अब इसे parliament के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसी तरह के और शब्द हैं "टिप्पणी", "मानक", "जनगणना" आदि।

21.4.2 रूप परिवर्तन द्वारा

नए शब्द बनाने का सबसे अधिक प्रचलित तरीका है धातु या शब्द के आगे-पीछे परसर्ग और उपसर्ग लगाकर शब्द रूपों का निर्माण, जैसे परियोजना, राजपत्रित, संविधान, उपकरण, आस्थगन, भौतिकी, रसायनिकी, विशेषज्ञ आदि। कभी कभी दो शब्दों को जोड़कर भी समस्त (समासयुक्त) बनाए जाते हैं जैसे द्वीपसमूह, पत्रवाहक, विमानपरिचारिका, विमानचालक, जनसंचार आदि।

यद्यपि हर भाषा में कमोबेश इस युक्ति का प्रयोग होता है लेकिन संस्कृत, तमिल, लेटिन, ग्रीक आदि संश्लिष्ट भाषाओं में इस युक्ति का प्रयोग सबसे ज्यादा होता है। हिंदी में इसी के आधार पर अनेक तकनीकी शब्द बने हैं।

ध्यान रहे कि शब्द या धातु के साथ लगने वाले अधिकांश प्रत्यय और उपसर्ग किसी न किसी अर्थ या अर्थ छाया को व्यक्त करते हैं जिससे शब्द के अर्थ को समझने में मदद मिलती है, जैसे :

above	अधि	अधिशासी	executive
after	अनु-	अनुक्रिया	response
		अनुक्रम	sequence
sub-	उप-	उपनिदेशक	deputy director
		उपाध्यक्ष	vice chairman
science	-की	भौतिकी	physics
		रसायनकी	chemistry
meter	-मापी	तापमापी	thermometer
		दुग्धमापी	lactometer
pro	-सम	समउपकुलपति	pro-vice chancellor
para	परा-	परामनोविज्ञान	para psychology
		पराचिकित्सा	para-medical

कुछ उपसर्ग ऐसे होते हैं जिनका इस्तेमाल शब्द निर्माण में मुख्य रूप से अर्थ में भेद करने के लिए किया जाता है, जैसे प्र-, सं-, परि- प्रा- आ- आदि। यद्यपि इन उपसर्गों में विशिष्ट अर्थ का बोध निहित है, लेकिन व्यवहार में इनका उपयोग एक शब्द को दूसरे मिलते-जुलते शब्द से अलग करने के लिए होता है, जैसे :

योजना	—	परियोजना	scheme	—	project
किरण	—	विकिरण	ray	—	radiation
वृद्धि	—	संवृद्धि	increase	—	growth
योजित	—	प्रायोजित	linked	—	sponsored

21.4.3 अनुवाद पद्धति द्वारा

आप पिछले अनुच्छेद 21.2.2 में देख चुके हैं कि पर्यायों के निर्धारण में अनुवाद पद्धति का बहुत अधिक सहारा लिया जाता है। जो शब्द मुख्यत: अनुवाद पद्धति के आधार पर बनते हैं उन्हें अनुवाद पर्याय कहते हैं। ऐसे पर्याय खासकर ऐसी स्थिति में अधिक उपयुक्त होते हैं जहाँ पाठक दोनों भाषाओं को जानता हो जिससे अनूदित होने पर वह मूल शब्द के अर्थ को अपने आप समझ ले। नीचे के उदाहरण देखिए :

yellow journalism	पीत पत्रकारिता
five star hotel	पांच तारा होटल
green revolution	हरित क्रांति
mass media	जनसंचार माध्यम

21.4.4 शब्द लिप्यंतरण द्वारा (शब्द ग्रहण)

कभी कभी हम दूसरी भाषा के तकनीकी शब्दों को मूल रूप में ग्रहण कर लेते हैं। उनका अनुवाद नहीं करते और न ही उनके लिए नए शब्द गढ़ते हैं। इकाई 20.6.2 में आप पढ़ चुके हैं कि अंग्रेजी से आए अनेक वैज्ञानिक शब्द हिंदी में बिना अनुवाद के मूल रूप में ग्रहण कर लिए गए हैं, केवल देवनागरी में उनका लिप्यंतरण कर दिया गया। सामान्य रूप से अंतर्राष्ट्रीय शब्द, व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बने शब्द, द्विपदीय शब्द, माप सूचक शब्द आदि को लिप्यंतरित करके मूल रूप में ही ग्रहण कर लिया जाता है। अंग्रेजी के जो शब्द हिंदी में आम प्रचलन में आ गए हैं उन्हें भी बिना अनुवाद किए ग्रहण कर लिया गया है।

हिंदी में विदेशी शब्दों को तीन रूपों में ग्रहण किया गया है — मूलरूप में, अनुकूलित रूप में और मिश्र रूप में। देखिए

मूल रूप में	अनुकूलित रूप में	मिश्र रूप में (संकर-शब्द)
सिगनल	तकनीकी	वोल्टता
बॉयकाट	अकादमी	अपीलकर्ता
पुलिस	अस्पताल	आयनीकरण
प्लेटफार्म	त्रासदी	शेयरधारक
आक्सीजन	अंतरिम	रजिस्ट्रीकृत

21.5 शब्दावली प्रयोग

आप इस इकाई में इससे पहले पढ़ चुके हैं कि उन तकनीकी शब्दों के प्रयोग के लोकप्रिय बनाने में सबसे अधिक कठिनाई आती है जो किसी दूसरी भाषा के समानार्थी शब्द के रूप में सामने आते हैं। मूलरूप से बने तकनीकी शब्दों की प्रयोग ग्राह्यता में यह समस्या नहीं होती क्योंकि प्रयोक्ता के पास उस संकल्पना के लिए एक ही नाम उपलब्ध होता है जो मौलिक रूप से उस संकल्पना को जन्म देने वाले व्यक्ति का दिया हुआ होता है। समानार्थी शब्दों का प्रयोग करने वाले के पास प्राय: उस शब्द का मूलरूप (जैसे अंग्रेजी शब्द) भी होता है और पर्याय के रूप में सामान्यत: एक से अधिक शब्द उपलब्ध होते हैं। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के लिए अंग्रेजी शब्द executive के लिए "कार्यपालक", "अधिशासी", और "कार्यकारी" आदि विकल्प प्रयोग में मिलते हैं। तकनीकी शब्दों की यह मांग है कि तकनीकी संदर्भों में इन विकल्पों के स्थान पर सर्वत्र एक ही विकल्प का प्रयोग हो जिससे शब्दावली के प्रयोग में समरूपता आए तथा उसका अर्थ प्रयोक्ताओं को समान रूप से बोधगम्य हो।

21.5.1 प्रयोग ग्राह्यता

भारत में तकनीकी पर्यायों का प्रयोग व्यवहार के साथ जुड़कर भी हुआ और व्यवहार से पहले भी हुआ। कई नए शब्द समाज द्वारा स्वीकृत हुए, कई नहीं हुए और कई इस समय स्वीकृति के लिए संघर्ष की

स्थिति में हैं। प्रयोग से पूर्व यह अनुमान लगाना मुश्किल है कि अमुक तकनीकी पर्याय अंतत: चलेगा या नहीं, अर्थात् भाषा-समाज इसे स्वीकार करेगा या नहीं। फिर भी मोटे रूप से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि निम्नलिखित स्थितियां नए तकनीकी शब्दों के प्रयोग-प्रसार और उनकी सामाजिक ग्राह्यता को बढ़ाने में सहायक होती है :

क) **प्रयोग का अवसर :** नए तकनीकी प्रयोग को पर्याय का जितना अधिक अवसर मिलेगा वह उतना ही अधिक प्रचलित और ग्राह्य होगा। देखा गया है कि जिन तकनीकी शब्दों को लोग जितना ही अधिक सुनते, बोलते और देखते हैं उतना ही वह शब्द उनके लिए परिचित होता जाता है और उनका प्रयोग सहज होता है। यही कारण है कि टेलीविजन या रेडियो में प्रयुक्त नए शब्द बिना किसी परेशानी के प्रचलित हो जाते हैं। उदाहरण के लिए टेलीविजन के कार्यक्रमों के जरिए प्रसारित शब्द "प्रायोजित कार्यक्रम", "वायु प्रदूषण", "परिवार नियोजन", "पर्यावरण" आदि तुरंत लोकप्रिय हो गए। इससे हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कोई भी शब्द अपने में न सरल होता है न कठिन। शब्द या तो परिचित होता है या अपरिचित। परिचित शब्द बार-बार प्रयोग के कारण हमें सरल प्रतीत होता है और शीघ्र ग्राह्य हो जाता है और अपरिचित शब्द हमें कठिन लगता है।

ख) **विकल्प का न होना :** यदि प्रयोक्ता मूल तकनीकी शब्द (जैसे अंग्रेजी के तकनीक शब्द) से परिचित है उसी का प्रयोग करने का आदी हो गया है तो दूसरी भाषा का वैकल्पिक तकनीकी पर्याय स्वीकार करने में उसे कठिनाई होती है। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि एक बार किसी शब्द का प्रयोग करने का अभ्यस्त हो जाने के बाद उस व्यक्ति को दूसरे विकल्प को स्वीकार करने में कठिनाई होती है। उदाहरण के लिए, किसी हिंदी पर्याय के उपलब्ध होने से पहले ही मूल अंग्रेजी शब्द "कंप्यूटर", "प्रोग्राम" शब्द इतने अधिक प्रचलित हो गए कि "computer" के लिए बाद में सुझाया गया शब्द "संगणक" या "अभिकलित्र" स्वीकार नहीं हो पाए और न ही "programme" के लिए "क्रमादेश" शब्द लोकप्रिय हो पाया।

ग) **सहज और सटीक शब्द का चयन :** प्रयोग के स्तर पर ग्राह्य होने के लिए किसी भी तकनीकी पर्याय को संक्षिप्त, सटीक और सहज उच्चारण योग्य होना जरूरी है। तकनीकी शब्दों का अर्थ सामान्यत: स्वत: स्पष्ट नहीं होता। अत: उनके लिए समानार्थी शब्द निर्धारित करते समय यह ध्यान रखना जरूरी है कि प्रस्तावित तकनीकी पर्याय अर्थ को अधिक से अधिक उद्भाषित करे और जहाँ संभव हो शब्दों के प्रयोग में मितव्ययिता बरती जाए। लंबे पर्यायों से बचना चाहिए। उदाहरण के लिए, subway शब्द के लिए कुछ स्थानों पर "भूमितल पैदल पारपथ" शब्द लिखा मिलता है। शब्दावली आयोग के कोश में इसके लिए छोटा-सा पर्याय "तलपथ" दिया गया है जो संक्षिप्त और उपयुक्त है। कई नए शब्द अपनी सहजता और बोधता के कारण सहज स्वीकार्य हो गए, जैसे नसबंदी (sterilisation), सर्वहारा (proletarian), परियोजना (project) आदि।

घ) **माध्यम परिवर्तन :** भारत में हिंदी तथा भारतीय भाषाओं की तकनीकी शब्दावली का प्रयोग प्रसार शिक्षा में माध्यम परिवर्तन के प्रश्न से जुड़ा है। ज्ञान के जिन विषयों में शिक्षा में हिंदी माध्यम शुरू हो गया है वहां तकनीकी शब्दावली का प्रयोग ज्यादा तीव्रगति से हो रहा है, जैसे उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान आदि राज्यों में स्नातक स्तर तक हिंदी माध्यम से विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान विषयों की शिक्षा दी जा रही है। सामाजिक विज्ञान विषयों में स्नातकोत्तर स्तर तक भी हिंदी माध्यम की व्यवस्था है। अत: इन क्षेत्रों में जहाँ भी तकनीकी शब्दावली निर्धारित की गई वह कमोबेश प्रयोग में आ रही है और साथ साथ उनका प्रयोग परीक्षण भी हो रहा है। चूंकि इंजीनियरी, आयुर्विज्ञान तथा प्रबंधविज्ञान जैसे व्यावसायिक विषयों में शिक्षा माध्यम अंग्रेजी में ही है, इसलिए इन विषयों के तकनीकी पर्यायों के बन चुके होने पर भी इन्हें प्रयोग का अवसर नहीं मिल रहा है। फलस्वरूप उन शब्दों का वास्तविक प्रयोग बहुत ही धीमी गति से बढ़ रहा है।

21.5.2 प्रयोग प्रसार के लिए किए जा रहे उपाय

आज भारत में तकनीकी शब्दावली के विकास तथा प्रसार के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। चूंकि हमारे अधिकांश तकनीकी शब्द पश्चिम में विकसित मौलिक अंग्रेजी शब्दों पर आधारित हैं इसलिए

उनके लिए बनाए गए पर्यायों की जानकारी प्रयोक्ता को होनी जरूरी है। हिंदी में प्रकाशित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों तथा जनसंचार के अन्य साधनों के जरिए इन शब्दों का थोड़ा बहुत परिचय प्रयोक्ताओं को हो रहा है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। अधिकांश लोगों को इस बात की जानकारी नहीं है कि हिंदी के माध्यम से कार्य करते समय आवश्यक तकनीकी पर्याय कहां से प्राप्त करें, आवश्यक शब्द संग्रह कहां उपलब्ध हैं, शब्दावली निर्माण के संबंध में क्या नीति अपनाई गई है आदि। अत: सरकार तथा विभिन्न संस्थाएं इन तकनीकी पर्यायों के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए जो प्रयास कर रही है संक्षेप मे इस प्रकार है :

क) प्रशासनिक तथा वैज्ञानिक विभागों में समय समय पर हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है जिनमें विभिन्न विभागों के अधिकारियों, वैज्ञानिकों तथा हिंदी अधिकारियों/अनुवादकों को अन्य प्रशिक्षण के साथ साथ पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न पक्षों की जानकारी दी जाती है तथा उनसे संबंधित अभ्यास करवाया जाता है। यह मुख्यत: भारत सरकार के राजभाषा विभाग के आदेश के अंतर्गत किया जाता है, लेकिन विभिन्न विभाग अपनी ओर से भी कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

ख) अनेक विभाग तथा संस्थाएं वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों की पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रही हैं जिनके माध्यम से वैज्ञानिक, लेखक तथा पाठक हिंदी की तकनीकी शब्दावली और तकनीक लेखन शैली से परिचित हो रहे हैं।

ग) वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग विभिन्न विश्वविद्यालयों, कालेजों और वैज्ञानिक संस्थाओं में विषय के अध्यापकों तथा वैज्ञानिकों के लिए अल्प अवधि शब्दावली प्रशिक्षण-कार्यशाला आयोजित करता है। इस कार्यक्रम में विभिन्न विषयों के अध्यापकों तथा वैज्ञानिकों के लिए अल्प अवधि शब्दावली प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। इन कार्यक्रमों में विभिन्न विषयों के अध्यापकों तथा वैज्ञानिकों को मानक शब्दावली तथा उनके निर्माण के सिद्धांतों तथा तकनीकों का परिचय तथा प्रशिक्षण दिया जाता है। साथ ही उनकी प्रतिक्रियाएं तथा उनके द्वारा प्रयुक्त शब्दावली की जानकारी भी प्राप्त की जाती है जिसके आधार पर जहां जरूरी होता है शब्दावली में संशोधन किया जाता है।

घ) प्रशासन जैसे कुछ विषयों की शब्दावली विभिन्न सरकारी विभागों, उपक्रमों तथा निगमों के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को शब्द संग्रह के रूप में नि:शुल्क प्रदान की जाती है ताकि समस्त हिंदी भाषा-समाज में मानक तथा समरूप प्रशासन शब्दावली का प्रयोग संभव हो सके। शेष विषयों के शब्दसंग्रह बिक्री पर उपलब्ध है।

ङ) शब्दावली आयोग न एक कंप्यूटर आधारित राष्ट्रीय शब्दावली बैंक की स्थापना की है। इसके विशाल डायबेस में अब तक तैयार 5 लाख विभिन्न विषयों के अंग्रेजी हिंदी तकनीकी शब्दों का कंप्यूटरीकरण किया गया है। इसमें नए बन रहे शब्दों को तुरंत भरा जा सकता और जरूरत के अनुसार उनमें संशोधन आदि भी किया जाता है। इसमें अंग्रेजी हिंदी शब्दावली के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं के पर्यायों को भी बाद में भरा जाएगा। इस प्रणाली से तुरंत जब चाहे विषयवार शब्दावली लेसर प्रिन्ट किए जा सकते हैं। यह डाटाबैंक बाद में राष्ट्रीय सूचनाविज्ञान केंद्र के निकनेट (NICNET) उपग्रह से जोड़ा जाएगा जिससे देश के हर स्थान पर जहां यह सुविधा उपलब्ध है किसी भी अंग्रेजी शब्द के लिए तुरंत हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के अद्यतन तकनीकी पर्याय प्राप्त किए जा सकते हैं।

बोध प्रश्न

(iv) नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं जो कथ्य की दृष्टि से सही या गलत हैं। सही कथन के आगे (सही) तथा गलत के आगे (गलत) का निशान लगाइए-

1. तकनीकी तथा सामान्य शब्दों के निर्माण के नियम अलग अलग होते हैं। ☐
2. अंग्रेजी में जितने नए तकनीकी शब्द आज मौलिक रूप से बन रहे हैं उनमें से अधिकांश अंग्रेजी के पूर्व प्रचलित शब्द हैं। ☐
3. अर्थ प्रतिस्थापन प्रक्रिया में प्राचीन या प्रचलन से हटे शब्दों को पुनर्जीवित किया जाता है। ☐
4. धातु में लगने वाले प्रत्यय और उपसर्ग का अपना कोई विशिष्ट अर्थ नहीं होता। ☐
5. अंग्रेजी मापसूचक शब्दों को हिंदी में अनूदित कर ग्रहण करने की सिफारिश की गई है। ☐
6. अंग्रेजी के शब्दों को हमेशा मूल रूप में ही हिन्दी में ग्रहण किया जाता है, मिश्र रूप में नहीं। ☐
7. भारत में तकनीकी पर्यायों का प्रयोग हमेशा व्यवहार के साथ ही जुड़कर हुआ, पूर्व नियोजित ढंग से नहीं। ☐

v) "समर्थ" से "सामर्थ्य" शब्द बना है। इसी तरह नीचे दिए शब्दों का निर्माण कीजिए -

	समर्थ	सामर्थ्य	(capacity)
1)	स्वस्थ		(health)
2)	अधिक		(excessiveness)
3)	समान		(common)
4)	सतत		(continuity)

vi) "अवधि से आवधिक" शब्द बना है। इसी तरह नीचे दिए शब्दों का निर्माण कीजिए -

	अवधि	--	आवधिक	
1)	स्वभाव	--	.....	(natural)
2)	प्रथम	--	.....	(primary)
3)	अनुवंश	--	.....	(hereditary)
4)	वर्ष	--	.....	(annual)

vii) इन शब्दों में उपसर्ग छाँटिए :

1) सछिद्र
2) प्रत्येक
3) सुव्यवस्थित
4) प्रौद्योगिकी
5) संविधान

viii) हिन्दी पर्याय बताइए :

1) Secretary general
2) Voltage
3) Space science
4) Statistics
5) Flexibility
6) Investment

21.6 सारांश

आपने इस पाठ में पर्याय निर्धारण, शब्द निर्माण और प्रयोग के बारे में पढ़ा। आपने पढ़ा कि —

- एक भाषा के किसी शब्द के समान अर्थ का बोध कराने वाले दूसरी भाषा के शब्द समानार्थी शब्द या पर्याय कहलाते हैं।
- मूल तकनीकी शब्द और दूसरी भाषा में उसके लिए निर्धारित पर्याय में अंतर होता है।
- मूल तकनीकी शब्द का निर्धारण या चयन वह वैज्ञानिक या चिंतक करता है जिसने इस विचार या वस्तु को जन्म दिया।
- शब्द निर्माण की प्रक्रिया में किसी न किसी रूप में अनुवाद पद्धति का सहारा लिया जाता है।
- तकनीकी पर्यायों का निर्धारण करते समय उन पाठकों के भाषा ज्ञान को ध्यान में रखना जरूरी होता है जिनके प्रयोग के लिए वे शब्द बनाए जा रहे हैं।
- समानार्थी शब्दों में शैलीगत भेद से एक से अधिक पर्यायों की संभावना बढ़ जाती है।
- हर तकनीकी शब्द का प्रकट तथा अप्रकट दो अर्थ संभव हैं।
- दो भाषाओं के समानार्थी शब्द पूर्णत: समान नहीं होते, वे एक दूसरे के समतुल्य होते हैं।
- अर्थ के निकटतम सादृश्य को समतुल्यता कहते हैं।
- समतुल्यता तीन स्तरों पर आकलित की जाती है — अर्थव्याप्ति, प्रयोगवितरण और सांस्कृतिक संदर्भ।
- पर्यायों का निर्धारण दो मुख्य स्थितियों में होता है : लेखक या अनुवादक द्वारा और पूर्वनियोजित शब्दावली निर्माण करने वाली संस्था या विद्वत समाज द्वारा।
- तकनीकी शब्दों का निर्माण चार प्रकार से हो सकता है : अर्थ परिवर्तन द्वारा, रूप परिवर्तन द्वारा, अनुवाद पद्धति द्वारा और शब्द लिप्यंतरण (शब्द ग्रहण) द्वारा।
- शब्दावली की प्रयोग ग्राह्यता सुनिश्चित कराने में कुछ तत्व विशेष सहायक होते हैं, जैसे शब्दावली प्रयोग का अवसर प्राप्त होना, विकल्प का न होना, सहज और सटीक शब्द का चयन और शिक्षा आदि के क्षेत्र में माध्यम परिवर्तन।
- तकनीकी शब्दावली के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय किए जा रहे हैं जैसे, शब्दावली प्रशिक्षण कार्यक्रम, तकनीकी पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन, कंप्यूटर आधारित राष्ट्रीय शब्दावली बैंक की स्थापना।
- नई शब्दावली के प्रसार में जनसंचार माध्यमों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

21.7 शब्दावली

समानार्थ शब्द	सहप्रयोग
तकनीकी पर्याय	सांस्कृतिक संदर्भ
बहु पर्यायता	पर्याय निर्धारण
रूढ़ शब्द	प्रयोग परीक्षण
अनुवाद प्रक्रिया	अर्थ सादृश्य
प्रकट अर्थ	पूर्व नियोजित पर्याय-निर्माण
अप्रकट अर्थ	अर्थ परिवर्तन
समतुल्यता	रूप परिवर्तन
अर्थव्याप्ति	अनुवाद पद्धति

प्रयोग वितरण	लिप्यंतरण
अनुवाद पर्याय	अर्थ विस्तार
अनुकूलित	अर्थ संकोच
मिश्ररूप	अर्थ प्रतिस्थापन
	प्रयोगग्राह्यता
	माध्यम परिवर्तन
	राष्ट्रीय शब्दावली बैंक

21.8 उपयोगी पुस्तकें

1. *हिन्दी भाषा : संदर्भ और संरचना* (1991) साहित्य सहकार, ई/10 = 4, कृष्णनगर, दिल्ली।
2. *बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह* (मानविकी और सामाजिक विज्ञान) (1992) वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग, पश्चिमी खंड 7, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली-110066। (इस कोश की भूमिका पढ़ें)।

21.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

i) 1. ×   2. ✓   3. ✓   4. ×
5. ✓   6. ×   7. ✓

ii) 1. समानार्थी शब्द   2. के समतुल्य
2. सांस्कृतिक संबंध   4. मूल अन्वेषक
5. सहप्रयोग

iii) 1-5 इकाई से स्वयं जांच करें। 6. पद, डाक, स्तम्भ जैसे

iv) 1. ×   2. ✓   3. ✓   4. ×
5. ×   6. ✓   7. ✓

v) 1. स्वास्थ्य   2. आधिक्य
3. सामान्य   4. सातत्य

vi) 1. स्वाभाविक   2. प्राथमिक
3. आनुवांशिक   4. वार्षिक

vii) 1. स   2. प्रति   3. स   4. प्र
5. सं (सभ्)

viii) 1. महासचिव   2. वोल्टता
3. अंतरिक्ष विज्ञान   4. सांख्यिकी
5. लघोल्लापन   6. निवेश

इकाई 22 वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन

इकाई की रूपरेखा

22.0 उद्देश्य
22.1 प्रस्तावना
22.2 वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन के माध्यम
  22.2.1 पुस्तकों के माध्यम से
  22.2.2 शोधपत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से
  22.2.3 कोशों तथा विश्वकोशों के माध्यम से
  22.2.4 जन-संचार माध्यमों से
22.3 वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन का स्वरूप
  22.3.1 मौलिक लेखन
  22.3.2 अनुदित लेखन
  22.3.3 अनुकूलित लेखन
22.4 भारत में वैज्ञानिक लेखन
  22.4.1 प्राचीन भारत में वैज्ञानिक लेखन
  22.4.2 स्वतंत्रतापूर्व वैज्ञानिक लेखन
  22.4.3 स्वतंत्रता के बाद वैज्ञानिक लेखन
22.5 वैज्ञानिक लेखन का सामाजिक, शैक्षिक और भाषिक पक्ष
  22.5.1 सामाजिक पक्ष
  22.5.2 शैक्षिक पक्ष
  22.5.3 भाषिक पक्ष
22.6 सारांश
22.7 शब्दावली
22.8 उपयोगी पुस्तकें
22.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

22.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- वैज्ञानिक लेखन के स्वरूप को समझ सकेंगे।
- मौलिक, अनुदित और अनुकूलित वैज्ञानिक लेखन के बीच अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।
- वैज्ञानिक अनुवाद के संदर्भ में कंप्यूटर आधारित अनुवाद के बारे में बता सकेंगे।
- विभिन्न माध्यमों (या चैनलों) से उपलब्ध वैज्ञानिक लेखन का स्वरूप समझ सकेंगे।
- भारत में वैज्ञानिक लेखन की प्राचीन और आधुनिक परंपरा के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- आधुनिक वैज्ञानिक लेखन के विभिन्न प्रयासों के बारे में बता सकेंगे।
- वैज्ञानिक लेखन के सामाजिक, शैक्षिक और भाषागत पक्षों के बारे में जान सकेंगे।

22.1 प्रस्तावना

इससे पिछली इकाइयों में आप वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली और भाषा रूप में संबंध में पढ़ चुके हैं। आप पढ़ चुके हैं कि तकनीकी भाषा-रूप कई घटकों से मिलकर बनता है जैसे शब्दावली, अभिव्यक्तियों, वाक्य रूप और पाठगत विन्यास-पद्धति। इस पाठ में आप वैज्ञानिक लेखन के बारे में पढ़ेंगे जिसमें ऊपर बनाए सभी घटक पाठ के रूप में व्यवस्थित होकर सामने आते हैं। आप इस पाठ में देखेंगे कि वैज्ञानिक लेखन किन माध्यमों से हम तक पहुंचते हैं और मौलिक, अनुदित और अनुकूलित वैज्ञानिक

लेखन का स्वरूप क्या है। आप यह भी पढ़ेंगे कि प्राचीन भारत में, स्वतंत्रता से पूर्व और स्वतंत्रता के बाद भारत में वैज्ञानिक लेखन की क्या स्थिति है। आप वैज्ञानिक लेखन के सामाजिक, शैक्षिक तथा भाषागत पक्ष के बारे में भी इस इकाई में पढ़ेंगे।

22.2 वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन के माध्यम

वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य हमें सामान्यत: चार माध्यमों से प्राप्त होता है —

क) पुस्तकों के माध्यम से
ख) शोध पत्रों तथा शोध पत्रिकाओं के माध्यम से
ग) कोशों तथा विश्वकोशों के माध्यम से
घ) जन-संचार माध्यमों से

22.2.1 पुस्तकों के माध्यम से

वैज्ञानिक और तकनीकी विचारों को प्रसारित करने का सबसे सशक्त साधन पुस्तकें हैं। मुद्रित रूप में उपलब्ध ज्ञान साहित्य न केवल पीढ़ियों तक सुरक्षित रहता है बल्कि विश्वभर के जिज्ञासुओं को तुरंत सुलभ भी होता है। बीसवीं सदी में ज्ञान-विज्ञान और टेक्नालॉजी के क्षेत्र में अद्भुत क्रांति आई, उसके फलस्वरूप नए विचारों और नए अन्वेषणों की एक बाढ़-सी आई। यह क्रांति केवल सिद्धांत के स्तर तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि उसने मनुष्य के व्यावहारिक जीवन को भी बहुत गहराई तक छुआ और उसकी जीवन-शैली को प्रभावित किया। इन वैज्ञानिक और तकनीकी विचारों और अनुसंधानों को विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाने का सबसे बड़ा श्रेय पुस्तकों को है। सामान्यत: जिस भाषा-समाज में इस नए ज्ञान का विकास होता है उसी समाज में और उसी की भाषा में ये पुस्तकें लिखी जाती हैं। जिस भाषा-समाज में यह भाषा नहीं समझी जाती, वहाँ इनके अनुवाद प्रकाशित किए जाते हैं। इस प्रकार नवविकसित वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य विश्व के सभी जिज्ञासु समाज में आवश्यकतानुसार प्रसारित होता जाता है।

यह वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य छात्रों के लिए विशेष रूप से लिखी पाठ्य-पुस्तकों के रूप में भी हो सकता है और संदर्भ-ग्रंथ के रूप में भी। पाठ्य-पुस्तकों में सामग्री का चयन, अनुस्तरीकरण और प्रस्तुतीकरण विशिष्ट पाठ्यक्रम के आधार पर और छात्र-वर्ग के शैक्षिक स्तर को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। इसमें स्थानीय परिवेश तथा शिक्षण-लक्ष्यों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए आवश्यक परिवर्तन भी किया जाता है। इसमें एक ही विषय-बिन्दु पर एकाधिक मौलिक चिंतकों के विचारों को संकलित कर सामग्री को एक खास व्यवस्था के अंतर्गत संयोजित किया जाता है। संदर्भ-ग्रंथ पाठ्य-पुस्तकों से इस अर्थ में भिन्न होते हैं कि इनमें सामान्यत: मौलिक चिंतकों तथा वैज्ञानिकों के विचार निहित होते हैं। इन पुस्तकों में नई उद्भावनाएं तथा मौलिक विश्लेषण या दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का आग्रह होता है।

कुछ वैज्ञानिक और तकनीकी पुस्तकें सामान्य पाठकों के लिए भी लिखी जाती हैं जिसका उद्देश्य विज्ञान संबंधी जानकारी आम आदमी तक पहुँचाना होता है। इसे सामान्यत: 'लोकप्रिय विज्ञान' की पुस्तकें कहा जाता है। इस कोटि की पुस्तकों की भाषा को कम से कम तकनीकी और अधिक से अधिक सरल और बोधगम्य बनाने की कोशिश की जाती है। इस प्रकार का प्रसारपरक वैज्ञानिक लेखन लोकप्रिय पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होता है।

22.2.2 शोधपत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से

वैज्ञानिक लेखन का दूसरा महत्वपूर्ण माध्यम शोधपत्र और शोध-पत्रिकाएं है। अनुसंधानपरक वैज्ञानिक साहित्य का एक बहुत बड़ा अंश हमें शोध-पत्रों के माध्यम से प्राप्त होता है। शोधपत्र सामान्यत: संगोष्ठियों में पढ़े जाते हैं या शोधपत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। शोधपत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री विशेषज्ञों द्वारा विशेषज्ञों के लिए लिखी जाती है और इसलिए इसमें तकनीकी शब्दों और

तकनीकी अभिव्यक्तियों का बहुत अधिक प्रयोग होता है। इस प्रकार के लेखन का स्तर काफी ऊँचा रहता है।

22.2.3 कोशों तथा विश्वकोशों के माध्यम से

वैज्ञानिक लेखन का दूसरा महत्वपूर्ण माध्यम है विश्वकोश और परिभाषाकोश। पुस्तकों में सूचना की इकाई पाठ होती है, लेकिन विश्वकोश और परिभाषाकोश में सूचना की इकाई शब्द होती है और शब्द अकारादिक्रम में संयोजित होते हैं। परिभाषा कोशों में हर तकनीकी शब्द के बाद उसके अर्थ से संबंधित आवश्यक जानकारी का निचोड़ परिभाषा या व्याख्या के रूप में दिया जाता है। विश्वकोशों में जानकारी या सामग्री की मात्रा अधिक होती है। यह सामग्री संक्षिप्त लेखों के रूप में संयोजित किए जाते हैं। परिभाषा कोशों में सामग्री परिभाषाओं, सूत्रों और लक्षणों के रूप में दी जाती है, इसलिए इसकी सामग्री का कलेवर सीमित होता है। अंग्रेजी में हर विषय के परिभाषा कोश आज उपलब्ध हैं। हिन्दी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग के द्वारा विभिन्न ज्ञानविज्ञान विषयों पर प्रकाशित 40 परिभाषा कोश उपलब्ध हैं।

22.2.4 जन-संचार माध्यमों से

वैज्ञानिक तथा तकनीकी साहित्य का लेखन समाचार-पत्रों तथा पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त रेडियो तथा टेलीविज़न के माध्यम से भी प्राप्त होता है, यद्यपि इसकी मात्रा अपेक्षाकृत अधिक नहीं होती। रेडियो तथा टेलीविज़न में जिन पाठों का वाचन किया जाता है वे लेखन के अंतर्गत ही आते हैं। जनसंचार माध्यमों से प्रसारित वैज्ञानिक तथा तकनीकी साहित्य की भाषा और शैली सरल रखी जाती है और इसका प्रस्तुतीकरण रोचक रखा जाता है जिससे आम जनता को वह ग्राह्य हो सके। इसी प्रकार तकनीकी विषयों को भी यथासंभव गैर-तकनीकी और रोचक प्रसंगों के साथ जोड़कर प्रस्तुत करने का आग्रह होता है। इसका उद्देश्य भी एक प्रकार से विज्ञान का लोकप्रसार ही है।

22.3 वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन का स्वरूप

आपने ऊपर उन माध्यमों के बारे में पढ़ा जिनसे वैज्ञानिक साहित्य हमारे पास तक पहुँचता है, लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि सभी वैज्ञानिक साहित्य हमारे पास अपने मूल रूप में नहीं पहुँचता। मौलिक चिंतकों तथा विशेषज्ञों के द्वारा रचित वैज्ञानिक या तकनीकी साहित्य मुख्यत: तीन रूपों में हमारे पास पहुँचता है - मौलिक, अनूदित और अनुकूलित।

22.3.1 मौलिक लेखन

वैज्ञानिक लेखन का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत मौलिक लेखन है। मौलिक पुस्तकों का लेखक हमेशा विषय का विशेषज्ञ होता है क्योंकि मूल चिंतक के रूप में वह अपनी उद्भावनाओं तथा खोजों को लिपिबद्ध करता है। कुछ वैज्ञानिक और विशेषज्ञ इन मौलिक चिंतन धाराओं और अनुसंधानों की व्यवस्था, विश्लेषण या समीक्षा करते हैं। कुछ विशेषज्ञ आवश्यकता के अनुसार इनमें अतिरिक्त सामग्री जोड़कर और जहां जरूरी हो, संशोधन-परिवर्धन कर स्वत:पूर्ण पुस्तकों का प्रणयन करते हैं। इस प्रकार किसी भी विषय पर वैज्ञानिक चिंतन, विश्लेषण और भाषा का एक पूरा साहित्य विकसित हो जाता है। प्राय: यह समस्त प्रक्रिया मूलत: उसी भाषा में सम्पन्न होती है जिसमें मूल वैज्ञानिक लेखन शुरू हुआ है। इसके बाद ही अन्य भाषाओं में आवश्यकतानुसार उनका अनुवाद, या कभी-कभी विवेचन शुरू होता है।

मूल लेखक या वैज्ञानिक जिस भाषा में सर्वप्रथम अपना साहित्य लिखता है वही लेखन प्रामाणिक माना जाता है। समस्त अनुवाद इसी कृति पर आश्रित होता है, यद्यपि कई बार मूल ग्रंथों के अनुवाद के आधार पर भी पुन: दूसरी भाषा में अनुवाद कार्य हुए हैं। उदाहरण के लिए भारत में जर्मन, रूसी, फ्रांसीसी, स्पेनिश आदि भाषाओं के वैज्ञानिक साहित्य का जो अनुवाद भारतीय भाषाओं में मिलता है वह अधिकांशत: मूल भाषा में अंग्रेजी में हुए अनुवाद का अनुवाद होता है। इसमें संदेह नहीं कि दोहरे

अनुवाद में कभी-कभी मूल पुस्तक की प्रामाणिक सूचना सही प्रकार व्यक्त नहीं हो पाती। कई वैज्ञानिक आज अपनी भाषा के अलावा अन्य विदेशी भाषाओं पर भी अधिकार रखते हैं। इस स्थिति में कभी-कभी वैज्ञानिक अपने मूल लेखन का अनुवाद स्वयं कर लेता है। यदि कोई वैज्ञानिक या चिंतक अंतर्राष्ट्रीय भाषा पर पर्याप्त अधिकार रखता हो तो वह कभी-कभी अपनी कृतियों के व्यापक प्रसार को दृष्टि में रखते हुए अपनी मातृभाषा से भिन्न उस अन्तर्राष्ट्रीय भाषा में भी अपनी मूल पुस्तक लिखता है।

मौलिक वैज्ञानिक लेखन न केवल वैज्ञानिक चिंतन, ज्ञान-विज्ञान तथा शोध कार्य को आगे बढ़ाता है बल्कि भाषा के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। नए विचारों, नई संकल्पनाओं तथा नई खोजों के लिए वैज्ञानिक नए शब्दों और अभिव्यक्तियों का निर्माण करता है, सूक्ष्म वैज्ञानिक विचारों को वाणी देने के लिए वह उपयुक्त अर्थगर्भित शैली का विकास करता है, सामग्री को संयोजित तथा व्यवस्थित करने की विशिष्ट प्रणाली विकसित करता है तथा सामग्री को कम से कम शब्दों में और अधिक से अधिक स्पष्टता के साथ प्रस्तुत करने के लिए सूत्र, फार्मूला, प्रतीकता विशिष्ट चिह्न जैसी अनेक युक्तियों का विकास करता है। इस प्रकार वैज्ञानिक के हाथों में ज्ञान और भाषा दोनों का विकास एक साथ होता जाता है और हर विषय या शास्त्र अपने लेखन के लिए खास तरह की विधा, शैली, प्रयुक्ति और भाषा-रूप का विकास करता चला जाता है। जब इन्हीं विशिष्ट रूपों को दूसरी भाषा में अनुवाद के माध्यम से प्रस्तुत करने की बात आती है तो कई समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। मूल भाषा में सतत प्रयोग के कारण इन तकनीकी रूपों की जो दीर्घ परंपरा स्थापित हो चुकी है वह अनुवाद की भाषा में प्रयोग परंपरा के अभाव में संभव नहीं हो पाती। फलस्वरूप अनूदित वैज्ञानिक लेखन में कभी-कभी एक प्रकार की कृत्रिमता दिखाई देने लगती है। इसके अलावा लक्ष्य भाषा में मानक रूपों के स्थिर न होने के कारण शब्दावली प्रयोग संबंधी विविधता या अराजकता भी दिखाई देने लगती है। यही कारण है कि मौलिक लेखन से ही वास्तव में भाषा का सहज और प्राकृतिक विकास होता है और प्रचलन में रहने के कारण तकनीकी शब्दावली या तकनीकी भाषा-रूप स्वीकार्य और ग्राह्य होते हैं। इसके विपरीत अनुवाद की भाषा में तकनीकी शब्दों और रूपों के संबंध में उनके अबोधगम्य, अपरिचित या कठिन होने की शिकायत आम बात होती है।

22.3.2 अनूदित लेखन

आज कोई भी देश केवल अपने द्वारा विकसित वैज्ञानिक ज्ञान के सहारे ही अपना सर्वांगीण विकास नहीं कर सकता। अन्य विकसित देशों में विज्ञान और टेक्नोलॉजी के क्षेत्रों में उपलब्ध ज्ञान को समझना और ग्रहण करना उसके लिए आवश्यक हो गया है। उसके लिए अन्य विकसित राष्ट्रों की भाषा में लिखे ज्ञान साहित्य को अपनी भाषा में रूपांतरित करना ज़रूरी हो जाता है।

आज विश्व के विभिन्न देशों में ज्ञान-विज्ञान और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में जिस तीव्र गति से अनुसंधान और प्रयोग हो रहे हैं उसके रहते कोई भी देश अपने को विज्ञान के क्षेत्र में स्वनिर्भर नहीं महसूस करता। अमरीका, ब्रिटेन, जर्मनी, जापान और रूस आदि विकसित देशों में भी नई से नई वैज्ञानिक और तकनीकी जानकारी हासिल करने की एक प्रकार की होड़ लगी है। फलस्वरूप अनेक राष्ट्र दूसरी भाषाओं में प्रकाशित नवीनतम वैज्ञानिक साहित्य को अपनी भाषाओं में अनूदित करवाकर अपने ज्ञान को अद्यतन रखने की कोशिश करते हैं। ऐसी स्थिति में अनूदित वैज्ञानिक साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

कुछ संपन्न राष्ट्रों ने (जैसे, अमरीका, कनाडा, जापान, फ्रांस आदि) कुछ सीमित तकनीकी व्यवहार-क्षेत्रों को लेकर कंप्यूटर अनुवाद प्रणाली का विकास किया है लेकिन अनुवाद में पूर्ण परिपक्वता न होने के कारण बाद में मानव अनुवादक को इसका पुनरीक्षण तथा संपादन करना पड़ता है। कंप्यूटर प्रणाली से जिस प्रकार का अनुवाद आज कुछ क्षेत्रों में उपलब्ध है उसे एक प्रकार का 'सूचना अनुवाद' ही कहा जा सकता है जिसमें किसी पाठ (टेक्स्ट) में निहित सूचना या संदेश को असंपादित भाषा-रूप में एक भाषा से दूसरी भाषा में अंतरित कर दिया जाता है। भाषा, शैली तथा अभिव्यक्ति की सुगढ़ता इस कंप्यूटर अनुवाद में पूरी तरह नहीं आ पाती। बाद में मानव अनुवादक या संपादक ही अनूदित पाठ की भाषा का परिमार्जन कर प्रकाशन या संप्रेषण के योग्य बनाता है।

कंप्यूटर के माध्यम से अनुवाद की प्रणाली का आज कुछ राष्ट्रों में जो विकास किया जा रहा है, उसके पीछे वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद ही एक प्रमुख ध्येय है। गैर तकनीकी या साहित्यिक कृतियों का अनुवाद कंप्यूटर प्रणाली द्वारा सफलतापूर्वक संपन्न करना आज संभव नहीं है क्योंकि साहित्य में लक्षणा तथा व्यंजना का भरपूर प्रयोग होता है। इसके अलावा कई शब्दों के अर्थ संदर्भ या संस्कृति की पूर्व जानकारी पर आश्रित होते हैं। कंप्यूटर के लिए आज इस प्रकार की लाक्षणिक भाषा को समझकर दूसरी भाषा में समानार्थक अभिव्यक्ति प्रदान करना संभव नहीं है। इसके विपरीत तकनीकी और वैज्ञानिक भाषा में लाक्षणिकता नहीं होती। इसकी भाषा पूर्णत: अभिधात्मक होती है। इसमें हर तकनीकी शब्द का एक ही अर्थ होता है। अत: कंप्यूटर अनुवाद के लिए सबसे उपयुक्त विधा वैज्ञानिक साहित्य ही माना जाता है। उसमें भी एक सीमित विषय क्षेत्र में प्रयोग में आने वाली भाषा को लेकर ही कंप्यूटर अनुवाद का कार्य अधिक सफल हुआ है। अत: समस्त विज्ञान विषयों के लिए एक ही अनुवाद भाषा प्रणाली विकसित करने के बजाय भाषा-व्यवहार के अलग-अलग तकनीकी क्षेत्रों के लिए अलग-अलग कंप्यूटर अनुवाद व्यवस्था करना अपेक्षाकृत अधिक व्यावहारिक है, जैसे सरकारी कार्यालय की भाषा, बैंकिंग की भाषा, अस्पताल में प्रयोग में आनेवाली भाषा, भौतिकी के किसी एक विषय क्षेत्र में प्रयुक्त की जानेवाली भाषा, टेलीविज़न इंजीनियरी की भाषा, इलेक्ट्रॉनिकी के किसी एक क्षेत्र की भाषा आदि।

क्या आप जानते हैं कंप्यूटर किस प्रकार वैज्ञानिक साहित्य का एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करता है ? इसके लिए यह जरूरी है कि एक ऐसी कंप्यूटर प्रणाली विकसित की जाए जो मानव की भाषा को समझ सके और फिर उसे इस प्रकार संसाधित करे कि दूसरी भाषा में उसका अनुवाद प्रस्तुत हो जाए। दोनों ही भाषाओं के व्याकरण को एक खास पद्धति के अनुसार इस प्रणाली में डाला जाता है। इसके बाद किसी भी एक निश्चित व्यवहार-क्षेत्र (जैसे, अस्पताल, बैंक, कार्यालय आदि) में प्रयोग में आने वाले समस्त शब्दों, अभिव्यक्तियों तथा वाक्य रूपों को संकलित किया जाता है और उनके अर्थों को एक विशेष पद्धति से निरूपित और वर्गीकृत कर इस प्रणाली में डाला जाता है। फिर लक्ष्य भाषा में उसी पद्धति से उनके समानार्थी शब्दों तथा अभिव्यक्तियों के लक्षणों को भी डाला जाता है। इस प्रकार दो भाषाओं का एक ऐसा बृहत-कंप्यूटर व्याकरण विकसित किया जाता है जो मूल पाठ के अर्थ तत्वों को लक्ष्य भाषा के समानार्थी अर्थतत्वों से जोड़ते हुए और व्याकरणिक तथा वाक्यात्मक नियमों का अनुसरण करते हुए अनूदित पाठ प्रस्तुत करता है। आपने देखा कि यह प्रक्रिया अपने में काफी जटिल, श्रमसाध्य और खर्चीली है। इसलिए कुछ समृद्ध राष्ट्र ही वैज्ञानिक अनुवाद के लिए इस दिशा में कार्य कर रहे हैं। विकासमान देशों को मानव अनुवादक के माध्यम से ही अपना समस्त अनुवाद कार्य संपन्न करना पड़ रहा है।

वैज्ञानिक अनुवाद आज विश्व में दो रूपों में देखने को मिलता है। एक रूप वह है जहाँ कार्यरत वैज्ञानिक नए ज्ञान को हासिल करने के लिए अन्य भाषाओं में प्रकाशित शोधपत्रों तथा पुस्तकों का तत्काल अनुवाद चाहते हैं। अनुवाद का दूसरा रूप वह है जो ऐसी भाषाओं में किया जाता है जिसमें वैज्ञानिक लेखन की परंपरा पूर्णत: विकसित नहीं है और जहाँ उस भाषा को वैज्ञानिक साहित्य की दृष्टि से समृद्ध करने के उद्देश्य से अन्य देशों में विकसित और रचित वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद करवाया जाता है। कार्यरत वैज्ञानिकों की मांग पर जो अनुवाद कार्य हाथ में लिया जाता है उसका उद्देश्य होता है वैज्ञानिकों को अन्य भाषाओं में प्रकाशित नवीनतम ज्ञान से परिचित कराना। जिन वैज्ञानिकों के लिए यह अनुवाद किया जाता है वे अनूदित सामग्री की मूल भाषा से परिचित नहीं होते। उनकी अपनी भाषा में भी वैज्ञानिक लेखन की परंपरा हो सकती है। जापानी, रूसी, जर्मन, फ्रांसीसी तथा अंग्रेजी आदि भाषाओं में मुख्यत: इसी कोटि का अनुवाद अधिकांशत: होता है। भारत में दिल्ली स्थित INSDOC नाम की संस्था भारतीय वैज्ञानिकों की मांग पर विदेशी भाषाओं से अंग्रेजी में वैज्ञानिक अनुवाद का कार्य करती हैं। इस संस्था में वैज्ञानिक अनुवाद का कार्य विभिन्न संस्थाओं तथा वैज्ञानिकों की मांग पर ही किया जाता है।

कुछ भाषाओं में वैज्ञानिक अनुवाद का कार्य मुख्यत: इस उद्देश्य से हाथ में लिया जाता है कि उन भाषाओं में यथोचित वैज्ञानिक साहित्य उपलब्ध हो जिससे उच्च शिक्षा में माध्यम के रूप में उनका प्रयोग संभव हो सके। भारत में वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद के पीछे भी प्रमुख धारणा यह थी कि भारतीय भाषाओं को विज्ञान की माध्यम भाषा के रूप में विकसित किया जाए। इसमें विज्ञान तथा तकनीकी विषयों में इतनी पुस्तकें उपलब्ध हो सकें कि छात्रों को हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से अध्ययन करने में असुविधा न हो। भले ही इस प्रकार अनूदित या रचित विज्ञान साहित्य की मांग प्रारंभ

में उतनी अधिक न हो। इन पुस्तकों के उपलब्ध होने से धीरे-धीरे इनका प्रयोग होगा और मांग बढ़ेगी। इस प्रकार के अनुवाद कार्य के पीछे भाषा में वैज्ञानिक लेखन को प्रोत्साहन देने का भाव अधिक मुखर रहता है।

स्मरण रहे कि वैज्ञानिक अनुवाद का कार्य एक जटिल प्रक्रिया है और इसके साथ जुड़ी कुछ समस्याएँ इस कार्य को कुछ कठिन बना देती हैं। भारत के संदर्भ में वैज्ञानिक अनुवाद की प्रमुख समस्याएँ है :

1) ऐसे अनुवादकों की कमी जो अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ वैज्ञानिक विषय और हिंदी भाषा का अच्छा ज्ञान रखते हों।
2) विदेशी पुस्तकों के अनुवाद के संदर्भ में कापीराइट प्राप्त करने की समस्या। कापीराइट की राशि विदेशी मुद्रा में देनी पड़ती है और एक निर्धारित समय-सीमा के भीतर अनुवाद प्रकाशन का कार्य पूरा कर लेना होता है जो कई बार संभव नहीं हो पाता।
3) वैज्ञानिक अनुवादकों को भारत में यथोचित पारिश्रमिक नहीं मिल पाता। फलस्वरूप प्रतिभाशाली विद्वान या अनुवादक इस कार्य की ओर आकर्षित नहीं होते।

22.3.3 अनुकूलित लेखन

आज वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्रों में प्रति दिन इतना विपुल साहित्य प्रकाशित हो रहा है कि किसी भी एक व्यक्ति के पास एक ही विषय पर लिखे गए नवीन साहित्य को पूरी तरह से पढ़ने का समय नहीं है। वैज्ञानिक ज्ञान स्वभावत: सूक्ष्मता और विशेषज्ञता की ओर अग्रसर होता है। किसी भी पुस्तक में सामान्यत: कुछ खास अंश ही विशेषज्ञ की निकटतम रुचि का होता है। पुस्तक के विवेचन का बहुत बड़ा अंश विश्लेषणात्मक आंकड़ों से संबद्ध हो सकता है या उसमें अन्य रुचि के विषयों का विवेचन शामिल हो सकता है। दूसरे शब्दों में, समस्त ग्रंथ या लेख में से कुछ सामग्री ही विशेषज्ञ की रुचि का हो सकता है। अत: समय के अभाव, साहित्य की विपुलता और पाठकों की निजी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिक साहित्य के महत्वपूर्ण पक्षों को सार-संक्षेप के रूप में संपादित या संकलित करके भी प्रस्तुत किया जाता है। 'साइंस डाइजेस्ट', लेख सारांश, चयनिकाएं, संकलित लेख संग्रह, विश्वकोश तथा लोकप्रिय ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकों के रूप में अलग-अलग तरह के पाठकों की जरूरतों के अनुसार जो सामग्री आज उपलब्ध है वह सार-संक्षेप के रूप में वैज्ञानिक सामग्री को अनुकूलित करके प्रस्तुत करने का ही एक प्रयास है। इनके संबंध में आप पिछले अनुच्छेद में विस्तार से पढ़ चुके हैं।

यह ज़रूरी नहीं कि वैज्ञानिक सामग्री को मूल ग्रंथ की भाषा में ही अनुकूलित या संपादित करके प्रस्तुत किया जाए। दूसरी भाषा में भी यह सामग्री संशोधित या अनुकूलित रूप में प्रस्तुत की जा सकती है। इस स्थिति में सामग्री का अनुवाद करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। वास्तव में वैज्ञानिक अनुवाद में जो भाषागत तथा भाषाबाह्य कठिनाइयां आती हैं (जिनका उल्लेख पिछले अनुच्छेद में किया जा चुका है) उनसे बचने के लिए भी इस प्रकार की अनुकूलित सामग्री का निर्माण किया जाता है। हर विवेचन देशकाल से बाधित होता है, अत: यदि किसी विवेचन में देश काल का परिवेश हमारे देशकाल से भिन्न है और वह हमारे लिए उपयोगी नहीं है तो सामग्री को संगत परिवेश में डालकर प्रस्तुत किया जा सकता है। सामान्यत: भारतीय पाठ्य पुस्तकों में जो वैज्ञानिक सामग्री दी जाती है, उसमें विभिन्न स्रोतों से उपलब्ध सामग्री को काट-छांट कर तथा संगत परिवेश प्रदान कर कथ्य को सुबोध ढंग से प्रस्तुत करने का आग्रह रहता है।

क) नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं जो कथ्य की दृष्टि से सही या गलत हैं। सही कथन के आगे (√) तथा गलत के आगे (×) का निशान लगाइए -

1) अनुवाद हमेशा मूल ग्रंथ से ही संभव है, अनूदित ग्रंथ से नहीं। ☐

2) वैज्ञानिक साहित्य कंप्यूटर-अनुवाद प्रणाली के लिए अधिक उपयुक्त है। ☐

3) मौलिक लेखन से भाषा का सहज और प्राकृतिक विकास होता है। ☐

4) शोध पत्रों का उद्देश्य वैज्ञानिक और तकनीकी जानकारी आम जनता तक पहुँचाना होता है। ☐

5) वैज्ञानिक लेखन की परंपरा भारत में समृद्ध रही है। ☐

ख) कोष्ठक में दिए गए उत्तरों में से कोई एक उत्तर सही है। जो उत्तर सही हो उसे रिक्त स्थान में लिखिए -

1) नई संकल्पनाओं के लिए नए शब्द प्रायः ..... देता है।
(भाषाविद/भाषा संस्था/मौलिक लेखक)

2) वैज्ञानिक लेखन हमें चार माध्यमों से प्राप्त होता है - पुस्तक, शोध पत्रिकाएं, कोश और .....।
(ग्रंथ/जनसंचार माध्यम/शास्त्र)

3) वैज्ञानिक लेखन के तीन प्रकार संभव हैं - मौलिक, अनूदित और .....।
(प्रचारात्मक/ज्ञानात्मक/अनुकूलित)

4) ..... ज्ञान साहित्य पीढ़ियों तक सुरक्षित रहता है।
(मौखिक/लिखित)

5) कंप्यूटर अनुवाद का सबसे अधिक उपयोग ..... साहित्य के संदर्भ में किया जा रहा है।
(वैज्ञानिक/साहित्यिक/सर्जनात्मक)

ग) तीन-चार पंक्तियों में उत्तर दीजिए -

1) वैज्ञानिकों को अनूदित वैज्ञानिक साहित्य की ज़रूरत किस उद्देश्य से होती है ?

.....

.....

2) भारत के संदर्भ में वैज्ञानिक अनुवाद की प्रमुख समस्याएं क्या हैं ?

.....

.....

3) अनुकूलित वैज्ञानिक लेखन के अंतर्गत किस-किस प्रकार की कृतियां आती हैं ?

.....

.....

4) सूचना अनुवाद से क्या तात्पर्य है ?

.....

.....

5) वैज्ञानिक लेखन की विशेषताएँ बताइए।

.....

.....

22.4 भारत में वैज्ञानिक लेखन

22.4.1 प्राचीन भारत में वैज्ञानिक लेखन

ऊपर आप पढ़ चुके हैं कि जिस देश में किसी विषय पर मौलिक ज्ञान का विकास होता है उसी देश में उस विषय से संबंधित लेखन की परंपरा विकसित होती है। प्राचीन भारत में दर्शन, अध्यात्म, मीमांसा, धर्म, साहित्यशास्त्र, काव्यशास्त्र, व्याकरण, भाषाविज्ञान आदि विषयों पर मौलिक कार्य हुए। फलस्वरूप इन विषयों पर लेखन की हमारी दीर्घ परंपरा है। इन विषयों के निरूपण के लिए संस्कृत में उपयुक्त शास्त्रीय शब्दावली, अभिव्यक्ति तथा वर्णन-शैली का विकास हुआ। वही शैली भारतीय भाषाओं में भी विरासत के रूप में हमने ग्रहण की।

जहां तक वैज्ञानिक लेखन का प्रश्न है, भारत में इनकी परंपरा एक क्षीण धारा के रूप में ही हमें मिलती है। वस्तुतः आधुनिक अर्थ में वैज्ञानिक लेखन की परंपरा पश्चिम की औद्योगिक क्रांति के बाद और विशेषत: 18वीं तथा 19वीं शताब्दी के दौरान शुरू होती है जो बीसवीं शताब्दी में अपनी चरम सीमा में पहुँचती है।

भारत के प्राचीन ग्रंथों में जहां कहीं भी विज्ञान तथा चिकित्सा से संबंधित कुछ वर्णन मिलता है, उसका स्वरूप आधुनिक वैज्ञानिक प्रणाली तथा तार्किकता से भिन्न है। फिर भी अथवर्वेद में कई रोगों के लक्षणों का वर्गीकरण करने का प्रयत्न हमें मिलता है। ईसा युग के प्रारंभ में आयुर्विज्ञान से संबंधित दो महत्वपूर्ण पुस्तकें मिलती हैं — (1) सुश्रुत संहिता (400-100 ई.पू.) और (2) चरक संहिता (100 ई.)। **'सुश्रुत संहिता'** में शल्य (सर्जरी) से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी है। **'चरक संहिता'** में उपचार औषधियों की मूल जानकारी है। इसके अलावा गणित और ज्योतिष के क्षेत्र में संस्कृत 100 ई. के दौरान अपने चरम उत्कर्ष पर था। इस काल में गणित, न्याय तथा बीजगणित पर अनेक ग्रंथ हमें मिलते हैं, जैसे वाराह मिहिर की 'पंच सिद्धांतिका' (505 ई.) और भास्कर द्वितीय का 'सिद्धांत शिरोमणि' (1150 ई.)

इसी परंपरा में शास्त्रीय पद्धति पर लिखी तीन महत्वपूर्ण पुस्तकों की भी गणना प्राय: की जाती है जो वैज्ञानिक लेखन के शुद्ध दृष्टांत न होते हुए भी भारत में प्रचलित शास्त्रीय विवेचन पद्धति के नमूने हैं। इनसे हमें पता चलता है कि नियमों, सूत्रों तथा व्याख्याओं को कैसे प्रस्तुत किया जाना चाहिए। वे हैं :

1) पाणिनि का 'अष्टाध्यायी' (700-500 ई.पू.), जिसमें संस्कृत के संपूर्ण व्याकरण को थोड़े से सूत्रों और नियमों के भीतर बांधकर अत्यंत वैज्ञानिक रीति से प्रस्तुत किया गया है।

2) कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' (300 ई.पू.), जिसमें राजनीति, अर्थशास्त्र तथा विज्ञान-नीतियों के संबंध में नियमों का प्रतिपादन किया गया है।

3) वात्स्यायन का 'कामसूत्र' (तिथि अनिश्चित), जिसमें मनुष्य के सामाजिक तथा शारीरिक संबंधों के बारे में वैज्ञानिक जानकारी दी गई है।

संस्कृत में विज्ञान-लेखन में मोटे रूप से वही शैली अपनाई गई है जो दर्शनशास्त्र की थी। कथ्य को तीन रूपों में प्रस्तुत करने की परंपरा रही है — सूत्र, भाष्य और श्लोक। **सूत्र** अत्यंत संक्षिप्त सूक्तियां हैं जिनमें छोटे-छोटे वाक्यों में मूल सिद्धांतों को बांधकर रखा जाता है। **भाष्य** में सूत्रों की विस्तृत व्याख्या या समीक्षा होती है जो सामान्यत: गद्य में होती है। ये भी आकार में संक्षिप्त होते हैं लेकिन सूत्र की तुलना में अधिक बड़े होते हैं। छंदबद्ध होने के कारण श्लोकों को स्मरण कर के रखना अधिक आसान होता है। संस्कृत की यह परंपरा रही है कि विज्ञान-लेखन में श्लोक का अधिक-से-अधिक प्रयोग किया जाए और दर्शन आदि में सूत्रों का। विज्ञान-लेखन में सामान्यत: 'आर्य' नामक छंद का प्रयोग किया गया है।

गणित की भाषा कैसी हो, इस संबंध में भास्कर द्वितीय ने 'गोलाध्याय' में लिखा है कि गणित की भाषा अधिक कठिन नहीं होनी चाहिए और न अनावश्यक रूप से विवरणात्मक होनी चाहिए। मूल सिद्धांतों की सही-सही व्याख्या की जानी चाहिए। भाषा में स्पष्टता और गरिमा होनी चाहिए। सिद्धांतों की व्याख्या करते समय पर्याप्त उदाहरण दिए जाने चाहिए। आप अगर गौर से देखें तो पाएंगे कि गणित की भाषा के संबंध में जो बातें भास्कर द्वितीय ने 12वीं सदी में कही थीं वे ही आज भी पूर्णत: सत्य हैं।

22.4.2 स्वतंत्रता पूर्व वैज्ञानिक लेखन

भारत में वैज्ञानिक लेखन की परंपरा दो धाराओं के रूप में देखी जा सकती है — एक, अंग्रेजी माध्यम से और दूसरा, भारतीय भाषाओं के माध्यम से। स्वतंत्रता से पूर्व भारतीय वैज्ञानिक सामान्यत: अंग्रेजी के माध्यम से ही अपना तकनीकी लेखन-कार्य करते थे, क्योंकि तब उच्च शिक्षा में माध्यम के रूप में भारतीय भाषाओं की भूमिका नगण्य-सी थी।

क) अंग्रेजी में प्रारंभिक वैज्ञानिक लेखन

भारत में आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान की सबसे पुरानी पत्रिका 'एशिएटिक रिसर्चेज़' (1783-1839) थी, जो बाद में बंगाल की एशिएटिक सोसाइटी की पत्रिका (1832) में परिणत कर दी गई। जगदीश चंद्र बसु का भौतिकी पर पहला शोध-पत्र इसी पत्रिका में 1895 में प्रकाशित हुआ था। दूसरी महत्वपूर्ण वैज्ञानिक पत्रिका इंडियन जर्नल ऑफ फिजिक्स 1928 में प्रकाशित हुई। इसी पत्रिका में 1978 में 'प्रकाश के विकिरण' विषय पर सी.बी. रमन का वह प्रसिद्ध शोध प्रकाशित हुआ जिस पर उन्हें बाद में नोबल पुरस्कार मिला। इसी प्रकार जीव-विज्ञान, भूगर्भ-विज्ञान आदि कई विषयों पर अनुसंधान पत्रिकाएं निकलीं लेकिन कई बाद में बंद हो गईं।

ख) हिंदी में प्रारंभिक वैज्ञानिक लेखन

स्वतंत्रता से पूर्व हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक लेखन कार्य नगण्य-सा ही रहा। कई विद्वानों ने भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक पुस्तकें लिखने का कार्य हाथ में लिया, लेकिन उपयुक्त पारिभाषिक शब्दों के अभाव में वे इस कार्य को आगे नहीं बढ़ा पाए। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि पुस्तक लिखने से पहले भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का निर्णय किया जाना चाहिए। अत: इस समय जिन वैज्ञानिकों ने भी इस दिशा में कुछ लिखने का फुटकर प्रयत्न किया, उन्होंने स्वयं पारिभाषिक शब्दावली का भी निर्माण करना शुरू किया। लेकिन बहुत जल्द यह बात स्पष्ट हो गई कि शब्दावली का निर्माण करना और उसे मानक रूप प्रदान करना अपने में अत्यंत जटिल और व्यापक कार्य है जो कम से कम व्यक्तिगत स्तर पर संभव नहीं। यह समस्त कार्य कुछ निश्चित सिद्धांतों के आधार पर और कोश-निर्माण की मूलभूत मान्यताओं के अंतर्गत किसी संस्थागत प्रयास से ही संभव है। अत: 1961 में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना कर शब्दावली निर्माण का पूरा दायित्व उसे सौंप दिया गया। इसके विषय में आप पिछली इकाई 19 और 20 में विस्तार से पढ़ चुके हैं।

भारत में सर्वप्रथम 1888 के आसपास प्रो. टी.के. गज्जर के मार्गदर्शन में गुजराती की पांच वैज्ञानिक पुस्तकें प्रकाशित हुईं। 1909 में हिन्दी में महेश चरण सिंह की पुस्तक 'रसायन शास्त्र' प्रकाशित हुई। इसी प्रकार बंगीय साहित्य परिषद ने बंगला में और नागरी प्रचारिणी सभा ने हिन्दी में कुछ वैज्ञानिक पुस्तकें और तकनीकी शब्द-संग्रह निकाले। इस प्रकार स्वतंत्रता से पूर्व हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में जो

भी वैज्ञानिक पुस्तकें लिखी गई उन्हें प्रयोग या प्रयास ही कहा जाना चाहिए, किसी सुस्थापित लेखन परंपरा का अंग नहीं। इसमें यह संदेश छिपा है कि भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक लेखन की आवश्यकता है और जो सामान्य पाठक अंग्रेजी से परिचित नहीं, उसे उसी का भाषा में विज्ञान का ज्ञान प्रदान करना सामाजिक दायित्व भी है और समय की मांग भी।

22.4.3 स्वतंत्रता के बाद वैज्ञानिक लेखन

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में वैज्ञानिक लेखन को प्रभावित करने वाली कई प्रकार की गतिविधियाँ एक साथ हुईं -

क) उच्च स्तर पर यथासंभव भारतीय भाषाओं को विज्ञान की शिक्षा का माध्यम बनाने का संकल्प।

ख) विद्वानों द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर और वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा संस्थागत स्तर पर वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली का निर्माण तथा विकास।

ग) माध्यम परिवर्तन को सुगम बनाने के लिए विश्वविद्यालय स्तर की वैज्ञानिक और तकनीकी पाठ्य-पुस्तकों और मानक-ग्रंथों का निर्माण तथा अनुवाद।

घ) सामान्य पाठकों तथा ज्ञान-विज्ञान की जानकारी उन्हीं की भाषाओं में सुलभ करने के उद्देश्य से हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में लोकप्रिय वैज्ञानिक पुस्तकों का निर्माण।

ङ) भारतीय भाषाओं में मौलिक अनुसंधान तथा उच्च वैज्ञानिक ज्ञान को प्रोत्साहन देने के लिए वैज्ञानिक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन।

जब तक उच्च शिक्षा का माध्यम हिंदी या भारतीय भाषा बनाने का नीति-निर्णय शासकीय या वैधानिक स्तर पर नहीं था तब तक भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक लेखन के लिए कोई भविष्य निश्चित नहीं था। दूसरी ओर अगर वैज्ञानिक विषयों के अध्ययन-अध्यापन के लिए पर्याप्त मात्रा में भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक साहित्य उपलब्ध न हो तो माध्यम-परिवर्तन भी संभव नहीं था। अत: भारत सरकार ने जहाँ एक ओर 1961 में तकनीकी शब्दावली के निर्माण तथा मानकीकरण के लिए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की, वहीं दूसरी ओर उसने भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक तथा तकनीकी पाठ्य पुस्तकों के निर्माण की एक विशद योजना भी बनाई। इस योजना के अंतर्गत वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग के तत्वावधान में भारत सरकार ने 18 हिंदी तथा अहिंदीभाषी राज्यों को अपनी-अपनी भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तर की वैज्ञानिक और तकनीकी पाठ्यपुस्तकें तैयार कर प्रकाशित करने के लिए एक-एक करोड़ रूपए का अनुदान दिया। फलस्वरूप राज्य सरकारों ने 1969-70 के दौरान अपने यहां एक-एक ग्रंथ निर्माण अकादमी या बोर्ड की स्थापना की। इनका कार्य यह था कि वे ज्ञान-विज्ञान तथा टेक्नालॉजी के विभिन्न विषयों पर विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम के अनुसार अपनी-अपनी भाषाओं में पाठ्य-पुस्तक तथा संदर्भ ग्रंथों का निर्माण करें। इंजीनियरी, आयुर्विज्ञान और कृषि विषयों में आवश्यक पाठ्य-पुस्तकें निर्मित करने का दायित्व वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग को सौंपा गया।

तब से लेकर अब तक आयोग तथा विभिन्न अकादमियों ने मिलकर भारतीय भाषाओं में लगभग 13,000 पुस्तकें प्रकाशित की हैं, जिनका संबंध विज्ञान, इंजीनियरी, सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी विषयों से है। इनमें से केवल हिंदी पुस्तकों की संख्या 3000 से ऊपर है।

यह ध्यान रखने की बात है कि पुस्तकों का निर्माण अंतत: मांग और पूर्ति के सिद्धांत पर निर्भर करता है। केवल सरकारी संरक्षण या सहायता से ही यह कार्य संपन्न नहीं होता। सरकार को प्रारंभ में इसलिए हस्तक्षेप करना पड़ा कि पर्याप्त मांग न होने के कारण प्राइवेट प्रकाशक वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य के प्रकाशन में रुचि नहीं लेते थे। यह सोचा गया कि एक बार शासकीय सहायता से आवश्यक मात्रा में वैज्ञानिक साहित्य के उपलब्ध हो जाने के बाद माध्यम परिवर्तन संभव हो सकेगा और भारतीय भाषाओं की पुस्तकों की मांग बढ़ेगी और फलस्वरूप प्राइवेट प्रकाशक इन वैज्ञानिक विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित करने लगेंगे। जहाँ तक हिंदी के वैज्ञानिक लेखन का प्रश्न है, आयुर्विज्ञान, इंजीनियरी और उच्च विज्ञान को छोड़कर शेष विषयों पर हिंदी की वैज्ञानिक और तकनीकी पुस्तकें आज काफी बड़ी संख्या में

उपलब्ध हैं। हिंदी भाषी राज्यों में आज स्नातक स्तर का वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य मांग और पूर्ति के आधार पर सरकारी तथा प्राइवेट दोनों स्तरों पर निर्मित हो रहा है।

22.5 वैज्ञानिक लेखन का सामाजिक, शैक्षिक तथा भाषिक पक्ष

वैज्ञानिक लेखन के प्रश्न को आप तीन स्तरों पर देख सकते हैं — सामाजिक, शैक्षिक तथा भाषिक।

22.5.1 सामाजिक पक्ष

विज्ञान का अध्ययन सिद्धांत तथा अनुप्रयोग दोनों स्तरों पर किया जाता है। हर सैद्धांतिक अनुसंधान अंतत: किसी न किसी रूप में उसके अनुप्रयोग से जुड़ा है। इसे यों भी कह सकते हैं कि विज्ञान का अंतिम लक्ष्य मुनष्य तथा समाज के लिए उपयोगी होता है। इसके अलावा देश के नीति-निर्धारकों का भी यह आग्रह है कि हर व्यक्ति में सोच का वैज्ञानिक तरीका विकसित हो और उसे यथासंभव वैज्ञानिक जानकरी दी जाए। इसके लिए यह ज़रूरी है कि वैज्ञानिक विषयों पर ऐसी पुस्तकें तथा लेख लिखे जाएं जो सामान्य पाठक के लिए बोधगम्य हों। यह वैज्ञानिक लेखन का प्रसारात्मक पक्ष है। भारत में अंग्रेजी के माध्यम से विज्ञान की जानकारी अंग्रेजी जानने वाले विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों को तो दी जा सकती है, लेकिन आम जनता को उन्हीं की भाषाओं के माध्यम से ही यह जानकारी दी जा सकती है। इसीलिए हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में पिछले एक-दो दशकों में लोकप्रिय वैज्ञानिक लेखन की मात्रा उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। आप इस विषय पर इस इकाई के 22.4.3 में विस्तार में पढ़ चुके हैं जहां आप यह भी देख चुके हैं कि भारत सरकार ने भारतीय भाषाओं में पाठ्य पुस्तकों के साथ-साथ लोकप्रिय विज्ञान की पुस्तकों के निर्माण तथा प्रकाशन के कार्य को भी प्रोत्साहित किया।

22.5.2 शैक्षिक पक्ष

भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक लेखन का एक शैक्षिक पक्ष भी है। विश्व के सभी शिक्षाविद् इस बात से सहमत हैं कि शिक्षा का सर्वोत्तम माध्यम छात्र की अपनी भाषा है। छात्र की प्रतिभा और सृजनात्मकता का सम्यक विकास उसकी अपनी मातृभाषा के माध्यम से ही संभव है। 1968 के कोठारी शिक्षा रिपोर्ट में भी इस बात को दोहराया गया है कि भारत में शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएं होनी चाहिए। स्कूल स्तर पर त्रिभाषा सूत्र को लागू करने के पीछे यही भाव प्रमुख था। इस सूत्र के अनुसार मोटे रूप में स्कूल स्तर पर छात्र को चरणबद्ध रूप से तीन भाषाएं पढ़नी होती हैं -

क) छात्र की अपनी मातृभाषा
ख) हिंदी (या अन्य भारतीय भाषा)
ग) अंग्रेजी (या कोई विदेशी भाषा)

उच्च शिक्षा के संदर्भ में रिपोर्ट में यह सिफारिश है कि भारतीय भाषाओं को उत्तरोत्तर विश्वविद्यालय शिक्षा का माध्यम बनाया जाए जिसमें विज्ञान और तकनीकी विषय भी शामिल हैं। माध्यम परिवर्तन की यह समस्त प्रक्रिया इस समय संक्रांति काल में है। कुछ बड़े शहरों को छोड़कर समस्त देश में स्कूल स्तर तक की शिक्षा अधिकांशत: छात्र की उनकी अपनी भाषाओं में दी जा रही है। जहाँ तक उच्च शिक्षा का प्रश्न है, अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं दोनों के माध्यम से शिक्षा का प्रावधान है लेकिन उच्च वैज्ञानिक तथा तकनीकी शिक्षा में अंग्रेजी का प्रयोग अधिक है। सरकार का यह संकल्प है कि धीरे-धीरे ज्ञान-विज्ञान तथा टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में भी भारतीय भाषाओं का प्रयोग किया जाए। आज भारतीय भाषाओं में उपलब्ध वैज्ञानिक लेखन का एक बहुत बड़ा अंश इसी शैक्षिक उद्देश्य से प्रेरित है। उदाहरण के लिए, हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तर के सभी विषयों पर ग्रंथ निर्माण की जो विशाल योजना केन्द्र तथा राज्य सरकारें क्रियान्वित कर रही हैं, उनके पीछे भी यही उद्देश्य है। इस विषय पर आप इस इकाई के पिछले अनुच्छेद 22.4.3 में विस्तार से पढ़ चुके हैं।

22.5.3 भाषिक पक्ष

आप इकाई 19.2 और 19.4 में विस्तार से वैज्ञानिक भाषा-रूपों के बारे में पढ़ चुके हैं। मोटे रूप से वैज्ञानिक लेखन की भाषा में सूक्ष्मता, वस्तुनिष्ठता, विश्लेषणात्मकता, सूत्रात्मकता और सार्वभौमिकता के गुण दिखाई देते हैं। भाषिक दृष्टि से, वैज्ञानिक लेखन के दो प्रमुख रूप मिलते हैं - 1) अनुसंधानपरक या तकनीकी वैज्ञानिक भाषा, और 2) लोकप्रिय विज्ञान की भाषा। अनुसंधानपरक वैज्ञानिक लेखन विषय के जानकारों के लिए होता है इसलिए इसमें तकनीकीपन तथा सूत्रात्मकता अधिक होती है। लोकप्रिय वैज्ञानिक लेखन सामान्य पाठकों के लिए होता है और इसलिए इसमें तकनीकीपन की मात्रा कम होती है और भाषा-शैली सहज और बोधगम्य होती है।

वैज्ञानिक लेखन के भाषिक पक्ष में तीन मुख्य घटक शामिल हैं -

क) तकनीकी शब्दावली
ख) तकनीकी अभिव्यक्तियां या वाक्यांश
ग) तकनीकी वाक्य-रूप

इनमें से तकनीकी शब्दावली के संबंध में आप इकाई-20 में विस्तार से पढ़ चुके हैं। तकनीकी वाक्यरूपों के बारे में आप इकाई 19.4.1 में पढ़ चुके हैं। यहाँ हम वैज्ञानिक लेखन में प्रयुक्त विशिष्ट अभिव्यक्तियों तथा वाक्यांशों की चर्चा करेंगे।

हर तकनीकी लेखन, चाहे यह वैज्ञानिक हो या सामाजिक विज्ञान विषयों का, एक विशेष प्रकार की निजी शैली और शब्दावली विकसित करता है। यह शैली सामान्यत: उस विषय की भाषा की पहचान बन जाती है। इसी को हम **प्रयुक्ति** या तकनीकी भाषा-रूप कहते हैं (देखिए इकाई 19.2)। उदाहरण के लिए, 'चांदी सोना नरम, सिक्का गिरा' अभिव्यक्ति देखते ही मंडी बाजार की भाषा की पहचान सामने आती है। 'यात्रा का योग प्रबल है' ज्योतिष की भाषा का रूप है 'आपको अभीष्ट पुत्रों की प्राप्ति होगी' वाक्य से धार्मिक भाषा-रूप का बोध होता है। इसी प्रकार विज्ञान की भाषा की भी अपनी अभिव्यक्तियां हैं। दूसरे शब्दों में कुछ खास तरह के वाक्यांशों और अभिव्यक्तियों की आवृत्ति वैज्ञानिक भाषा में अपेक्षतया अधिक होती है। यहां यह उल्लेखनीय है कि जिस भाषा में इस प्रकार की विषयगत अभिव्यक्तियाँ जितनी अधिक विकसित होंगी वह भाषा उस विषय में उतनी ही अधिक समृद्ध होगी। ये अभिव्यक्तियां उस भाषा की तकनीकी शैली का निर्माण करती हैं।

इन अभिव्यक्तियों के संबंध में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि ये हमेशा प्रयोग द्वारा ही विकसित और रूढ़ होती हैं। अनुवाद के रूप इन्हें स्थापित करने की प्रक्रिया बहुत धीमी होती है और उस स्थिति में भी ये तभी मानक रूप से स्थापित या स्वीकृत होती हैं जब लंबे प्रयोग के द्वारा ये आम प्रचलन में आने लग जाते हैं। हिंदी के संदर्भ में कुछ वैज्ञानिक अभिव्यक्तियां अंग्रेजी के आधार पर बनाई गई हैं जिनमें से कुछ सहज प्रयोग में आ चुके हैं और कुछ प्रयोग के लिए संघर्षरत हैं। हम नीचे अंग्रेजी-हिंदी की इस कोटि की अभिव्यक्तियों के नमूने के रूप में दे रहे हैं :

1.	The reaction is carried out in the presence of oxygen	अभिक्रिया ऑक्सीजन की उपस्थिति में संपन्न होती है
2.	In an atmosphere of	के परिमंडल में
3.	On treatment with acid	अम्ल से उपचारित किए जाने पर
4.	Slightly alkaline	किंचित क्षारीय
5.	Inversely proportional	उत्क्रम अनुपाती
6.	only ideal gases obey gas laws fully	केवल आदर्श गैसें ही गैस नियमों का अनुसरण करती हैं/पालन करती हैं।
7.	The two theories complement each other	दोनों सिद्धांत एक दूसरे के पूरक हैं।
8.	Are in full agreement with	से पूर्णत: मेल खाते हैं।
9.	The theories support each other	दोनों सिद्धांत एक दूसरे का समर्थन करते हैं/की पुष्टि करते हैं।

ये अभिव्यक्तियां वैज्ञानिकों को एक खास अर्थ का भाव व्यक्त करती हैं और इसलिए किसी भी वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन के ये अभिन्न अंग हैं। लेकिन यदि वैज्ञानिक लेखन का उद्देश्य सामान्य पाठक को वैज्ञानिक जानकारी देना है तो लेखक ऐसी अभिव्यक्तियों का प्रयोग नहीं करेगा जो सामान्य अभिव्यक्ति का अंग न हो। वह किसी भी वैज्ञानिक तथ्य को सरल, सरस तथा बोधगम्य तरीके से प्रस्तुत कर सकता है। नीचे के अंश में देखिए वैज्ञानिक लेखक ने किस प्रकार वर्णन की विधा को ही परिवर्तित कर आत्मकथा के रूप में एलुमिनियम के बारे में जानकारी दी है -

> मेरा नाम एलुमिनियम है तथा धातुओं की लंबी परंपरा में मेरा एक प्रमुख स्थान है। मैं अपने अग्रजों - सोना, चांदी, तांबा, लोहा आदि की तरह इतना सौभाग्यशाली नहीं हूँ कि मेरा संदर्भ विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ वेद में आया हो।..... मुझसे और मेरी मिश्र धातुओं से ढलवां तथा पिटवां दोनों प्रकार के उत्पाद तैयार किए जाते हैं। ..... मेरे तथा मेरी मिश्रधातुओं के पिंडों को बेलन मिल में बेल्लित करके छड़, चादर, एंगिल, विभिन्न प्रकार के सेक्शन, महीन पन्नी आदि प्राप्त किए जा सकते हैं।

इस प्रकार आप पाएंगे कि संदर्भ तथा पाठक को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिक लेखक अपनी भाषा तथा अपनी प्रस्तुतीकरण-पद्धति में अंतर कर लेता है। वैज्ञानिक लेखन मूलत: तकनीकी और रूढ़ शब्दावली के योग से निर्मित होता है। इस पर भी यदि इसे ऐसी भाषा में प्रस्तुत करना हो जिसमें मूलत: इन विशिष्ट प्रयुक्तियों और अभिव्यक्तियों का प्रयोग प्रचलन द्वारा पूर्णत: सिद्ध न हो पाया हो और अनुवाद पद्धति का सहारा लेना पड़ा हो तो लेखन की जटिलता बढ़ जाती है।

अभ्यास 2

(क) नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं जो कथ्य की दृष्टि से सही या गलत हैं। सही कथन के आगे (√) तथा गलत के आगे (×) का निशान लगाइए-

1. प्राचीन भारत में विज्ञान-लेखन में वही शैली अपनाई जाती थी जो दर्शन शास्त्र में। ☐
2. प्राचीन वैज्ञानिक लेखन में संस्कृत में सामान्यत: "आर्या" नामक छंद का इस्तेमाल किया गया है। ☐
3. स्वतंत्रता के बाद सामान्यत: वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण का कार्य व्यक्तिगत स्तर पर हुआ, संस्थागत स्तर पर नहीं। ☐
4. भारत में वैज्ञानिक ग्रंथों के अनुवाद का कार्य संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। ☐
5. रेडियो के वैज्ञानिक लेखन के वाचन को लिखित भाषा न कहकर मौखिक भाषा ही कहना ज्यादा उचित है। ☐

(ख) कोष्ठक में दिए गए उत्तरों में से कोई एक उत्तर सही है। जो सही उत्तर हो उसे रिक्त स्थान में लिखिए -

1. प्राचीन भारतीय साहित्य में ..... विषय से सम्बंधित लेखन की समृद्ध परंपरा नहीं है।
   (भौतिकी/गणित/भूगर्भ विज्ञान)
2. 'चरक संहिता' में ..... की मूल जानकारी है।
   (भौतिकी/गणित/औषधि)
3. भारत के प्राचीन शास्त्रीय लेखन में कथ्य को तीन रूपों में प्रयुक्त करने की परंपरा रही है : सूत्र, भाष्य और .....।
   (श्लोक/व्याख्या/छंद)
4. गणित की भाषा के संबंध में ..... ने 'गोलाध्याय' में चर्चा की है।
   (पाणिनि/वाराहमिहिर/भास्कर द्वितीय)

5. 1868 के आसपास प्रो. टी. के. गुज्जर के मागदर्शन में ..... की पाँच पुस्तकें प्रकाशित हुई।

(हिंदी/गुजराती/बंगला)

(ग) तीन चार पंक्तियों में उत्तर दिजिए-

1. आयुर्विज्ञान के संदर्भ में संस्कृत की दो महत्वपूर्ण पुस्तकों का नाम लिखिए।

.....

.....

2. जगदीशचंद्र बसु भौतिकी पर पहला शोधपत्र किस भारतीय पत्रिका में निकला ?

.....

.....

3. सी.वी.रमन का 'प्रकाश के विकिरण' नामक शोध-पत्र किस भारतीय पत्रिका में छपा?

.....

.....

4. त्रिभाषा सूत्र के तीन सूत्र क्या हैं?

.....

.....

5. राज्यों में ग्रंथ-निर्माण अकादमियाँ स्थापित करने का उद्देश्य क्या था?

.....

.....

22.6 सारांश

आपने इस पाठ में वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन के बारे में पढ़ा। आपने पढ़ा कि -

- वैज्ञानिक लेखन हमें चार माध्यमों से उपलब्ध होता है - पुस्तक शोध-पत्र, पत्रिकाएं, कोश तथा विश्वकोश और जनसंचार माध्यम।
- वैज्ञानिक लेखन मौलिक भी हो सकता है, अनूदित भी और अनुकूलित भी।
- वैज्ञानिक अनुवाद के लिए कंप्यूटर अनुवाद प्रणाली को विकसित करने के प्रयत्न कई देशों में हो रहे हैं।
- वैज्ञानिक अनुवाद एक ओर वैज्ञानिकों के ज्ञान को अद्यतन रखता है और दूसरी ओर विकासमान देशों की भाषाओं को वैज्ञानिक साहित्य के क्षेत्र में समृद्ध करता है।
- प्राचीन भारत में वैज्ञानिक लेखन की परंपरा एक क्षीण धारा के रूप में ही मिलती है जो आधुनिक वैज्ञानिक लेखन से भिन्न है।
- स्वतंत्रता से पहले भारत में वैज्ञानिक लेखन अंग्रेजी में ही होता था, लेकिन स्वतंत्रता के बाद भारतीय भाषाओं में भी वैज्ञानिक लेखन की परंपरा शुरू हुई, यद्यपि उच्च वैज्ञानिक लेखन में अंग्रेजी का ही प्रयोग अधिक है।
- स्वतंत्रता के बाद भारत में दो प्रकार के वैज्ञानिक लेखन की परंपरा मिलती है - पाठ्यपुस्तकों के रूप में वैज्ञानिक लेखन और लोकप्रिय विज्ञान के रूप में वैज्ञानिक लेखन।
- शैक्षिक स्तर पर भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने सभी राज्यों को एक-एक करोड़ रुपए का अनुदान दिया और हर राज्य में ग्रंथ की स्थापना की।

- वैज्ञानिक लेखन भारत में सामाजिक, शैक्षिक तथा भाषिक तीनों स्तरों पर विकास की प्रक्रिया में है और उच्च शिक्षा में माध्यम परिवर्तन के प्रश्न से जुड़ा है।

22.7 शब्दावली

जनसंचार माध्यम
चयन
अनुस्तरीकरण
प्रस्तुतीकरण
लोकप्रिय विज्ञान
शोधपत्र
शोध पत्रिका
विश्व कोश
सूत्रात्मकता
मौखिक लेखन
अनूदित लेखन
अनुकूलित लेखन
लाक्षणिकता
भौतिकी
इलेक्ट्रॉनिकी
समानार्थी अर्थ तत्व
चयनिका
मीमांसा
सूत्र
भाष्य
श्लोक
जीव विज्ञान
भूगर्भ विज्ञान
विकिरण
कोश निर्माण कला
त्रिभाषा सूत्र
सृजनात्मकता
अभिक्रिया
उपचारित
परिमंडल
उत्क्रम
अनुपाती
किंचित क्षारीय
वेल्लित
मिश्र धातु

22.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. **हिंदी भाषा : संदर्भ और संरचना** (1991) लेखक : सूरजभान सिंह ; साहित्य सहकार, ई/10-4, कृष्णनगर, दिल्ली-110005
2. **भाषा और प्रौद्योगिकी** (1988) संपादक : गिरिराज किशोर: प्रकाशन केन्द्र, आई.आई.टी., कानपुर .

22.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास 1

क) 1) × 2) √ 3) √
4) × 5) ×

ख) 1) मौलिक लेखक 2) जनसंचार माध्यम 3) अनुकूलित
4) लिखित 5) वैज्ञानिक

ग) इकाई से स्वयं जाचँ करें।

अभ्यास 2

क) 1) √ 2) √ 3) ×
4) √ 5) ×

ख) 1) गणित 2) औषधि 3) श्लोक
4) भास्कर द्वितीय 5) गुजराती

ग) 1) 'सुश्रुत संहिता', 'चरक संहिता'
2) एशियाटिक रिसर्चेज़ 3) इंडियन जर्नल ऑफ फिजिक्स
4) और 5) इकाई से स्वयं जाँच करें।

खंड

6

जनसंचार में हिंदी

इकाई 23
जनसंचार माध्यम: विविध आयाम 5

इकाई 24
जनसंचार के विविध रूप: भाषिक प्रकृति 24

इकाई 25
समाचार लेखन और हिंदी 44

इकाई 26
विज्ञापन और हिंदी 60

इकाई 27
संपादन कला 77

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

प्रो. आर.एन. श्रीवास्तव
भाषा विज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-110 007

प्रो. निर्मला जैन
हिंदी विभाग
साऊथ दिल्ली कैम्पस
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो. के.सी. भाटिया (सेवा निवृत्त)
लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी
मसूरी-248 179

प्रो. एस.बी. सिंह
वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग
वेस्ट ब्लॉक-7
आर.के. पुरम
नई दिल्ली-110 066

प्रो. यू.एन. सिंह
हैदराबाद विश्वविद्यालय
हैदराबाद-500 134

प्रो. वी.रा. जगन्नाथन
इ.गां.रा.मु.वि.

डॉ. मंजु गुप्ता
इ.गां.रा.मु.वि.

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

श्री हिसामुद्दीन फारूक़ी (प्रोड्यूसर)
इ.गां.रा.मु.वि.
संचार प्रभाग, नई दिल्ली
(इकाई 23)

डॉ. प्रमोद कुमार (प्रवक्ता)
केन्द्रीय हिंदी संस्थान
नई दिल्ली-110 016
(इकाई 24, 26, 27)

डॉ. सत्यकाम (प्रवक्ता)
इ.गां.रा.मु.वि.
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-68
(इकाई 25)

खंड संयोजक

डॉ. सत्यकाम

संकाय सदस्य

डॉ. रीतारानी पालीवाल

श्रीमती स्मिता चतुर्वेदी

श्रीमती विमल खांडेकर

पाठ्यक्रम संयोजक

डॉ. मंजु गुप्ता
डॉ. सत्यकाम

सचिवालयिक सहायक
श्री राजेश शर्मा

मुद्रण प्रस्तुति

सुश्री पुष्पा गुप्ता
कॉपी एडिटर
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मई 1997 (पुनर्मुद्रित)

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 1995

ISBN-81-7263-769-1

सर्वाधिकार सुरक्षित । इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है ।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-68 से प्राप्त की जा सकती है ।

UGHI-08/74

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अनुमति से पुनः मुद्रित। उ०प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,

खंड परिचय : जनसंचार में हिंदी

यह ऐच्छिक पाठ्यक्रम-08 का छठा खंड है। इसके पहले वाले खंड (खंड-5) में आप वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी से संबंधित जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। इस खंड में हम जनसंचार के क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग पर प्रकाश डालने जा रहे हैं।

इस खंड में पाँच इकाइयाँ हैं। इनका विभाजन इस प्रकार किया गया है —

— जनसंचार माध्यम : विविध आयाम
— जनसंचार के विविध रूप : भाषिक प्रकृति
— समाचार लेखन और हिंदी
— विज्ञापन और हिंदी
— संपादन कला

जनसंचार में हिंदी के प्रयोग से हिंदी का स्वरूप और आयाम व्यापक हुआ है। अब हिंदी केवल बोलचाल और साहित्य की भाषा नहीं रह गयी है बल्कि जनसंचार के विभिन्न माध्यमों में इसका प्रयोग होने लगा है। आज जनसंचार के प्रमुख माध्यम हैं — समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो और टेलीविजन। इन सभी क्षेत्रों में हिंदी का अलग स्वरूप निखरता है। समाचार पत्र में छपे समाचार और रेडियो और टेलीविजन से प्रसारित समाचार की भाषा में अंतर होता है। वस्तुतः इन तीनों माध्यमों के अनुरूप विज्ञापन की भाषा में भी अंतर हो जाता है। आज का युग विज्ञापनों का युग है। इसीलिए तरह-तरह के आकर्षक विज्ञापन हम समाचार पत्रों में पढ़ते और रेडियो दूरदर्शन पर सुनते और देखते हैं। विज्ञापनों की अपनी अलग भाषा ही विकसित हो गयी है। चाहे समाचार पत्र हो या रेडियो या टेलीविजन भाषा और तथ्य संपादन की जरूरत हर जगह होती है। इसलिए हम इस खंड की अंतिम इकाई में संपादन कला पर भी विचार करने जा रहे हैं।

आइए, अब इकाइयों का अध्ययन किया जाए।

इकाई 23 जनसंचार माध्यम : विविध आयाम

इकाई की रूपरेखा

23.0 उद्देश्य
23.1 प्रस्तावना
23.2 जनसंचार माध्यम : एक परिचय
  23.2.1 अर्थ
  23.2.2 इतिहास
  23.2.3 प्रमुख वर्गीकरण
23.3 लिखित जनसंचार माध्यम
  23.3.1 समाचार पत्र
  23.3.2 पत्रिकाएं
  23.3.3 हैंडबिल, पैमफ्लेट, होर्डिंग, पोस्टर, विज्ञापन
23.4 श्रव्य माध्यम
  23.4.1 रेडियो का आविष्कार
  23.4.2 रेडियो की विशेषताएं
  23.4.3 रेडियो का उपयोग
23.5 श्रव्य-दृश्य माध्यम
  23.5.1 सिनेमा
  23.5.2 टेलीविजन
  23.5.3 वीडियो कैसेट
23.6 जनसंचार माध्यम और भाषा
23.7 राष्ट्रीय विकास में जनसंचार की भूमिका
23.8 भविष्य में जनसंचार की संभावनाएं
23.9 सारांश
23.10 उपयोगी पुस्तकें
23.11 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

23.0 उद्देश्य

हिंदी के ऐच्छिक पाठ्यक्रम प्रयोजनमूलक हिंदी के खंड 6 की यह पहली इकाई है। इस इकाई में जनसंचार के विभिन्न माध्यमों की जानकारी दी जाएगी। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- जनसंचार का अर्थ बता सकेंगे,
- जनसंचार के इतिहास से परिचित करा सकेंगे,
- इसके विभिन्न माध्यमों की जानकारी दे सकेंगे,
- लिखित, श्रव्य और श्रव्य दृश्य माध्यमों में अंतर करते हुए इनकी विशेषता का आकलन कर सकेंगे,
- विभिन्न जनसंचार माध्यमों में भाषा की उपयोगिता बता सकेंगे,
- राष्ट्रीय विकास में जनसंचार की भूमिका का उल्लेख कर सकेंगे, तथा
- भविष्य में जनसंचार की संभावनाओं का आकलन कर सकेंगे।

23.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई पाठ्यक्रम-08 की 23वीं और खंड 6 "जनसंचार में हिंदी" की पहली इकाई है। जैसा आप जानते हैं इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रति सजगता

लाना है। प्रस्तुत खंड में जनसंचार के विभिन्न माध्यमों में प्रयोजनमूलक हिंदी की आपको जानकारी दी जाएगी। इस क्रम में उस क्षेत्र में प्रयुक्त की जाने वाली शब्दावली से परिचित कराया जाएगा, सामान्य भाषा और प्रयोजनमूलक भाषा में भेद बताया जाएगा तथा अनौपचारिक शैली के साथ-साथ औपचारिक शैली के व्यावहारिक पक्ष से आपको परिचित कराया जाएगा।

जनसंचार से संबंधित इकाइयों में से पहली इकाई आपके समक्ष है। इसमें हमारा उद्देश्य आपको जनसंचार के बारे में जानकारी देना, विभिन्न माध्यमों जैसे, समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, आदि से परिचित कराना और राष्ट्रीय विकास में जनसंचार की भूमिका के बारे में बताना है।

जनसंचार के विभिन्न माध्यमों—सूचना, शिक्षा, मनोरंजन आदि के कार्यों से जुड़े होते हैं। जनसंचार के इन माध्यमों की पहुंच विभिन्न श्रोता वर्ग तक होती है। अलग-अलग संचार माध्यमों की विशेषताएं अलग-अलग होती हैं। इन्हीं विशेषताओं के कारण इनमें प्रयुक्त भाषा का स्वरूप भी बदलता रहता है। माध्यमों की विशेषताएं इस इकाई में अलग से बतायी गयी हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जनसंचार, उसके विभिन्न माध्यम और माध्यमों की विभिन्न विशेषताओं से भलीभांति परिचित हो सकेंगे। अगली इकाइयों में विभिन्न जनसंचार माध्यमों में भाषा का प्रयोग सीखते समय यह जानकारी आपके लिए उपयोगी साबित हो सकेगी।

आज जनसंचार हमारा अभिन्न अंग बन गया है। सुबह से शाम तक हम जनसंचार के विभिन्न क्षेत्रों में जानकारी दे रहे होते हैं या ले रहे होते हैं। उदाहरण के लिए सुबह होते ही हमें अखबार की आवश्यकता होती है, फिर दिन भर हम रेडियो या टेलीविजन के माध्यम से खबरें प्राप्त कर रहे होते हैं। साथ ही साथ रेडियो और टी.वी. हमारे मनोरंजन के अतिरिक्त विभिन्न जानकारियों से परिचित करा रहे होते हैं। इसी के साथ विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञापन ने हमारे जीवन में एक विशेष प्रकार की व्यावसायिकता ला दी है। आइए इन सबके बारे में विस्तार से चर्चा की जाए।

23.2 जनसंचार माध्यम : एक परिचय

जनसंचार आज हमारे जीवन और राष्ट्रीय विकास का अभिन्न अंग बन गया है। सुबह से शाम तक जनसंचार माध्यमों से विभिन्न क्षेत्रों में (राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, खेलकूद आदि) हम जानकारी प्राप्त कर रहे होते हैं। उदाहरण के लिए सुबह होते ही हमें अखबार की आवश्यकता होती है, फिर सारे दिन हम रेडियो या दूरदर्शन के माध्यम से समाचार प्राप्त करते रहते हैं। साथ ही साथ रेडियो और टी.वी. सुबह से रात गए तक हमारे मनोरंजन के अतिरिक्त अन्य कई तरह की जानकारियों से हमें परिचित करा रहे होते हैं। इसी के साथ विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञापन ने हमें उपभोक्ता संस्कृति से जोड़ दिया है।

कुल मिलाकर जनसंचार के विभिन्न माध्यम जैसे समाचार पत्र, रेडियो, सिनेमा और टेलीविजन ने व्यक्ति से लेकर समूह तक और देश से लेकर सारे विश्व को एक सूत्र में बांध दिया है जिसके परिणामस्वरूप जनसंचार माध्यम आज राष्ट्रीय स्तर पर विचार, अर्थ, राजनीति और यहां तक कि संस्कृति को भी प्रभावित करने में सक्षम हो गए हैं। जनसंचार विशेषज्ञ विल्बर श्रम ने इसीलिए अपनी पुस्तक "मास मीडिया एंड नेशनल डेवलपमेंट" में लिखा है कि जनसंचार साधन दुनिया का नक्शा बदल सकते हैं। तो आइएं, जनसंचार के अर्थ, इतिहास और उसके प्रमुख माध्यमों के बारे में विस्तार से जानें।

23.2.1 अर्थ

जनसंचार दो शब्दों से मिलकर बना है — जन अर्थात जनता और संचार जिसका अर्थ है किसी बात को आगे बढ़ाना, चलाना या फैलाना। जनसंचार के विशेषज्ञ ए. मिलर ने लैंगवेज एंड कम्यूनीकेशन में कहा है कि जनसंचार का अर्थ सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना है।

यदि हम किसी भाषा या विचार या जानकारी को दूसरों तक पहुंचाते हैं और यह प्रक्रिया सामूहिक पैमाने पर होती है तो इसे जनसंचार कहते हैं। जनसंचार का उद्देश्य जानकारी या विचारों को समाज के सभी तबकों तक पहुंचाना है ताकि सभी लोग इसका लाभ उठा सकें।

जनसंचार के जो माध्यम और तरीके अभी तक अपनाये गये हैं उनमें समाचार पत्र, रेडियो, सिनेमा, टेलीविजन और वीडियो कैसेट आधुनिकतम कहे जा सकते हैं। उल्लेखनीय है कि इन सभी माध्यमों

में संदेश या सूचना का प्रसार एक तरफा ही है। सूचना के प्राप्तकर्ता से इनका फीडबैक नहीं के बराबर है। यानी सभी माध्यमों में प्रचारक या प्रसारक के संदेश प्राप्तकर्ता से दोहरा संपर्क नहीं स्थापित कर पाते हैं। प्राप्तकर्ता से मिलने वाली प्रतिक्रिया, चिट्ठियों आदि के माध्यम से संपर्क नहीं के बराबर है। जनसंचार की अति आधुनिकतम पद्धतियों के प्रयोग से निकट भविष्य में प्राप्तकर्ता से दोहरा संपर्क अवश्य रखा जा सकेगा। इसकी चर्चा हम इकाई के अंत में अलग से करेंगे।

संचार प्रक्रिया के चार प्रमुख अंग हैं :

- प्रेषक (संदेश भेजने वाला)
- संदेश
- माध्यम
- प्राप्तकर्ता

सरल रूप में संचार प्रक्रिया को इस तरह दर्शाया जा सकता है।

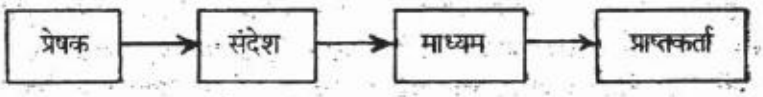

संचार की पूर्ण सफलता तभी है जबकि संदेश माध्यम के द्वारा प्राप्तकर्ता तक वैसे का वैसा ही पहुंचे किंतु आम तौर पर संदेश और प्राप्तकर्ता के बीच समझाने और समझने की बाधाएं उत्पन्न होती हैं। एक अन्य सावधानी माध्यम के सही प्रयोग की भी रखनी होती है। माध्यम के सही प्रयोग का तात्पर्य उपयुक्त भाषा के प्रयोग से है। माध्यम के अनुरूप भाषा का स्वरूप भी बदलता चलता है।

23.2.2 इतिहास

आदि मानव ने अपनी विभिन्न जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न तरह की आवाजों, हावभाव और इशारों से संचार की शुरुआत की। यानी संचार का इतिहास आदिकाल से ही जुड़ा है। जैसे-जैसे मानव सभ्य होता गया संचार के तरीके भी बदलते गये। संगीत, नृत्य, ढोल की आवाज से मदद लेकर या चित्र खींचकर संदेशों का आदान-प्रदान शुरू हुआ। किंतु यह आरंभ था। समाज के उदय के साथ-साथ सूचनाओं का आदान-प्रदान निरंतर बढ़ता गया और भाषा के विकास ने तो संचार की दुनिया ही बदल डाली। मनुष्य ने स्थान और समय के अनुसार भाषा विकसित की जिससे मानव ज्ञान में तेजी से वृद्धि हुई। मनुष्य नई-नई चीजों और विचारों से परिचित होने लगा। फिर जल्द ही मनुष्य ने लिखना भी सीख लिया। और इसी के साथ मनुष्य के विचार आने वाली पीढ़ी तक सुरक्षित रहने लगे। शिलालेखों से हमें इसका प्रमाण मिलता है। ज्ञात होता है कि हाथ से लिखी हुई किताबों का इतिहास कोई तीस शताब्दी पुराना है। चीनियों ने सबसे पहले उपलब्ध ज्ञान को किताबों के रूप में सुरक्षित किया। यह विश्व का पहला ज्ञान कोश था।

कई शताब्दियों तक विश्व के अधिकांश निवासी गांव और कबीलों की शक्ल में एक छोटे से सामाजिक दायरे में बंधे रहे। इन समुदायों में परस्पर संवाद का साधन केवल अंतर्वैयक्तिक संचार था जो आज भी संचार का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। मानव सभ्यता के विकास के इस चरण तक संचार की गति धीमी थी। आवाज एक सीमित दूरी तक ही पहुंच सकती थी और लिखित सामग्री को भी मनुष्य तथा घोड़े या कबूतर जैसे जानवर और पक्षियों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाया जाता था।

आधुनिक युग के अनेक वैज्ञानिक अन्वेषण हुए जिनसे यातायात और व्यापार में चहुंमुखी विकास हुआ और इससे विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के बीच संचार को भी बढ़ावा मिला। नवीं शताब्दी में चीन में छपाई का काम शुरू हो गया। 15वीं शताब्दी में यूरोप में भी छपाई शुरू हुई और 16वीं शताब्दी में सारे विश्व में अखबार निकलने लगे। औद्योगिक क्रांति के साथ संचार को भी नये आयाम मिले। छापेखाने या प्रिंटिंग प्रेस चल पड़े तो पुस्तकों, समाचार पत्रों और अन्य प्रकार की पाठ्य सामग्री का प्रकाशन भी बढ़ गया और जनसाधारण के लिए जानकारी दूर-दूर तक फैलने लगी। लगभग 500 साल के निरंतर अनुसंधान के तहत छपाई की पद्धति में कई परिवर्तन आये। पहले लकड़ी की टाइप से छपाई हुई, फिर हाथ की मशीन पर काम हुआ फिर बिजली की सहायता से प्रेस की ईजाद हुई फिर क्रमशः लेटर प्रेस, ऑफसेट प्लेटें और रोटरी मशीनों का प्रयोग किया गया। आधुनिक पद्धति में

छपाई के लिए फोटो ऑफसेट मशीनों का प्रयोग किया जा रहा है जिनसे मैटर कंपोज करने की जरूरत नहीं पड़ती, "कापी" सीधी छपाई की मशीन पर पहुंच जाती है।

इसी तरह एक और क्रांति जनसंचार में तब आयी जब टेलीग्राफ का आविष्कार हुआ। फिर टेलीफोन बना और टेलीफोन के बाद रेडियो-वायरलैस और टेलीविजन का जमाना आया। अब तो अंतरिक्ष में स्थित कृत्रिम उपग्रहों द्वारा संचार-व्यवस्था भी कई देशों में चलायी जा रही है।

23.2.3 प्रमुख वर्गीकरण

अब आपको अंदाज हुआ होगा कि जनसंचार के विकास में तीन बड़े परिवर्तन आये हैं। प्राचीन पद्धतियों में मनुष्य जिन माध्यमों का प्रयोग कर रहा था वे थे चेहरे के हावभाव, ध्वनि, चित्रलिपि, नृत्य, कठपुतली आदि। इन पद्धतियों से संचार की गति धीमी थी और इसका क्षेत्र घोड़ों, कबूतर जैसे जानवरों, पक्षियों के प्रयोग के बावजूद सीमित था।

जनसंचार के विकास में पहला क्रांतिकारी परिवर्तन तब आया जब मनुष्य ने लिखित माध्यमों का प्रयोग किया। इसमें विशेष रूप से समाचार पत्रों ने सक्रिय भूमिका निभायी। अन्य लिखित माध्यमों में विभिन्न पत्रिकाएं (साप्ताहिक-पाक्षिक-मासिक, वार्षिक), तथा पोस्टर, पैमफ्लेट, फोल्डर आदि जनसंचार के लिए उपयोगी रहे। लिखित माध्यम केवल पढ़े-लिखे वर्ग के लिए ही उपयोग में आ सके हैं। भारत में शिक्षित वर्ग का अनुपात बहुत कम होने के बावजूद जनमत के निर्माण में समाचार पत्रों का प्रभावी योगदान रहा।

दूसरा परिवर्तन तब हुआ जब आवाज का संप्रेषण सफलतापूर्वक किया गया। विज्ञान के इस आविष्कार के साथ ही रेडियो का जन्म हुआ।

रेडियो श्रव्य माध्यम था जिसे क्या साक्षर क्या निरक्षर, क्या शहरी क्या ग्रामीण—सभी एक ही समय में एक साथ सुन सकते थे। यहां तक कि दृष्टिहीनों के लिए भी रेडियो उतना ही उपयोगी था। एक छोटे से डिब्बे में किसी व्यक्ति की आवाज जब लोगों तक पहुंचने लगी तो उसने जादुई करिश्मा किया। ट्रांजिस्टर के आविष्कार ने तो धूम ही मचा दी। अब तो यह घर से लेकर खेत-खलिहान, हाट-बाजार, साइकिल-मोटर कार तक पहुंच गया। इस तरह इस श्रव्य माध्यम की सुलभता, सहजता और लचीलेपन के गुणों के कारण जनसंचार का व्यापक प्रसार संभव हो सका।

जनसंचार में तीसरा महत्वपूर्ण चरण तब आरंभ हुआ जब श्रव्य के साथ दृश्य के सामंजस्य के रूप में सिनेमा और टेलीविजन का आविष्कार हुआ। शुरू में सिनेमा बिना आवाज के चित्रों के आवभाव और आंखों के इशारों से संचार का कार्य करता रहा फिर तस्वीरों के साथ आवाज का सामंजस्य भी किया गया। सिनेमा सीमित क्षेत्र में बड़े पर्दे पर ही दिखाया जा सकता था। टेलीविजन के आविष्कार के बाद प्रसार की मदद से संचार का क्षेत्र भी बढ़ गया और संदेश लोगों के घरों तक पहुंचने लगा। इस तरह सिनेमा और टेलीविजन श्रव्य-दृश्य माध्यमों के रूप में प्रभावकारी ढंग से सामने आये।

इस प्रकार हम जनसंचार के विभिन्न माध्यमों को तीन प्रमुख वर्गों में रख सकते हैं :

- लिखित जनसंचार माध्यम (समाचार पत्र, पत्रिकाएं, पोस्टर, पैमफ्लेट, होर्डिंग आदि)
- श्रव्य माध्यम (रेडियो)
- श्रव्य-दृश्य माध्यम (सिनेमा और टेलीविजन)

इकाई के अगले भाग में हम उपर्युक्त तीनों वर्गों का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

बोध प्रश्न

1) जनसंचार से क्या तात्पर्य है? (हाँ या नहीं में उत्तर दीजिए)

   क) क्या यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के बीच बातचीत है। हाँ/नहीं

   ख) क्या यह दो व्यक्तियों का किसी माध्यम द्वारा संपर्क है। हाँ/नहीं

   ग) सूचना को समूह तक पहुंचाना है। हाँ/नहीं

   घ) सूचना को किसी अन्य व्यक्ति तक पहुंचाना है। हाँ/नहीं

2) (क) और (ख) का सही मिलान कीजिए।

(क)	(ख)
मुद्रण	टेलीविजन
प्रसारण	समाचार पत्र
श्रव्य-दृश्य	रेडियो

अभ्यास

1) जनसंचार का इतिहास संक्षेप में लिखिए (लगभग 20 पंक्तियों में)।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

23.3 लिखित जनसंचार माध्यम

लिखित जनसंचार से तात्पर्य उस संदेश से है जो समूह के लिए लिखा जाए या मुद्रित (छापा) किया जाए। इसके अंतर्गत ऐसी लिखित सामग्री शामिल होती है जिनमें जानकारी हो, संदेश हो या किसी ऐसे सामाजिक विषय की चर्चा हो जिसमें समूह की दिलचस्पी हो। यह बात आर्थिक विषय से संबंधित हो सकती है, वैज्ञानिक हो सकती है, राजनीतिक विषयों पर हो सकती है। प्राचीन काल में चमड़े और शिलालेखों पर जनसंचार के प्रमाण मिलते हैं। लेकिन मुद्रण के आविष्कार के बाद लिखित जनसंचार माध्यम में क्रांतिकारी परिवर्तन आये हैं और आज लिखित जनसंचार माध्यम के अंतर्गत प्रमुखतः समाचार पत्र और विभिन्न पत्रिकाओं को रखा जा सकता है। होर्डिंग्स और पैमफ्लेट के माध्यम से भी विज्ञापन और प्रचार के लिए जनसंचार उपयोगी और प्रभावी रहा है। आइए, विस्तार से इनकी चर्चा की जाए।

23.3.1 समाचार पत्र

समाचार पत्र जनसंचार का सशक्त लिखित माध्यम है। समाचार पत्रों के साप्ताहिक और मासिक अंक भी प्रचलन में हैं किंतु समाचार पत्रों ने घर के एक सदस्य की तरह लोगों में अपना स्थान बना लिया है। लोग सुबह उठते ही चाय के प्याले के साथ अखबार का भी इंतज़ार करते हैं। बड़े और प्रतिष्ठित

समाचार पत्रों ने हर विषय के लिए स्थान निश्चित कर रखे हैं। रोज की ताजा खबरों के अतिरिक्त इनमें विभिन्न विषयों पर चर्चाएं और जानकारियाँ भी होती हैं—जैसे आर्थिक, वैज्ञानिक, साहित्यिक, खेलकूद आदि कई क्षेत्रों में विभिन्न समाचार पत्र विशेष अंक भी प्रकाशित करते है।

विभिन्न सामयिक जानकारियों के लिए भी अलग-अलग स्थान तय रहते हैं, जैसे सिनेमा, आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा रेल संबंधी जानकारी और रोज के नगर आयोजन आदि आदि। खबरों का विस्तार विभिन्न स्तंभों में बंटा हुआ होता है। स्थानीय खबरों के लिए विशेष स्थान होता है जबकि राष्ट्र या अंतर्राष्ट्रीय समाचारों के लिए अलग से स्थान दिया जाता है। इन सबके अतिरिक्त समाचार पत्रों में एक स्थान और अहम होता है और वह है "संपादकीय" जिसमें संपादक सामयिक विषय पर अपनी बात कहता है। कभी आश्चर्य भी होता है, पर यह सत्य है कि इतनी सारी जानकारियां, खबरें और चर्चाएं समाचार पत्र हजारों-लाखों लोगों तक रोज उनके घर लेकर पहुंचते हैं।

समाचार पत्र की छवि को नया रूप देने के लिए उसकी साज-सज्जा में जो परिवर्तन हुए वे आश्चर्यजनक हैं। आधुनिक यांत्रिकी द्वारा अखबारों की प्रकाशन तकनीक में एक क्रांति-सी आयी है। अब भारत में अखबारों को कंप्यूटर द्वारा टाइप सेट करके बहुरंगी चित्रों के साथ भी छापा जा रहा है जिससे उनका रंग-रूप ही बदल गया है। इलेक्ट्रोनिक विधियों द्वारा **वीजुअल डिसप्ले टर्मीनल** पर संपादन, प्रूफ वाचन और पृष्ठ निर्माण का कार्य एक ही व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है। कंप्यूटर और वीडियो स्क्रीन की सहायता से पत्र की सभी सामग्री को केवल बटन दबाकर निगेटिव अथवा पाजिटिव कापी यूनिट से बाहर निकाल लिया जाता है। इसी प्रकार व्यंग्य-चित्रों और कथा-चित्रों के लिए फोटो पत्रकारिता की नई तकनीकें भी प्रयोग में लायी जा रही हैं जिनसे समाचार पत्रों का रूप और निखर गया है।

समाचार पत्रों की विषय वस्तु को प्रभावी बनाने के लिए भी अनेक प्रयास हुए हैं। विभिन्न विधाओं में, जैसे — विज्ञान, कृषि, खेल, साहित्य, कानून, चिकित्सा आदि के लिए अलग-अलग संवाददाता रखे जाते है। समाचार पत्रों को खबरें समाचार एजेंसियों से मिलती हैं। भारत में समाचार एजेंसियां अंग्रेजी और हिंदी के माध्यम से समाचार संकलित करती हैं और उन्हें समाचार पत्र की जरूरत के मुताबिक रिलीज करती है। अंग्रेजी की मुख्य एजेंसियां हैं — प्रेस ट्रस्ट आफ इंडिया (पी.टी.आई.) और यूनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया (यू.एन.आई.)। हिंदी में काम करने वाली न्यूज एजेंसियों के नाम हैं — पी.टी.आई. की हिंदी सेवा भाषा और यू.एन.आई. की यूनीवार्ता जो हिंदी में खबरें समाचार पत्रों तक पहुंचाती हैं।

समाचार पत्रों ने लोगों में अपना विश्वास पैदा किया है और वे उन्हें अपना विश्वसनीय मित्र मानते हैं। जनसंचार के इस लिखित माध्यम की भाषा कैसी और किस प्रकार होनी चाहिए; दैनिक, साप्ताहिक, समाचार पत्रों में क्या अंतर होता है, इसकी विस्तृत जानकारी हम अगली इकाई में पढ़ेंगे।

23.3.2 पत्रिकाएं

लिखित जनसंचार माध्यम के अंतर्गत पत्रिकाओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। पत्रिकाएं समाचार पत्र का विस्तृत रूप है। इसकी सामग्री और पृष्ठ समाचार पत्रों से अधिक होते हैं। आपने विभिन्न पत्रिकाएं विविध विषयों पर देखी होंगी — जैसे महिलाओं के लिए गृहशोभा, बच्चों के लिए चंदामामा या अन्य विषयों जैसे फिल्म या आर्थिक विषयों पर या सामाजिक साहित्यिक, वैज्ञानिक या कृषि से संबंधित विषयों पर।

पत्रिकाओं का इतिहास उतना ही पुराना है जितना समाचार पत्रों का। साप्ताहिक "उद्दंत मार्तंड" का प्रथम अंक सन् 1926 को प्रकाशित हुआ था। फिर 1857 से पूर्व तक भारत में पत्रिकाओं की संख्या 15 से 1000 तक थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् इसमें अभूतपूर्व वृद्धि हुई। पत्रिकाओं को समय अवधि के आधार पर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक तथा वार्षिक वर्गों में बांटा जा सकता है। इनके मूल लेखन में बहुत कम परिवर्तन होते हैं किंतु विषय के चयन में समय अवधि के हिसाब से अधिक ध्यान देने की जरूरत होती है। यह भी ध्यान रखना होता है कि पत्रिकाएं विशेष पाठक वर्ग के लिए होती हैं, इसलिए विषयों और पाठक वर्ग को मद्दे नजर रखते हुए भी भाषा के प्रयोग में सावधानी बरतनी होती है। इनकी शब्दावली अलग हो सकती है और पाठक वर्ग के हिसाब से शैली भी बदलती है जिसकी विस्तृत चर्चा अगली इकाई में की जाएगी।

23.3.3 हैंडबिल, पैमफ्लेट, होर्डिंग, पोस्टर, विज्ञापन

जनसंचार के क्षेत्र में विज्ञापनों ने न केवल अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है, वरन् सामाजिक चेतना और व्यावसायिक क्रांति के लिए ये अग्रसर रहे हैं। इनका महत्व यूं भी समझा जा सकता है कि जनसंचार के प्रत्येक माध्यम में विज्ञापनों को स्थान दिया गया है।

यदि हम गौर करें तो आज विज्ञापन आम व्यक्ति के जीवन के साथ जुड़ गया है। सुबह का अखबार देखें तो उसमें से गिरता हुए पैमफ्लेट या हैंडबिल आपका ध्यान अखबार से पहले आकर्षित कर लेता है। फिर अखबार में विभिन्न स्थानों पर विज्ञापन नजर आते हैं। कुछ स्थान विशेष रूप से विज्ञापन के लिए ही सुरक्षित रहते हैं। बाजार और रास्तों में हमें छोटे और बड़े पोस्टर नजर आते हैं। चौराहों और विशेष स्थानों पर होर्डिंग्स (बड़े बोर्ड) हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। नगर में चल रहे चलचित्रों के प्रचार में पैमफ्लेट और पोस्टर्स ने अहम भूमिका अदा की है।

रेडियो और टेलीविजन पर भी विज्ञापन विभिन्न उत्पादों की खूबियों को समझा रहे होते हैं। जो भी हो आज आम व्यक्ति अपनी दिनचर्या में इन विज्ञापनों से प्रभावित हुआ है।

माध्यम के अनुसार विज्ञापन की भाषा तकनीक और शैलियां अलग-अलग होती हैं। एक ही माध्यम में अलग-अलग तकनीक और शैलियां अपनायी जाती हैं। उदाहरण के लिए मुद्रण में अखबार का इश्तिहार कम से कम स्थान पर होगा इसलिए भाषा में शब्दों का चयन और आकार भिन्न होगा। जबकि बड़े चौराहों में लगने वाले होर्डिंग्स शब्दों के बड़े आकार और ऐसे तरीकों की मांग करते हैं जिससे लोगों का ध्यान आकर्षित किया जा सके। लिखित माध्यम के विज्ञापनों के चित्रों का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। रेडियो के विज्ञापनों में समय की कमी के कारण कम से कम और आकर्षक शब्दों का चयन महत्वपूर्ण होता है। टेलीविजन के विज्ञापनों में कंप्यूटर एनीमेशन ने सृजनात्मकता के अनेक द्वार खोल दिये हैं। कुल मिलाकर विज्ञापन एक दिलचस्प क्षेत्र है जो हमेशा कुछ न कुछ नया और अधिक करने की मांग करता है।

बोध प्रश्न

3) अखबारों ने विषय-वस्तु को प्रभावी बनाने में जो प्रयत्न किये हैं उनमें से किन्हीं तीन का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

अभ्यास

2) आप अखबार के बारे में जानकारी देते हुए संक्षिप्त लेख लिखिए। (20 पंक्तियां)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

23.4 श्रव्य माध्यम

मुद्रण के आविष्कार के बाद संदेश और विचारों को शक्तिशाली और प्रभावी ढंग से अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाना मनुष्य का लक्ष्य बन गया। यद्यपि समाचार पत्र जनसंचार के विकास में एक क्रांति ला चुके थे लेकिन सन् 1895 में मार्कोनी ने बेतार के तार का पता लगाया और आगे चलकर रेडियो के आविष्कार के जरिए आवाज एक ही समय में असंख्य लोगों तक उनके घरों को पहुंचने लगी। इस प्रकार श्रव्य माध्यम के रूप में जनसंचार को रेडियो ने नये आयाम दिए। आगे चलकर रेडियो को सिनेमा और टेलीविजन के जरिए कई चुनौतियां मिलीं लेकिन रेडियो अपनी विशिष्टता के कारण इन चुनौतियों का सामना करता रहा। भविष्य में भी इसका स्थान सुरक्षित है। आइए, श्रव्य माध्यम के अंतर्गत रेडियो के चमत्कारों की चर्चा की जाए।

23.4.1 रेडियो का आविष्कार

रेडियो संचार व्यवस्थाएं चुंबकीय तरंगों द्वारा काम करती हैं। इसके आविष्कार के लिए वर्षों तक अनेक वैज्ञानिकों का योगदान रहा है। सन् 1860 में स्काटिश जेम्स किलर मेक्सवेल, 1880 में जर्मनी के भौतिकशास्त्री हेनरिक ने चुंबकीय तरंगों पर काम किया। फिर सन् 1901 में मार्कोनी ने रेडियो तरंगों द्वारा इंग्लैंड से न्यूफाउंडलैंड तक, अटलांटिक सागर के आरपार संदेश भेजने में सफलता प्राप्त की। 1906 में कनाडा के रेजीनाल्ड एच. फेसेन्डन ने सबसे पहले मानव की आवाज का प्रसारण किया। आरंभ में इलेक्ट्रानिक वाल्व के प्रयोग के कारण रेडियो का आकार काफी बड़ा होता था किंतु 1948 में ट्रांजिस्टर के आविष्कार से रेडियो लोगों की जेब में रखने योग्य भी बनने लगे।

23.4.2 रेडियो की विशेषताएं

रेडियो जनसंचार का एक ऐसा प्रभावी और द्रुतगामी माध्यम है जो एक ही समय में स्थान और दूरी को लांघकर विश्व के कोने-कोने तक पहुंच जाता है। यह श्रव्य माध्यम है और इस माध्यम की विशेषता यह है कि संचारक और सूचना के प्राप्तकर्ता दोनों ही एक दूसरे को नहीं देख पाते हैं। रेडियो सार्वजनिक भी है और व्यक्तिगत भी। यानी एक आवाज लाखों लोगों को संबोधित करती है पर दो या तीन लोगों के समूह से ही बात करती है। रेडियो का यह सबसे बड़ा गुण है कि इसे सुनते हुए दूसरे काम भी किये जा सकते हैं। रेडियो की निम्नलिखित विशेषताएं प्रमुख हैं:

- श्रोता की कल्पना शक्ति का उपयोग
- वर्तमान का बोध
- लचीलापन
- तत्परता

रेडियो माध्यम को इस बात का लाभ है कि वह श्रोता की कल्पना शक्ति का अधिक से अधिक उपयोग कर पाता है। प्रसारक नम्रता से श्रोता का मित्र बन जाता है। बनावटी रोने से सहानुभूति अर्जित करता है तथा आवाज, ध्वनि और संगीत के माध्यम से कहानी और नाटक को श्रोता की कल्पना शक्ति के जरिये अधिक से अधिक प्रभावी रूप दे पाता है। रेडियो का यह भी गुण है कि वह हर समय जीवंत होने का बोध कराता है। रेडियो के रिकार्ड किए हुए कार्यक्रम भी उसी समय प्रसारित किये हुए लगते हैं। दो विशेष गुणों ने रेडियो को अधिक लचीला बना दिया है। एक रेडियो में लचीलापन है क्योंकि इसे किसी भी स्थान पर किसी भी अवस्था में सुना जा सकता है। दूसरा रेडियो समाचार और सूचना तत्परता से प्रसारित करता है। मौसम संबंधी चेतावनी और प्राकृतिक विपत्तियों के समय रेडियो का यह गुण शक्तिशाली बन पाता है।

23.4.3 रेडियो का उपयोग

भारत में सन् 1936 से रेडियो का नियमित प्रसारण शुरू हुआ। आज भारत के कोने-कोने में देश की लगभग 97 प्रतिशत जनसंख्या रेडियो सुन पा रही है। आकाशवाणी द्वारा जिन क्षेत्रों में प्रसारण किये जा रहे है उनमें प्रमुख हैं:

- सूचना तथा समाचार
- शिक्षा
- मनोरंजन
- विज्ञापन

आकाशवाणी के कोड में यह बात कही गयी है कि जहां रेडियो कार्यक्रमों द्वारा श्रोताओं का मनोरंजन किया जाए वहीं देश-विदेश की गतिविधियों के बारे में सूचित करना और प्रगति की ओर अग्रसर होने की दिशा में आवश्यक शिक्षा भी प्रदान की जाए। इसी बात को ध्यान में रखते हुए आकाशवाणी के कार्यक्रमों को मुख्य दो भागों में बांटा गया है — आंतरिक प्रसारण सेवा और विदेश प्रसारण सेवा। आंतरिक प्रसारण सेवा में 21 प्रमुख भाषाओं और 146 जनजाति और दूसरी बोलियों में कार्यक्रम होते हैं। रेडियो समाचार ने जहां दिन प्रति दिन घटित घटनाओं की तुरंत जानकारी का कार्यभार संभाल रखा है वहीं श्रोताओं के विभिन्न वर्गों के लिए विविध कार्यक्रमों की मदद से सूचना और शिक्षा को भी मद्दे नजर रखा जाता है — जैसे युवाओं के लिए युववाणी, महिलाओं के लिए महिला जगत, बच्चों के लिए बालसभा, ग्रामीणों के लिए खेती और गृहस्थी कार्यक्रम आदि-आदि। स्कूली और विद्यालयीन शिक्षा कार्यक्रमों के लिए भी अलग से समय निश्चित किए गए हैं। रेडियो इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त मनोरंजन के कार्यक्रम भी प्रसारित करता है जिनमें फिल्मी गीतों, फिल्मी बातों के अलावा हास्य-व्यंग्य, नाटक और संगीत के कार्यक्रम भी शामिल रहते है। मनोरंजन के क्षेत्र में खेल प्रसारण भी रेडियो की विशिष्ट सेवा है। कई खेलों की ख्याति रेडियो द्वारा प्रसारित आंखों देखा हाल से ही बनी है।

विज्ञापन को रेडियो के रूप में एक व्यापक माध्यम मिला है। विभिन्न मनोरंजन कार्यक्रमों के अतिरिक्त विभिन्न विशेष समयों पर तथा आंखों देखा हाल वगैरह के बीच-बीच में भी रेडियो विज्ञापन प्रसारित करता है।

बोध प्रश्न

4) वे कौन से गुण हैं जिनसे रेडियो की महत्ता आज बनी हुई है। (5 पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

5) रेडियो किन-किन क्षेत्रों में अपनी सेवाएं दे रहा है? (5 पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

6) रेडियो किन-किन वर्गों के लिए प्रसारण करता है। (5 पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

3) अखबार के प्रमुख समाचारों को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा उन्हीं को ध्यान से रेडियो पर सुनें। जो अंतर आप महसूस करें उसे कागज पर लिखें। (लगभग 15 पंक्तियां)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

23.5 श्रव्य-दृश्य माध्यम

जनसंचार के इतिहास ने एक नया मोड़ लिया जब आवाज के साथ-साथ बोलने वाले की तस्वीर भी एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचने लगी। सिनेमा और टेलीविजन वैज्ञानिक आविष्कार द्वारा जनसंचार के नये माध्यम के रूप में सामने आये।

फिल्मों में जनसंचार के विषय को उपयुक्त दृश्यों, कलात्मक साज-सज्जा, संगीत, नृत्य तथा सुंदर संवादों के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है। दर्शक पढ़े-लिखे हों या एकदम अनपढ़ चलचित्रों से सभी लोग आनंद लेते हैं और लाभ उठातें हैं।

टेलीविजन के आविष्कार के बाद सिनेमा का पर्दा टी.वी. स्क्रीन के रूप में घर के ड्राइंग रूम तक पहुंच गया। तस्वीरें छोटी जरूर हो गयीं लेकिन अब लोग घर बैठे एक साथ श्रव्य-दृश्य का आनंद लेने लगे। टेलीविजन की सहायता से संसार भर की घटनाओं का आंखों देखा हाल लोगों तक पहुंचाया जाने लगा। इनमें मनोरंजन के साधन भी जुटाये गये और शिक्षा के लिए भी टेलीविजन का उपयोग किया गया।

श्रव्य-दृश्य के सामंजस्य से सिनेमा ने सामाजिक और सांस्कृतिक स्तरों पर व्यापक परिवर्तन किया है। टेलीविजन ने तो सारी दुनिया को ही एक परिवार के रूप में बदल दिया है। आइए, सिनेमा और टेलीविजन के बारे में कुछ विस्तृत जानकारी ली जाए।

23.5.1 सिनेमा

फिल्म अथवा सिनेमा जनसंचार का एक शक्तिशाली और प्रभावकारी माध्यम है। फिल्म श्रव्य-दृश्य माध्यम है। इसमें संचार की प्रक्रिया तात्कालिक होती है। यह माध्यम विश्वसनीय और व्यापक होता है। फिल्म निर्माण में पटकथा, संवाद, संगीत, नृत्य, फोटोग्राफी, संपादन आदि तत्व फिल्म की सफलता के लिए निर्णायक तत्व हैं। अतः जनसंचार के इस माध्यम में कितनी मेहनत और सावधानी की आवश्यकता है, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। आइये अब संक्षेप में फिल्मों का इतिहास जान लिया जाए।

- फिल्मों का इतिहास लगभग 97 वर्ष पुराना है।
- दादा साहब फालके और हीरालाल सेन लघु फिल्में बनाने वाले पहले भारतीय थे।

- "पुण्डालिक" भारत में बनने वाली पहली कथा-फिल्म थी।
- पहली फीचर फिल्म "राजा हरिश्चंद्र" दादा साहब फालके ने तैयार की जो सन् 1913 में प्रदर्शित हुई।
- सन् 1921 में धीरेन गांगुली ने "इंग्लैंड रिटर्न" नामक पहली सामाजिक फिल्म का निर्माण किया।
- सन् 1931 में पहली बोलती फिल्म "आलम आरा" निर्मित हुई।
- पहली भारतीय पूर्ण रंगीन फिल्म सन् 1937 में बनी, नाम था "किसान कन्या"।

इस समय भारत में दो तरह की फिल्में बन रही हैं। एक तरफ फार्मुला फिल्में तो दूसरी तरफ उद्देश्यपूर्ण कलात्मक फिल्में। फार्मुला फिल्मों में मनोरंजन के नाम पर संदेश को यौन, बलात्कार, हिंसा के रूप में तस्वीरों की तेज गति के साथ दिखाया जा रहा है। जबकि कलात्मक फिल्में आमतौर पर गति की दृष्टि से धीमी होती है किंतु कथा शैली, प्रस्तुतीकरण, फोटोग्राफी आदि सभी में इनमें अनेक प्रयोग किए गए हैं। फार्मूला फिल्मों से हटकर नये प्रयोग पुरस्कृत और प्रशंसित भी हुए हैं। निर्देशक सत्यजित राय, बासु चटर्जी, महेश भट्ट, श्याम बेनेगल, मृणाल सेन आदि इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं।

भारत में फिल्म का जनसंचार माध्यम के रूप में सर्वाधिक प्रयोग गैर सरकारी क्षेत्र में किया गया है। वैसे सरकारी क्षेत्र में भी इस विद्या का प्रयोग किया गया है। सन् 1948 में भारतीय फिल्मस डिवीजन की स्थापना की गयी। भारतीय जीवन, कला, संस्कृति, साहित्य और उससे जुड़े विविध प्रश्नों से संबंधित वृत्त चित्र फिल्मस् डिवीजन द्वारा तैयार किए गए हैं।

फिल्मों को प्रोत्साहन देने के लिए प्रतिवर्ष राष्ट्रीय पुरस्कार भी दिए जाते हैं। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों का भी आयोजन किया जाता रहा है। सन् 1953 से फिल्म पुरस्कार भी प्रदान किए जाते रहे हैं। भारतीय सिनेमेटोग्राफ अधिनियम 1952 के तहत फिल्म सेंसर बोर्ड का गठन किया गया है और सेंसर-बोर्ड से प्रमाण पत्र लेने के बाद ही देश में सार्वजनिक रूप से फिल्म का प्रदर्शन किया जा सकता है। सेंसर बोर्ड किसी फिल्म को प्रमाण पत्र देते समय संपूर्ण कथानक के संदर्भ में उसके प्रभाव का मूल्यांकन करता है तथा साथ ही राष्ट्र के सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में भी उसे आंकता है। फिल्मों से संबंधित कुछ प्रमुख संगठन हैं :

1) राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम
2) इंडियन मोशन पिक्चर्स एक्सपोर्ट कारपोरेशन
3) फिल्म समारोह निदेशालय
4) फिल्म प्रभाग
5) फिल्म वित्त निगम
6) बाल फिल्म समिति
7) भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान

विकासशील देशों के लिए फिल्म माध्यम विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध हो सकता है। भारत जैसे देश में जहां आधी से अधिक जनसंख्या अनपढ़ है, यदि फिल्मों के माध्यम का सही उपयोग किया जाए तो लोगों की मनोवृत्ति और विचारधारा तक को बदला जा सकता है।

23.5.2 टेलीविजन

श्रव्य-दृश्य माध्यम के रूप में टेलीविजन आज संसार के लगभग सभी देशों में विकसित हो चुका है। टेलीविजन में रेडियो और फिल्म दोनों के लगभग सभी प्रमुख गुण मौजूद हैं। फिल्मों की भांति टेलीविजन एक ओर कहानी के चलते फिरते बनावटी किरदार और दुनिया की घटनाओं से जूझते वास्तविक लोगों को दिखाता है तो दूसरी ओर रेडियो की भांति मनोरंजन, संवाद, सूचना, समाचार, शिक्षा के सभी दायित्व भी बड़ी खुबी के साथ अदा करता है।

टेलीविजन कार्यक्रमों के निर्माण में फिल्मों की भांति शूटिंग होती है। फिल्मिंग, डबिंग, एडिटिंग आदि सभी कुछ होता है। इसी प्रकार रेडियो की भांति टी.वी. प्रसारण में उद्घोषक होते हैं, समाचार वाचक होते हैं और कार्यक्रमों के प्रसारण की तत्परता का पूरा महौल होता है।

टेलीविजन के आविष्कार में अनेक वैज्ञानिकों ने लंबे समय तक अथक प्रयास किए हैं। सन् 1880 में अमेरिका के डब्लू.ई. सायर और फ्रांस के मौरिस लैब ने सुझाव दिया कि एक चित्र को बहुत छोटे-छोटे

टुकड़ों में बांटकर एक के बाद एक टुकड़े को प्रेषित किया जा सकता है। सन् 1897 में कैथोड रे ट्यूब के आविष्कार के बाद बोरिस रेजिंग ने अंततः 1907 में सुझाव दिया कि कैथोड रे ट्यूब को टेलीविजन निर्माण में प्रयोग किया जा सकता है। आखिर 26 जनवरी 1926 को जॉन लोगी बेअर्ड ने विश्व का सफल टेलीविजन प्रदर्शन ब्रिटेन में करके दिखाया। 2 नवंबर, 1936 को लंदन में बी.बी.सी. द्वारा नियमित टेलीविजन प्रसारण सेवा बेअर्ड की टेलीविजन पद्धति द्वारा आरंभ हुई। लेकिन उन्हीं दिनों मार्कोनी की भी टेलीविजन प्रसारण विधि विकसित हो चली थी जो बेअर्ड की विधि से बेहतर थी। आज भांति-भांति के टी.वी. सेट बनने लगे हैं। आश्चर्य की बात है वैज्ञानिकों ने इतने छोटे टेलीविजन भी बना लिए है जो कलाई घड़ी में फिट होने लगे हैं।

भारत में 15 सितंबर 1959 को सबसे पहले दिल्ली में टेलीविजन सेवा का आरंभ हुआ। उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने किया। आरंभ में इसका प्रसारण 24 किलोमीटर की परिधि में केवल दिल्ली के इर्द-गिर्द 30 गांवों तक सीमित था और इसका उद्देश्य केवल जनसंचार द्वारा सामाजिक शिक्षा देना था। सन् 1974 में अमेरिका द्वारा छोड़े उपग्रह की मदद से इसका विस्तार हुआ। टी.वी. प्रसारण को आरंभ में आकाशवाणी की सेवाओं के अधीन रखा गया किंतु एक अप्रैल 1976 से दूरदर्शन के नाम से एक नया संगठन स्थापित किया गया। वर्ष 1976 से ही दूरदर्शन पर व्यापारिक सेवा भी शुरू कर दी गयी।

15 अगस्त 1982 से भारतीय दूरदर्शन पर विधिवत् रंगीन प्रसारण भी शुरू हुआ। नवंबर 1982 में दिल्ली में हुए एशियाई खेलों का सफल प्रसारण करके दूरदर्शन ने काफी प्रतिष्ठा अर्जित की। वर्ष 1987 से दूरदर्शन ने प्रातःकालीन प्रसारण भी शुरू किया। आज देश में दूरदर्शन ट्रांसमीटरों की संख्या 200 से भी अधिक हो गयी है।

समाचार तथा सामान्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त टेलीविजन के कार्यक्रम विभिन्न वर्गों के दर्शकों के लिए बंटे होते हैं, जैसे — महिलाओं के लिए, बच्चों के लिए, कृषकों के लिए। इनके अतिरिक्त नाटक, धारावाहिक तथा खेल संबंधी प्रसारण भी किये जाते हैं।

इन सभी कार्यक्रमों को तैयार करने में निर्माण-तकनीक और लेखन कौशल की आवश्यकता है। देश में इस तेजी से टी.वी. का विस्तार हुआ है कि इसके निर्माण में विशेषज्ञों की कमी महसूस की जाने लगी है। भारत की 80 प्रतिशत जनता गांवों में निवास करती है। इस विशाल जनसंख्या को शिक्षित करने और उसे विज्ञान की नई-नई तकनीकों से अवगत कराने के लिए टी.वी. की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। अब उपग्रहों की मदद से दूरदर्शन के कार्यक्रम को देश के पिछड़े और दूरदराज के इलाकों में बसे लोगों तक पहुंचाया जा रहा है। इन्सेट-2 की मदद से सभी दूरदर्शन केंद्रों को एक-दूसरे से जोड़ा गया है। इस प्रकार उपग्रह की सहायता से हम एक ही समय पर सारे देश में एक साथ जीवंत कार्यक्रम विभिन्न चैनलों पर देख सकते हैं। ऐसे में टी.वी. का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है।

आज धार्मिक सहिष्णुता, राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भावना को प्रोत्साहित करना राष्ट्र की प्राथमिकताएँ हैं। जनसंचार विशेषज्ञ मानते हैं कि दूरदर्शन जनसंचार का एक ऐसा माध्यम है जो कि दर्शकों के दिलोदिमाग पर जादू करता है। ऐसे में दूरदर्शन अपना कितना सहयोग दे पाता है, यह उसके लिए एक चुनौती है।

23.5.3 वीडियो कैसेट

श्रव्य-दृश्य जनसंचार के आधुनिकतम माध्यमों में अब हम उन वीडियो कैसेटों को भी जोड़ सकते हैं जो जनसंचार के लिए उपयोग में आ रहे हैं। इन वीडियो कैसेटों में शैक्षिक कार्यक्रम और समाचार संबंधी कार्यक्रम जनसंचार के लिए विशेष रूप से तैयार किये जा रहे हैं। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने दूरस्थ शिक्षा पद्धति के तहत शैक्षिक कार्यक्रमों के वीडियो कैसेट सहायक सामग्री के रूप में तैयार करने का बीड़ा उठाया है। इसी प्रकार कई निजी गैरसरकारी संस्थाओं ने भी सामयिक और सूचनात्मक विषयों पर वीडियो कैसेट, जैसे—न्यूज ट्रैक, न्यूजलाइन आदि तैयार करने की शुरुआत की है। अतः जनसंचार के अति आधुनिकतम माध्यमों में हम उन वीडियो कैसेटों को भी रख सकते हैं जो जनसंचार के रूप में काम लिए जा रहे हैं। अभी तक इनके जो क्षेत्र सामने आये है, वे हैं —

- शैक्षिक
- समाचार संबंधी या सूचनात्मक

इन वीडियो कैसेटों को वी.सी.आर. (वीडियो कैसेट रिकार्डर) की सहायता से घरों में टी.वी. पर देखा जा सकता है। इनकी उपयोगिता यह भी है कि इन्हें अपने समय की सुविधा के अनुसार और रोककर बीच-बीच में या बार-बार भी देखा जा सकता है। इन विशेषताओं के कारण जनसंचार में इनका प्रभाव अधिक माना जा रहा है।

वीडियो कैसेट की कीमतें अभी अधिक हैं और वी.सी.आर. भी महंगा होने के कारण हमारे देश की अधिक आबादी के लिए खरीद पाना संभव नहीं है। इसलिए फिलहाल इस माध्यम का उपयोग सीमित दायरे में बंधा हुआ है और आम लोगों तक इसकी पहुंच निकट भविष्य में संभव नहीं है।

23.6 जनसंचार माध्यम और भाषा

समाचार पत्र एवं पत्र-पत्रिकाएं

अखबारों एवं पत्र-पत्रिकाओं के भावी विकास की संभावनाएं शिक्षा की जागृति के साथ-साथ बढ़ रही है। केवल राजनीतिक क्षेत्र में ही नहीं व्यापार, सांस्कृतिक जीवन तथा अन्य क्षेत्रों में भी भारतीय भाषाओं का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। हमें मानना होगा कि वही भाषा पढ़ने में रूचिकर लग सकती है जो जानी पहचानी हो। अतः हमें उसी भाषा का प्रयोग करना होगा जो सामान्य पाठक के लिए संपर्क भाषा हो। समाचार पत्र तथा पत्रिकाओं का उद्देश्य जनसाधारण का मार्गदर्शन भी होता है अतः लिखी जाने वाली भाषा सरल और सभी को समझ में आने वाली होनी चाहिए। वाक्य के अधिक लंबे होने से भी पढ़ने वालो को उबाऊपन का एहसास होता है अतः छोटे वाक्यों में अपनी बात को आगे बढ़ायें।

कठिन शब्द और भाषा के नये-नये प्रयोग पाठक के साथ खिलवाड़ है। हमें ध्यान रखना होगा कि जनसंचार से हमें अपनी बात को दूसरों तक पहुंचाना, समझाना और उससे सहमति बनाना होता है अतः हमें पाठक से अपने लेखन में सहजता और मित्रतापूर्ण व्यवहार करना होता है।

विज्ञापनों के लिए कम से कम शब्दों का प्रयोग महत्वपूर्ण होता है अतः उचित शब्दों का चयन भाषा में निपुणता की मांग करता है। विज्ञापन संपूर्ण रूप से व्यवसायिकता का रूप है इसलिए संदेश के प्राप्तकर्ता को दिखाने में उपयुक्त, सही और नये तुले शब्द ही प्रयोग करने में कामयाबी है।

रेडियो

रेडियो कार्यक्रमों के लिए रेडियो-आलेख तैयार करते समय जो प्रमुख बातें ध्यान में रखनी होती हैं, वे इस प्रकार हैं:

- रेडियो दृश्यहीन माध्यम है यानी रेडियो का श्रोता प्रसारक को देख नहीं रहा होता है।
- रेडियो में कहने वाला एक और उसे सुनने वाले असंख्य लोग होते हैं।
- श्रोता को अपनी बात और प्रस्तुतीकरण से बांधे रखना जरूरी होता है अन्यथा वह रेडियो बंद कर सकता है।
- विभिन्न कार्यक्रमों के विभिन्न उद्देश्य होते हैं, आलेख में उनका ध्यान रखना होता है।
- श्रोता वर्ग के हिसाब से भाषा और बोली का चयन करना होता है।

उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए कुछ प्रमुख सुझाव इस प्रकार हैं:

- यथा संभव अपनी बात संक्षेप में कहिए।
- अपनी बात अनौपचारिक ढंग से कहिए।
- अपनी बात स्पष्ट ढंग से कहिए।
- तथ्यों को क्रम से प्रस्तुत कीजिए।
- यथा संभव प्रचलित शब्दों का प्रयोग कीजिए।

- जहां आवश्यक हो संगीत तथा ध्वनि संकेत इत्यादि का सहारा भी लीजिए तथा आलेख में स्पष्ट कीजिए।

श्रव्य-दृश्य माध्यम

यह तो आप जानते ही हैं कि बोलती फिल्मों से पहले गूंगी फिल्मों का प्रचलन था। तब फिल्मों की कामयाबी का सारा दारोमदार कलाकार के हाव-भाव और उसकी हरकतों पर रहता था। अतः बेजबान फिल्मों में दर्शक को अपनी ओर आकर्षित न करना किसी एक्टर की प्रथम जिम्मेदारी होती थी। आप अंदाज कर सकते हैं कि कोई तो वजह थी कि चार्ली चेपलिन की गूंगी फिल्में आज भी अधूरी महसूस नहीं होती है और उतनी ही रोचकता से देखी जाती है।

आप को शायद आश्चर्य होगा कि बोलती फिल्मों के आरंभ से जहां फिल्मों में जान सी पड़ गई वहीं फिल्मों की व्यावसायिकता पर विपरीत असर भी पड़ा और यह बात चिंता का विषय बन गई थी। आवाज के साथ ही फिल्मों में भाषा का प्रयोग भी करना था और भाषा के प्रयोग से फिल्म-प्रदर्शन का दायरा सीमित हो जाता था क्योंकि बिना भाषा की फिल्म को किसी राष्ट्र में किसी भी स्थान पर दिखाया जा सकता था जबकि भाषा के प्रयोग ने इसका दायरा सीमित कर दिया। यद्यपि आगे चलकर कैप्शन (अनुवादित भाषा को पर्दे पर साथ-साथ दिखाना) और वाइस ओवर (डायलाग के ऊपर ऊँची आवाज में अनुवादित भाषा में बोलते जाना) से इस कमी को पूरा किया गया है। पर गूंगी और बोलती फिल्मों के बीच भाषा के जरिये विषयों की व्यवसायिकता पर लगा प्रश्नचिन्ह खत्म नहीं हो सका है।

इस उदाहरण से आप अनुमान लगा सकते हैं फिल्मों को भी दर्शकों के अनुरूप जनसंचार की प्राथमिकताओं के साथ भाषा का प्रयोग करना होता है। सरल, बोलचाल की भाषा, अपनत्व की भाषा तथा साथ ही साथ महत्वपूर्ण है समय तथा किरदारों के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया जाना।

श्रव्य-दृश्य माध्यमों के अंतर्गत टेलीविजन एक और प्रभावी और शक्तिशाली माध्यम के रूप में सामने आया है।

दूरदर्शन

दूरदर्शन द्वारा विभिन्न कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं जिन्हें मुख्यतः तीन वर्गों में रखा जा सकता है। सूचना, मनोरंजन और शिक्षा।

समाचार, सामयिक विषय और जनसंचार उद्घोषनाओं एवं कार्यक्रमों को सूचना के अंतर्गत रखा जा सकता है। इनमें समाचार तथ्यों को संक्षिप्त में दर्शकों तक पहुंचाने का कार्य करते हैं। यही कार्य रेडियो द्वारा भी किया जाता है, किंतु टी.वी. के कार्यक्रमों में समाचारों के साथ दृश्यों का महत्व भी होता है। और चूंकि दृश्यों के साथ समाचारों को पढ़ना होता है अतः यहीं से उनकी भाषा में अंतर आता है। जहां दृश्य होते हैं शब्द उनसे हटकर कुछ अतिरिक्त जानकारी दे रहे होते हैं। सामयिक विषयक कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य विचारों का संचार होता है। जनसेवा प्रसारण और संदेशों के संचार का महत्व होता है।

मनोरंजन के क्षेत्र में फिल्म तथा फिल्मों से संबंधित कार्यक्रम नाटक, धारावाहिक, नृत्य संगीत तथा मनोरंजन के विविध कार्यक्रम शामिल हैं। इन कार्यक्रमों का प्रमुख उद्देश्य लोगों का मनोरंजन होना है अतः भाषा और शैली सरल और सहज होती है। हास्य को भी स्थान दिया जाता है किंतु ध्यान रखना जरूरी होता है कि इसका स्तर बना रहे।

शिक्षा के क्षेत्र में दूरदर्शन की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। पाठ्य सामग्री पर आधारित और सामान्य ज्ञान पर आधारित दो वर्गों में शैक्षिक कार्यक्रमों को बाँटा जा सकता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों को दूरदर्शन पर स्थान दिया जा रहा है। आप्रेशन थियेटर के आप्रेशन, लेबोरेट्री के अनुसंधान, वैज्ञानिक, इंजीनियरिंग के अनेक प्रयोग इत्यादि टी.वी. द्वारा अधिक प्रभावी ढंग से पढ़ाये और समझाए जा सकते हैं। शैक्षिक कार्यक्रमों में दर्शक वर्ग के स्तर के अनुसार भाषा का प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। अपनी बात का क्रम बनाए रखना और आवश्यकता हो तो महत्वपूर्ण बातों की पुनरावृत्ति जैसी कुछ अन्य बातें हैं जिनका ध्यान रखना होता है।

बोध प्रश्न

7) फिल्मों से संबंधित किन्हीं तीन प्रमुख संगठनों के नाम लिखिए। (4 पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

8) टेलीविजन के कार्यक्रमों को कितने वर्गों में बांटा जा सकता है? (4 पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

4) वीडियो कैसेट किन क्षेत्रों में जनसंचार का कार्य कर रहे हैं? क्या ये जनसंचार में प्रभावी भूमिका निभा सकेंगे? (लगभग 15 पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

23.7 राष्ट्रीय विकास में जनसंचार की भूमिका

अब तक जनसंचार के अर्थ को आपने समझा, जनसंचार का इतिहास आपने पढ़ा तथा जनसंचार के विभिन्न माध्यमों को भी आपने जाना। आपने जाना कि जनता में सूचना और संदेश पहुंचाकर जनसंचार माध्यम एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जनसंचार में यह भी खूबी है कि इसमें जनता को सीधे तौर पर कम खर्च करना होता है। सरकार या संस्था को तो व्यय करना पड़ता है लेकिन जनता को बहुत कम खर्च करना होता है। जनसंचार इस व्यापकता से जन-जीवन के साथ जुड़ गया है कि वे किसी राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आइये, संक्षेप में इसका जायजा लिया जाए।

आपने जाना कि अनेक देशों में रेडियो, टेलीविजन और सिनेमा जैसे माध्यमों का उपयोग शिक्षा में गुणात्मक सुधारों के लिए किया जा रहा है। कुछ जनसंचार विशेषज्ञों के अनुसार जनसंचार माध्यम काल्पनिक सोच के लिए आधारभूमि बनाते हैं। वे विद्यार्थियों में विषय के प्रति रुचि पैदा करने के साथ-साथ उनके सीखने की क्रिया को भी गति प्रदान करते हैं।

समाचार पत्रों, रेडियो और टेलीविजन में योग्य व्यक्तियों के विचार शामिल होते हैं जिनका प्रचार आम व्यक्ति तक पहुंचता है। टेलीविजन और फिल्मों के कारण बच्चों और युवाओं में फैशन, चकाचौंध और प्रसिद्धि की चाह भी बढ़ती है। नौकरी और व्यवसाय के बारे में भी रेडियो, टेलीविजन अपेक्षाएं बढ़ाने में मददगार हुए हैं। नौकरियों और धंधों के बारे में युवाओं की जिज्ञासा बढ़ी है, जिससे बेरोजगारी की समस्या में सुलझाने में वे सहायक बने है।

जनसंचार माध्यम लोगों का मनोरंजन भी करते हैं। रेडियो, सिनेमा, टेलीविजन, सूचना और खबरों के साथ मनोरंजन भी करते हैं। विज्ञापन द्वारा रेडियो में राष्ट्रीय एकता, बचत की भावना पैदा की जा सकती है।

जनसंचार के माध्यम लोगों में जागृति भी लाते हैं। अपने स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, टीकाकरण, संतुलित भोजन, गोबर गैस चुल्हों से अब वे भली भांति परिचित हैं।

जनसंचार समाज सुधार का कार्य भी करता है। नशाबंदी, परिवार नियोजन, दहेज प्रथा की समाप्ति के प्रचार से लोगों की विचारधारा में धीरे-धीरे परिवर्तन आया है।

बाढ़-अकाल या युद्ध के समय जनसंचार माध्यम प्रभावी भूमिका निभाते हैं। चीन और पाकिस्तान के विरुद्ध युद्ध में जनसंचार माध्यमों ने सफलतापूर्वक अपना दायित्व निभाया है।

सबसे महत्वपूर्ण यह कि जनसंचार के माध्यम सरकार या व्यापारिक संस्थाओं को अपनी नीतियों, योजनाओं और आम जनता के बीच, उनकी समस्याओं के बीच एक मध्यस्थ की भूमिका निभाते हैं।

आने वाले समय में जनसंचार में अधिक परिवर्तन आएंगे। इनके विकास की गति तेज है, ऐसे में किसी भी राष्ट्र के लिए जनसंचार की महत्ता और बढ़ती ही जाएगी।

23.8 भविष्य में जनसंचार की संभावनाएं

जनसंचार का अर्थ बताते समय हमने जिक्र किया था कि अभी तक जनसंचार माध्यमों में संदेश का प्रसार केवल एक तरफा ही हो पा रहा है किंतु जल्द ही जनसंचार माध्यम अपनी इस कमी को पूरा करने वाले हैं। रेडियो प्रसारण में अब "फोन इन" कार्यक्रम आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारित किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों का पूर्व प्रचार रेडियो उद्घोषणा तथा समाचार पत्रों में विज्ञापन द्वारा कर दिया जाता है। कार्यक्रम प्रसारित होते समय श्रोता इस तरह के कार्यक्रमों में बताये गये टेलीफोन नम्बर पर फोन करके सीधा भाग ले पाते है तथा पहुंचा पाते हैं। तुरंत ही प्रसारक द्वारा उनका उत्तर भी दे दिया जाता है।

टेलीफोन सुविधाएं हर व्यक्ति के पास न होने के कारण यह सेवा सीमित लोगों के लिए ही उपलब्ध हो रही है। जनसंचार के क्षेत्र में संदेश के प्राप्तकर्ता को फीड बैक आम तरीके से मिल सकेगा और संदेश के प्राप्तकर्ता के साथ दोहरा संपर्क स्थापित हो सकेगा। भविष्य में ऐसी संभावनाएं प्रबल हैं।

जनसंचार को पिछले 50 वर्षों में दूरसंचार के क्षेत्र में हुए नये आविष्कारों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लाभ मिलता रहा है। समाचारं पत्रों को सक्षम बनाने में टेलीप्रिंटर एक वरदान सिद्ध हुआ। टेलीप्रिंटर एक ऐसा विद्युत चालित यंत्र है जो टाइप जैसी मशीन पर रेडियो तरंगों द्वारा संदेश भेजने और प्राप्त करने का कार्य करता है। किसी संदेश को भेजने के लिए जैसे ही आपरेटर उचित "की" को दबाता है वैसे ही एक विद्युत स्पंद (electric impulse) पैदा होता है, तार या रेडियो-तरंगों द्वारा वांछित स्थान पर लगे टेलीप्रिंटर तक पहुंच जाता है और कागज के एक रोल पर अपने आप संदेश टाइप होता चला जाता है।

टेलेक्स टेलीप्रिंटर का ही परिवर्तित रूप है। एक टेलेक्स एक्सचेंज का संपर्क दुनिया के किसी भी टेलेक्स एक्सचेंज से किया जा सकता है। प्रत्येक टेलेक्स का अपना एक नम्बर होता है। आप अपने टेलेक्स से इस नम्बर को डायल करके संपर्क स्थापित कर सकते हैं और संदेश भेज सकते हैं।

टेलीकापियर मशीनों द्वारा किसी भी महत्वपूर्ण दस्तावेज को अपने मूल रूप में दूरस्थ स्थानों तक पहुंचाया जा सकता है। बस, संदेश भेजने वाला व्यक्ति एक स्थान से संदेशयुक्त कागज को टेलीकापियर

मशीन में प्रवेश करके टेलीफोन द्वारा सूचित करता है। दूसरा व्यक्ति निर्देशानुसार अपनी मशीन का बटन दबाते ही दस्तावेज की फोटो कापी प्राप्त कर लेता है। समाचार संकलन में भी यह प्रणाली उपयोगी और द्रुतगामी है।

विभिन्न आविष्कारों में कंप्यूटर ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। कंप्यूटर से ही **टेलीटेक्स्ट** प्रणाली विकसित हुई। टेलीटेक्स्ट संचार प्रणाली में टेलीविजन प्रसारण केंद्र पर संदेशों को एक कंप्यूटर में संचित कर लिया जाता है। जिसे डाटा बेस कहते हैं। यहां से सूचना को टेलीविजन नेटवर्क द्वारा प्रसारित किया जाता है जिसे दर्शक एक "डीकोडर" की सहायता से अलग-अलग पृष्ठों के रूप में अपने टी.वी. पर प्राप्त कर सकते हैं। टेलीटेक्स्ट प्रणाली समाचार पत्रों के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई है।

वीडियो टेक्स्ट टेलीटेक्स्ट का ही विस्तृत रूप है। टेलीटेक्स्ट में सीमित रूप से पाठ्य सामग्री प्रसारित की जा सकती है जबकि वीडियो टेक्स्ट में शब्दों की सीमा नहीं है।

21वीं सदी के आरंभ तक दूरसंचार को अनेक उपलब्धियां सामने आने की संभावनाएं हैं। जनसंचार को इन उपलब्धियों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लाभ मिलते रहे हैं और भविष्य में इनसे जनसंचार के प्रबल होने की संभावनाएं बराबर बनी हुई है।

आज संसार में भारत सहित कई विकसित और विकासशील देशों ने अंतरिक्ष में अपने-अपने उपग्रह छोड़े हैं। कोई सौ से अधिक देशों में इन्हीं संचार उपग्रहों द्वारा टेलीविजन संदेश भेजे और प्राप्त किये जाते हैं। इनमें हजारों टेलीफोन चैनेल हैं जिनपर अलग-अलग संदेश भेजे जाते हैं। इनमें बहुत से रेडियो और टेलीविजन चैनल भी है। संचार उपग्रहों के कार्यक्रमों में अब तक सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम इंटलसेट संचार उपग्रहों का रहा है। ये व्यापारिक उपग्रह हैं जिनके 109 राष्ट्र सदस्य हैं और इन उपग्रहों द्वारा समस्त विश्व में 500 केन्द्र एक दूसरे से जुड़े हैं। कृत्रिम संचार उपग्रह की सहायता से टेलीफोन, रेडियो और टेलीविजन संदेशों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजना अत्यंत आसान हो गया है। उपग्रहों की मदद से केवल टी.वी. का लाभ भी मिल रहा है।

आज विश्व में ऐसे संचार उपग्रहों का निर्माण भी हो रहा है जिनमें सैकड़ों टेलीविजन चैनेल और लाखों टेलीफोन चैनेल होंगे। इस समय विश्व के कई देशों में टेलीविजन के अतिरिक्त चैनेलों पर शैक्षिक कार्यक्रम का प्रसारण हो रहा है। भारत के दूरदर्शन पर आंशिक रूप से जो शैक्षिक कार्यक्रम आज प्रसारित किये जा रहे हैं उपग्रह की सहायता से निकट भविष्य में उन्हें भी टेलीविजन के अतिरिक्त चैनेल पर प्रसारित करने की संभावनाएं हैं। कुल मिलाकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि निकट भविष्य में जनसंचार के विकास की गति तेज होगी और जनसंचार को नये आयाम मिल सकेंगे।

बोध प्रश्न

9) जनसंचार राष्ट्रीय विकास के जिन क्षेत्रों में सहायक है उनमें से किन्हीं चार का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

5) जनसंचार किस प्रकार राष्ट्र के विकास में सहायक हो सकते हैं, संक्षेप में लिखिए। (15 पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

23.9 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद जनसंचार का अर्थ आपकी समझ में आया होगा। विचार या सूचना या जानकारी सामूहिक रूप से लोगों तक पहुंचाई जाए तो वह जनसंचार है। अभी तक यह प्रक्रिया एक तरफ ही है। जनसंचार के इतिहास से भी आप भलीभांति परिचित हुए होंगे कि जनसंचार की प्रक्रिया आदि मानव से शुरू हो गई थी लेकिन समय के परिवर्तन के साथ इसका विकास होता गया। पिछले 100 वर्षों में जनसंचार को नये-नये माध्यम मिले हैं और विकास की गति बहुत तेज रही है।

इकाई में जनसंचार के विकसित माध्यमों को मुख्य तीन वर्गों में हमने अध्ययन किया है। लिखित माध्यम, श्रव्य माध्यम और श्रव्य-दृश्य माध्यम। लिखित माध्यम में समाचार पत्र सबसे प्रभावी माध्यम है। समाचार पत्रों ने अपनी विषय-वस्तु तथा अपने प्रारूप में बहुत तरक्की की है। मनुष्य की दिनचर्या से जुड़ा शायद ही कोई क्षेत्र बचा हो जिसको समाचार पत्र स्थान नहीं दे रहे हों। पत्रिकाओं और विज्ञापन ने जनसंचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। विज्ञापन अब मनुष्य के जीवन का अंग बन गए हैं। इसीलिए जनसंचार के हर माध्यम ने विज्ञापनों को महत्व दिया है।

आपने यह भी जाना कि रेडियो के रूप में जनसंचार को ऐसा श्रव्य माध्यम मिला जिससे जनसंचार का कार्य अधिक सहज और आसान हो गया और जनसंचार प्रभावी भी हो सका। श्रव्य माध्यम होने के कारण इससे अधिक लोग जुड़ सके। बिना पढ़े लिखे यहां तक कि दृष्टिहीन भी इससे लाभान्वित हो सके।

दृश्य-श्रव्य माध्यमों में सिनेमा, टेलीविजन ने जनसंचार को नये आयाम दिए जब सूचना या संदेश देने वाला स्वयं संपर्क बना सका यद्यपि ये एकतरफा ही हो सका पर इसके प्रभाव व्यापक हुए हैं।

सिनेमा और टेलीविजन आज मनुष्य के दोस्त के रूप में उभरे हैं। टेलीविजन ने घर के ही एक सदस्य का स्थान बना लिया है। वीडियो कैसेट ने शिक्षा और समाचारों के क्षेत्र में मनुष्य की रूचि को प्रेरित किया है।

कुल मिलाकर जनसंचार के आधुनिक माध्यम, जैसे समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविजन, सशक्त माध्यमों के रूप में सामने आये हैं इन्हें लोकप्रियता भी मिली है। योग्य व्यक्तियों के विचार, शिक्षा को लोगों तक पहुंचाने में इन्होंने मदद की है। राजनैतिक, व्यवसायिक और सामाजिक समस्याओं से आम व्यक्ति को अवगत कराया है। सामाजिक बुराइयों से आगाह किया है। स्वास्थ्य, खेल और मनोरंजन की तरफ लोगों को आकर्षित किया है। अपनी इन अनगिनत खूबियों के कारण ही विशेषज्ञ मानते हैं कि जनसंचार राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आपने यह भी जाना कि सभी माध्यमों में भाषा ही रीढ़ की हड्डी का काम करती है। सक्रिय और सही भाषा से माध्यम प्रभावी बन सकते हैं। आपने यह भी पढ़ा कि लिखित, श्रव्य और श्रव्य-दृश्य माध्यमों की भाषा में अंतर होता है। इसकी विस्तृत जानकारी आपको आगामी इकाई में भी दी जाएगी। आशा है इस इकाई को पढ़ने के बाद जनसंचार के विभिन्न माध्यमों से आप भलीभांति परिचित हुए होंगे।

23.10 उपयोगी पुस्तकें

बृजमोहन गुप्त : जनसंचार माध्यम : विविध आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

राधेश्याम शर्मा (संपादक) : जनसंचार : हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़।

संजीव भानावत : पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, जयपुर।

डॉ. सी.एल. गर्ग: दूर संचार : नई दिशाएं, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली।

23.11 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) क) नहीं ख) नहीं ग) हाँ घ) नहीं ✓

2) मुद्रण/समाचार पत्र
प्रसारण/रेडियो
श्रव्य-दृश्य/टेलीविजन

3) i) विभिन्न विधाओं के लिए अलग-अलग संवाददाता नियुक्त किए हैं।
ii) विभिन्न विषयों के लिए अलग-अलग स्थान नियत किए हैं।
iii) समाचार एजेंसियों द्वारा समाचारों का संकलन किया जाता है।

4) i) रेडियो को कहीं भी, कैसे भी सुना जा सकता है।
ii) रेडियो तत्परता से सूचनाएं देता है।
iii) रेडियो व्यक्तिगत भी है और सार्वजनिक भी।

5) i) सूचना तथा समाचार
ii) शिक्षा
iii) मनोरंजन
iv) विज्ञापन

6) महिलाओं के लिए, बच्चों के लिए, श्रमिकों के लिए, युवाओं के लिए, कृषकों के लिए, सैनिकों के लिए आदि।

7) फिल्म प्रभाग, फिल्म वित्त निगम, बाल फिल्म समिति आदि।

8) सूचना, मनोरंजन, शिक्षा।

9) समाज सुधार में, बेरोजगारी दूर करने में, शिक्षा के प्रसार में लोगों में राजनीति, स्वास्थ्य, खेल आदि के प्रति जागृति लाने में, राष्ट्रीय एकता को भावना पैदा करने में।

अभ्यास

1) देखें उपभाग 23.2.2 तथा भाग 23.3, 23.4, 23.5।

2) सहायता लें भाग 23.3 और उपभाग 23.3.1।

3) विद्यार्थी स्वयं करें।

4) कृपया देखें उपभाग 23.5.3।

5) स्वयं करें।

इकाई 24 जनसंचार के विविध रूप : भाषिक प्रकृति

इकाई की रूपरेखा

24.0 उद्देश्य
24.1 प्रस्तावना
24.2 जनसंचार के विभिन्न उपादान
24.3 जनसंचार माध्यम और भाषा
  24.3.1 जनसंचार : विविध रूप
  24.3.1 जनसंचार माध्यमों में भाषा का महत्व
24.4 दृश्य माध्यम और भाषा
  24.4.1 समाचारों की भाषा
  24.4.2 फिल्म समीक्षा की भाषा
  24.4.3 संपादकीय की भाषा
  24.4.4 लेख की भाषा
  24.4.5 विज्ञापनों की भाषा
24.5 श्रव्य माध्यम और भाषा
  24.5.1 समाचारों की भाषा
  24.5.2 विज्ञापनों की भाषा
24.6 दृश्य-श्रव्य माध्यम और भाषा
  24.6.1 समाचारों की भाषा
  24.6.2 विज्ञापनों की भाषा
24.7 सारांश
24.8 उपयोगी पुस्तकें
24.9 बोध प्रश्नों एवं अभ्यासों के उत्तर

24.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम जनसंचार में प्रयुक्त विभिन्न भाषा-प्रकारों की चर्चा करने जा रहे हैं। इसे पढ़ने के बाद आप :

- जनसंचार के विभिन्न उपादानों का वर्णन कर सकेंगे,
- जनसंचार माध्यम में भाषा के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डाल सकेंगे,
- जनसंचार माध्यमों में भाषा का महत्व रेखांकित कर सकेंगे,
- दृश्य, श्रव्य और श्रव्य-दृश्य माध्यमों में समाचारों, फिल्म समीक्षा, सम्पादकीय, लेख और विज्ञापन की भाषा का स्वरूप पहचान सकेंगे।

24.1 प्रस्तावना

भाषा सोचने-विचारने, विचारों को दूसरों तक पहुँचाने और दूसरों के विचारों को ग्रहण करने का एक माध्यम है। ऐसा नहीं है कि जो लोग बोल नहीं पाते वे भाषा के माध्यम से अपनी बातें दूसरों तक

क्या है यह तो आप इकाई 23 में पढ़ चुके हैं। जब कही गई किसी बात का महत्व किसी एक व्यक्ति के स्थान पर एक बड़े समुदाय/समाज के लिए हो और उस बात को किसी भी तरीके से उन सभी व्यक्तियों तक एक साथ पहुँचाने की कोशिश की जाए तो जन संचार की प्रक्रिया सामने आती है। जनसंचार एक पारिभाषिक शब्द है। हिंदी में इसका प्रयोग Mass Communication के अर्थ में किया जाता है। जनसंचार शब्द में संचार शब्द का प्रयोग संप्रेषण के अर्थ में हुआ है। जन शब्द का अर्थ है सामान्य जन या आम जनता। जब आम जनता के लिए कोई सूचना प्रसारित या प्रकाशित की जाती है तो जनसंचार होता है। आम संप्रेषण और जनसंचारपरक संप्रेषण का मूलभूत अंतर यह है कि आम संप्रेषण में आप अपनी प्रतिक्रिया तुरंत व्यक्त कर सकते है जबकि जनसंचारपरक संप्रेषण में प्रायः यह असंभव ही होता है। वैसे आजकल टैक्नोलॉजी इतनी अधिक विकसित हो गई है कि तुरंत प्रतिक्रिया व्यक्त करना भी संभव हो गया है। कुछ समय पहले भारतीय कृषि वैज्ञानिकों व किसानों में इस तरह की एक टेली कॉन्फ्रेंस हुई थी जिसका दूरदर्शन पर प्रसारण भी किया गया था।

24.2 जनसंचार के विविध उपादान

जनसंचार के लिए अनेक प्रकार के उपादानों का प्रयोग किया जाता है : जैसे समाचार, विज्ञापन, भेटवार्ता, आँखो-देखा हाल आदि। इन उपादानों में से कुछ उपादान तो ऐसे हैं जिनका सभी प्रकार के जनसंचार माध्यमों में उपयोग किया जाता है जैसे समाचार, विज्ञापन आदि पर कुछ उपादान ऐसे होते हैं जो किसी माध्यम विशेष में प्रयुक्त होने पर अधिक प्रभावित करते हैं।

यहाँ भाषा की इस इकाई में जनसंचार के माध्यमों के वर्गीकरण की आवश्यकता तो नहीं थी फिर भी चर्चा इसलिए की जा रही है क्योंकि इसके बिना आप भाषा के उचित रूप में प्रयोग का महत्व नहीं समझ पायेंगे। यह अंतर समझाने के लिए कुछ उदाहरणों की सहायता ली जा रही है। आप की रुचि जिसमें भी होगी उसके आधार पर आप अंतर आसानी से समझ जाएँगे। यदि आप समाचार पढ़ने-सुनने के शौकीन हैं तो कोई एक ही समाचार पहले पढ़िए, फिर रेडियो पर सुनिए और अंत में टी.वी. पर देखिए। अब इस कार्य को इसके बिल्कुल ही विपरीत क्रम में कीजिए। यदि आपको विज्ञापनों का शौक है तो आप विज्ञापन के साथ यह प्रक्रिया दुहराइए। यदि आपकी खेलों में रुचि है तो आप यह कार्य समाचार पत्र में दिए समाचार/विवरण, रेडियो में दिए समाचार/विवरण या दूरदर्शन द्वारा प्रस्तुत समाचार/विवरण को देख/सुनकर कर सकते हैं। क्या आपको इनमें कोई अंतर लगा। आपने देखा होगा कि जितना अधिक विस्तार से बातें समाचार पत्र में लिखकर समझायी जाती हैं उतना विस्तार रेडियो में नहीं रहता क्योंकि रेडियो में कुछ चीजों का अंदाज आप सुनकर भी लगा सकते हैं। अगर कोई पात्र बूढ़ा है तो आप मात्र आवाज में कंपन पैदा करके ये आभास दिला सकते हैं कि वह पात्र एक बूढ़ा व्यक्ति है। आप रेडियो में किसी जवान व्यक्ति से बूढ़े व्यक्ति की आवाज में बुलवा सकते हैं। यदि अखबार या मुद्रित माध्यम होता तो आपको उसमें इस बूढ़े पात्र के विषय में पढ़ने के लिए उसका विवरण दिया जाता साथ ही यह भी बताया जाता कि यह दिखने में कैसा लगता है। यदि इसी पात्र को दूरदर्शन के लिए चुना जाए तो उसका विवरण बताने के स्थान पर उसको दिखाकर समय, शब्द आदि की बचत की जा सकती है। आप स्वयं कोशिश करके भी इसे देख सकते हैं। आप समुद्र की उठती-गिरती लहरों के एक दृश्य को अपने परिवार के सदस्यों के सामने प्रस्तुत करना चाहते हैं। इसे बताने के लिए पहले आप दृश्य का वर्णन लिखिए। आपको वर्णन करते समय लहरों की आवाज को अपने शब्दों में बाँधना होगा। यदि आपके पास टेप रिकार्डर हो तो आप लहरों के ऊपर-नीचे उठने गिरने का वर्णन करने के बाद उनकी गर्जना सुनवा सकते हैं। पर यदि आपके पास वीडियो कैमरा हो तो आप सिर्फ यह बताकर कि आप क्या करना चाहते हैं, अपने परिवार के सदस्यों को पूरा दृश्य दिखा व सुना सकते हैं। इस स्थिति में यह आप पर निर्भर है कि आप उनको अपनी आवाज में विवरण सुनाएँ या न सुनाएँ। आप चाहें तो दृश्य को और अधिक समझाने के लिए या उसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं।

अब संभवतः आपकी समझ में मेरी बात आ गयी होगी कि प्रत्येक जनसंचार माध्यम के लिए एक अलग प्रकार की भाषा की या कहिए शब्दों की जरूरत होती है। इसके आधार पर ही प्रत्येक माध्यम की भाषा में किसी दुसरे माध्यम की भाषा से कुछ अलगाव आ जाता है।

यहाँ एक और बात मैं आपको बताना चाहता हूँ! वह यह है कि जिस प्रकार जनसंचार के विभिन्न उपकरणों की भाषा अलग होती है उसी प्रकार इन उपकरणों में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न उपादानों की भाषा में भी अंतर होता है। इसे भी उदाहरण की सहायता से आसानी से समझा जा सकता है। आप कोई एक समाचार पत्र उठा लाइए। अब इस समाचार पत्र के पहले पृष्ठ के कुछ समाचार पढ़िए। यदि इस पृष्ठ पर कोई बड़ा सा विज्ञापन है तो उसे पढ़िए। यदि पहले पृष्ठ पर बड़ा विज्ञापन न हो तो किसी दूसरे पृष्ठ का इसी तरह का विज्ञापन पढ़िए। अब आप अंदर के किसी पृष्ठ पर छपे वर्गीकृत विज्ञापन पढ़िए इसके बाद अब आप संपादकीय पृष्ठ पर छपे संपादकीय व अन्य लेखों को पढ़िए। इनको पढ़ने के बाद आप और अभी चलिए और खेल समाचार वाले पृष्ठ पर किसी खेल का विवरण देने वाले खेल समाचार को तथा किसी खेल से संबंधित खेल समाचार पढ़िए। फिर आप एक बाजार भाव वाले पृष्ठ पर छपा समाचार पढ़िए। इन सब को पढ़कर आपको क्या लगा? मेरे विचार से आपको यह लगा होगा कि इन सभी की भाषा तो हिंदी है इनमें अंतर कहाँ है? क्यों यही लगा न? पर वास्तविकता कुछ भिन्न है। इन सभी की भाषा हिंदी होने के बावजूद परस्पर भिन्न है। जब किसी भी विषय का वर्णन करने के लिए भाषा कुछ शब्दों का अर्थ इस प्रकार से सुनिश्चित कर लेती है कि वे शब्द जब उस विषय से संबंधित वर्णनों में प्रयुक्त होने पर एक ही अर्थ व्यक्त करें तो उन्हें उस विषय के पारिभाषिक शब्द का दर्जा मिल जाता है। इस तरह की भाषा का रूप स्थिर हो जाने पर ये रूप उस विषय की प्रयुक्ति कहलाते है (इसके विषय में विस्तार से आप इकाई संख्या 7 में पढ़ चुके हैं)। किसी भाषा की प्रयुक्ति में जिस तरह भाषा का प्रयोग किया जाता है वह मूलतः समान होते हुए भी किसी संरचना के बहुतायत में प्रयोग व कुछ संरचनाओं के प्रयोग के निषेध के कारण एक अलग भाषा-रूप या उसकी प्रयुक्ति कहलाती है।

जनसंचार के विभिन्न उपादानों की भाषा के जिस अंतर की हम चर्चा कर रहे थे या जिस अंतर की हम आपसे समाचार, विज्ञापन आदि पढ़कर पहचान करवा रहे थे वह इसी प्रकार का अंतर है। अब आप यदि पिछले पैरा में वर्णित समाचार आदि को पढ़ेंगे तो आपको उनकी भाषा में स्पष्ट तौर पर अंतर प्रतीत होगा।

प्रयुक्ति (भाषा-प्रयोग) के आधार पर समाचारों का वर्णीकरण आप इकाई संख्या (7) में विस्तार से पढ़ चुके हैं। जनसंचार माध्यमों में समाचार के अलावा संपादकीय लेखन, बाजार भाव वर्णन, विज्ञापन, खेल समाचार, आँखों देखा हाल आदि ऐसे विषय हैं जिनकी प्रयुक्तियाँ विकसित होकर स्थिर हो चुकी हैं। कुछ अन्य विषयों की प्रयुक्तियाँ अभी विकास की अवस्था में हैं।

24.3 जनसंचार माध्यम और भाषा

जनसंचार के माध्यमों में भाषा का कितना और कैसा महत्व होता है यह तो ऊपर दिए गए विवरण से स्पष्ट हो गया होगा। अतः यहाँ केवल यह बताकर कि मुद्रित/लिखित माध्यम (समाचार पत्र पैम्पलेट आदि) में भाषा का महत्व सबसे अधिक, श्रव्य माध्यम (रेडियो, टेपरिकॉर्डर आदि) आदि में उससे कम तथा दृश्य-श्रव्य माध्यमों (दूरदर्शन, फिल्म आदि) में सबसे कम होता है हम अगले विषय की चर्चा करेंगे।

24.3.1 जनसंचार : विविध रूप

जनसंचार के विविध रूपों के विषय में आप इकाई संख्या 24 में विस्तार से पढ़ चुके हैं, फिर भी यहाँ उनकी छोटी-सी चर्चा विषय को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक है। जनसंचार के दैनंदिन जीवन में काम आने वाले साधनों—होर्डिंग, डुगडुगीवाला, लाउडस्पीकर, रेडियो, टी.वी., समाचार पत्र आदि से तो आप निश्चित तौर पर परिचित ही होंगे। विश्व के औद्योगिक विकास के साथ-साथ जनसंचार के माध्यमों का भी विकास हो रहा है। यदि आपके घर में या पड़ोस में केबल नेटवर्क से जुड़ा टी.वी. है, तो आप अन्य देशों से प्रसारित कार्यक्रम भी उस पर देख सकते है। यह जनसंचार माध्यमों के विकास का ही परिणाम है। इसके अलावा वीडियो-कांफ्रेंसिंग, कंप्यूटर नेटवर्क, फैक्स मशीन, सेटलाइट्स आदि सभी जनसंचार माध्यमों के विकास के परिणाम है। विज्ञान ने अब इतनी तरक्की कर ली है कि उसने दूरदर्शन पर प्रसारित दूरदर्शन के चित्र (आवाज तो पहले से ही) को भी टेलीफोन के माध्यम

से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता है। इसका अर्थ यह है कि निकट भविष्य में यह सुविधा उपलब्ध हो सकेगी कि आप विश्व के किसी भी कोने में प्रसारित होने वाले किसी भी कार्यक्रम को अपने टी.वी. पर देख सकेंगे। इसके लिए आपको अपने टी.वी. सेट में (टी.वी. स्टूडियों में भी) कुछ विशिष्ट प्रकार के उपकरण लगवाने होंगे।

जनसंचार के इन विविध रूपों में भाषिक अभिव्यक्ति के लिए अलग-अलग प्रकार की भाषा की आवश्यकता होती है। यह अलगाव कैसा होता है यह चर्चा इकाई में पहले ही की जा चुकी है। इस तरह की भाषा के उदाहरण पाठ में आगे दिए जा रहे हैं। यदि आपको भारतीय जनसंचार माध्यमों की भाषा में विशेष अंतर नहीं लगता तो यह भाषा या माध्यम का दोष नहीं है। यह इन उपकरणों के लिए भाषायी लेखन वालों की क्षमताओं की सीमा बताता है। जब एक क्षेत्र के व्यक्ति/विशेषज्ञ दूसरे क्षेत्र में चले जाते हैं या दखलंदाजी करते हैं तो ऐसा ही होता है।

दृश्य माध्यमों की चर्चा में आप यह तो जान चुके हैं कि दृश्य माध्यम मूलतः दो प्रकार के होते हैं — (क) मुद्रित या लिखित माध्यम (ख) अन्य माध्यम। मुद्रित या लिखित माध्यम का अभिप्राय होर्डिंग, पॅम्पलैट, समाचार पत्र एवं पत्रिका आदि से है जबकि अन्य माध्यम के अंतर्गत कंप्यूटर व मूक फिल्मों को लिया जा सकता है। पत्र-पत्रिकाओं के पाठक और विषय के आधार पर अनेक वर्ग बनाए जाते हैं। पाठक वर्ग (अन्य माध्यमों के दर्शक श्रोता) के आधार पर भी किसी भी उपादान की भाषा नियंत्रित हो सकती है। पाठक के आधार पर नियंत्रण से अभिप्राय यहाँ भाषा की कठिनता व सरलता से है। साहित्य में देखें तो बचपन में आप जो बाल-गीत सुनते थे और बड़े होकर अब किसी कवि की कविता पढ़ें तो यह अंतर स्पष्ट हो जाएगा। यदि पत्रिका युवाओं के लिए पत्रिका है तो उसमें एक प्रकार की भाषा का उपयोग होगा और यदि घरेलू महिलाओं के लिए है तो दूसरी प्रकार की भाषा का। यह अन्य माध्यमों (रेडियो/टी.वी.) के लिए भी उतना ही सत्य है जितना कि पत्र-पत्रिकाओं के लिए। विषय के आधार पर भाषा परिवर्तन से अभिप्राय यह है कि खेल संबंधी पत्रिका होगी तो उसकी भाषा एक प्रकार की होगी और संगीत की पत्रिका होगी तो दूसरी प्रकार की। यह अंतर दूरदर्शन पर स्पष्ट तौर पर आप देख सकते हैं। "कृषि दर्शन में जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग होता है वह "अंकुर" की भाषा से या "पत्रिका" की भाषा से काफी अलग होती है। यह अंतर प्रातःकालीन और सांध्यकालीन कार्यक्रमों के प्रस्तुतकर्ता की भाषा में आपको और भी अधिक स्पष्ट रूप से दिखायी देगी। प्रातःकालीन सभा के प्रस्तुतकर्ता दिल्ली के दर्शकों का ध्यान रखकर अंग्रेजी भाषा या उसकी शब्दावली का बहुतायत से प्रयोग करते हैं। इनमें से भाषा के नमूने इस इकाई के बाद में दिए जा रहे हैं। इन नमूनों को पढ़कर आप भाषा के इन अंतरों को आसानी से समझ सकेंगे।

24.3.2 जनसंचार माध्यमों में भाषा का महत्व

आप जानते हैं कि भाषा संप्रेषण का सबसे अधिक सशक्त माध्यम है। क्या आप यह कल्पना कर सकते हैं कि कोई समय ऐसा भी था जब भाषा थी ही नहीं, लोग अपनी बातें कहने के लिए इशारों/चित्रों आदि का उपयोग करते थे। जनसंचार माध्यमों की उपयोगिता बढ़ाने में भाषा ही महत्वपूर्ण कारक है। यदि भाषा न होती तो क्या हमें इन माध्यमों की आवश्यकता होती? या हम किस तरह अपने विचार इन उपकरणों के माध्यमों से एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचते।

ऐसा नहीं है कि किसी और माध्यम से अपनी बात कहना संभव नहीं है। चित्रकार या कार्टूनिस्ट अपने छोटे-से चित्र के माध्यम से कई बार ऐसी बातें कह जाते हैं जिन्हें भाषा में कह पाना संभव नहीं होता। इसी प्रकार संगीत या नृत्य के माध्यम से या इशारों में भी बात की जाती है। परंतु इन माध्यमों में यह संभावना अधिक होती है कि संप्रेषण तंत्र का आपका सहभागी आपकी अभिव्यक्ति को उसी अर्थ में ग्रहण न करें जिस अर्थ को आप व्यक्त करना चाहते हैं। जबकि भाषा में सीधी स्पष्ट बात का सीधा-सादा अर्थ आप उस भाषा के मातृभाषी होने के नाते समझ सकते हैं।

संचार माध्यमों में अनेक प्रकार के उपादानों का प्रयोग किया जाता है। पत्र-पत्रिकाओं, टी.वी., रेडियो आदि में अनेक साहित्यिक विधाओं को भी स्थान दिया जाता है। यदि ये माध्यम के अनुसार न लिखी गई हों तो इसकी भाषा में माध्यम के अनुरूप परिवर्तन करने होते हैं। परंतु कुछ समय पुराने रचनाकारों की भाषा में परिवर्तन करने से उनकी भाषायी पहचान के बदलने की संभावना रहती है। इस तरह के परिवर्तन किसी साहित्यिक विधा के लिए लिखित साहित्य के विचार परिवर्तन में भी देखे जा सकते

हैं। किसी कहानी का नाट्य रूपांतरण अथवा टी.वी. सीरियल के रूप में रूपांतरण किया जाता है तो भी उसकी भाषा में अंतर आ जाता है। इसका कारण है कि दूरदर्शन पर तो आप कथोपकथन या संवाद ही सुनवाएंगे, शेष परिवेश तो उसपर कृत्रिम रूप से पैदा किया जा सकता है जबकि लिखित साहित्य में उसका (परिवेश का) चित्र उपस्थित करने के लिए शब्दों के/भाषा के माध्यम से वर्णन कर वह परिवेश बनाना पड़ता है। इसी तरह रेडियो में भी ध्वनियों के माध्यम से अनेक प्रकार के रचनात्मक विवरण से बचा जा सकता है जिनकी लिखित साहित्य में अत्यधिक आवश्यकता होती है।

जहाँ तक शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रश्न है उनकी भाषा को छात्रों के स्तर के अनुसार सुधारना पड़ता है। इसका उदाहरण आपने अपनी पाठ्य पुस्तकों की व्याख्या में भी देखा होगा। अनेक प्राचीन कवियों की जिन रचनाओं को आपने छोटी कक्षाओं में छात्र के रूप में पढ़ा था उन्हीं को जब बड़ी कक्षाओं में अध्यापकों ने समझाया था तो आपको यह अंतर स्पष्ट रूप से दिखाई दिया होगा।

जनसंचार माध्यमों—समाचार पत्र, दूरदर्शन, रेडियो आदि का मूल उद्देश्य है संपूर्ण विश्व के घटनाक्रम से पाठकों/दर्शकों/श्रोताओं को जल्दी से जल्दी यथा रूप में परिचित करवाना। लिखित/मुद्रित माध्यम में जब आपके सामने किसी घटना का वर्णन आता है तो आप उसे अपनी सुविधानुसार समय निकालकर पढ़ सकते हैं। वह अन्य माध्यमों की तुलना में अधिक स्थायी होता है। अतः इस माध्यम के साथ वह नाम स्वतः जुड़ जाता है कि आप आवश्यकता व सुविधा के अनुसार जब कभी चाहें कोश आदि की सहायता से कठिन शब्दों के अर्थ खोलकर इस माध्यम में व्यक्त तथ्यों को समझ सकते हैं। शेष दोनों प्रकार के माध्यम आपको बांधकर रखते हैं, उनके द्वारा सूचना ग्रहण करते समय आपके पास यह अवकाश नहीं होता कि आप कोश आदि की सहायता लेकर अर्थ ग्रहरण करें क्योंकि इन माध्यमों में जो भी कार्यक्रम आते हैं वे ध्वन्यात्मक (मौखिक) रूप में आपके सामने उपस्थित किए जाते हैं और मानव मस्तिष्क की सुनकर ग्रहण की सामग्री में परस्पर संबंध जोड़ने की एक निश्चित सीमा होती है। वह पिछले आठ या दस शब्दों को ही याद रख सकता है। इसी प्रकार कठिन शब्दों से बने वाक्य को याद रखना मुश्किल होता है। यदि वाक्य बहुत लंबा होगा तो भी श्रोता को कड़ियाँ जोड़ने में कठिनाई होगी।

इन सभी माध्यमों में भाषा के महत्व का निर्धारण उक्त आवश्यकताओं को मद्दे नजर रखकर ही किया जाता है। यह अलग बात है कि भारतीय जनसंचार माध्यमों के पास उपकरणों की या तकनीकी तौर पर दक्ष व्यक्तियों की कमी होने के कारण या उपलब्ध साधनों का समुचित उपयोग न होने से आपको ये अंतर स्पष्ट तौर पर नहीं दिखायी देते। इसका एक उदाहरण दूरदर्शन पर प्रस्तुत अनेक समाचारों में दृश्य सामग्री का अभाव होता है। भारतीय दूरदर्शन में रेडियो या समाचार पत्र के समान ही विवरण सुना दिया जाता है। इसे हम अपने जनसंचार माध्यमों की कमी स्वीकार कर सकते हैं। यदि आपके क्षेत्र में केबल प्रसारण की सुविधा उपलब्ध है तो आप एक बार उस पर तथा अपने रेडियो पर बी.बी.सी. प्रसारित समाचार सुनिए। अंतर स्वयं स्पष्ट हो जाएगा।

बोध प्रश्न

क) हाँ या नहीं में उत्तर दीजिए।

1) भाषा सोचने विचारने का माध्यम है। (हाँ/नहीं)
2) भाषा संप्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम है। (हाँ/नहीं)
3) जनसंचार का अभिप्राय है एक व्यक्ति से बातचीत। (हाँ/नहीं)
4) समाचार और बाजार भाव की भाषा का अंतर होता है। (हाँ/नहीं)
5) प्रयुक्ति का अर्थ आम आदमी की भाषा होता है। (हाँ/नहीं)
6) मुद्रित माध्यम और दृश्य श्रव्य माध्यम में भाषायी विवरण समान होता है। (हाँ/नहीं)
7) श्रव्य माध्यम और दृश्य-श्रव्य माध्यम का उपयोग करते समय आप आसानी से कोश की सहायता ले सकते हैं। (हाँ/नहीं)
8) संचार माध्यम में साहित्यिक विधाओं को स्थान नहीं दिया जाता। (हाँ/नहीं)
9) चित्र के माध्यम से भी आप अपनी बात कह सकते हैं। (हाँ/नहीं)
10) कहानी और उसकी टी.वी. फिल्म की भाषा समान होती है। (हाँ/नहीं)

ख) सही कथन के सामने (√) और गलत कथन के सामने (×) का निशान लगाइए।

1) केवल भाषा द्वारा ही आप अपनी बात दूसरों तक पहुँचा सकते हैं। ( )
2) विज्ञापन जनसंचार का एक माध्यम है। ( )
3) जनसंचार के विभिन्न माध्यमों की भाषा समान होती है। ( )
4) पैम्पलेट श्रव्य माध्यम का एक उपादान है। ( )
5) लिखित/मुद्रित माध्यम में भाषा का महत्व बहुत कम होता है। ( )
6) कविता को पढ़कर व सुनकर एक जैसा लगता है। ( )
7) भाषा से इतर माध्यम में आप अपनी बात नहीं कह सकते। ( )
8) दृश्य-श्रव्य माध्यम में सूचनात्मक विवरण अधिक होता है। ( )
9) लंबे वाक्यों को श्रोता आसानी से समझ लेता है। ( )
10) शैक्षिक कार्यक्रमों की भाषा अध्यापक के स्तर के अनुरूप होता है। ( )

24.4 दृश्य माध्यम और भाषा

माध्यम का अभिप्राय मुद्रित अथवा लिखित माध्यमों के साथ-साथ उन मूक माध्यमों से भी है जिनमें दृश्यों का प्रयोग तो होता है पर भाषा का नहीं। पर इस इकाई का विषय न होने के कारण इन मूक माध्यमों अर्थात् मूक फिल्मों, कंप्यूटर, टी.वी. (टेलीटेक्स्ट सर्विस) की भाषा पर विचार नहीं किया जाएगा। इस तरह के शेष माध्यम हैं — पैंप्लेट, समाचार पत्र, पत्रिकाएं, डोडिंग्स आदि। कंप्यूटर और टी.वी. भी कभी-कभी इस प्रकार के दृश्य माध्यम का कार्य करते हैं। दूरदर्शन के दिल्ली और आस-पास के दर्शक दूरदर्शन की टेलीटेक्स्ट सर्विस से परिचित ही हैं। अन्य क्षेत्रों के छात्रों की सूचना के लिए बता दें कि इस प्रकार के प्रसारण में सूचनाएं टी.वी. स्क्रीन पर पढ़कर जानी जा सकती हैं। इनके साथ आवाज नहीं होती (आजकल संगीत होता है), कोई दृश्य भी नहीं होता है। बस दर्शक या श्रोता को उसके स्क्रीन पर अंकित सामग्री को उसी प्रकार पढ़ना होता है जिस प्रकार वह समाचार पत्र या पत्रिका को पढ़ता है। इसी तरह कंप्यूटर (वैसे तो अब अत्याधुनिक कंप्यूटर आवाज पहचान सकते हैं वे मौखिक रूप से उत्तर दे सकते हैं) भी मूलतः एक दृश्य माध्यम हैं। अब तो भारत में भी अनेक स्थानों पर कंप्यूटर सूचनाओं का आदान-प्रदान करता है। पर आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि कई देशों में वहाँ की जनता को खरीदारी आदि के लिए भी बाजार नहीं जाना पड़ता। अपने कंप्यूटर पर कैटलॉग देखकर घर पर बैसे-बैठे आप किसी भी वस्तु का आर्डर दे सकते हैं जिसे संबद्ध स्टोर का कार्यकर्ता आपके घर पहुँचा जाएगा। बिल आदि का भुगतान भी कंप्यूटर पर प्रदत्त सूचनाओं से स्वयं ही हो जाएगी इसके अलावा "ई मेल" सर्विस आदि इसी तरह की अन्य सुविधाएं हैं जिनमें कंप्यूटर एक दृश्य माध्यम के रूप में कार्य करता है। इतना ही नहीं आजकल तो कंप्यूटर के स्पर्श संवेदी स्क्रीन के द्वारा यह भी संभव है कि आप जिस भी विषय पर सूचनाएं/जानकारी चाहते हैं उसे छू दीजिए। आप देखेंगे कि उस विषय से संबंधित समस्त सूचनाएं स्क्रीन पर उभरकर आती चली जाएगी। बार्सीलोना ऑलिम्पिक खेलों के लिए यह कार्य एक भारतीय कंपनी और उसके विशेषज्ञों ने किया था।

दृश्य माध्यमों की पूर्ववर्ती चर्चा में आपको यह बताया था कि इस तरह के माध्यमों के लिखित व मुद्रित प्रकार के माध्यमों में शब्दों का महत्व सबसे अधिक होता है। आप जो कुछ भी बताना चाहते हैं या सूचनाएं आप देना चाहते हैं वे आप वर्णन करके ही बता सकते हैं। हां यदि विज्ञापन में या समाचार आदि में चित्र का सहारा ले लेते हैं तो वह आपके वर्णन को आदि को पुष्ट करने में सहायक होता है। अन्य प्रकार से कहना चाहें तो कह सकते हैं कि चित्र में अभिव्यक्त तथ्यों को शब्द प्रमाणित करते हैं और शब्दों में अभिव्यक्त तथ्यों/बातों को चित्र/प्रमाणित करते हैं।

यह तो आप पिछली इकाई में पढ़कर जान ही चुके हैं कि मुद्रित माध्यमों में समाचार-पत्र और पत्रिकाओं का सबसे अधिक महत्व होता है। आप लोग यह भी जानते ही हैं कि समाचार पत्र और पत्रिकाएं विषय और प्रकाशनावधि के आधार पर अनेक प्रकार के हो सकते हैं। विषय के आधार पर इन्हें

क्रमशः समाचार, खेल व्यवसाय, फिल्म व रोजगार आदि के समाचार पत्र व पत्रिकाओं में बाँट कर भी देखा जा सकता है।

यह तो आपको पहले ही बताया जा चुका है कि प्रयुक्ति के आधार पर इन सभी प्रकार के पत्र-पत्रिकाओं की भाषा में कुछ न कुछ अंतर अवश्य होता है। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित विभिन्न प्रकार की सामग्री यथा समाचार, संपादकीय लेख आदि की भाषा भिन्न होते हुए भी व्याकरणिक संरचना के धरातल पर समान होती है। इसकी चर्चा आगे की जा रही है। प्रकाशनावधि के या समय के आधार पर समाचार-पत्र व पत्रिकाओं का वर्गीकरण प्रायः दैनिक, प्रातःकालीन, सांध्यकालीन, मध्याह्नकालीन, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक, छमाही, वार्षिक और अनियतकालीन आदि के रूप में किया जा सकता है। समयावधि के परिवर्तन के परिणामस्वरूप प्रायः पत्र या पत्रिका की भाषा में विशेष अंतर नहीं आता। हां समाचार पत्र की भाषा में भूतकाल की संरचनाओं का महत्व बढ़ सकता है। पर समाचारों की रिपोर्टिंग प्रायः उस दिन की तिथि देकर की जाती है अतः यह खतरा भी टल जाता है। समाचार-पत्र, पत्रिकाओं में जो साहित्यिक या विशिष्ट विषयों पर लिखे हुए लेख प्रकाशित होते हैं उनकी भाषा को पत्र अथवा पत्रिकाएं नियंत्रित नहीं करतीं। इस तरह के लेखों की भाषा-लेखक अथवा विषय द्वारा नियंत्रित होती है। साहित्यिक भाषा की चर्चा आप इकाई संख्या 6 में पढ़ चुके हैं। अतः इस इकाई में साहित्यिक भाषा की संरचना की चर्चा हम नहीं कर रहे है। यहाँ एक तथ्य यह भी उल्लेखनीय है कि दृश्य या दृश्य-श्रव्य उपकरणों में जहाँ कहीं भी लिखित या चित्रित कोई भी दृश्य दिखता है तो उसमें टाइप के आकार, रंग, मोटाई आदि का महत्व बढ़ जाता है।

24.4.1 समाचारों की भाषा

किसी प्रकार के समाचार के तीन अंग होते हैं — शीर्ष (शीर्षक), आमुख और शरीर। किसी समाचार के इन तीनों अंगों की भाषा अपनी विशेषताओं के कारण परस्पर भिन्न होती है। समाचार शीर्ष का उद्देश्य पाठक/श्रोता को समाचार के वर्ण्य विषय की जानकारी देकर उसमें पूरे समाचार को पढ़ने की जिज्ञासा जगाना होता है। अतः शीर्षक पूर्ण होते हुए भी अधूरी सी बात कहता है। किसी भी समाचार के शीर्ष की भाषा की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं :

1) शीर्षक बहुअर्थी नहीं होना चाहिए।
2) शीर्षक का आरंभ कभी भी क्रिया से नहीं होना चाहिए।
3) शीर्षक में शब्दों की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए।
4) शीर्षक भूतकाल में नहीं लिखा जाना चाहिए।
5) शीर्षक निषेधात्मक नहीं होना चाहिए।
6) शीर्षक में संयोजकों के स्थान पर विराम चिह्नों का प्रयोग करना चाहिए।
7) शीर्षक में अंकों के स्थान पर शब्दों का प्रयोग करना चाहिए; लंबी संख्या होने पर दोनों का प्रयोग किया जा सकता है। शीर्षक का आरंभ तो कभी भी अंकों से नहीं करना चाहिए।
8) शीर्षक में कर्मवाच्य का प्रयोग करना चाहिए पर इसके वाचक शब्द द्वारा का बार-बार प्रयोग नहीं करना चाहिए।
9) शीर्षक में विशेषणों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
10) संक्षिप्त शब्दों का विशेष स्थितियों में (केवल प्रचलित) ही प्रयोग करना चाहिए।
11) शीर्षक में केवल प्रसिद्ध व्यक्तियों के ही नामों का उल्लेख करना चाहिए।
12) शीर्षक पूरा वाक्य नहीं होना चाहिए (क्रिया पद का प्रयोग कम से कम करना चाहिए)।

अब आपके लिए कुछ समाचारों के शीर्षक उदाहरण के रूप में दिए जा रहे है। इन्हें ध्यान से पढ़िए और उक्त विशेषताएँ खोजिए। देखिए कहीं इनका अतिक्रमण तो नहीं किया गया है, यदि किया गया है तो क्यों?

1) सरकार से टकराव बढ़ने के आसार
2) गुवाहाटी में जबर्दस्त विस्फोट, 25 मरे
3) उड़ीसा में आरक्षण विरोध ने हिंसक मोड़ लिया
4) एमनेस्टी को राज्यों के दौरे की अनुमति की आशा

समाचार पत्र के संपादकीय पृष्ठ व साहित्यिक पत्रों के लेखों के शीर्षक कुछ भिन्न प्रकार के होते हैं कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं।

5) संस्कृति का हस्तेक्षप या संस्कृति में हस्तेक्षप
6) भारत की राष्ट्रीयता
7) ममतामयी थी मीरा बहन
8) (भारत कला भवन) भारतीय कला की गंगोत्री
9) सावधान। संकट में है मानवजाति।

इसी प्रकार खेल समाचारों तथा बाजार भाव के पृष्ठ के समाचारों के शीर्षकों की भाषा भी उक्त प्रकार के शीर्षकों की भाषा से भिन्न होती है। कुछ उदाहरण देखिए:

खेल समाचार

10) शक्ति ने सेना की पारी ध्वस्त की
11) पाक खिलाड़ियों को नोटिस जारी होंगे

बाजार भाव

12) चांदी उछली : सोना भी सुधरा
13) गेहूँ व सूजी में गिरावट : गुड़ में तेज़ी का रुख
14) भटिंडा केमिकल्स अपना विस्तार करेगी।

यदि आप ध्यान से देखें तो आपको इन सभी प्रकार के शीर्षकों की भाषा में कुछ अंतर दिखाई देंगे। खेलों व व्यापार पृष्ठ के शीर्षक अन्य शीर्षकों से अलग लगेंगे। इन पृष्ठों के शीर्षकों में विशेषणों का प्रयोग अधिक किया जाता है, कभी-कभी क्रियाओं का भी विशेषण के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसी तरह क्रियाओं का प्रयोग न करने का बंधन भी इन पृष्ठों के शीर्षकों के लिए कुछ मुक्त रहता है। इस प्रकार शीर्षकों में शब्दों का लाक्षणिक प्रयोग भी किया जा सकता है।

आमुख की भाषा : किसी भी समाचार का आमुख वास्तव में उस समाचार के शीर्षक का ही विस्तार होता है। रेडियो या दूरदर्शन पर समाचार सुनने देखने पर यह आसानी से पहचाना जा सकता है। इन माध्यमों के समाचार-शीर्ष समाचार विस्तारों के, प्रथम वाक्य के क्रिया रहित रूप होते हैं या संयुक्त क्रिया के स्थान पर सामान्य क्रिया प्रयुक्त रूप होते हैं। शीर्षक के द्वारा समाचार पाठक के मन में समाचार पढ़ने की जो जिज्ञासा ऊगायी गयी थी, आमुख का कार्य उन जिज्ञासा को शांत करना तो होता ही है पर इसके साथ-साथ पाठक को पूरा समाचार पढ़ने को भी प्रेरित करना होता है। इस आधार पर आमुख की भाषा का पहला गुण है कि वह विवरणात्मक/सूचनात्मक होनी चाहिए, उसमें अधिक से अधिक सूचनाएँ होनी चाहिए। इसमें छह ककारों — क्या-कहाँ, कब, किसने, क्यों और कब का उत्तर मिलना चाहिए।

आमुख की भाषा के लिए कोई अलग से नियम नहीं है, जिस तरह की भाषा समाचार के शरीर की होती है उसी प्रकार की ही समाचार के आमुख की भी होती है। पर आमुख लिखते समय एक बात का विशेष तौर पर ध्यान रखना चाहिए कि आमुख और पूरे समाचार की संरचना विलोमस्तूपी हो अर्थात् अति आवश्यक सूचनाएं पहले और कम आवश्यक सूचनाएं बाद में होनी चाहिए।

कुछ समाचारों के आमुख दिए जा रहे हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए —

गुवाहाटी, 21 नवम्बर (एजेंसी)। शहर में आज शाम दो अलग-अलग शक्तिशाली विस्फोटों में दो पुलिस कर्मियों समेत कम से कम 25 व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी तथा लगभग 60 अन्य घायल हो गये।

आरक्षण के मामले पर उच्चतम न्यायालय के निर्णय के विरोध में छात्रों ने आज भी उत्तर भारत में अनेक स्थानों पर यातायात जाम किया तथा शिक्षा संस्थानों को जबरन बंद कराया, जबकि उड़ीसा में आरक्षण विरोधी आंदोलन ने हिंसक मोड़ ले लिया।

वाशिंगटन, 21 नवम्बर (एजेंसी)। कृषि सबसिडी के मुद्दे पर अमेरिका और यूरोपीय समुदाय के बीच कल अंततः एक समझौता हो गया है। यह मामला लम्बे अर्से से विवाद का विषय रहा था। इस समझौते से व्यापार युद्ध की आशंका तो टल गई है, लेकिन फ्रांस ने नई आपत्ति पेश कर दी है।

बिहार के पलामू, गढ़वा, चतरा, लोहरदगा और गिरीडीह जिलों में सूखे की स्थिति सबसे गंभीर है, जहाँ तीन-चौथाई से अधिक फसल पूरी तरह नष्ट हो गयी है। इन जिलों के साथ ही बिहार के कुल 83 प्रखंडों की स्थिति चिंताजनक है। इन सभी क्षेत्रों में सूखा राहत कार्यक्रम अधिक गतिशील बनाने का फैसला लिया गया है।

जैसा कि ऊपर बताया गया था कि सामान्य समाचारों की भाषा समाचारों व बाजार भाव पृष्ठ के समाचारों के शीर्षों से भिन्न होती है। यही स्थिति इनके आमुखों की भाषा के विषय में भी है। इस तरह के समाचारों में क्रियाओं का विशिष्ट अर्थों में प्रयोग किया जाता है। अतः इन दोनों प्रकार के समाचारों के आमुखों के भी उदाहरण दिए जा रहे हैं:

खेल समाचार

नई दिल्ली, 21 नवम्बर (एजेंसी)। शक्ति सिंह ने छह खिलाड़ियों को आउट कर के सेना टीम की पारी को लगभग ध्वस्त कर दिया। हिमाचल के विरुद्ध रणजी ट्रॉफी मैच के दूसरे दिन उनका स्कोर मात्र सात पर 99 ही बन सका।

बाजार भाव

चांदी आयात की निकट भविष्य में अनुमति मिलने की कोई उम्मीद न होने तथा आवक घटने से हाजिर चांदी 210 रुपए उछलकर 6350 रुपए प्रतिकिलो हो गयी। सिक्का भी 200 रुपए भड़कते सुना गया। चांदी डिलीवरी 150 रुपए बढ़ कर 6300 रुपए हो गयी।

भाषा की स्वाभाविक संरचनाओं को ध्यान में रखकर वाक्य निर्माण करना चाहिए न कि किसी और भाषा से अनुवाद करते समय अपनी भाषा की संरचनाओं के स्थान पर स्रोत भाषा की संरचनाओं को अपना लेना चाहिए। समाचार में ऐसे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए जिसके अर्थ कोष्ठकों में स्पष्ट करने पड़े।

इसी तरह वाक्य स्तर पर यह ध्यान रखना चाहिए। एक ही वाक्य में अनेक वाक्यों को ठूँसना नहीं चाहिए। समाचार लेखन में प्रथम पुरुष के सर्वनामों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। पूरे समाचार को छोटे-छोटे अनुच्छेदों के रूप में संयोजित करना चाहिए न कि पूरे समाचार को एक ही अनुच्छेद के रूप में। प्रत्येक अनुच्छेद में एक विषय से ही संबंधित सामग्री होनी चाहिए। अनुच्छेदों के छोटे-छोटे रूप में समाचार लिखने का लाभ यह होता है कि यह पाठक के लिए उबाऊ नहीं होते, इनका संपेषण और विस्तार आसानी से किया जा सकता है।

समाचार में प्रायः आलंकारिक व लाक्षणिक भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इससे आम पाठक को समाचार समझने में कठिनाई होगी और समाचार का उद्देश्य पूरा नहीं हो पाएगा। पर बाजार भाव व खेल समाचारों के वर्णन में इस तरह की भाषा का कुछ हद तक प्रयोग किया जा सकता है।

अब एक समाचार के शरीर की भाषा का उदाहरण दिया जा रहा है। ध्यान से पढ़िए और उक्त विशेषताओं के आधार पर विश्लेषण करने का प्रयास कीजिए।

समाचार शीर्षों व आमुख के उदाहरणों से आपकी समझ में यह आ गया होगा कि इन दोनों में ही भाषा के माध्यम से गागर में सागर भरने का प्रयास किया जाता है। इसके विपरीत समाचार विस्तार अर्थात् शरीर भाषा प्रायः व्याख्यात्मक/विवरणात्मक होती है। समाचार का कार्य पाठक/दर्शक को घटना का सही-सही व पूर्ण विवरण देना मात्र होता है। अतः उसमें विश्लेषण का अभाव रहता है।

समाचार के शरीर की भाषा के विषय में कहा जा सकता है कि इसकी भाषा सरल होनी चाहिए। सरल से अभिप्राय है कि भाषा सामान्य पढ़े लिखे व्यक्तियों की भी समझ में आ जानी चाहिए। समाचार की भाषा इतनी सरल और सुबोध होनी चाहिए कि एक निपट गवार व्यक्ति भी उसे आसानी से समझ ले। दूसरे शब्दों में कहें तो कहा जा सकता है कि समाचार जनसामान्य की भाषा में लिखें जाने चाहिए। इस तरह की भाषा का एक गुण यह है कि उसमें जो भी वर्णन दिया जाए वह सुस्पष्ट होना चाहिए। उसमें बहुअर्थी शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए ताकि पाठक अर्थ का अनर्थ न कर लें। इसी प्रकार समाचारों में व्यर्थ का शब्द जाल नहीं फैलाना चाहिए। समाचार में जितनी भी सामग्री दी जाए वह परस्पर अच्छी तरह से संगुफित (जुड़ी हुई/संबद्ध) होनी चाहिए। समाचार लेखन में एक और बात का ध्यान रखना चाहिए वह यह है कि समाचार (मुद्रित माध्यम के लिए) विलोमस्तूपी संरचना के

रूप में लिखना चाहिए। विलोमस्तूपी संरचना का अभिप्राय है कि सबसे प्रमुख समाचार का विवरण सबसे पहले और फिर घटते महत्व के शेष विवरण बाद में प्रस्तुत करना चाहिए। इसका लाभ यह होता है कि यदि समाचार को किसी कारण से छोटा करना हो तो उसमें से बाद के अनुच्छेद हटाकर उसे छोटा किया जा सकता है। इस छोटा करने के प्रक्रिया में समाचार के समाचारत्व का नुकसान नहीं होगा।

समाचार में प्राय: लंबे-लंबे और जटिल वाक्यों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि विस्फोट की इन घटनाओं में बोडो उग्रवादियों का हाथ होने का संदेह है।

फल्टन बाजार में खड़ी एक प्राइवेट बस में बम के जबर्दस्त धमाके में 23 लोग मौके पर ही मारे गये तथा 34 अन्य घायल हो गये। इनमें से कुछ की हालत गंभीर बतायी गयी है। बस उत्तरी लखीमपुर जिले के सिलपतहार जाने वाली थी।

विस्फोट से बस पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी। विस्फोट इतना शक्तिशाली था कि इसके असर से घटनास्थल के आसपास की इमारतों की खिड़कियों के शीशे टूट गये, पुलिस ने पूरे इलाके की घेराबंदी कर ली है।

दिसपुर में पुराने विधायक हॉस्टल परिसर के भीतर हुए एक अन्य विस्फोट में दो पुलिसकर्मी मारे गये तथा छह अन्य गंभीर रूप से घायल हो गये। बम एक स्कूटर में रखा हुआ था। विस्फोट से स्कूटर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। वरिष्ठ प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारी घटनास्थल पर पहुंच गये है तथा जांच कार्य जारी है।

असम विधानसभा अध्यक्ष जे.के. गोगोई सूचना मिलते ही दुर्घटनास्थल पर पहुंच गये और उन्होंने हॉस्टल परिसर के भीतर तथा उसके इर्द-गिर्द पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था किये जाने के निर्देश दिये।

मुख्यमंत्री हितेश्वर सैकिया ने इन घटनाओं की निंदा की है और कहा है कि सरकार विस्फोट के लिए जिम्मेदार लोगों का पता लगाने के लिए सभी आवश्यक कदम उठायेगी।

असम गण परिषद विधायक दल के नेता प्रफुल्ल कुमार महंत ने भी विस्फोट की घटनाओं की निंदा की है।

24.4.2 फिल्म समीक्षा की भाषा

समाचारों व साहित्यिक सामग्री के अलावा समाचार पत्रों में संपादकीय, फीचर फिल्म समीक्षा व अन्य विषयों पर लिखे लेख भी महत्वपूर्ण रखते हैं। कुछ समाचार पत्रों में मनोरंजनात्मक व ज्ञानवर्द्धक सामग्री अलग-अलग दिन निर्धारित पृष्ठ पर प्रकाशित होती है। इन पृष्ठों की भाषा भी निश्चित तौर पर सामान्य समाचारों की भाषा से भिन्न होती है। इस तरह के लेखों की भाषा विषय या पाठक वर्गधारित होने के कारण यदा-कदा कठिन भी होती है।

एक फिल्म समीक्षा की भाषा का उदाहरण देखिए:

अनाम

पटकथा और निर्देशन : रमेश मोदी **निर्माता:** विनोद एस चौधरी **संगीत :** नदीम-श्रवण **कैमरा:** के.वी. रमन्ना **अभिनय:** अरमान कोहली, आयेशा जुल्का, किरण कुमार, कुलभूषण खरबंदा, लक्ष्मीकांत बेर्डे, सदाशिव अम्रापुरकर।

इस फिल्म के कहानीकार कोई वेद प्रकाश शर्मा है। 'विचित्र कथा' का कोई पुरस्कार है, तो इस साल जरूर इनको मिलना चाहिए। याददाश्त खो जाने की यह एक अनोखी कहानी है।

एक सड़क प्रदर्शन से फिल्म शुरू होती है। सस्ते जासूसी उपन्यास की शैली में एक कार तेजी से चली आ रही है। एक काली कार उसका पीछा कर रही है। कार और ट्रक की टक्कर होती है। कार बुरी तरह घायल हो जाती है। डाक्टर उसका ऑप्रेशन करते है। युवक को जब होश आता है, तो उसे नहीं पता कि वह कौन है। पता चलता है कि वह सिकंदर है — एक करोड़पति का बेटा। फिर थोड़ी देर बाद पता चलता है कि वह जॉनी है। लेकिन कहानी जैसे एक भूलभुलैया में फंस जाती है। बेचारे दर्शक को मध्यांतर तक आते-आते एक नई जानकारी मिलती है कि वह नायिका मेघना (आयेशा जुल्का) का मंगेतर रॉकी है।

अरमान कोहली का व्यक्तित्व देखने में ठीक-ठाक है — लंबाई भी अच्छी है। लेकिन न वे अमिताभ बच्चन है और न ही नसीरुद्दीन शाह। इसलिए इतने सारे नाम एक ही फिल्म में झेलने के लिए दर्शक के मन में उनके प्रति पूरी सहानुभूति जन्म लेती है।

नदीम श्रवण के कुछ गाने मीठे होते ही हैं। लेकिन इस फिल्म की जटिल कहानी के लिए बहुत कसे हुए और कल्पनाशील निर्देशन की जरूरत थी। नाम में भले ही कुछ न रखा हो पर 'अनाम' को संभालना निर्देशक के बस की बात नहीं नजर आती है।

UGHI-08/105

इसमें आप देखेंगे कि विश्लेषणात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है। समीक्षक ने फिल्म आदि के बारे में अपनी राय भी व्यक्त की है। यह कार्य प्राय: अन्य समाचार के संदर्भ में नहीं की जा सकती।

24.4.3 संपादकीय की भाषा

संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित सामग्री में अग्रलेख या संपादकीय समाचार पत्र का प्राण होता है। संपादकीय में किसी भी समसामयिक विषय को लेकर उसका बेबाक विश्लेषण करके उसके विषय में संपादक अपनी राय व्यक्त करता है। ऐसे लेखों की शैली सजीव होनी चाहिए। विषय का गंभीर विवेचन होना चाहिए।

एक संपादकीय लेख का शीर्षक व उसकी भाषा देखिए:

गेहूँ गहमागहमी

बैंकों में हुए घोटाले के साथ-साथ गेहूँ आयात का मसला भी केन्द्र सरकार के लिये असुविधा का कारण बना हुआ है। घोटाले की जाँच के लिये तो केन्द्र सरकार ने संयुक्त संसदीय समिति का गठन कर दिया है जो अपना दायित्व पूरी जिम्मेदारी के साथ निबाह रही है, परन्तु गेहूँ आयात के मसले पर सरकार को अभी भी उन तमाम संदेहों को समाप्त करना है जो पिछले छह महीने की राष्ट्रव्यापी बहस के दौरान उभरे हैं। संसद के शरदकालीन सत्र में केन्द्र सरकार ने विपक्ष द्वारा लगाए गए आरोपों के खंडन की कोशिश अवश्य की है, लेकिन इसमें उसे अभी आंशिक सफलता ही मिली है। सरकार के इस कथन में सच्चाई है कि गेहूँ का पर्याप्त भंडार सरकार के गोदामों में नहीं है। पिछले साल 1 अक्तूबर को 86 लाख टन का भंडार था जबकि इस साल 1 अक्तूबर को मात्र 45 लाख टन था। सरकारी गोदामों में पर्याप्त मात्रा में गेहूँ नहीं होने के कारण बाजार में कीमतें बढ़ सकती हैं तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली भी चरमरा सकती है। इसलिए तार्किक है कि सरकार गेहूँ के भंडार को समृद्ध करे। लेकिन सवाल उठता है कि क्या इसके लिए आयात अपरिहार्य था? अथवा घरेलू स्रोतों में भी गोदामों को भरा जा सकता था? इन सवालों का जवाब अभी भी सरकार तथ्यों के साथ नहीं दे पायी है। भारतीय किसानों से गेहूँ का वसूली मूल्य 280 रुपये प्रति क्विंटल है जबकि आयातित गेहूँ की कीमत भारतीय बन्दरगाहों पर 500 रुपये प्रति क्विंटल से भी अधिक होगी। सरकार कह रही है कि विदेशी किसानों को भारतीय किसानों को दी जाने वाली कीमतों से अधिक कीमत नहीं दी गई। इस तरह का दावा फिजूल है, क्योंकि सवाल भारतीय बनाम विदेशी किसानों का नहीं वरन भारत की धरती पर देशी गेहूँ तथा विदेशी गेहूँ की कीमतों का है।

प्रधानमंत्री का यह कहना सही है कि वर्षा ऋतु शुरू होने के पहले सामान्य से कम वर्षा की आशंका व्यक्त की जा रही थी और अनाज के पर्याप्त भंडारण के लिये आयात को एक विकल्प के रूप में देखा जा रहा था। लेकिन यह भी सच है कि 20 लाख टन गेहूँ आयात करने का निर्णय उस समय लिया गया जब मानसून अपने रंग में आ चुका था और देश के कुल इलाकों को छोड़कर वर्षा सामान्य हुई थी। इसलिये प्रधानमंत्री को आयात का कोई दूसरा कारण बताना पड़ेगा।

विपक्षी नेताओं ने गेहूँ आयात को विश्व बैंक-मुद्रा कोष की शर्तों से जोड़कर पूरे विवाद को एक नया मोड़ दे दिया है। इस कारण यह मसला बेहद संवेदनशील हो गया है। केन्द्र सरकार को पूरी सतर्कता बरतनी चाहिये, अन्यथा नई आर्थिक नीतियों के क्रियान्वयन में बाधाएँ आ सकती हैं। आर्थिक सुधारों के समर्थन में माहौल अब भी बना हुआ है। खतरा यह है कि विपक्षी दल गेहूँ आयात के मुद्दे को आर्थिक नीतियों से जोड़कर आर्थिक सुधारों के खिलाफ अभियान चला सकते हैं, जबकि वस्तुतः नयी आर्थिक नीतियों से गेहूँ आयात का कुछ लेना-देना नहीं।

24.4.4 लेख की भाषा

संपादकीय पृष्ठ पर अग्रलेख के अलावा लेख भी प्रकाशित होते हैं। ये आर्थिक राजनीतिक, सांस्कृतिक या इसी तरह के किसी विषय पर हो सकते हैं। इन लेखों में लेखकों का व्यक्तित्व व शैली झलकती है। इस तरह के लेख व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक शैली को समन्वित करके चलें तो अधिक सुग्राह्य होते हैं अन्यथा इसका पाठक वर्ग सामान्य जनन होकर सीमित और विशिष्ट हो जाता है।

एक लेख का शीर्षक और उसकी भाषा का नमूना देखिए:

संस्कृति का हस्तक्षेप या संस्कृति में हस्तक्षेप

अभी-अभी मेला मैदान में जिसे प्रगति मैदान कहा जाता है, कलाकारों, लेखकों, विद्वानों और देश के लगभग 80-85 प्रबुद्ध लोगों का मेला समाप्त हुआ। इस मेले में राष्ट्र की संस्कृति-नीति पर विचार हुआ या ठीक कहें विचार हुए। कुछ लोग सांस्कृतिक परिषद के गठन से चिन्तित थे, संस्कृति के विकेन्द्रीकरण के नाम पर किए जाने वाले केन्द्रीकरण से आतंकित थे। संस्थाएं असफल भी रही हों, पर उनकी स्वायत्तता पर अंकुश लगाने के विरोध में थे। पर मुझे लगा कि मेले में दूकानदारी की चिन्ता कुछ अधिक थी। संस्कृति पर खर्च कैसे बढ़े, संस्कृति का एकाधिकार कहाँ रहे — ऐसे विषयों की चर्चा घहरायी रही, पर उस सीस-उतार सौदे की चिन्ता कुछ कम दिखी, जिसके कारण संस्कृति पूरे समुदाय की संस्कृति होती है। यह भी देखा कि सांस्कृतिक संस्थानों की स्वतन्त्रता की बात उन क्षेत्रों से भी आ रही है [और यह अच्छा एवं सुखद लगा] जो संस्कृति को राजनीति (जैसे कहने के लिए सर्वहारानीति) की चेरी बनाए रखने का प्रयोग करते रहे, अब उन्हें लगा कि यह संस्कृति दबायी नहीं जा सकती और वे संस्कृति को एक नए प्रकार की जकड़न में बंधते नहीं देख सकते।

24.4.5 विज्ञापनों की भाषा

प्रत्येक व्यवसाय के केन्द्र में उपभोक्ता होता है। पत्रकारिता का जनसंचार भी अब एक व्यवसाय बन गया है। इसी कारण से सभी जनसंचार माध्यम उपभोक्ता परक बन गए हैं। इसे हम ऐसे भी कह सकते हैं कि विभिन्न संचार माध्यमों या पत्रिकाओं का महत्व इस बात से निर्धारित होता है कि उनका उपयोग कितने व्यक्ति कर रहे हैं। उपभोक्ताओं की अधिकता किसी भी पत्र-पत्रिका के आर्थिक आधार को सुदृढ़ बनाती है। यदि उपभोक्ता अधिक होंगे तो अन्य उत्पादों के उत्पादक भी अपनी सामग्री का प्रचार करने के लिए उस माध्यम विशेष या पत्र-पत्रिका विशेष का सहारा लेंगे। विज्ञापनों की संख्या की अधिकता भी पत्र-पत्रिकाओं के आर्थिक आधार को सुदृढ़ करने में सहायता देती है। इस कारण से आजकल के उपभोक्तापरक समाज में विज्ञापन अत्यधिक महत्वपूर्ण बन गए हैं। विज्ञापनों की भाषा समाचारों आदि की भाषा से पूर्णरूपेण भिन्न होती है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि अनेक समाचार पत्रों ने विज्ञापनों को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करने लिए ही रंगीन प्रिंटिंग व्यवस्था को अपनाया। अनेक पत्रिकाएं विज्ञापनों को ही ध्यान में रखकर (कभी-कभी केवल विज्ञापन वाले पृष्ठों के लिए ही) उच्च कोटि के कागज का प्रयोग करती हैं। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में तो पृष्ठों की दृष्टि से विज्ञापित सामग्री अधिक और समाचार या पत्र-पत्रिकोपयोगी सामग्री कम होती है।

विज्ञापन अनेक प्रकार के होते हैं। विज्ञापनों के विषय में विस्तार से आप इकाई संख्या (26) में पढ़ेंगे। इन सभी प्रकार के विज्ञापनों की भाषा में भी परस्पर अंतर होता है। विज्ञापन छापने के लिए या तो उनके शब्दों की संख्या के आधार पर (वर्गीकृत विज्ञापनों के संदर्भ में) या उसके द्वारा घेरे गए स्थान के आधार पर (अन्य प्रकार के विज्ञापनों के लिए) कुछ राशि ली जाती है। यह राशि पृष्ठ की महत्व की दृष्टि से भी कम या ज्यादा हो सकती है।

वर्गीकृत विज्ञापनों की भाषा की चर्चा करने से पहले अच्छा यह रहेगा कि आप इस तरह के कुछ उदाहरणों के विज्ञापन देख लें:

1) रिक्त स्थान संबंधी
2) विवाह संबंधी
3) खरीद परोख्त संबंधी

इन सभी विज्ञापनों को देखने पर आपको पता चलेगा कि इन छोटे-छोटे विज्ञापनों में बहुत सारे वाक्य संकुचित करके भर दिए गए हैं। ये संकुचित वाक्य यदि पूरे वाक्य के रूप में लिखे जाएं तो बहुत अधिक जगह घेरेंगे और उनको छपवाने के लिए बहुत अधिक धन भी खर्च करना पड़ेगा। इस तरह के विज्ञापनों में कम से कम शब्दों में कभी-कभी तो एक शब्द द्वारा एक-एक वाक्य की सूचनाएं भी दी जाती हैं। विशेषणों की भरमार भी रहती है।

वर्गीकृत विज्ञापनों के अलावा इस माध्यम में अन्य प्रकार के विज्ञापनों का भी प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार के विज्ञापन जब चित्रमुक्त होते हैं तो निश्चित तौर पर उनमें दिया विवरण चित्र से प्राप्त सूचनाओं को पुष्ट करने का ही कार्य करता है। इन विज्ञापनों में दिए गए चित्र अपने आप में बहुत कुछ कहने में समर्थ होते हैं। यदि चित्र कलात्मक होने के साथ रंगीन भी हो तो उसकी अपील और भी अधिक होती है। इन कम शब्दों वाले विज्ञापनों में भी विशेषणों, अलंकारात्मक भाषा और तुलनात्मक

पदबंधों को भरमार होती है। समाचार शीर्षों के समान इनमें भी क्रियाओं का प्रयोग अत्यल्प होता है। कई बार इस तरह के विज्ञापनों में समस्त सूचनाएं पूर्ण विवरण के रूप में भी दी जाती है। इस प्रकार के विज्ञापनों में वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। विज्ञापनों में प्रयुक्त पंक्तियों के निर्माण में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि वे लायात्मक होने के साथ-साथ गये भी हों ताकि वे तुरंत ही जुबान पर चढ़ जाएं।

पैंफ्लेट और होर्डिंग आदि इसी प्रकार के विज्ञापनों का प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः इनके विषय में अलग से चर्चा नहीं की जा रही है। अब आप सज्जा विज्ञापनों (Display) की भाषा के कुछ उदाहरण देखिए:

न
या

पुदीना
नींबू
वाला
पेश है, पुदीने की
और नींबू का चुलबुला स्वाद
कुर कुरा, मजेदार विज़
सारा जमाना झूम रहा है
विज के स्वाद के संग।
सारा जमाना
विज का दीवाना

ऊपर जिस विज्ञापन की भाषा का उदाहरण दिया गया है वह विज्ञापन रंगीन और चित्रयुक्त होंगे। समाचार पत्र के अन्य पृष्ठों पर भी अनेक सज्जा विज्ञापन छपते हैं। ये विज्ञापन प्रायः सूचनात्मक होते हैं, जैसे विद्यालय में प्रवेश संबंधी, गुमशुदा व्यक्तियों से संबंधित, उपभोग्य वस्तुओं के विभिन्न प्रकार की सरकारी सूचनाओं के विज्ञपान आदि उनकी भाषा पर यहाँ चर्चा नहीं की जा रही है।

अन्य उपकरणों की भाषा के संदर्भ में यहां कंप्यूटर की भाषा की चर्चा करनी भी आवश्यक है। कंप्यूटर में दो तरह की सुविधाएं होती हैं। यदि आप कंप्यूटर प्रोग्राम में फेर बदल करना चाहते हैं तो आपको उस भाषा का ज्ञान होना चाहिए। यदि आप अनुदेश आदि ही देना चाहते हैं तो उस भाषा का प्रयोग कर सकते हैं। जैसे भाषा में आपसे अनुदेश माँग रहा है। यदि आप इससे ड्राई भाषा का प्रयोग करेंगे तो कंप्यूटर यह संदेश देगा कि मैं आपकी भाषा नहीं समझता। इन सभी संदेशों को आप कंप्यूटर स्क्रीन पर या प्रिंट आउट द्वारा कागज पर भी प्राप्त कर सकते हैं। ये सूचनाएं कंप्यूटर अपने पूर्व निर्धारित भाषा और प्रारू में ही देगा।

दूरदर्शन की टेलीटेक्स्ट सर्विस में अनेक प्रकार की सामग्री रहती है। डिकोडर का प्रयोग किए बिना देखने पर आप अपने टी.वी. के स्क्रीन पर प्रमुख समाचार, तालिका बद्ध रेलवे व वायुयान आवागमन समय आदि देख सकते हैं। समाचारों की भाषा सामान्य मुद्रित माध्यम के समान होती है पर सूचनाएं सीमित रूप से दी जाती हैं। समाचार शीर्षों की भाषा लिखित माध्यम के निकट होती है। तालिकाओं के विषय में तो अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। पर ये समस्त सूचनाएं लिखित रूप में ही सामने आती हैं। इन सभी प्रकार की सूचनाओं के स्क्रीन्स का फॉर्मेट पूर्वनिर्धारित व ग्रेफिक सूचनाओं में रेल का इंजन आदि व वायुयान संबंधी सूचना में वायुयान तथा मौसम संबंधी तालिका के साथ बरसात का दृश्य दिखाई देता है।

मूक सिनेमा की जहां तक बात है उसमें प्रायः इशारों की या संकेतों की भाषा का प्रयोग किया जाता है। यदा कदा संवादों को लिखित रूप में पर्दे पर दिखा दिया जाता है। अतः इन फिल्मों की भाषा की चर्चा यहां अपेक्षित नहीं है।

24.5 श्रव्य माध्यम और भाषा

आप इकाई संख्या 23 में यह पढ़ चुके हैं कि श्रव्य माध्यमों के अंतर्गत मुख्य रूप से रेडियो, टेपरिकार्डर, ग्रामोफोन और लाउडस्पीकर आदि को समाहित किया जाता है। इन माध्यमों की प्रस्तुतियों में आप वक्ता की शक्ल नहीं देख सकते केवल वक्ता की आवाज सुन सकते हैं। इसके अलावा इन माध्यमों से प्रसारित मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों में संगीत का पट भी होता है। **श्रव्य माध्यमों से प्रसारित होने वाले**

संगीतात्मक व मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों की भाषा की चर्चा इस इकाई में नहीं की जा रही। केवल समाचारों और विज्ञापनों की भाषा का परिचय दिया जा रहा है। श्रव्य माध्यमों का लाभ यह है कि इनमें शब्दिक वर्णन को ध्वन्यात्मक सहायता उपलब्ध करवाई जा सकती है। ध्वन्यात्मक सहायता की आवश्यकता समाचार व वार्ता आदि में नहीं होती पर विज्ञापनों, गीतों, नाटकों आदि के लिए यह सहायता बहुत ही उपयोगी होती है। पर यहां वार्ता आदि को श्रोताओं की वाणी में ही सुनवाया जा सकता है। यह कार्य समाचार में भी संभव है कि नेताओं आदि के वक्तव्यों या संवाददाताओं की रिपोर्टों को समाचार वाचक के स्थान पर संवाददाता की वाणी में ही सुनवा दिया जाए। खाड़ी युद्ध के दौरान आप सभी ने आकाशवाणी व दूरदर्शन के समाचारों में खाड़ी संवाददाता अविनाश गोयल के संवाद इसी रूप में सुने थे। टेपरिकार्डर का लाभ यह है कि आप किसी भी व्यक्ति की वार्ता/ध्वनि को टेपांकित करने के बाद उसी रूप में अथवा संपादित करके बाद में सुनवा सकते हैं। आकाशवाणी से जो समाचार प्रसारित किए जाते हैं उन्हें प्रसारण समय, अवधि और विषय के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। इस वर्गीकरण के परिणामस्वरूप लघु समाचार, विस्तृत समाचार, प्रमुख बुलेटिन, गौण बुलेटिन, खेल समाचार, कृषि समाचार, बाजार भाव, रोजगार समाचार आदि समाचार प्रकार सामने आते हैं।

24.5.1 समाचारों की भाषा

श्रव्य माध्यमों के समाचारों के लिखित माध्यमों के समान तीन अंग नहीं होते केवल दो ही—शीर्ष और विस्तार होते हैं। इसका कारण इन माध्यमों में समाचारों को दिया जाने वाला सीमित समय होता है। शीर्ष का अभिप्राय होता है बुलेटिन के आरंभ के प्रारंभ में/अंत में उल्लिखित प्रमुख समाचार। इन शीर्षों की भाषा लिखित माध्यम की भाषा के समान ही होती है। श्रव्य माध्यम के समाचारों के कुछ शीर्ष उदाहरणार्थ दिए जा रहे हैं :

1) विकासशील देशों के संगठन जी-15 के देशों का आज सेनेगल की राजधानी में शिखर सम्मेलन।
2) अमरीका और यूरोपीय समुदाय के बीच कृषि सब्सिडी पर समझौता।
3) पाकिस्तान में पीपुल्स डेमोक्रेटिक अलाइंस का सोमवार को फिर इस्लामाबाद कूच का कार्यक्रम।

इन शीर्षकों को लिखित माध्यमों के शीर्षकों से तुलना करने पर एक बात तो यह स्पष्ट होती है कि इस माध्यम के शीर्षक लिखित माध्यम के शीर्षकों से अधिक लंबे और अधिक सूचनात्मक होते हैं। इन शीर्षकों में स्थानादि की सूचना भी दी जाती है जबकि लिखित माध्यम में वह सूचना नहीं रहती। लिखित माध्यमों में यह सूचना प्रायः समाचार के प्रारंभ में दी जाती है। वास्तव में समाचार पत्र के लिए समाचार लिखना व वाचक के लिए समाचार लिखना दो अलग-अलग विधाएं हैं। समाचार वाचक के लिए समाचार लिखते समय कुछ ऐसी बातों का भी ध्यान रखना पड़ता है जिनकी सामान्य लेखन में आवश्यकता नहीं होती। जैसे विराम चिह्नादि के बाद अधिक जगह छोड़नी होती है। उच्चारण को ध्यान में रखकर शब्दों को लिखना होता है। इसी प्रकार समाचार वाचक के लिए अनुदेश भी लिखने होते हैं। इनके अलावा संख्याओं को भी अंकों में न लिखकर शब्दों में लिखना चाहिए ताकि पढ़ने में आसानी हो।

श्रव्य माध्यमों के समाचारों के विस्तार की भाषा लिखित माध्यमों के समाचारों के विस्तार के समान न होकर उनके आमुख के समान होती है। क्योंकि जिस प्रकार लिखित समाचारों के आमुख में सारी की सारी आवश्यक सूचनाएं देनी होती है उसी प्रकार श्रव्य माध्यमों के समाचारों में विस्तार से समस्त आवश्यक सूचनाएं देनी होती है। इस माध्यम के लिए समाचार लिखते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इन समाचारों को आपके देश के निरक्षर/अनपढ़ व्यक्ति भी सुनते है। अतः आपके द्वारा चुने गए शब्द बहुत आसान होने चाहिए। किसी भी श्रोता की पिछले शब्दों को याद रखने व संबंध जोड़ने की क्षमता दस-बारह शब्दों तक सीमित होती है। इसलिए लंबे वाक्यों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। समाचार के आगे बढ़ने के साथ-साथ पिछले समाचार अंश विस्तृत होते रहते हैं अतः उसमें व्यक्तिवाचक सर्वनामों का सीमित प्रयोग होना चाहिए। व्यक्ति के नाम या पद आदि का उल्लेख करते रहना चाहिए। समाचार के सभी वाक्य परस्पर अच्छी तरह से संबद्ध होने चाहिए। वे टूटे-टूटे या अलग-अलग नहीं लगने चाहिए। शब्द स्तर पर यदि पर्याय का चयन करना पड़े तो सर्वप्रचलित या बहुप्रचलित पर्याय का चयन करना चाहिए। इस प्रकार की भाषा का चयन करना चाहिए कि वर्णन सुनकर सजीव वर्णन जैसा लगे। समाचार में प्रयुक्त वाक्य सरल होने चाहिए और इतने लंबे हो कि

वह एक ही सांस में पढ़ा जा सके। मुहावरे और साहित्यिक भाषा का समाचारों में प्रयोग नहीं करना चाहिए। कम अक्षरों वाले शब्दों का प्रयोग तो करना चाहिए पर वे कृत्रिम या अव्यावहारिक नहीं होने चाहिए। इन सबके ऊपर इस माध्यम के समाचार में प्रयुक्त शब्द इस तरह होने चाहिए कि वे कर्ण ग्राह्य भी हों। रेडियो समाचारों में प्रायः यह कोशिश करनी चाहिए कि वे सदा ताजे लगे अतः भूतकाल का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

अब कुछ रेडियो समाचारों की भाषा का उदाहरण देखिए:

1) विकासशील देशों के संगठन जी-15 का तीसरा शिखर सम्मेलन आज उत्तर-पश्चिमी अफ्रीकी देश सेनेगल की राजधानी डकार में शुरू हो रहा है। संगठन के सदस्य देश नई विश्व अर्थ व्यवस्था में विकासशील देशों को उचित स्थान दिलाने के बारे में विचार करेंगे। वे विकासशील देशों के बीच सहयोग बढ़ाने के व्यावहारिक उपायों का भी पता लगाएंगे। प्रधानमंत्री और सेनेगल के राष्ट्रपति अब्दूल ग्लूफ शिखर सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में भाषण देंगे। वे इस संगठन के एशियाई सदस्य देशों की ओर से बोलेंगे। बाद में श्री राव भारत के प्रधानमंत्री की हैसियत से सम्मेलन को संबोधित करेंगे।

एक रेडियो वार्ता की भाषा का नमूना देखिए :

नदी जल बँटवारे के बारे में भारत और बांगलादेश के विशेषज्ञों की संयुक्त समिति की पहली बैठक में कोई नाटकीय परिणाम निकलने की कोई आशा नहीं की जा रही थी। कल नई दिल्ली में संपन्न इस वार्ता में कई ऐसे मसलों पर विचार-विमर्श किया गया उनमें दोनों देशों के संयुक्त नदी आयोगों में सचिवों के स्तर की वार्ता शामिल थी। विशेषज्ञों की संयुक्त समिति ने जल्दी ही ढाका में फिर बैठक करने का फैसला किया है उसी दिशा में एक और कदम है। भारत ने इस वर्ष मई में बांग्लादेश की प्रधानमंत्री बेगम खालिदा जिया की यात्रा के दौरान बांग्लादेश को यह आश्वासन दिया था कि वह दोनों देशों के बीच होकर बहने वाली बड़ी नदियों के पानी के बंटवारे के लिए दीर्घकालीन और समानता के आकार पर कोई समाधान निकालने के लिए इच्छुक हैं। समाधान जो भी तैयार किया जाएगा उसमें ये सुनिश्चित किया जाएगा कि उपलब्ध जनसंसाधनों को उन दोनों देशों को इस तरह उपलब्ध कराया जाए कि इससे दोनों देशों को अधिकतम लाभ हो सके। दोनों देशों की इसी भावना के अनुरूप विशेषज्ञों की संयुक्त समिति अगस्त में बनायी गयी जब केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री ढाका की यात्रा पर गए थे। इस जटिल समस्या के तत्काल समाधान की आशा नहीं हो सकती थी क्योंकि बांग्लादेश में जल समस्या के प्रति वहां के लोगों की भावना प्रबल रूप से जुड़ी हुई है।

24.5.2 विज्ञापनों की भाषा

श्रव्य माध्यमों के विज्ञापनों में मुद्रित या लिखित माध्यम के समान यह सुविधा तो उपलब्ध नहीं रहती कि उसके प्रिंट को या टाइप को मोटा या बोल्ड करके या उसे रंगीन बनाकर प्रस्तुत किया जा सके। पर श्रव्य माध्यमों में यह सुविधा होती है कि आप उसे पात्रानुरूप आवाज में सुनवा सकते हैं, उसे नाटकीय ढंग से जाकर प्रस्तुत करवा सकते हैं। भाषायी उतार-चढ़ाव के द्वारा भावों को व्यक्त कर सकते हैं उसके साथ संगीत भी सुनवा सकते हैं, उसे उपयुक्त बनाने के लिए ध्वनियों का सहारा ले सकते हैं। इन सभी के कारण इस माध्यम में शब्दों का महत्व तुलनात्मक दृष्टि से कुछ कम हो जाता है, अन्य प्रकार से कहें तो कह सकते हैं कि कुछ अन्य उपकरणों को भी स्थान देना होता है। भारत में सभी प्रकार के माध्यमों के लिए विज्ञापन बनाने वाले समान व्यक्ति ही होते हैं। अतः इन तीनों प्रकार के माध्यमों के विज्ञापनों की भाषा में कुछ विशेष अंतर नहीं दिखाई देता।

कुछ रेडियो विज्ञापनों की भाषा उदाहरण के लिए दी जा रही है :

1) चोर-चोर जेब कट गई
अजी कटी नहीं फट गई
पैसे गिर गए वह तो उठा लो
कहा था मुनीम धागे से सिलाई करवाएं
मुनीम धागे सदा आगे
पक्के और फैंसी रंगों में
मुनीम धागे सदा आगे।

2) बीत गए दिन बचपन के
और नहीं दिन साड़ी के
फिर क्यों न खाएं अमूल मिल्क
चॉकलेट।

रेडियो में बाजार भाव या रोजगार आदि से संबंधित जो विज्ञापन प्रसारित किए जाते हैं उनकी भाषाओं में लिखित माध्यमों की भाषा से कोई विशेष अंतर नहीं होता। ये विज्ञापन सूचनात्मक होते हैं। बाज़ार भाव से वस्तु का नाम और दर/भाव बता दिया जाता है और रोजगार संबंधी विज्ञापनों में भी इसी प्रकार पद नाम व संबंधित जानकारी दे दी जाती है। ये जानकारियाँ प्रायः लिखित माध्यम के विज्ञापनों से यथारूप में ग्रहण कर पढ़कर सुना दी जाती है। अतः इनके उदाहरण नहीं दिए जा रहे हैं और न ही इनकी भाषा की चर्चा की जा रही है।

24.6 दृश्य-श्रव्य माध्यम और भाषा

यह तो आप जानते हैं कि एक चित्र में जो कुछ भी दिखाई देता है उसे पूर्णरूपेण व्यक्त करने के लिए कितने अधिक शब्दों की आवश्यकता होती है। यदि ऐसे कुछ चित्र आपको क्रमशः दिखने लग जाएं तो आप स्वयं ही अंदाजा लगाएं कि एक मिनट में दिखाए गए चित्रों का वर्णन करने के लिए कितने शब्दों की आवश्यकता होगी। वास्तव में चित्र में जितना परिवेश या वातावरण बिना किसी प्रयास के दर्शक के पास पहुँच जाता है लिखित या श्रव्य माध्यम पूरे परिवेश का वर्णन प्रस्तुत करना होता है। यह सिनेमा, दूरदर्शन वीडियो फिल्म आदि को समाहित किया जा सकता है।

दूरदर्शन पर अनेक प्रकार के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं जैसे सूचनात्मक, विश्लेषणात्मक, मनोरंजनात्मक व ज्ञान वर्द्धक आदि। इस इकाई में मनोरंजनात्मक विश्लेषणात्मक और ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रमों की भाषा की चर्चा नहीं की जाएगी। इस इकाई में केवल सूचनात्मक अर्थात समाचार और विज्ञापनों की भाषा की चर्चा की जा रही है।

24.6.1 समाचारों की भाषा

जैसा कि पहले श्रव्य माध्यमों की चर्चा में बताया गया था श्रव्य माध्यमों में प्रस्तुत समाचारों के केवल दो अंग शीर्ष और विस्तार होते हैं, उसी प्रकार दृश्य-श्रव्य माध्यमों में भाषायी वर्णन की दृष्टि से दो ही अंग शीर्ष और विस्तार होते हैं। आजकल समाचारों के अंत में समाचार सारांश भी प्रस्तुत किया जाता है जिनमें प्रायः समाचार शीर्षों को पूरे वाक्य का रूप देकर प्रस्तुत कर दिया जाता है। इस माध्यम के समाचारों का गैर भाषायी परंतु महत्वपूर्ण वर्णन करते समय अनेक शब्दों से बचा जा सकता है। इस दृश्य सामग्री के परिणामस्वरूप वर्णन करते समय अनेक शब्दों से बचा जा सकता है। जैसी कि इस इकाई में पहले भी चर्चा की जा चुकी है कि नाटक आदि के जिस परिवेश का लिखित माध्यम में वर्णन करके बताना होता है वहीं वास्तविक या बनावटी परिवेश उपस्थित करके दृश्य श्रव्य में उस वर्णन से बच सकते हैं। इसी प्रकार समाचार प्रस्तुत करते समय इस माध्यम में दर्शकों को वास्तविक स्थान पर ले जाकर दृश्य दिखाए जा सकते हैं या प्रतिभागियों की ही आवाज में घटनाक्रम को प्रस्तुत किया जा सकता है। यह घटनाक्रम आप तुरंत ही दिखा सकते हैं और चाहें तो रिकार्ड करके बाद में संपादन करके या यथारूप में ही प्रसारित कर दें या दिखा दें। दृश्य-श्रव्य माध्यम और श्रव्य माध्यम की भाषा में इसके अलावा कोई विशेष अंतर नहीं होता। कुछ समाचारों के शीर्षों की भाषा के उदाहरण देखिए:

1) विकासशील देशों की समस्या की हल करने के लिए प्रधानमंत्री का सभी देशों के आपसी सहयोग का आह्वान।

2) पाकिस्तान में पीपल्स डेमोक्रेटिक अलांइस की रैली के सिलसिले में कई और लोग गिरफ्तार।

अब दूरदर्शन द्वारा प्रसारित समाचारों की भाषा के नमूने देखिए—

1) भारत ने आह्वान किया है कि मानवता के व्यापक कल्याण के लिए सभी देश मिल-जुलकर कार्य करने का संकल्प लें। प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिंह राव ने सेनेगल की राजधानी में आज विकासशील देशों के समूह जी-15 की शिखर बैठक को संबोधित करते हुए सुझाव दिया कि विकासोन्मुखी कार्य की प्राथमिकताएँ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तय की जानी चाहिए। शिखर सम्मेलन के बारे में दुरदर्शन की संवाददाता उपमा भटनागर और जानकारी दे रही हैं:

"आशाओं और आकांक्षाओं को मिल-जुलकर पूरा करने की अपनी वचनबद्धता के साथ आज उकार सम्मेलन शुरू हुआ। दस देशों के राष्ट्राध्यक्ष व शासनाध्यक्ष तीन दिवसीय सम्मेलन में हिस्सा ले रहे हैं।

अभ्यास

निम्नलिखित पर टिप्पणी कीजिए:

1) जनसंचार माध्यमों में दृश्य सामग्री उपलब्ध होने पर भाषा का महत्व कम हो जाता है।

.....

.....

.....

.....

2) जनसंचार माध्यम की एक व्यवसाय बन गया है।

.....

.....

.....

.....

3) मुद्रित और दृश्य-श्रव्य माध्यम की भाषा में अंतर होता है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) दृश्य-श्रव्य माध्यम के विज्ञापन सबसे अधिक प्रभावित करते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

*5) समाचार शीर्षों की भाषा की कुछ विशेषताएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

6) समाचार और खेल समाचारों की भाषा में अंतर होता है।

.....

.....

.....

.....

7) समाचार और विज्ञापनों की भाषा में अंतर होता है।

....

....

....

....

....

24.6.2 विज्ञापनों की भाषा

विज्ञापनों की भाषा के संदर्भ में कहा जा सकता है कि भारत में दूरदर्शन पर जो भी विज्ञापन दिखाए जाते हैं उनकी भाषा प्रायः श्रव्य माध्यमों में प्रयुक्त भाषा के समान ही होती है। अंतर होता है तो मात्र दृश्य सामग्री का। दृश्य सामग्री की अनेक विशेषताओं से युक्त होती है। उसमें एनीमेशन, कंप्यूटर ग्रेफिक्स, वीडियो ट्रिक्स तथा कैमरा ट्रिक्स आदि का सहारा लेकर दर्शकों को चमत्कृत भी किया जाता है।

श्रव्य माध्यमों में चर्चित अधिकांश विज्ञापन दृश्य श्रव्य माध्यमों में से भी प्रसारित किए जाते हैं अतः उनकी भाषा के उदाहरण अलग से नहीं दिए जा रहे। बस अंतर होता है तो मात्र इतना कि इन उपभोग्य वस्तुओं की जो भी विशेषताएं बताई जाती हैं वे चित्रात्मक रूप दर्शकों के सामने घटित भी दिखाई जाती है। श्रोताओं पर विज्ञापनों का अधिक प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि दूरदर्शन पर या सिनेमा में एक विज्ञापन देख लेने के बाद जब भी उसे लिखित माध्यम में पढ़ते हैं या श्रव्य माध्यम में सुनते हैं तो आपकी नजरों के सामने उसी वस्तु के दृश्य-श्रव्य माध्यम के विज्ञापन स्वतः ही आ जाते हैं।

बोध प्रश्न

ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर "हाँ" या "नहीं" में दीजिए:

1) दृश्य माध्यम का अभिप्राय लिखित या मुद्रित माध्यम से ही होता है। (हाँ/नहीं)
2) कंप्यूटर दृश्य माध्यम के रूप में भी कार्य करता है। (हाँ/नहीं)
3) लिखित माध्यम में चित्रों का महत्व नहीं होता। (हाँ/नहीं)
4) समाचार शीर्षक बहुअर्थी होना चाहिए। (हाँ/नहीं)
5) शीर्षक में संयोजकों के स्थान पर विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। (हाँ/नहीं)
6) शीर्षक पूरा वाक्य होते हैं। (हाँ/नहीं)
7) आमुख में गागर में सागर भरने का प्रयास किया जाता है। (हाँ/नहीं)
8) समाचार में शरीर की भाषा कठिन होनी चाहिए। (हाँ/नहीं)
9) समाचारों में लंबे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए। (हाँ/नहीं)
10) खेल समीक्षा में लेखक अपनी राय व्यक्त कर सकता है। (हाँ/नहीं)
11) अणु लेख की शैली सजीव होनी चाहिए। (हाँ/नहीं)
12) वर्गीकृत विज्ञापनों के शब्दों में बहुत कम सूचना होती है। (हाँ/नहीं)
13) श्रव्य माध्यम में समाचारों के तीन अंग होते हैं। (हाँ/नहीं)
14) दृश्य-श्रव्य माध्यमों में दृश्य सामग्री महत्वपूर्ण होती है। (हाँ/नहीं)
15) दृश्य-श्रव्य माध्यमों में भाषायी विवरण बहुत अधिक होना चाहिए। (हाँ/नहीं)

घ) निम्नलिखित कथनों में सही के सामने (√) और गलत के सामने (×) का निशान लगाइए:

1) मूक फिल्में श्रव्य माध्यम का अंग हैं। ( )
2) टेलीटेक्स्ट सर्विस दृश्य माध्यम का अंग है। ( )
3) चित्र वर्णन की प्रामाणिकता सिद्ध करते हैं। ( )
4) स्पर्श संवेदी स्क्रीन श्रव्य माध्यम के रूप में कार्य करता है। ( )
5) साप्ताहिक व पाक्षिक समाचार पत्रों में पिछले दिनों, विगत दिनों जैसे पदबंधों का अधिक प्रयोग किया जाता है। ( )
6) शीर्षक में शब्दों की पुनरावृत्ति की जाती है। ( )

7) समाचार के शरीर की भाषा व्याख्यात्मक होती है। ( )
8) सामान्य समाचारों में लाक्षणिक भाषा का प्रयोग किया जाता है। ( )
9) फिल्म समीक्षा की भाषा विश्लेषणात्मक होती है। ( )
10) अग्रलेख में विषय का गंभीर विवेचन किया जाता है। ( )
11) विज्ञापनों और समाचारों की भाषा समान होती है। ( )
12) विज्ञापनों में विशेषणों का प्रयोग नहीं किया जाता। ( )
13) श्रव्य और लिखित माध्यमों के समाचार शीर्षों में समान सूचना होती है। ( )
14) दृश्य-श्रव्य माध्यम में परिवेश भाषा के द्वारा चित्रित किया जाता है। ( )
15) दृश्य-श्रव्य माध्यम में प्रसारित विज्ञापन आपको सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। ( )

24.7 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि :

- जनसंचार माध्यमों की भाषा उनके स्वरूप के आधार पर बदल जाती है। अर्थात् दृश्य माध्यम की भाषा श्रव्य माध्यम की भाषा से अलग होती है और इन दोनों माध्यमों की भाषा दृश्य-श्रव्य माध्यम से।
- किसी एक माध्यम में प्रयुक्त होने वाले जनसंचार के विभिन्न उपादानों की भाषा में भी परस्पर अंतर होता है। जैसे समाचारों की भाषा विज्ञापनों से भिन्न होती है। विज्ञापनों की भाषा संपादकीय से।
- समाचारों की भाषा भी प्रायः समान नहीं होती वह भी बदलती रहती है। बाजार भाव, खेल समाचार, फिल्म समाचार आदि की भाषा सामान्य समाचारों की भाषा से अलग होती है।
- इन माध्यमों में प्रसारित साहित्यिक विधाओं की भाषाओं को प्रायः माध्यम नियंत्रित नहीं करता। परंतु एक माध्यम के लिखी रचना का जब दूसरे माध्यम के अनुरूप रूपांतरण किया जाता है तो उसमें निश्चित तौर पर माध्यम को ध्यान में रखकर भाषा का प्रयोग किया जाता है।
- लिखित/मुद्रित माध्यम में भाषा का महत्व सर्वाधिक होता है। शेष माध्यमों में भाषा का महत्व कम तो नहीं होता पर अन्य उपादानों को भी महत्व देने से तुलनात्मक दृष्टि से भाषा का महत्व कम हो जाता है।
- पाठक/दर्शक/श्रोता वर्ग की संचारमाध्यम की भाषा को नियंत्रित करते हैं। पाठक के वर्ग के आधार पर कृषि दर्शन, अंकुर आजकल, युवमंच और बाल कार्यक्रम आदि की भाषा निर्धारित होती है।
- जनसंचार के माध्यम औद्योगिक विकास के साथ-साथ अधिक और अधिक विकसित होते जा रहे हैं।

24.8 उपयोगी पुस्तकें

1) जन-माध्यम और पत्रकारिता — प्रवीण दीक्षित, सहयोगी संस्थान, कानपुर (भाग 1, 2), 1983।
2) संवाद और संवाददाता — राजेंद्र, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़ 1983।
3) समाचार लेखन के सिद्धांत और तकनीक — यूनीवर्सिटी पब्लिकेशन्स, जयपुर, 1988।

24.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

क) 1) हाँ, 2) हाँ, 3) नहीं, 4) हाँ, 5) नहीं
6) नहीं, 7) नहीं, 8) हाँ, 9) हाँ, 10) नहीं

ख) 1) ×, 2) √, 3) ×, 4) ×, 5) ×,
6) ×, 7) ×, 8) ×, 9) ×, 10) ×,

ग) 1) नहीं, 2) हाँ, 3) नहीं, 4) नहीं, 5) हाँ,
6) नहीं, 7) हाँ, 8) नहीं, 9) नहीं, 10) हाँ,
11) हाँ, 12) नहीं, 13) नहीं, 14) हां, 15) नहीं

घ) 1) ×, 2) √, 3) √ 4) ×, 5) √,
6) ×, 7) √, 8) √, 9) √, 10) √
11) ×, 12) ×, 13) ×, 14) ×, 15) √

अभ्यास

इकाई की सहायता कीजिए।

इकाई 25 समाचार लेखन और हिंदी

इकाई की रूपरेखा

25.0 उद्देश्य
25.1 प्रस्तावना
25.2 समाचार : अभिप्राय और आयाम
- 25.2.1 समाचार क्या है
- 25.2.2 समाचार के तत्व
- 25.2.3 समाचार बनने की प्रक्रिया
- 25.2.4 विभिन्न संचार माध्यम

25.3 समाचार के प्रकार
- 25.3.1 गंभीर समाचार और सामान्य रुचि के समाचार
- 25.3.2 तथ्यात्मक समाचार और विश्लेषणात्मक समाचार
- 25.3.3 विभिन्न क्षेत्रों के समाचार

25.4 अच्छे संवाददाता/समाचार लेखक के गुण
- 25.4.1 सक्रियता
- 25.4.2 विश्वासपात्रता
- 25.4.3 वस्तुनिष्ठता
- 25.4.4 विश्लेषणात्मक क्षमता
- 25.4.5 भाषा पर अधिकार

25.5 समाचार लेखन के सिद्धांत
- 25.5.1 यथार्थता
- 25.5.2 संक्षिप्तता
- 25.5.3 रोचकता

25.6 समाचार का प्रस्तुतीकरण
- 25.6.1 समाचार शीर्षक लेखन
- 25.6.2 आमुख या इन्ट्रो
- 25.6.3 विवरण

25.7 रेडियो और टेलीविजन के लिए समाचार लेखन
25.8 सारांश
25.9 उपयोगी पुस्तकें
25.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

25.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप समाचार लेखन के विभिन्न पहलुओं से परिचित हो सकेंगे। इसे पढ़ने के बाद आप :

- समाचार का अभिप्राय और आयाम स्पष्ट कर सकेंगे,
- एक अच्छे संवाददाता के गुणों का वर्णन कर सकेंगे,
- समाचार के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख कर सकेंगे,
- समाचार लेखन के सिद्धांतों को रेखांकित कर सकेंगे,
- समाचार के प्रस्तुतीकरण का ढंग बता सकेंगे,
- रेडियो और टी.वी. के लिए किए जा रहे समाचार लेखन की मूल विशेषताओं पर प्रकाश डाल सकेंगे।

25.1 प्रस्तावना

प्रयोजनमूलक हिंदी के छठे खंड की यह दूसरी इकाई है। पहली इकाई में आप जनसंचार के विविध आयामों से परिचित हो चुके हैं। आज हम जनसंचार के प्रमुख पहलुओं पर विचार करने जा रहे हैं, मसलन समाचार लेखन, संपादन, विज्ञापन। इन सभी पहलुओं पर विचार करते समय भाषा के प्रयोग अर्थात हिंदी की प्रयोजनमूलकता पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

प्रस्तुत इकाई में समाचार लेखन पर प्रकाश डाला जा रहा है। आधुनिक युग में समाचार जनसंचार का एक प्रमुख वाहक है। समाचार हमारी आदत में शामिल है, बिल्कुल वैसे ही जैसे सुबह की चाय। इसलिए सबसे पहले हम समाचार लेखन पर विचार करने जा रहे हैं। यहां भी मूल मुद्दा यही है कि समाचार की भाषा कैसी होनी चाहिए। हम उदाहरणों के माध्यम से समाचारों में प्रयुक्त हिंदी से आपको परिचित कराएंगे। इन उदाहरणों के माध्यम से हम यह विश्लेषण करेंगे कि समाचार की भाषा कैसी होनी चाहिए।

समाचार लेखन और प्रस्तुति को जानने के लिए समाचार के विभिन्न आयामों से परिचित होना आवश्यक है। आपको मालूम होना चाहिए कि समाचार का अर्थ क्या होता है, उद्देश्य क्या होता है, समाचार तैयार करने की प्रक्रिया क्या होती है — आदि-आदि।

इस जानकारी के अभाव में समाचार लेखन का आपका कार्य अधूरा रहेगा। क्या आप जानते हैं कि एक अच्छे समाचार लेखक, संवाददाता के गुण क्या हैं? नहीं... न। तो आइए हम इस इकाई में इससे भी परिचित हो लें ताकि जब आप इस भूमिका को निभाएं तो हम गुणों को याद रखें।

25.2 समाचार : अभिप्राय और आयाम

आप रोज समाचारपत्र पढ़ते होंगे या फिर रेडियो या टेलीविजन पर समाचार सुनते या देखते होंगे। आपने कभी गौर किया है कि समाचार का मतलब क्या होता है, समाचार के तत्व क्या होते हैं, समाचार बनने की प्रक्रिया क्या होती है? नहीं... न। इसे जानने की आपको आवश्यकता नहीं पड़ी होगी। पर इस पाठ्यक्रम के विद्यार्थी होने के नाते आपको इन प्रश्नों से जूझना होगा। समाचार की भाषा पर विचार करने से पहले, यह जानना जरूरी है कि समाचार है क्या?

25.2.1 समाचार क्या है

समाचार या खबर को अंग्रेजी में कहते हैं। अगर इसे तोड़ें तो बनेगा —

(उत्तर) (पूर्व) (पश्चिम) और (दक्षिण)

का एक और अर्थ हो सकता है। का अर्थ होता है नया और उसका बहुवचन हुआ अगर दोनों अंकों को मिलाया जाए तो समाचार का मतलब होगा — चारों और से मिली सूचनाओं, घटनाओं, तथ्यों, विचारों आदि का सामयिक, उत्सुकतावर्द्धक और जानकारीपूर्ण रिपोर्ट को समाचार कहते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि समाचार में चारों ओर की सूचनाएं तो होनी चाहिए, साथ ही साथ उनमें एक नयापन भी होना चाहिए। समाचार को सदैव नया, दिलचस्प, मनोरंजक और महत्वपूर्ण होना चाहिए।

इस प्रकार समाचार में आमतौर से निम्नलिखित बातें शामिल होती हैं :

क) नवीनता एवं विलक्षणता
ख) जानकारी
ग) उत्तेजक और हृदयस्पर्शी
घ) किसी परिवर्तन की सूचना

समाचार के स्वरूप इन्हीं बातों पर निर्भर करता है। इसी से जुड़ा एक प्रश्न समाचार के तत्वों का है। आइए, समाचार के तत्वों की जानकारी प्राप्त की जाए।

25.2.2 समाचार के तत्व

समाचार के स्वरूप पर अभी आपने दृष्टि डाली। इसके आलोक में उसके प्रमुख तत्वों को आसानी से समझा जा सकता है। शुष्क तथ्य समाचार नहीं बन सकते। पर जो तथ्य आम आदमी के जीवन और विचारों पर प्रभाव डालते हैं, उसे पसंद आते हैं और आंदोलित करते हैं, वे ही समाचार बनते हैं।

समाचार की इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए "समाचार" में छह तत्वों का समावेश अनिवार्य माना जाता है। ये हैं — क्या, कहां, कब, कौन, क्यों और कैसे।

1) क्या — क्या हुआ? जिसके संबंध में समाचार लिखा जा रहा है।
2) कहां-कहां? समाचार में दी गई घटना का संबंध किस स्थान, नगर, गांव प्रदेश या देश से हैं।
3) कब — "समाचार" किस समय, किस दिन, किस अवसर का है।
4) कौन — "समाचार" के विषय (घटना, वृत्तांत आदि) से कौन लोग संबंधित हैं।
5) क्यों — समाचार की पृष्ठभूमि।
6) कैसे — समाचार का पूरा ब्योरा।

ये छह ककार ("क" अक्षर से शुरू होने वाले छह प्रश्न) समाचार की आत्मा है। समाचार में इन तत्वों का समावेश अनिवार्य है।

नीचे एक समाचार उद्धृत किया जा रहा है। आइए, उनमें छह ककारों की खोज की जाए।

आतंकवाद लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरा

अंतरसंसदीय सम्मेलन में राष्ट्रपति ने आगाह किया

विशेष संवाददाता

नयी दिल्ली, 12 अप्रैल।

राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने अन्तरराष्ट्रीय आतंकवाद — खासकर बाहर के किसी देश द्वारा बढ़ाये जाने वाले आतंकवाद को मानव समाज का असली दुश्मन बताते हुए उसे समूल नष्ट कर देने का आह्वान किया है।

डॉ. शर्मा ने 89वें अन्तरसंसदीय सम्मेलन का आज यहां संसद के केन्द्रीय कक्ष में उद्घाटन करते हुए समूचे अन्तरराष्ट्रीय समुदाय का आह्वान किया कि घात लगाये बैठे इन आतंकवादी तत्वों की पहचान कर उन्हें समाप्त कर दिया जाना चाहिए, क्योंकि उनसे मानव सभ्यता का भविष्य ही खतरे में पड़ सकता है।

उन्होंने आतंकवाद को 'लोकतंत्र के लिए एक गम्भीर खतरा' बताते हुए कहा कि उसे कोई अलग-थलग मुद्दा और देश विशेष की स्थानीय समस्या नहीं समझा जाना चाहिए, क्योंकि आतंकवादियों द्वारा निर्दोष लोगों की हत्या तथा सरकारी और निजी सम्पत्ति को क्षति पहुंचाये जाने का अर्थ सभी लोगों को क्षति पहुंचाना ही है।

लोकतंत्र और मानव अधिकारों के महत्व को रेखांकित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा : यह अनुभव सिद्ध बात है कि जिन राजनैतिक प्रणालियों में मानव अधिकारों को नकारा या दबाया गया था, वे निश्चितरूपेण विफल हुईं, क्योंकि संवैधानिक, कानूनी और राजनैतिक दोषों से अभिशप्त उन प्रणालियों का कार्य अन्यायपूर्ण और अव्यावहारिक था।

डॉ. शर्मा के शब्दों में : अब हमें यह महसूस करना चाहिए कि लोकतंत्र की रक्षा करना सामूहिक रूप से पूरी मानव जाति का दायित्व है।... मेरे विचार से लोकतंत्र के सिद्धान्तों में अभी तक इस विषय का पर्याप्त विश्लेषण नहीं हुआ है कि लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को बनाने या बिगाड़ने में बाहरी प्रभावों की क्या भूमिका है। इन बाहरी प्रभावों का गम्भीर रूप से विश्लेषण और मूल्यांकन करने की आवश्यकता है।

उनका कहना था कि इसीलिए इस सम्मेलन में लोकतंत्र और उसके उद्देश्यों, मूल्यों, अपेक्षाओं, लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं तथा लोकतंत्र के समक्ष आने वाले प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सभी प्रकार के खतरों पर स्पष्ट रूप से ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए तथा हम सभी को मिलकर उस उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

लोकतांत्रिक दृष्टिकोण बनता ही तब है, जब हम मानव अधिकारों के प्रति जागरूक हो जाते हैं और हमें यह सत्य बोध हो जाता है कि शासनतंत्रों में मानव अधिकारों को सुनिश्चित करके ही मानव जाति का कल्याण किया जा सकता है।

राष्ट्रपति ने विश्व के कोने-कोने से आये सांसदों को आगाह किया कि मानव स्वतंत्रताओं को मानना और लागू करना, विश्वसनीयता तथा समाज का

खुलापन लोकतंत्र के स्तम्भ और लोकतांत्रिक राज्य के अनिवार्य अंग हैं, लेकिन ये ही कभी-कभी इसके विनाश के कारण भी बन जाते हैं, जो लोकतांत्रिक राज्य की स्वाभाविक सम्भावनाओं को सीमित करने तथा नष्ट करने के लिए उसकी ही मूलभूत विशेषताओं का दुरुपयोग करके विध्वंस और विनाश करते हैं, जबकि हमारा लक्ष्य एक ऐसे उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करना है, जिसमें प्रत्येक मानव सौहार्दपूर्ण एवं प्रगतिशील वातावरण में गरिमापूर्ण, रचनात्मक, समृद्ध और प्रसन्नापूर्वक जीवन जी सके।

डॉ. शर्मा ने विश्वास व्यक्त किया कि यह सम्मेलन मानव जाति को एक ऐसा संदेश देगा, जिससे लोकतांत्रिक आदर्शों की सर्वश्रेष्ठता निश्चित रूप से सिद्ध होगी, जिसका सृजन करने के लिए हम परिश्रम कर रहे हैं तथा जिससे लोकतंत्र को नष्ट करने का षड्यंत्र करने वाले तत्वों का दृढ़तापूर्वक मुकाबला किया जा सकेगा।

इस अवसर पर राष्ट्रपति ने अन्तरसंसदीय परिषद के अध्यक्ष के अनुरोध पर स्व. गुरदयाल सिंह ढिल्लों को मरणोपरान्त अन्तर संसदीय संघ पुरस्कार प्रदान किया, जो श्रीमती रनबीर कौर ढिल्लों ने लिया। डॉ. शर्मा ने 'लोकतंत्र की विजय' नामक पुस्तक और संसदीय पत्रिका के विशेषांक का विमोचन भी किया।

उनसे पहले सांसदों को सम्बोधित करते हुए उप राष्ट्रपति के.आर. नारायणन ने कहा कि आर्थिक विकास से ही लोकतंत्र सफल हो सकता है। उनका कहना था कि आज की सबसे बड़ी जरूरत यह है कि आजादी और सामाजिक न्याय कदम से कदम मिलाकर चलें।

उनका मानना था कि हथियारों के लेन-देन को पारदर्शी बनाने के लिए एक रजिस्टर बन जाने से हथियारों के प्रसार पर अंकुश लगाने में सफलता मिल सकेगी।

श्री नारायणन ने कहा कि नशीले पदार्थों के प्रचलन की समस्या का जल्द से जल्द कारगर समाधान खोजने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि इसके लिए हमें अपने युवकों के नजरिये में बदलाव लाना पड़ेगा।

प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव का कहना था कि जहां मानव जाति ने काफी प्रगति की है, वहीं अनेक विध्वंस एवं विनाशकारी समस्याएं भी समूचे विश्व के सामने आ खड़ी हुई हैं। यही नहीं, अगर ये समस्याएं इसी रफ्तार से बढ़ती रहीं, तो मानव जाति का विनाश होने में कोई बहुत देर नहीं लगेगी।

श्री राव ने कहा कि अन्तरसंसदीय संघ के सदस्य 116 देशों में लोकतांत्रिक प्रणाली तो है ही, उनकी समस्याएं भी कमोबेश एक जैसी ही हैं तथा उनके समाधान में हमारे सामूहिक प्रयास एक निर्णायक भूमिका अदा कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य विश्व में स्थायी शांति स्थापित करना होना चाहिए।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज की दुनिया में सह-अस्तित्व और शांति की भावना के बिना जीवन की कल्पना कर पाना भी असम्भव है। इसलिए आज लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करना और स्थायी शान्ति की स्थापना भी बेहद जरूरी है तथा हम आपसी सहयोग से न केवल यह लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि विभिन्न राजनैतिक और आर्थिक चुनौतियों का भी प्रभावी ढंग से सामना कर सकते हैं।

उनसे पहले प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए लोकसभा और अन्तरसंसदीय संघ के भारतीय ग्रुप के अध्यक्ष शिवराज वी. पाटिल ने आतंकवाद को 'आधुनिक समाज के लिए अभिशाप' की संज्ञा दी।

उन्होंने कहा कि हम सभी के सामने एक जैसी गम्भीर अनेक, सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याएं तो हैं ही, विश्व के अनेक भागों में संघर्ष और विवाद भी जारी हैं तथा हमें पर्यावरण, प्रदूषण और नशीले पदार्थों के अवैध व्यापार जैसी समस्याओं से भी जूझना पड़ रहा है।

श्री पाटिल के शब्दों में : इस सबके बावजूद आदर्शों के प्रति यदि हमारी सच्ची निष्ठा हो और हम पूरी समर्पण भावना के साथ दृढ़ प्रतिज्ञता के साथ मिलकर नीतियां बनायें तथा उन्हें क्रियान्वित करें, तो ऐसी कोई बाधा हो ही नहीं सकती है, जिस पर विजय प्राप्त न की जा सके।

उन्होंने न्यायसंगत नयी विश्व व्यवस्था की स्थापना के लिए राष्ट्रों के बीच टकराव की बजाय आपसी सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया।

अंतर संसदीय संघ के अध्यक्ष सर माइकल मार्शल ने आशा व्यक्त की कि इस सम्मेलन से एक नये युग की शुरुआत होगी।

संयुक्त राष्ट्र के अवर महासचिव जोसेफ वर्नर रीड ने बदलते हुए विश्व में भारत को एक महत्वपूर्ण ताकत बताया तथा सम्मेलन के नाम संयुक्त राष्ट्र के महासचिव बुतरस घाली का संदेश पढ़कर सुनाया।

अब इस समाचार में छह तत्वों की खोज की जाए।

1) क्या — आतंकवाद पर बोलते राष्ट्रपति।
2) कहां — नयी दिल्ली।
3) कब — 12 अप्रैल, 89वां अंतर संसदीय सम्मेलन, स्थान-संसद का केंद्रीय कक्ष।
4) कौन — सभी देशों से आये सांसदों को संबोधित करते राष्ट्रपति । अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद से पूरी मानवती और खासकर लोकतंत्र प्रभावित।
5) क्यों — दुनिया में सह-अस्तित्व और शांति स्थापित करने के लिए सम्मेलन का आयोजन नयी विश्वव्यवस्था का निर्माण।
6) कैसे — समाचार का पूरा विवरण।

25.2.3 समाचार बनने की प्रक्रिया

अब तो आप समझ गए होंगे कि समाचार क्या है? इसके तत्व (छह ककारों) के बारे में भी आप जान गये। क्या आपको मालूम है कि किसी एक स्थान पर घटी घटना आप तक समाचार के रूप में कैसे पहुंचती है? आइए, थोड़ी जानकारी इसकी भी ले ली जाए।

समाचार पत्र रेडियो या टेलीविजन में प्रकाशित, प्रसारित समाचार के दो स्रोत होते हैं — i) संवाददाता ii) समाचार एजेंसियां।

समाचारों का संग्रहण एक जटिल और श्रमसाध्य कार्य है। इसके लिए संवाददाताओं को निरंतर चौकस रहना पड़ता है। समाचारों के लिए उसे विभिन्न स्रोतों जैसे राजनीतिक दल के कार्यालयों, फायर ब्रिगेड, रेलवेस्टेशन, सूचना विभाग, वाणिज्य संगठनों, विभिन्न विभागों के जनसंपर्क अधिकारियों, पुलिस कंट्रोल रूम आदि से संपर्क बनाकर रखना पड़ता है।

समाचार एजेंसियां टेलीप्रिंटर के माध्यम से समाचार प्रेषित करती रहती है। प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया, युनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया, भाषा, यूनीवार्ता आदि प्रमुख न्यूज एजेंसियां हैं। इनसे प्राप्त समाचार का संचार माध्यम (समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविजन) के अनुरूप लेखन किया जाता है।

25.2.4 विभिन्न संचार माध्यम

इससे पहले इकाई 24 में आप विभिन्न संचार माध्यमों की जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। यहां हम एक खास प्रयोजन से इसका उल्लेख कर रहे हैं। समाचार समाचारपत्र में भी प्रकाशित होता है, रेडियो और दूरदर्शन पर भी प्रसारित होता है। पर इन तीनों संचार माध्यमों में समाचार प्रस्तुति का ढंग बदल जाता है। इसका मुख्य कारण इस संचार माध्यम की अपनी विशेषताएं हैं। मसलन समाचारपत्र पढ़ा जाता है, रेडियो सुना जाता है और टेलीविजन सुनने के साथ देखा भी जाता है। इसलिए इन तीनों माध्यमों में प्रसारित समाचार की भाषा और प्रस्तुति में अंतर आ जाता है।

इन अंतरों का उल्लेख हम इकाई के अंतिम भाग में करने जा रहे हैं। इसके पहले हम उन मुद्दों पर विचार-विमर्श करेंगे जो इन तीनों संचार माध्यमों में कामोवेश एक से हैं।

तो आइए, पहले हम यह जानकारी ले लें कि समाचार कितने प्रकार के होते हैं? पर इसके पहले आप अपने को जांचें कि आपने क्या सीखा?

बोध प्रश्न

1) समाचार का अर्थ क्या है? (तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

2) निम्नलिखित में से कौन समाचार का तत्व नहीं है। (सही उत्तर के सामने √ का चिह्न लगाइए)

क) कौन
ख) यहां
ग) कहां
घ) क्या

3) कोई घटना समाचार कैसे बनती है। (पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

25.3 समाचार के प्रकार

कई प्रकार की घटनाएं इस संसार में रोज घटती हैं। उनमें से कुछ घटनाएं समाचार बनती हैं और इस प्रकार कई तरह के समाचार हम रोज पढ़ते और सुनते हैं। कई बार इन समाचारों की प्रस्तुति के ढंग में भी अंतर होता है। एक संवाददाता और समाचार लेखक के लिए इस प्रकार के समाचारों के बारे में जानना लाभदायक होता है।

25.3.1 गंभीर समाचार और सामान्य रुचि के समाचार

यह विभाजन एक व्यापक विभाजन है और इसके अंतर्गत तमाम प्रकार के समाचार समाहित किए जा सकते हैं। देश-विदेश की राजनीतिक खबरें, देश की राजनीतिक-आर्थिक स्थिति से जुड़ा समाचार, संवैधानिक संकट के समाचार, संसद और विधान-मंडल के समाचार आदि को गंभीर समाचार के अंतर्गत विभाजित किया जा सकता है। इस अंश को आमतौर पर एक खास तबका पढ़ता है।

पर सामान्य रुचि या लोकरुचि के समाचार को आम जनता बड़े चाव से पढ़ती है, मसलन दुर्घटना, अपराध, पानी, बिजली का संकट, बसों का अभाव, दूध की कालाबाजारी या फिर ऐसी दीवानगी...

सामान्य रुचि के समाचार

गंभीर समाचार

बैंकाक, 8 अप्रैल (वार्ता, भाषा)। प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव ने आज थाइलैंड के व्यवसायियों से अपील की कि वे भारत की उदार आर्थिक नीतियों का लाभ उठाकर इस देश के साथ व्यापार और पूंजी निवेश को बढ़ाना दें।

उन्होंने थाइलैंड के व्यवसायियों के साथ बैठक में कहा कि भारत में पूंजी निवेश और व्यापार को बढ़ावा देने में उन्हें हर प्रकार की सहायता दी जायेगी। उन्होंने कहा कि भारत तथा थाइलैंड के व्यवसायियों को एक साथ बैठकर यह निश्चय करना चाहिये कि वे उदार आर्थिक नीतियों का लाभ किस प्रकार उठा सकते हैं। उन्होंने कहा कि व्यवसायियों को उन क्षेत्रों को चुनना चाहिये, जिनमें दोनों देशों के बीच सहयोग हो सकता है।

श्री राव ने कहा कि मत्स्य पालन, कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, विज्ञान तथा टेकालाजी ऐसे क्षेत्र हैं, जिनका निर्धारण दोनों देशों के बीच सहयोग के लिए किया गया है।

ऐसी दीवागनी...

भोपाल, 12 अप्रैल (भाषा)। दिव्या भारती की दीवानगी और उसकी दर्दनाक मौत के गम से बेजार एक फिल्मी चहेते ने कल यहां जहर खाकर खुदकुशी कर ली।

सिवनी जिले के 24 वर्षीय घनश्याम की जिंदगी भी गम से लबरेज थी। उसकी दिवानगी का आलम, दिव्या की हाल की कामयाब फिल्म 'दीवाना' के इस शीर्षक गीत की तर्जुमानी था 'ऐसी दीवानगी देखी नहीं कभी, मैंने इसलिए जाने जाना, दीवाना', तेरा नाम रख दिया।'

घनश्याम कुछ अर्सा पहले नौकरी की तलाश में भोपाल आया था। नौकरी मिली नहीं और मेहनत-मजदूरी करके दो जून की रोटी नसीब हो रही थी। मुफलिसी और गुर्बत के इस दौर में वह दिव्या भारती की नायाब और दिलकश अदाकारी का आशिक हो गया। उसकी दीवानगी जनून की हदों को भी लाँघ गयी। एक दिन उसने अपन हाथ-पांव पर दिव्या भारती का नाम खुदवा लिया।

दिव्या भारती की पिछले दिनों दर्दनाक मौत की खबर से उसे बेहद सदमा पहुंचा और उसने जहर खा कर खुदकुशी कर ली।

थाई निवेशकों को प्रधानमंत्री राव ने निमंत्रण दिया है, इसमें देश की गिनी-चुनी जनता की तो दिलचस्पी हो सकती है, आम जनता की नहीं आम जनता तो या तो अपने भूख से परेशान या फिर "ऐसी दीवानगी" — जैसे मसालेदार खबरों में रुचि रखती है। ऐसे समाचारों में भाषा को चाट को तरह चटपटा रखा जाता है, शीर्षक भी खींचता है। गंभीर समाचारों का शीर्षक सीधा होता है।

गंभीर समाचार में रोचकता होती है, पर चटपटापन नहीं होता है। फिल्मों से संबंधित समाचार में यह चटपटापन मौजूद रहता है। अब जैसे आज ही मैं अखबार पढ़ने बैठा एक शीर्षक मिला "रेखा की डुप्लिकेट भी हाजिर"। ऐसे शीर्षक लोकरुचि या सामान्य रुचि के समाचारों के लिए उपयोगी सिद्ध होते हैं।

25.3.2 तथ्यात्मक समाचार और विश्लेषणात्मक समाचार

तथ्यात्मक समाचार में किसी घटना या प्रसंग की सूचना भरी होती है। उसमें इस घटना या प्रसंग का विश्लेषण नहीं प्रस्तुत किया जाता है। अभी आपने "कई निवेशकों को राव का निमंत्रण" समाचार पढ़ा। आपको क्या महसूस हुआ? यही न कि इसमें प्रधानमंत्री की याद का विवरण विस्तार से दिया गया है, पर उसका विश्लेषण नहीं किया गया है। मसलन इस निवेश से भारत को क्या लाभ होगा इस यात्रा से भारत को क्या लाभ होगा, इस यात्रा से भारत को क्या राजनयिक लाभ मिल सकेगा आदि-आदि। इस प्रकार के अन्वेषण या विश्लेषण करने से समाचार को व्यापकता मिलती है और

जनता के सामने सच्चाई का दूसरा पहलू भी सामने आ जाता है। भारत-पाक-बांग्लादेश पर एक रिपोर्ट पढ़िए और देखिए कि किस प्रकार इसमें तत्वों का विश्लेषण किया गया है :

नयी दिल्ली, 12 अप्रैल (प्रेटू)। भारत चाहता है कि पाकिस्तान अपने रवैये में परिवर्तन लाये ताकि दोनों देशों के बीच बढ़ रहे तनाव में कुछ कमी आ सके। साथ ही भारत ने खेद प्रकट किया है कि विध्वंस और आतंकवाद की गतिविधियों को पाकिस्तान के समर्थन ने नये आयाम ले लिये हैं।

विदेश मंत्रालय ने वर्ष 1992-93 के लिए अपनी वार्षिक रिपोर्ट में कहा है कि भारत की कोशिश हमेशा यही रही है कि संबंध इस हद तक न बिगड़ने पायें कि लड़ाई की नौबत आ जाये।

रिपोर्ट में कहा गया है कि अयोध्या में विवादित ढांचा गिराये जाने के बाद से पाकिस्तान और बांग्लादेश के साथ रिश्ते बिगड़े हैं।

उल्लेखनीय है कि 6 दिसम्बर को अयोध्या में विवादित ढांचा गिराये जाने की इन दोनों देशों में सबसे व्यापक प्रतिक्रिया हुई थी। वहां कई धर्मस्थलों को नुकसान पहुंचाया गया था। साथ ही दोनों सरकारों ने भारत सरकार पर आरोप भी लगाये थे कि वह अल्पसंख्यक समुदाय के धर्म स्थल की रक्षा नहीं कर सकी।

लेकिन चीन के साथ भारत के संबंधों में लगातार सुधार हो रहा है। दोनों देशों के बीच उच्च स्तरीय यात्राओं और वार्ताओं का सिलसिला चल रहा है।

रिपोर्ट के अनुसार, आज दुनिया बहुध्रुवीय है। आर्थिक मोर्चे पर चीन बड़ी तेजी से उभर रहा है। जापान और जर्मनी तकनीक के क्षेत्र में अग्रणी हैं और यूरोप एकीकृत होकर एक राजनैतिक ताकत के रूप में जगह बना रहा है। इसके अलावा क्षेत्रीय सहयोग की मिसालें बढ़ रही हैं। भारत की विदेश नीति का लक्ष्य इन विभिन्न ध्रुवों के साथ प्रभावी संबंध स्थापित करना है।

25.3.3 विभिन्न क्षेत्रों के समाचार

समाचारपत्र में सभी प्रकार की घटनाओं की खबर होती है। चाहे वह प्रधानमंत्री की थाई यात्रा हो, या रेखा की डुप्लिकेट का समाचार हो या फिर किसी दुर्घटना, अपराध का समाचार। इसके अतिरिक्त वाणिज्य और खेल समाचार को खासी अहमियत दी जाती है। इन समाचारों के संवाददाता और लेखक अलग-अलग होते हैं और इन्हें अपने-अपने क्षेत्रों में विशेषज्ञता हासिल होती है। हिंदी समाचारपत्रों में काम कर रहे संवाददाताओं को भाषा के स्तर पर काफी जूझना पड़ता है। उन्हें अंग्रेजी समाचार का अनुवाद करना पड़ता है। अनूदित भाषा को स्वाभाविक बनाने के लिए उन्हें नये-नये शब्द भी गढ़ने पड़ते हैं। वाणिज्य और अर्थशास्त्र के लेखन (खास पत्रकारिता के संदर्भ में) आज भी चुनौती बनी हुई है। पर पत्रकार इस चुनौती का सामना कर रहे हैं और रोज नये शब्द बना रहे हैं।

वाणिज्य समाचार

बम्बई, 10 मार्च (एजेंसी)। दलाल स्ट्रीट में आज भी बिकवाली का माहौल रहने से शेयरों का गिरना जारी रहा। कुछ विशिष्ट सूचियों में निम्न स्तर पर अवश्य लिवाली का हल्का झटका आया परंतु वित्तीय संस्थानों के नदारद रहने से बाजार की अंतर्धारणा नहीं बदली जा की और शेयर सूचकांक लगभग 49 अंक गिर कर 2287.16 अंकों पर बंद हुआ। दिल्ली शेयर बाजार में आज एक ब्रोकर की मृत्यु हो जाने की वजह से कारोबार बंद रहा। शेयर बाजार के संस्थापक सदस्य श्री बेरीवाला का देहावसान शेयर बाजार के लिए भारी क्षति बतायी गयी।

दिल्ली 10 मार्च (एन.एन.एम.)। देशी चांदी की जोरदार आवक होने से भाव 70 ये और टूट गये। स्वर्ण बिस्कुट भी 15 रुपये गया।

सामान्य सूचना

14 अप्रैल को अवकाश

नयी दिल्ली, (भाषा)। सरकार ने बाबा साहेब डा. भीमराव आम्बेडकर के जन्म दिवस 14 अप्रैल को अवकाश की घोषणा की है। आज यहां जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में यह जानकारी दी गयी।

खेल समाचार

पाक व इंडीज अध्यक्ष टीम का मैच अनिर्णीत

जार्जटाउन, गुयाना, 8 अप्रैल (रायटर)। वेस्टइंडीज अध्यक्ष एकादश और पाकिस्तान के बीच कल तीन दिवसीय क्रिकेट मैच अनिर्णीत समाप्त हो गया।

अध्यक्ष एकादश की ओर से तीन शतक लगाये गये। रोनाल्ड होल्डर, एस. चंद्रपाल और विकेट कीपर रेठली जैकब ने शतकीय पारी खेलकर पाकिस्तान के गेंदबाजों की खासी धुनाई की।

कल के अविजित बल्लेबाज रोनाल्ड होल्डर सिर्फ चार रन और जोड़कर 144 रन बनाकर आउट हुए। चंद्रपाल ने नाबाद 140 और जैकब ने नाबाद 100 रन बनाये। इन दोनों खिलाड़ियों की छठे विकेट की अविजित 224 रन की साझेदारी की मदद से अध्यक्ष एकादश ने पांच विकेट पर 508 रन बनाकर पारी समाप्त घोषित कर दी। इससे पहले पाकिस्तान ने पहली पारी आठ विकेट पर 255 रन बनाकर घोषित की थी।

पाकिस्तान ने दूसरी पारी में एक विकेट पर 147 रन बनाये। आसिफ मुज्तबा ने नाबाद 67 रन और युवा प्रारंभिक बल्लेबाज शकील अहमद ने नाबाद 52 रन बनाये।

पहला अधिकृत मैच खेल रहे वेस्टइंडीज के तेज गेंदबाज कॉथ बैंजामिन ने जाहिद फजल (13) को कुमिंस के हाथों कैच करा दिया।

इस मैच में पाकिस्तान टीम में पीठ में फ्रैक्चर के कारण तेज गेंदबाज आकिब जावेद नहीं खेले और प्रमुख गेंदबाज वासिम अकरम और वकार युनुस भी इस मैच से बाहर रहे।

पाकिस्तान और 23 वर्ष से कम आयु की टीम के बीच तीन दिवसीय क्रिकेट मैच शनिवार को शुरू होगा।

पाकिस्तान पहली पारी : आठ विकेट पर 255 रन पारी घोषित।

अध्यक्ष एकादश; पहली पारी : डी. जोसम, बो. आकिब-4, एस. विलियम्स को. रहमान बो. नदीम-11, आर. होल्डर का. मुज्तबा बो रहमान-144, के. आर्थरटन पगबाधा बो रहमान-74, जे. एडमस-को. मोईन बो नदीम-13, एस. चन्द्रपाल अविजित-140, आर. जैकब अविजित-100, अतिरिक्त-22, कुल पांच विकेट पर 508 रन पारी घोषित।

विकेट पतन : 1-11, 2-23, 3-186, 4-227, 5-284।

गेंदबाजी : आकिब जावेद 3-1-0-12-1, अमीर नजीर 16-4-73-0, नदीम खां 37-8-128-2, आसिफ मुज्तबा 32-6-90-0, अताउ रहमान 20-0-106-2, बासित अली 1-0-5-0, जाहिद फजल 9-1-35-0।

पाकिस्तान दूसरी पारी : शकील अहमद अविजित-52, जाहिद फजल का कुमिंस बो बैंजामिन-13, आसिफ मुज्तबा अविजित-67, अतिरिक्त-15, कुल एक विकेट पर 147।

विकेट पतन : 1-35

गेंदबाजी :

कुमिंस 7-1-26-0, बैंजामिन 5-0-22-1, गिब्सन 5-0-19-0, ब्राउन 2-1-2-0, चंद्रपाल 7-0-31-0, एडम्स 6-1-35-0, आर्थरटन 1-0-1-0, जोसफ 1-0-3-0।

दुर्घटना का समाचार

तुर्कमान गेट के पास दुर्घटना में चार की मौत

नभाटा समाचार

नयी दिल्ली, 12 अप्रैल। पुरानी दिल्ली के व्यस्त तुर्कमान गेट इलाके में आज एक सड़क दुर्घटना में चार व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी और पांच घायल हो गये। दुर्घटना के बाद उत्तेजित भीड़ ने तोड़-फोड़ की तथा तुर्कमान गेट पुलिस चौकी पर हमला कर दिया। भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुलिस ने हवाई फायर किया तथा आंसू गैस के गोले छोड़े। लोगों को खदेड़ने के लिए पुलिस को लाठीचार्ज भी करना पड़ा। पुलिस ने ट्रक ड्राइवर मोहम्मद कयूम को लापरवाही से गाड़ी चलाने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया है। दंगा करने के आरोप में कुछ अन्य लोगों को भी हिरासत में लिया गया है।

दुर्घटना आज दोपहर में हुई। अजमेरी गेट की ओर से आ रहे ट्रक ने आसफ अली रोड पर तुर्कमान गेट चौराहे के पास पहले एक रिक्शा को टक्कर मारी फिर फुटपाथ पर चल रहे कुछ लोगों को कुचल दिया। तीन व्यक्तियों की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गयी जबकि चौथे ने अस्पताल में दम तोड़ दिया। मृतकों के नाम हैं : 15 वर्षीय बच्ची बशरा, राकेश कुमार (30), तथा जितेन्द्र (26 साल)। दुर्घटना में मृतक एक बच्ची की अभी पहचान नहीं हो पायी है। बाद में, दुर्घटना के सदमे में 55 वर्षीय जहीरुन्निसा की मृत्यु हो गयी। दुर्घटना में घायल होने वालों के नाम हैं : हरस्वरूप, आबिदा (7 साल), निजाम (9 साल), समरीन (15 साल) और रिक्शा चालक रामचंद्र। सबको लोक नायक जयप्रकाश नारायण अस्पताल में दाखिल कराया गया है। घटनास्थल पर इस दर्दनाक दृश्य को देखकर 55 वर्षीय जहीरुन्निसा बेहोश हो गयी। उसे अस्पताल ले जाया गया जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। वह लखनऊ की रहने वाली थी तथा अपने रिश्तेदारों से मिलने दिल्ली आयी थीं।

दुर्घटना के तुरंत बाद काफी लोग घटनास्थल पर एकत्र हो गये। सड़क पर मृतकों के शव एवं घायलों के काफी देर तक पड़े रहने से वे उत्तेजित हो गये तथा पुलिस के विरुद्ध नारे लगाने लगे। भीड़ ने तुर्कमान गेट पुलिस चौकी पर हमला कर दिया और चौकी की पिछली दीवार को तोड़ने की कोशिश करने लगे। उनका कहना था कि यह दीवार ही दुर्घटना का कारण है। चौकी की दीवार की रक्षा करने आये पुलिसकर्मियों पर लोगों ने पथराव किया। स्थानीय लोगों का कहना है कि इस दीवार की वजह से कई दुर्घटनाएं हो चुकी हैं।

कुछ ही देर में इलाके के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी भी घटनास्थल पर पहुंच गये। अधिकारियों ने आते ही हवाई फायर का आदेश दे दिया। लेकिन भीड़ इससे भी नियंत्रित नहीं हुई तो पुलिस ने लाठीचार्ज किया तथा अश्रु गैस के गोले छोड़े। भीड़ को काबू में करने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल बुलाने पड़े। पुलिस ने हवा में चार चक्र गोलियां चलायीं।

आप इन सभी समाचारों को ध्यान से पढ़िए। आप पाइएगा कि इन समाचारों की भाषा के स्वरूप और शब्दावली में अंतर है।

बोध प्रश्न

4) गंभीर समाचार और सामान्य रुचि के समाचारों की भाषा में क्या अंतर है? (तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

....

....

....

5) तथ्यात्मक और विश्लेषणात्मक समाचारों में क्या अंतर है? (सही उत्तर के सामने ✓ का चिह्न लगाइए)

क) तथ्यात्मक समाचार में सूचना होती है विश्लेषणात्मक समाचार में नहीं। [ ]

ख) तथ्यात्मक समाचार स्थूल होते हैं विश्लेषणात्मक समाचार सूक्ष्म। [ ]

ग) तथ्यात्मक समाचार में तथ्यों का विश्लेषण होता है, विश्लेषणात्मक समाचारों में नहीं। [ ]

घ) तथ्यात्मक समाचार में तथ्य की प्रस्तुति पर बल होता है, विश्लेषणात्मक समाचार में विश्लेषण पर। [ ]

25.4 अच्छे संवाददाता/समाचार लेखक के गुण

समाचारपत्र में कार्य कर रहे संवाददाताओं को दुहरी भूमिका निभानी पड़ती है। उसे अपने स्तर पर समाचार भी इकट्ठा करना होता है और उसे लिखना भी पड़ता है। समाचारों के संकलन, व्याख्या और प्रस्तुतीकरण के लिए संवाददाता में गुप्तचर, मनोवैज्ञानिक और वकील के साथ-साथ एक अच्छे लेखक के गुण भी होने चाहिए। प्रत्येक संवाददाता को अपने समाचार का क्षेत्र निर्धारित कर लेना चाहिए, मसलन खेल समाचार, वाणिज्य समाचार, राष्ट्रीय समाचार, अंतर्राष्ट्रीय समाचार, अपराध आदि। विशेषज्ञता हासिल होने पर ही वह समाचार को सही ढंग से पेश कर सकेगा।

25.4.1 सक्रियता

एक आदर्श संवाददाता को हमेशा और हर स्तर पर सक्रिय रहने की जरूरत है। यह सक्रियता के संग्रहण और लेखन दोनों में दृष्टिगोचर होनी चाहिए। संवाददाता की इसी सक्रियता से समाचार में नयापन और ताजगी आती है। कुशल संवाददाता अपने परिश्रम और निजी सूत्रों से सूचनाएं प्राप्त करते हैं और उन्हें समाचार के रूप में परिवर्तित करते हैं। वही पत्र सम्मानित होता है जिसके संवाददाता जासूसों की तरह सक्रिय रहते हैं और अपने संपर्क सूत्रों को जिंदा रखते हैं। संवाददाता को अपने संपर्क सूत्र को बहुत तंग नहीं करना चाहिए। उसका इस्तेमाल बहुत समझ-बूझ और आत्मीयता के साथ करना चाहिए। संपर्क सूत्र जोड़े रखने के लिए आप फोन का भी उपयोग कर सकते हैं। समाचार के संग्रहण के लिए आप डायरी का इस्तेमाल कर सकते हैं। साथ ही साथ अपने संपर्क सूत्रों की एक सूची भी अपने पास रखें ताकि जरूरत पड़ने पर आप तुरंत उससे संपर्क कर सकें।

25.4.2 विश्वासपात्रता

आपके संपर्क सूत्र की जीवंतता विश्वासपात्रता पर काफी कुछ निर्भर करती है। विश्वासपात्रता संवाददाता की ऐसी संपत्ति है जिसे प्रयत्नपूर्वक संचित किया जाना चाहिए। संपर्क सूत्र हमेशा इस बात का ध्यान रखता है कि अमुक संवाददाता उसके विश्वास को कायम रखता है या नहीं। यदि सूत्र का संकेत देने से उस व्यक्ति का नुकसान होता हो तो अच्छा संवाददाता उसका कभी भी उल्लेख नहीं करेगा।

25.4.3 वस्तुनिष्ठता

वस्तुनिष्ठता संवाददाता का गुण है। संवाददाता का यह कर्तव्य है कि समाचार को वह इस रूप में रखे कि पाठक उसे समझते हुए उससे अपना लगाव महसूस करे। रिपोर्टिंग या समाचार लेखन संपादकीय लेखन नहीं है। अतः लेखक को यहां अपनी राय प्रकट करने की छूट नहीं मिल पाती है।

वस्तुनिष्ठता में उत्तरदायित्व की भावना भी निहित होती है। पत्रकार के उत्तरदायित्व की परख तब होती है जब उसके हाथ कोई विस्फोटक समाचार आता है। आज के संदर्भ में दंगे को ही लें। किसी स्थान पर दो समुदायों के बीच दंगा हो जाता है और पत्रकार सब कुछ खुलासा करके नमक-मिर्च लगाकर समाचार बनाता है। इस समाचार का परिणाम विध्वंसात्मक ही होगा। कुशल संवाददाता ऐसी स्थितियों में विवेक का सहारा लेते हैं और समाचार इस रूप में पेश करते हैं कि उससे दंगाइयों को बल न मिले। इस प्रकार के समाचार लेखन में वस्तुनिष्ठता और भी अनिवार्य हो जाती है।

25.4.4 विश्लेषणात्मक क्षमता

पत्रकार को खबर देने में वस्तुनिष्ठ होना चाहिए। पर कोरे तथ्य के प्रस्तुतीकरण से आज का पाठक संतुष्ट नहीं रह सकता। अतः समाचार का विश्लेषण समाचार में गुंथा रहता है। पर वह दूध में नहीं में पानी की तरह घुला होता है। व्याख्या में एक संतुलन एक वस्तुनिष्ठता होती है।

पत्रकार की विश्लेषण क्षमता का उपयोग दो स्तरों पर होता है — 1) समाचार संग्रहण के स्तर पर ओर 2) लेखन के स्तर पर। समाचार संग्रहण में पत्रकार की विश्लेषण क्षमता का उपयोग सूचनाओं और घटनाओं को एकत्र करने के समय होता है। इसके अतिरिक्त प्रेस कांफ्रेंस, साक्षात्कार आदि के समय भी उसकी विश्लेषण क्षमता की परीक्षा होती है। दूसरा स्तर लेखन के समय प्रकट होता है। जो पत्रकार समाचार को समझने और प्रस्तुत करने में जितना ज्यादा अपनी विश्लेषण क्षमता का उपयोग कर सकेगा, उसका समाचार उतना ही ज्यादा दमदार होगा इसे "व्याख्यात्मक रिपोर्टिंग भी कहा जाता है।

उदाहरण के लिए, सीधी खबर यह है कि भारत सरकार ने आस्ट्रेलिया से गेहूं आयात करने का निर्णय लिया है। योजना लागू करने की तिथि की घोषणा अभी नहीं की गयी है। किंतु संवाददाता अपने स्रोतों से पता करता है कि यह आयात विदेशी दबाव के तहत किया जा रहा है और इससे भारत की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। समाचार का यह रूप व्याख्यात्मक रिपोर्टिंग का रूप होगा।

विदेशी दबाव में गेहूं का आयात

"भारत सरकार ने खाद्यान्न की कमी की पूर्ति के लिए आस्ट्रेलिया से गेहूं के आयात का निर्णय लिया है। इससे भुगतान से तुलन पर अतिरिक्त दबाव पड़ेगा। सूत्रों के अनुसार यह आयात विदेशी दबाव में आकर किया जा रहा है।"

25.4.5 भाषा पर अधिकार

समाचार लेखक का भाषा पर सहज अधिकार होना चाहिए। भाषा पर अधिकार होने के साथ-साथ उसे यह भी जानना चाहिए कि उसके पाठक वर्ग किस प्रकार के हैं। समाचारपत्र में समाचार के विभिन्न प्रकारों में भाषा के अलग-अलग स्तर दिखाई पड़ते हैं। अपराध समाचार की भाषा का स्वरूप वही नहीं होता है जो खेल समाचार की भाषा का होता है। इसी प्रकार अन्य प्रकार के समाचारों से वाणिज्य संबंधी समाचारों की भाषा का स्वरूप अलग ढंग का होता है। पर एक बात उनमें समान होती है। वह यह कि सभी प्रकार के समाचारों में सीधी, सरल और बोधगम्य भाषा का प्रयोग किया जाता है। आपने इस इकाई के भाग 25.3 में समाचारों के प्रकारों की झलक देखी है। आप उसे एक बार फिर पढ़ें। आप महसूस करेंगे कि "ऐसी दिवानगी" और "थाई निवेशकों को राव का निमंत्रण", "पाक व बांग्लादेश के रिश्ते बिगड़े", "तुर्कमान गेट के पास दुर्घटना में चार की मौत", "पाक व इंडीज अध्यक्ष टीम का मैच अनिर्णीत" तथा वाणिज्य समाचारों की भाषा और उनकी शब्दावली में विषय के अनुरूप परिवर्तन होता गया है।

संवाददाता और समाचार लेखन को अपनी विशेषज्ञता का क्षेत्र निर्धारित कर लेना चाहिए। इससे उस विषय विशेष से संबद्ध शब्दावली से यह परिचित हो जाता है और जरूरत पड़ने पर नये शब्दों का निर्माण करता चलता है।

बोध प्रश्न

6) अच्छे संवाददाता के प्रमुख लक्षण क्या हैं? (सही लक्षण के सामने ✓ और गलत लक्षण के सामने × का निशान लगाइए)

क) उसे केवल कार्यालय में बैठकर काम करना चाहिए। [ ]

ख) उसे सक्रिय रहना चाहिए। [ ]

ग) उसे अच्छा लेखक होना चाहिए। [ ]

घ) उसमें एक गुप्तचर, मनोवैज्ञानिक और वकील का गुण होना चाहिए। [ ]

ङ) एक संवाददाता को हरेक क्षेत्र का समाचार लिखना चाहिए। [ ]

च) संवाददाता अपने निजी सूत्रों से भी समाचार इकट्ठा करता है। [ ]

छ) संवाददाता को बिना अनुमति के संपर्क सूत्र का नाम छाप देना चाहिए। [ ]

ज) समाचार में संवाददाता को अपनी राय प्रकट करने की छूट है। [ ]

झ) संवाददाता समाचार का विश्लेषण कर सकता है। [ ]

25.5 समाचार लेखन के सिद्धांत

समाचार चाहे किसी प्रकार का हो उसका लेखन करते समय कुछ सिद्धांतों का पालन करने से लेखक को सुविधा रहती है। अमरीकी पत्रकार श्री जोसेफ पुलिजर ने समाचार लेखन के तीन सिद्धांत निर्धारित किए हैं :

(1) यर्थाथता (2) संक्षिप्तता (3) रोचकता। आइए इनकी अलग-अलग चर्चा की जाए।

25.5.1 यर्थाथता

समाचार में यथार्थता का विशेष महत्व है। यथार्थता का मतलब समाचार को बिना किसी भाग लपेट के प्रस्तुत कर देना है। तथ्यों, आंकड़ों, घटनाओं, के स्वरूप और क्रम, आदि को बिगाड़कर प्रस्तुत करना पत्रकारिता के सिद्धांत के खिलाफ है।

25.5.2 संक्षिप्तता

समाचार को संक्षिप्त होना चाहिए। समाचारपत्र, रेडियो और दूरदर्शन में रोज कई समाचार प्रकाशित और प्रसारित होते हैं। "समाचार" के महत्व और कोटि को ध्यान में रखते हुए कम से कम शब्दों में समाचार प्रस्तुत कर देने में ही कौशल है। यहीं पर भाषा पर लेखक की पकड़ की परीक्षा हो जाती है। समाचारपत्र में तो थोड़ी बहुत विस्तार की गुंजाइश होती भी है, पर रेडियो और दूरदर्शन में तो इसे कम से कम शब्दों में प्रस्तुत करना होता है। रेडियो और दूरदर्शन के समाचार लेखकों को तो संक्षेपण की कला में माहिर होना पड़ता है। अनावश्यक शब्दों, विशेषणों और क्रियाओं आदि का प्रयोग संचार माध्यम में वर्जित है। संक्षेप में काफी कुछ कह देना ही समाचार लेखन की विशेषता है।

25.5.3 रोचकता

समाचारपत्र में समाचार प्रस्तुत करते समय रोचकता का भी ख्याल रखा जाता है। शुष्क, नीरस और तिवृत्तात्मक विवरण समाचार को अप्रभावी बना देते हैं। समाचार लेखन में तथ्यों की सच्चाई का ध्यान रखते हुए भावों को उद्वेलित तथा स्पंदित करने की विशेषता होनी चाहिए। पर रोचकता अतिशयोक्ति का पर्याय नहीं हो सकती। समाचार को रोचक बनाते समय लोकहित का भी ख्याल रखना चाहिए। अगर रोचकता लोकहित में बाधक बनती हो तो वैसी रोचकता का त्याग करना चाहिए।

समाचार लेखन को रोचक बनाने का एक बढ़िया तरीका यह है कि किसी भी समाचार को एक कहानी के रूप में पेश किया जाए। समाचार का शीर्षक, आमुख आकर्षित करने वाला हो। यहां फिर से भाषा पर आपको पकड़ की परीक्षा होगी। समाचार शीर्षक आमुख और विवरण की भाषा कैसी हो? इसका जिक्र हम अगले भाग में करने जा रहे हैं।

बोध प्रश्न

7) समाचार लेखन में "यथार्थ" अंकन क्यों जरूरी है? (दो पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

8) समाचार लिखते समय कैसी भाषा की अपेक्षा की जाती है? (सही उत्तर के सामने ✓ का निशान लगाइए)

क) सारगर्भित और संक्षिप्त [ ]

ख) विशेषणों का प्रयोग [ ]

ग) अलंकारों का प्रयोग [ ]

घ) आडंबरपूर्ण भाषा [ ]

9) समाचार की रोचकता से आप क्या समझते हैं? (सात पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

25.6 समाचार का प्रस्तुतीकरण

अभी तक आपने समाचार के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त की। समाचार के अर्थ से लेकर समाचार लेखन के सिद्धांत से परिचित हुए। अब हम यह विचार करेंगे कि समाचार का प्रस्तुतीकरण कैसे किया जाता है। निश्चित रूप से हम यहां भाषा के स्वरूप पर विशेष बल देंगे।

25.6.1 समाचार शीर्षक लेखन

समाचार को आकर्षक बनाने में शीर्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। प्रसिद्ध पत्रकार रोलैण्ड ई. बुल्सली ने शीर्षक को "शो विणडो" माना है। उनके अनुसार समाचार पत्र के लिए शीर्षक पंक्तियां कांच लगी खिड़कियों का काम देती हैं। समाचार का विज्ञापन करना शीर्षक का उद्देश्य होता है। अतः शीर्षक स्पष्ट, अर्थपूर्ण और जीवंत होने चाहिए। शीर्षक तैयार करते समय निम्नलिखित बातों का ख्याल रखना चाहिए।

1) शीर्षक, संक्षिप्त और सारगर्भित हो।
2) क्रियापद का होना जरूरी नहीं है।
3) भाषा विषयानुकूल होनी चाहिए।

वाणिज्य, खेलकूद, शेयरबाजार की भाषा अलग होती है। अतः शीर्षक की भाषा भी बदल जाती है। अतः इनके शीर्षक देते समय ऐसी ही भाषिक प्रयुक्तियों का प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे सोना उछला, सटोरियों की बिकवाली से शेयरों में गिरावट तेलों में नरमी, चांदी टूटी आदि।

आइए, समाचारपत्र में छपे शीर्षकों के कुछ नमूने देखें।

उदाहरण

चांदी-सोना दोनों नरम

जिम कूरियर स्टार्क से हार कर बाहर

वाहन चोरों का सरगना गिरफ्तार

25.6.2 आमुख या इंट्रो

अब आप समझ गए होंगे कि समाचार का पहला आकर्षण उसका शीर्षक होता है। शीर्षक के बाद जो पहला अनुच्छेद होता है, उसे आमुख या इन्ट्रो (अंग्रेजी इन्ट्रोडक्शन का संक्षिप्त रूप) कहते हैं।

इंट्रो की भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए। इंट्रो लिखते समय खंड वाक्यों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। "द्वारा" शब्द के इस्तेमाल से बचना चाहिए। जैसे "कुलपति से छात्रसंघ द्वारा लगाये गए आरोपों का खंड किया है"। इसके स्थान पर यह लिखना बेहतर है — "कुलपति ने छात्रसंघ के आरोपों का खंडन किया है"। आसान वाक्य और चुटीली भाषा इंट्रो को निखारती है। कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक संदेश पहुंचाने में ही इंट्रो की सफलता निहित है। समाचार की पकड़ के साथ-साथ भाषा का संक्षेपण में भी एक समाचार लेखक को प्रवीण होना चाहिए। आइए, कुछ "आमुख" या "इन्ट्रो" को देखा जाए —

आमुख या इंट्रो

मास्को, 10 मार्च (एजेंसियां)। रूस में राष्ट्रपति बोरिस येल्त्सिन के खिलाफ महा अभियोग चलाने की कट्टरपंथी विपक्ष की कोशिश को आज करारा झटका लगा।

त्रिपुरा, 10 मार्च। त्रिपुरा में 12 दिन पुराने कार्यवाहक मंत्रिमंडल ने आज अचानक **इस्तीफा** देकर राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया है।

25.6.3 विवरण

समाचार उल्टा पिरामिड के समान होता है जिसका चौड़ा भाग ऊपर और पतला भाग नीचे होता है। कहने का अर्थ यह है कि समाचार लेखन में सबसे पहले महत्वपूर्ण तथ्यों को समेटा जाता है, फिर धीरे-धीरे कम महत्वपूर्ण तथ्य सामने आते हैं। समाचार लेखन एक कला है। यह पुस्तक-लेखन और निबंध लेखन से अलग है। समाचार लिखते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए।

1) सरलता 2) सुस्पष्टता 3) तारतम्य 4) छह ककोरों के उत्तर 5) आवश्यक पृष्ठभूमि
6) विषयानुकूल भाषा

समाचार लिखते समय भाषा और तथ्य की सरलता, और सुस्पष्टता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। समाचार ऐसे सरल तरीके से लिखना चाहिए कि आम आदमी भी उसे आसानी से समझ जाए। इसके लिए आपकी भाषा स्पष्ट होनी चाहिए, शैली में उलझाव नहीं होना चाहिए। समाचार को अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते समय भाषा की सरलता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। समाचार प्रस्तुति में एक सुस्पष्टता भी होनी चाहिए। अगर-मगर लगाकर वाक्य और बात को उलझाने की कोशिश नहीं की जानी चाहिए।

समाचार का बहाव नदी की धारा के समान होना चाहिए। समाचार की एक घटना को दूसरी घटना से जोड़ते हुए आगे बढ़ना चाहिए।

समाचार में अनुच्छेदों का आकार छोटा रखा जाना चाहिए। इससे पठनीयता बढ़ती है और समाचार रोचक और अच्छा लगता है।

एक ही प्रकार के शब्दों या वाक्य खंडों का बार-बार प्रयोग नहीं करना चाहिए। 'कहा', 'बताया, 'मत व्यक्त किया', 'उनका विचार था', 'वे महसूस करते थे' आदि शब्दों और खंड-वाक्यों का भाव के अनुरूप बदल-बदल कर प्रयोग करना चाहिए। इंट्रो का उदाहरण देते समय पिछले भाग में पूर्णतः समाचार उद्धृत किया गया है।

आप इंट्रो के बाद वाले अंश पढ़ें।

बोध प्रश्न

10) समाचार का शीर्षक तैयार करते वक्त किन-किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है? (पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)।

.....

.....

.....

.....

11) आमुख या इंट्रो तैयार करते वक्त कौन-कौन सी भाषागत सावधानिया अपेक्षित होती है? (पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)।

.....

.....

.....

.....

.....

25.7 रेडियो और टेलीविजन के लिए समाचार लेखन

आपने अभी तक समाचारपत्रों में समाचार लेखन की जानकारी प्राप्त की। समाचारपत्र के अतिरिक्त रेडियो और टेलीविजन में भी समाचारों का प्रसारण होता और इसके लिए भी अलग से समाचार लेखन करना पड़ता है। समाचारपत्र के लिए समाचार लिखते समय लिखित माध्यम की विशेषताओं को ध्यान में रखना पड़ता है, जबकि रेडियो और टेलीविजन में श्रव्य और श्रव्य-दृश्य माध्यमों की विशेषताओं को ध्यान में रखना पड़ता है।

समाचारपत्र किस समाचार को विस्तार से प्रकाशित कर सकता है उसे रेडियो या दूरदर्शन पर बहुत संक्षेप में प्रस्तुत करना पड़ता है। सार और संक्षेप इस प्रकार के लेखन का मूलमंत्र है। इस प्रकार के समाचारों में छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग किया जाता है ताकि श्रोता उसे आसानी से समझ सके। अखबारों में छपी खबरें यदि एक बार समझ में न आएं तो उन्हें बार-बार पढ़ा जा सकता है। लेकिन रेडियो और दूरदर्शन पर कही गयी बात यदि श्रोता तत्काल नहीं समझ पाता है तो वह शून्य में विलीन हो जाएगी।

इस प्रकार के प्रसारण में सरल शब्दों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। ऐसे शब्दों का प्रयोग कभी नहीं करना चाहिए जिसे सुनने में दिक्कत हो। कठिन शब्दों के प्रयोग से वाचक को भी समाचार पढ़ने में मुश्किल होती है। 'संपृक्तावस्था', 'संश्लेष्णात्मक' जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसे पढ़ने में वाचक की जबान के लड़खड़ाने की संभावना रहती है।

शब्द और वाक्य विन्यास के अलावा रेडियो और दूरदर्शन में व्याकरण का प्रयोग भी सरल होना चाहिए। इसमें दुरूह शैली का प्रयोग वर्जित है।

आप समाचारपत्र पढ़िए और उसी समाचार को रेडियो और टेलीविजन पर सुनिए। आपको यह अंतर स्पष्ट नजर आएगा।

बोध प्रश्न

12) समाचारपत्र, रेडियो और टेलीविजन के समाचार लेखन में अंतर क्यों आ जाता है? (पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

1) आप अपने इलाके में घटी किसी घटना को आधार बनाकर समाचार लिखिए।

क) शीर्षक :

.....

.....

ख) आमुख या इंट्रो :

.....
.....
.....
.....
.....

ग) विवरण :

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

2) प्रधानमंत्री किसी राजनयिक की विदेश यात्रा को आधार बनाकर समाचार बनाइए (एक पृष्ठ में उत्तर दीजिए)

संकेत: आप इस यात्रा का विवरण पत्र-पत्रिकाओं से इक्ट्ठा कर सकते हैं।

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

25.8 सारांश

इस इकाई में आपने समाचार लेखन के विभिन्न पक्षों का परिचय प्राप्त किया। समाचार-लेखन पर विचार करते हुए समाचार की भाषा पर हमने विशेष बल दिया है।

समाचार के माध्यम से हम चारों ओर की ताजा घटनाओं से परिचित होते हैं। समाचार के छह तत्व स्वीकार किए गए हैं — क्या, कहां, कब, कौन, क्यों और कैसे। समाचार तैयार करते वक्त इन तत्वों का ध्यान रखा जाता है। किसी घटना के समाचार बनने की एक लंबी प्रक्रिया होती है, जिसमें समाचार संकलन से लेखन तक का कार्य जुड़ा होता है। समाचार मुख्य रूप से तीन जन-संचार माध्यमों की सहायता से प्रकाशित प्रसारित होते हैं — समाचारपत्र, रेडियो और टेलीविजन।

अनेक प्रकार के समाचार इन संचार माध्यमों के जरिए आम जनता तक पहुंचते हैं। इसकी जानकारी आपको इस इकाई में मिली है।

सक्रियता, विश्वासपात्रता, वस्तुनिष्ठता और विश्लेषण क्षमता — ये एक अच्छे समाचार लेखक और संवाददाता के गुण हैं।

यथार्थता, संक्षिप्तता और रोचकता समाचार लेखन के मुख्य सिद्धांत हैं। समाचार का प्रस्तुतीकरण करते समय शीर्षक लेखन करना पड़ता है। आमुख या इंट्रो तैयार करना पड़ता है और पूरे समाचार का

ब्यौरा देना होता है। समाचार तैयार करते समय भाषा का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। यह भाषा विषय और संचार माध्यमों के अनुरूप बदलती रहती है।

25.9 उपयोगी पुस्तकें

समाचार संकलन और लेखन, नन्द किशोर लिटवा, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ।

सम्प्रेषणमूलक हिंदी, राम.प्रकाश, दिनेश गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

25.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) समाचार के चारों ओर की ताजा खबर रहती है।

2) ख)

3) इस प्रश्न का उत्तर देते समय "समाचार की प्रक्रिया" को ध्यान में रखिए और जरूरत पड़ने पर 25.2.3 पर एक बार फिर नजर डालिए।

4) गंभीर समाचार की भाषा में रोचकता होती है। सामान्य रुचि के समाचार की भाषा में चटपटापन मौजूद रहता है।

5) घ)

6) क) × ख) √ ग) √ घ) √ ङ) ×
च) √ छ) × ज) × झ) √

7) समाचार का उद्देश्य घटना को ज्यों का त्यों पाठक या श्रोता तक पहुंचाना होता है। अतः यथार्थ की सुरक्षा" जरूरी होती है। (देखिए 25.5.1)

8) क)

9) समाचार को इस प्रकार प्रस्तुत करना कि पाठक या श्रोता स्पंदित हो। इसके लिए समाचार की प्रस्तुति में कहानीपन होनी चाहिए। (देखिए 25.5.3)

10) शीर्षक संक्षिप्त और सारगर्भित हो।
क्रिया पद का होना जरूरी नहीं है।
भाषा विषयानुकूल होनी चाहिए।

11) आसान वाक्य, चुटीली भाषा, संक्षेपण/खंड वाक्यों का प्रयोग नहीं। (देखिए 25.6.2)

12) संचार माध्यमों की अपनी विशिष्टता के कारण (देखिए 25.7)।

इकाई 26 विज्ञापन और हिंदी

इकाई की रूपरेखा

26.0 उद्देश्य
26.1 प्रस्तावना
26.2 विज्ञापन तात्पर्य एवं यात्रा
  26.2.1 विज्ञापन से तात्पर्य
  26.2.2 विज्ञापन की आवश्यकता क्यों?
  26.2.3 विज्ञापन-यात्रा
26.3 विज्ञापनों का वर्गीकरण
  26.3.1 दृश्य माध्यमों के विज्ञापन
  26.3.2 श्रव्य माध्यमों के विज्ञापन
  26.3.3 दृश्य-श्रव्य माध्यमों के विज्ञापन
26.4 विज्ञापन : प्रकार एवं भाषा
  26.4.1 वर्गीकृत विज्ञापन
  26.4.2 प्रदर्शनात्मक विज्ञापन
  26.4.3 प्रतिष्ठावर्धक विज्ञापन
  26.4.4 व्यापारिक विज्ञापन
26.5 विज्ञापनों में भाषा के सहयोगी उपादान
  26.5.1 दृश्य माध्यम (मुद्रित)
  26.5.2 श्रव्य माध्यम
  26.5.3 दृश्य-श्रव्य माध्यम
26.6 सारांश
26.7 उपयोगी पुस्तकें
26.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

26.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप जानेंगे कि:

- विज्ञापन किसे कहते हैं,
- विज्ञापन कब जनसंचार माध्यमों का अंग बने,
- विज्ञापन कितने प्रकार के होते हैं,
- अलग-अलग जनसंचार माध्यमों में किस प्रकार के विज्ञापनों का उपयोग किया जाता है,
- जनसंचार माध्यमों के आधार पर विज्ञापनों की भाषा और प्रस्तुति में किस प्रकार के अंतर आते हैं,
- विज्ञापनों की भाषा की क्या-क्या विशेषताएं हैं,
- विज्ञापनों की भाषा में किन साहित्यिक उपादानों का उपयोग किया जाता है
- विभिन्न माध्यमों में विज्ञापनों की भाषा के सहयोगी उपकरण क्या-क्या हैं।

26.1 प्रस्तावना

सुबह उठकर अखबार खोलो-उसमें से कुछ पैंफ्लेट गिरेंगे-देखिए तो पता चलेगा "विज्ञापन"। अखबार में झांकिए-समाचारों से अधिक "विज्ञापन"। रेडियो चलाइए तो गानों के बीच में विज्ञापन, समाचारों के पहले और बाद में विज्ञापन, टी.वी. चलाइए तो थोड़ी-थोड़ी देर बाद "विज्ञापन"। कहीं गलती से वीडियो फिल्म देखना शुरू किया तो-सारा मजा किरकिरा-छोटी सी फोटो और उसके भी आधे स्क्रीन पर कुछ-कुछ देर बाद बदलते विज्ञापन। फिल्म को रोककर सामने आने वाले विज्ञापन

तो इनसे अलग हैं जो फिल्म को लंबा कर देते हैं। घर से बाहर निकलिए तो बस पर, बस स्टैंड पर, सड़क पर, दीवारों पर या जहां कहीं भी स्थान है चारों तरफ होर्डिंग, पोस्टर स्टिकर वॉलिंग (दीवार पर लिखे) आदि के रूप में "विज्ञापन ही विज्ञापन"। चारों ओर विज्ञापन ही विज्ञापन। आजकल के युग को "कलिकाल" कहने के स्थान पर "विज्ञापन-काल" कहा जाए तो कैसा है। रेडियो, टी.वी., अखबार सुनने पढ़ने वाला व्यक्ति अगर बाहर यात्रा करने भी जाता है तो वह दिनभर में कम से कम 200 विज्ञापन उसके नेत्रों व कानों के माध्यम से उसके दिमाग में प्रवेश करते हैं। जैसा कि आपको अन्यत्र भी बताया गया है हम अपने दैनंदिन अनुभवों का 80 प्रतिशत नेत्रों के द्वारा ग्रहण करते हैं। हमारी इसी कमजोरी या विशेषता का फायदा उठाने के लिए ही जहां स्थान उपलब्ध होता है कुछ लिखकर या लटकाकर या चिपकाकर छोड़ दिया जाता है।

वैसे भी यह विज्ञापन की ही महिमा है कि आपको सुंदर पति या पत्नी चाहिए, नौकरी रिक्त है या चाहिए, कार या मकान खरीदना हो या बेचना हो, परिवार का कोई सदस्य खो गया है, किसी के नाम बदला है, परिवार में गमी (मृत्यु) हो गई है, किसी भी प्रकार का कार्य हो इस समाचार माध्यमों की विज्ञापन सेवा आपकी सेवा में तत्पर है। बस एक विज्ञापन दीजिए और अपनी चिंताओं का निवारण करके जनसंचार माध्यमों पर अपनी चिंताएं डाल दीजिए। बस आप तो संपर्क साधने की कोशिश कीजिए। सुबह से लेकर शाम तक होने वाले विज्ञापनों के इस आक्रमण से प्रेरित व नियंत्रित उपभोक्ता अपनी खरीद-फरोख्त करता है। विज्ञापनों में उपभोक्ता मनोविज्ञान का पूरा-पूरा फायदा उठाया जाता है। इसके लिए प्रायः अपने उपाद्य को दूसरों से श्रेष्ठ अथवा विशेष प्रकार से फायदे, भेद बताते हैं।

अब तो विज्ञापनों को देखकर यह लगने लगा है कि आप कोई भी समान (चाहे वह कूड़ा करकट ही क्यों न हो) बेचना चाहते हैं तो बस पैसे की व्यवस्था कीजिए। एक आकर्षक विज्ञापन छपवाइए। बस बिक गया आपका माल। वैसे भी आजकल के अर्थप्रधान समाज में सब कुछ बिकाऊ है, बेचने व खरीदने वाले की आवश्यकता है और आवश्यकता है एक मध्यस्थ ऐसे व्यक्ति की जो किसी तरह खरीदने वाले व बेचने वाले के बीच मध्यस्थता-सूचनाओं आदि के आदान-प्रदान भी कर सके। यह कार्य विज्ञापन की सहायता से आसानी से किया जा सकता है। विज्ञापन में वर्णित गुण उपभोक्ता के लिए लाभदायक है या नहीं इसकी परवाह न तो उत्पादक को होती है न ही खरीदार को। बस उसे तो एक अतिरिक्त गुण वाला सामान मिल रहा है।

26.2 विज्ञापन : तात्पर्य एवं यात्रा

विज्ञापन का अर्थ क्या है, उसकी आवश्यकता क्यों पड़ने लगी और विज्ञापनों के स्वरूप में क्या-क्या परिवर्तन आए हैं। अब हम इन सभी विषयों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

26.2.1 विज्ञापन से तात्पर्य

हिंदी भाषा के एक प्रमुख कोश "हिंदी शब्द सागर" में विज्ञापन शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया गया है — "जिसके द्वारा कोई बात लोगों को बताई जाती है/वह सूचना पत्र/इश्तहार/बिक्री आदि के माल या किसी बात की सूचना, जो सब लोगों को विशेषतः सामयिक पत्रों के माध्यम से दी जाती हैं।"

मानविकी परिभाषिक कोश के अनुसार विज्ञापन — "परचे, परिपत्र, पोस्टर अथवा पत्र-पत्रिकाओं द्वारा सार्वजनिक घोषणा। किसी वस्तु आदि के वास्तविक अथवा काल्पनिक अथवा आरोपित गुणों का प्रचार।"

उक्त दोनों परिभाषाओं और अर्थों का आप ध्यान से अध्ययन करें तो आपको यह अवश्य ही लगेगा कि ये दोनों परिभाषाएं विज्ञापनों के सभी रूपों को समेटने में असमर्थ हैं। उक्त दोनों ने ही विज्ञापन के केवल मुद्रित रूप को ही समेटने की कोशिश की है। मुद्रित विज्ञापन तो अब विज्ञापन के एक रूप मात्र है। विज्ञापन जनसंचार के सभी माध्यमों में प्रकाशित-प्रसारित होते हैं अतः अब यह आवश्यक है कि विज्ञापन के अन्य माध्यमों को ध्यान में रखकर परिभाषा दी जाए। विज्ञापन वास्तव में है क्या? विज्ञापन प्रचार का एक उपकरण (टूल) है। अतः साधारण तौर पर हम कह सकते हैं कि जनसंचार के माध्यमों में किसी भी विषय या वस्तु या उत्पादन आदि का प्रचार जिसके द्वारा किया जाता है वह

विज्ञापन होता है। प्रचार करने के लिए कुछ सूचनाएं देना आवश्यक होता है। आपने समाचार के संबंध में पढ़ा होगा कि समाचार का कार्य भी पाठक या दर्शक या श्रोता को सूचना पहुंचाना होता है। तो समाचार में और विज्ञापन में अंतर क्या हुआ? समाचार और विज्ञापन में मूलभूत अंतर यह होता है कि समाचार से जो ज्ञान वृद्धि होती है उसका लाभ पाठक आदि को होता है जबकि विज्ञापनों से प्राप्त सूचनाएं विज्ञापनदाता को तथा माध्यम को लाभान्वित करती हैं। संचार माध्यम की विज्ञापनों से आर्थिक आय होती है तथा विज्ञापनदाता का अपने उत्पाद की बिक्री बढ़ाने में सहायता मिलती है। यह स्थिति वैवाहिक, किराये, रोजगार संबंधी आदि विज्ञापनों के संदर्भ में भी सही है क्योंकि इन विज्ञापनदाताओं का संपर्क एक बड़े वर्ग से जुड़ता है जिससे उन्हें सुपात्र के चयन में आसानी होती है।

व्याख्या के आधार पर हम कह सकते हैं कि विज्ञापन जनसंचार के विभिन्न माध्यमों से प्रचार करने का एक उपादान है जिसमें विशेष प्रकार की सूचनाएं होती हैं। इन सूचनाओं को प्रकाशित-प्रसारित करने के लिए अधिकांशतः कुछ-न-कुछ धन लिया जाता है। यह धन शब्द संख्या, स्थान अथवा समय के आधार पर वसूल किया जाता है।

26.2.2 विज्ञापन की आवश्यकता क्यों?

इस प्रश्न का अर्थ समझाने के लिए आपको उस जमाने के भारत में ले चलते हैं जब संचार और यातायात के माध्यमों का विकास आधुनिक युग के समान नहीं था और न ही इस प्रकार का औद्योगिक विकास हुआ था कि किसी भी वस्तु का उत्पादन इतनी अधिक मात्रा में हो कि उसे अपने उत्पादन/निर्माण स्थल से हर भेजने की आवश्यकता पड़े। प्राचीन भारत के गांव को उदाहरण के रूप में लेते हैं। यदि आपने कहीं भी इस विषय में थोड़ा बहुत अध्ययन भी किया होगा तो आप इस बात से भली भांति परिचित होंगे कि भारत के गांव अपने आप में एक पूरी राजनैतिक और आर्थिक इकाई होते थे। गांव की जनता में से कुछ लोग (अधिकांशतः) खेती करते थे। एक या एक से अधिक परिवार ऐसे होते थे जो खेती के स्थान पर प्रायः अन्य कोई व्यवसाय जैसे कुम्हार कर्म, लुहार कर्म, बढ़ईगिरी, बुनकर कर्म, नाई का काम आदि जैसे कार्य करते थे। ये अन्य व्यवसाय करने वाले व्यक्ति संपूर्ण गांव की आवश्यकता के अनुसार वस्तुओं का उत्पादन करते थे। गांव का कृषक वर्ग इन लोगों की अनाज संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करता था। अर्थात् गांव के किसान अपनी-अपनी आवश्यकताओं के अनुसार इन व्यवसायी वर्ग के परिवारों से अपनी आवश्यकता की वस्तुएं प्राप्त करते थे और बदले में उन्हें अन्न, दाल, दूध, दही अथवा धन आदि देकर उनकी सहायता करते थे। उस स्थिति में गांव के लोग अपनी आवश्यकताओं का सामान व वस्तुएं अपने ही गांव में निर्मित करते थे और परस्पर आश्रित इस समान को अपनी वस्तुओं को दूसरे गांवों में बेचने के लिए नहीं ले जाना पड़ता था। किसी भी गांव के सभी व्यक्तियों को यह ज्ञात होता था कि उन्हें कौन-सा सामान कहां मिलेगा अतः प्रचार की आवश्यकता नहीं होती थी। हाँ उस समय में कुछ व्यवसाय ऐसे होते थे जिसकी कारीगर सीमित होती थी या अन्य गांवों में रहते थे। ये कार्य प्रायः राजाओं द्वारा संपन्न करवाए जाते थे। इनके लिए वे डुगडुगी पिटवाकर सभी स्थानों पर सूचना भेज देते थे और कारीगर आवश्यकतानुसार उस स्थान पर पहुंच जाते थे जहां उनकी आवश्यकता होती थी। यह स्थिति फेरी लगाने वाले लोगों के संदर्भ में भी लागू होती थी। वे जिस गांव में भी पहुंचते थे — डुगडुगी वाले से अपने पहुंचने का प्रचार करवा देते थे या नाई या हरकारे से पूरे गांववासियों को सूचना भिजवा देते थे कि वे कहां पर ठहर कर सामान बेचेंगे। गांव के लोग अपनी-अपनी जरूरत का सामान उस स्थान पर जाकर फेरी वालों से खरीद लेते थें। इसी प्रकार जब नाटक मंडली आदि एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाती थी तो वे डुगडुगी पिटवाकर ऐलान कर देती थी या इनके पहुंचने का समाचार एक व्यक्ति से दूसरे से तीसरे तक होता हुआ पूरे गांव में फैल जाता था।

इस बात को हम इस तरह भी कह सकते हैं कि गांव आदि का आकार छोटा और जनसंख्या सीमित होती थी। अपनी आवश्यकताओं का उत्पादन गांव में ही कर लिया जाता था। बाहर से सामान/वस्तुएं आने पर फेरी वाला अपने आने की सूचना (विज्ञापन) गांव भर को देता था।

औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप मशीनें आई। मशीनों के आने से वस्तुओं का उत्पादन अधिक मात्रा में होने लगा। उत्पादन अधिक होने पर नये बाजारों की खोज हुई। यातायात के साधनों के विकास के परिणामस्वरूप स्वयं जाने या सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना सुविधाजनक हो गया। औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप नये औद्योगिक शहरों का विकास हुआ। इन शहरों में आकर

रहने वाली जनता प्रायः एक दूसरे से अपरिचित होती थी। लोगों ने अपने व्यवसाय छोड़ दिए। मशीनों से निर्मित वस्तुएं सस्ती होती थी उनके खरीददार बढ़े। छापाखाना आया। छापेखाने के विकास का फल यह हुआ कि आप अपनी वस्तुओं के बारे में कागज पर फ्लैट छपवाकर सूचना दे सकते थे। फिर छापेखाने के परिणामस्वरूप ही अखबार आए। अखबारों ने अपनी आय बढ़ाने के लिए विज्ञापन छापना प्रारंभ किया। छापेखाने के क्रम में फिर बेतार के तार-रेडियो, टेलीफोन, लाउडस्पीकर, टी.वी., वीडियो, कंप्यूटर आदि का विकास हुआ। यातायात के साधनों का भी विकास हुआ। इसी तरह वस्तुओं के उत्पादन की बढ़ोत्तरी हुई व विविधता आई। इस पूरे तकनीकी व औद्योगिक विकास के परिणामस्वरूप पूरा देश या समस्त संसार उस प्राचीन गांव या शहर में बदल गया। इस नये गांव या शहर की आवश्यकता कोई भी राज्य या देश पूरा कर सकता है। पर जरूरी यह है कि पूरे देश/संसार को यह ज्ञात होना चाहिए कि उसकी आवश्यकता को पूरा करने का सामर्थ्य किस में है, या कौन-कौन उसकी आवश्यकता की वस्तुएं बनाता है। इस सबकी जानकारी देने के लिए अत्याधुनिक जनसंचार माध्यमों की सहायता से पूरे विश्व को अथवा समूचे देश को अर्थात घर-घर तक यह संदेश पहुंचाना आवश्यक हो गया कि अमूक वस्तु का उत्पादन अमुक कंपनी करती है और अमुक विशेषताओं के कारण ही अपनी जैसी अन्य वस्तुओं से अच्छी-किफायती-भरोसेमंद आदि है। इस सर्वव्यापी प्रचार की आवश्यकता के कारण ही विज्ञापन का स्वरूप पूर्णरूपेण बदल गया है।

26.2.3 विज्ञापन-यात्रा

आप सभी ने अपनी नाना-नानी और दादी-दादी या माता-पिता से अपने देश की पुरानी कथा कहानियां सुनी ही होंगी। यदि इन सबसे सुनने को नहीं मिली तो पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ी होंगी। किसी कहानी में आपने राजकुमारी के स्वयंवर की बात सुनी होगी, किसी कहानी में राजकुमार-राजकुमारी, या राजा के बीमार होने या राक्षस द्वारा कैद कर लेने की बात सुनी होगी। इन सभी की चर्चा सारे राज्य में अन्य राज्यों में प्रचारित की जाती थी। यह प्रचार विज्ञापन का ही एक प्रकार था।

आप समझ गए होंगे कि हमने इसकी चर्चा क्यों की। इस चर्चा से आपको यह ध्यान दिलाना चाहता हूं कि विज्ञापनों का प्रारंभ प्रेस, रेडियो, दूरदर्शन के अस्तित्व में आने से बहुत पहले हो चुका था। जब मनुष्य ने अपनी बात दूसरे तक पहुंचाने की कोशिश की होगी तभी से इस विज्ञापन की कहानी प्रारंभ हो गयी होगी। प्रेस के अस्तित्व में आने पर विज्ञापनों ने अपने रूप में एक प्रकार का परिवर्तन किया था। इसी प्रकार के परिवर्तन जनसंचार के अन्य माध्यमों के अस्तित्व में आने पर हुए। रेडियो टेपरिकार्डर आदि आने पर उनमें संगीत आदि का पुट (इसे आप डुगडुगी और नगाड़े के समानांतर देख सकते हैं) और उसको स्थिरता (एक ही तरह का संदेश बिना थके अनेक बार सुनाने की क्षमता) मिली। सिनेमा, दूरदर्शन और वीडियो का जनसंचार माध्यमों के रूप में उपयोग होने से पर्दे पर जीते जागते मानवों द्वारा किए गए कार्यकलाप विज्ञापनों का अंग बन गए।

पत्रकारिता के संदर्भ में देखें तो आप पाएंगे कि प्रारंभिक समाचार पत्र-पत्रिकाओं के विज्ञापनों का कलेवर समाचारों के कलेवर के समान ही होता था। समाचारों से अलग करने के लिए उनके ऊपर "विज्ञापन" होने का संकेत दे दिया जाता था। जैसे-जैसे प्रेस का विकास हुआ नए-नए प्रकार के टाइप फेस विकसित हुए, फोटो प्रिंटिंग प्रारंभ हुई वैसे-वैसे मुद्रित विज्ञापनों का स्वरूप भी बदलने लगा। विज्ञापनों में विभिन्न प्रकार के टाइप फेस व चित्रों का इस्तेमाल होने लगा। फिर जैसे ही रंगीन प्रिंटिंग प्रारंभ हुई वैसे ही विज्ञापनों का स्वरूप फिर बदला-श्वेत-श्याम विज्ञापनों का स्थान रंगीन विज्ञापनों ने ले लिया। अब मुद्रित विज्ञापनों में परिवेश के चित्र को यथारूप में प्रकाशित करके पाठकों को प्रभावित एवं आकर्षित किया जा सकता है।

इस दृष्टि से यदि आकाशवाणी के विज्ञापनों को देखें तो उनमें जो अंतर आया है वह इतना वैविधपूर्ण नहीं है क्योंकि उस माध्यम में परिवर्तन एवं प्रयोग की गुंजाइश इतनी अधिक नहीं थी। हां संगीत व विभिन्न प्रकार की सुर ताल और लय के प्रयोग में ही विज्ञापन की विकास यात्रा को नापा जा सकता है।

जहां तक दृश्य-श्रव्य माध्यमों के विज्ञापनों की यात्रा का प्रश्न है वह मुद्रित विज्ञापनों के समान ही विविधतापूर्ण है। आप यदि दूरदर्शन देखते हैं या फिल्म देखने सिनेमा हॉल पर जाते हैं तो आप सभी प्रकार के विज्ञापन आजकल भी इन माध्यमों में देख सकते हैं। ये विज्ञापन हैं — स्लाइड पर लिखकर दिखाना, स्लाइड पर चित्र दिखाना, स्लाइड के रूप में चित्र व साथ में आवाज, स्लाइड के स्थान पर

रील का प्रयोग और आवाज रहित विज्ञापन, आवाज सहित विज्ञापन, संगीत आदि का समावेश आदि करना। दृश्य-श्रव्य माध्यम के विज्ञापनों की यात्रा यहीं पर समाप्त नहीं हुई। कैमरा ट्रिक्स से असंभव को संभव तो किया ही जाता है, कंप्यूटर ग्रैफिक्स की सहायता से अब सोने पर सुहागा वाली बात चरितार्थ होने लगी है। आजकल अनेक विज्ञापनों में कंप्यूटर ग्रैफिक्स का कमाल देखते हैं।

बोध प्रश्न

1) सही कथन के आगे (√) तथा गलत कथन के आगे (×) का निशान लगाएं।

क) i) विज्ञापन उपभोक्ता की खरीद-फरोख्त को प्रभावित करते हैं। [ ]

ii) विज्ञापन प्रचार करने का उपादान नहीं है। [ ]

iii) विज्ञापन और समाचार में कोई अंतर नहीं होता। [ ]

iv) प्रारंभ में विज्ञापन और समाचार में ज्यादा अंतर नहीं होता था। [ ]

v) दिन भर में एक सामान्य शहरी लगभग 200 विज्ञापन देख लेता है। [ ]

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हां या न में दीजिए :

i) विज्ञापन मुफ्त ही प्रकाशित-प्रचारित होते हैं। [ ]

ii) जनसंचार माध्यमों के साथ-साथ विज्ञापनों का स्वरूप बदलता गया है। [ ]

iii) प्रचार करना आधुनिक युग में ही प्रारंभ हुआ। [ ]

iv) विज्ञापनों में उपभोक्ता मनोविज्ञान का फायदा उठाया जाता है। [ ]

v) विज्ञापन की आवश्यकता के मूल में औद्योगिक विकास है। [ ]

26.3 विज्ञापनों का वर्गीकरण

विज्ञापनों का वर्गीकरण अनेक प्रकार से संभव है पर हम जनसंचार माध्यम के आधार पर इनका वर्गीकरण करेंगे और शेष प्रकार के वर्गीकरण की चर्चा इनके अंतर्गत ही करते चलेंगे। जनसंचार माध्यमों के आधार पर हम विज्ञापनों के तीन वर्ग निर्धारित कर सकते हैं: जो इस प्रकार हैं:

क) दृश्य माध्यमों के विज्ञापन (मुद्रित व लिखित)
ख) श्रव्य माध्यमों के विज्ञापन
ग) दृश्य-श्रव्य माध्यमों के विज्ञापन

26.3.1 दृश्य माध्यमों के विज्ञापन

दृश्य माध्यम के विज्ञापनों का पुनः वर्गीकरण भी कई प्रकार से संभव है। सबसे पहले तो इन्हें लिखित या मुद्रित विज्ञापनों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। लिखित विज्ञापनों का मतलब हस्तलिखित विज्ञापनों से है जिनमें दीवारों पर लिखे विज्ञापन, दुकानों के बोर्ड, बसों आदि पर रोगन से लिखे विज्ञापन, बिजली के खंभों पर लगे रोगन से अंकित विज्ञापन पट्ट, बड़े-बड़े होर्डिंग आदि शामिल, किए जा सकते हैं। मुद्रित विज्ञापन का अर्थ, पैंफ्लेट, पोस्टर, समाचार-पत्र-पत्रिकाओं के विज्ञापनों आदि से है। इन विज्ञापनों में लिपि के अतिरिक्त भाषा, रंग और चित्रों का चमत्कार शामिल रहता है। इन चमत्कारों की चर्चा बाद में करेंगे पहले समाचारपत्र-पत्रिकाओं के विज्ञापन कितनी तरह के होते हैं यह चर्चा कर ली जाए। समाचारपत्र-पत्रिकाओं में कुछ विज्ञापन छोटे-छोटे अक्षरों के छोटे-छोटे विज्ञापन प्रकाशित होते हैं, इन विज्ञापनों को वर्गीकृत (क्लासीफाइड) विज्ञापन कहते हैं। ये विज्ञापन प्रति शब्द की दर से समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। इस तरह के विज्ञापन-खरीद-फरोख्त, विवाह, नौकरी, खोया-पाया, किराये के लिए मकान आदि से संबंधित होते हैं।

इन वर्गीकृत विज्ञापनों के अलावा समाचार-पत्र-पत्रिकाओं में भी विज्ञापन प्रकाशित होते हैं उन्हें सजावटी (प्रदर्शनात्मक) विज्ञापन कहा जा सकता है। इस प्रकार के विज्ञापनों के प्रकाशन के लिए कालम व विज्ञापन द्वारा घेरे गए स्थान की लंबाई-चौड़ाई (क्षेत्रफल) के आधार पर धनराशि वसूल की जाती है। इनका आकार प्रायः बड़ा होता है। इस कारण से हम विज्ञापनों में चित्रों, मोटे टाइपों व प्रिंटिंग

ब्लाक आदि का इस्तेमाल संभव होता है। इस तरह के विज्ञापनों का संबंध किसी भी विषय से हो सकता है। ये विज्ञापन सरकारी या प्रशासनिक विज्ञापन भी हो सकते हैं, व्यापारिक भी। इसके अलावा इस तरह के विज्ञापन सांस्थानिक अथवा रोजगार संबंधी भी हो सकते हैं। इस तरह के विज्ञापनों का उपयोग, कंपनी, संस्था या उत्पादय की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए अथवा बिक्री बढ़ाने के लिए भी संभव होता है। विज्ञापन सूचनात्मक भी हो सकते हैं।

आकार की दृष्टि से इस तरह के विज्ञापन एक कॉलमी, द्विकॉलमी, तीन कॉलमी, चौथाई पृष्ठ, आधा पृष्ठ, पूरा पृष्ठ, एकाधिक पृष्ठ आदि के हो सकते हैं। आजकल समाचार पत्र-पत्रिकाओं में एक उद्देश्य को लेकर विज्ञापन परिशिष्ट भी प्रकाशित किए जाते हैं जिनमें विज्ञापनों के अतिरिक्त निर्माताओं/उत्पादकों आदि की ओर से अन्य सूचनाएं भी दी जाती हैं।

सरकारी या प्रशासनिक विज्ञापनों का अभिप्राय उन विज्ञापनों से है जो सरकार के विभिन्न मंत्रालय का विभाग समाचार-पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाते हैं। इस प्रकार के विज्ञापन रोजगार संबंधी, निविदा सूचना संबंधी या सूचनात्मक आदि हो सकते हैं। मद्य निषेध संबंधी, प्रदूषण संबंधी, नशीली दवा विरोधी विज्ञापन, प्रकाशन संबंधी विज्ञापन, कार्यालयों में विभिन्न समानों की आपूर्ति से संबंधित तथा विभिन्न सरकारी विभागों के रिक्त स्थानों पर नियुक्ति के संबंध में जो भी विज्ञापन प्रकाशित होते हैं वे सभी सरकारी विज्ञापन हैं।

व्यापारिक विज्ञापनों का अभिप्राय इन विज्ञापनों से है जो विभिन्न कंपनियां अपनी कंपनी व अपने उत्पादों के प्रचार के लिए प्रकाशित करवाती हैं। ये विज्ञापन कभी-कभी प्रतिष्ठावर्धक होते हैं अर्थात् इनमें उत्पादों की चर्चा नहीं की जाती केवल कंपनी के विषय में ही चर्चा रहती है। जब कोई कंपनी शेयर आदि जारी करती है तो प्रायः इस प्रकार के विज्ञापन समाचार-पत्र, पत्रिकाओं में देखने को मिल जाते हैं। ये विज्ञापन सूचनात्मक अधिक होते हैं। इस तरह के विज्ञापनों से किसी वस्तु की बिक्री बढ़ाने का प्रयास नहीं किया जाता।

दूसरी प्रकार के व्यापारिक विज्ञापन वे होते हैं जिन्हें विभिन्न कंपनियां या निर्माता आदि अपनी वस्तुओं/उत्पादनों की बिक्री बढ़ाने की दृष्टि प्रकाशित करवाते हैं। ये दोनों ही प्रकार के विज्ञापन दृश्य-श्रव्य माध्यम से तो प्रसारित होते हैं पर श्रव्य माध्यमों से प्रायः दूसरी तरह के ही विज्ञापन प्रसारित होते हैं।

26.3.2 श्रव्य माध्यमों के विज्ञापन

दृश्य माध्यमों के समान श्रव्य माध्यमों के विज्ञपानों का वर्गीकरण संभव नहीं है। श्रव्य माध्यमों से प्रायः व्यापारिक विज्ञापन ही प्रसारित किए जाते हैं। सप्ताह में एक बार रोजगार संबंधी सूचनाएं (विज्ञापन) आदि भी प्रसारित की जाती है पर उन्हें अपवादस्वरूप लिया जा सकता है। शेष सभी विज्ञापनों को अलग करना चाहें तो उन्हें फिल्मी गीत पर आधारित, संगीतात्मक, गीतात्मक, स्लोगन आधारित आदि कहकर एक दूसरे से अलग किया जाता है। इसके अलावा प्रायोजित गीत और प्रायोजित कार्यक्रम भी होते हैं जिसमें एक ही विषय (फिल्म आदि) या वस्तु का प्रचार करते हैं। स्पोंसर्ड गीत परक विज्ञापन प्रायः इस प्रकार के होते हैं जो फिल्म का प्रचार करते हैं। श्रव्य माध्यमों से सरकारी विज्ञापन या संदेश भी प्रसारित किए जाते हैं। यदि आप समाचार से कुछ समय पहले अपना रेडियो खोलें तो आपको इस तरह के सरकारी संदेश या विज्ञापन सुनने को मिल सकते हैं। जैसे रैली और बंद का तथा फायदा या बापू ने कहा था··· आदि।

26.3.3 दृश्य-श्रव्य माध्यमों के विज्ञापन

श्रव्य माध्यम के समान ही दृश्य-श्रव्य माध्यमों का दायरा या पहुंच बहुत व्यापक होता है। यही कारण है कि दूरदर्शन पर विज्ञापन प्रसारित करवाने की दरें सामान्यतः अधिक होती हैं। दृश्य श्रव्य माध्यमों के अंतर्गत दूरदर्शन के अलावा सिनेमा वीडियो और केबल टी.वी. आदि आते हैं।

इन माध्यमों से सरकारी और व्यापारिक दोनों ही प्रकार के विज्ञापन प्रसारित होते है। सरकारी विज्ञापनों में दूरदर्शन से प्रसारित रोजगार समाचार, डी.ए.वी.पी. के विज्ञापन, गुमशुदा व्यक्तियों के विज्ञापन न्यूज रील आदि को लिया जा सकता है। शेष सभी विज्ञापन प्रायः व्यापारिक विज्ञापन की श्रेणी में आते हैं। इन व्यापारिक विज्ञापनों में कुछ विज्ञापन प्रतिष्ठा वर्धक भी होते हैं। ऐसे विज्ञापन प्रायः कंपनियां

शेयर आदि जारी करते समय प्रसारित करवाती हैं। कुछ कंपनियों के इस तरह के विज्ञापन नियमित रूप से भी प्रसारित होते रहते हैं। दृश्य श्रव्य माध्यमों के विज्ञापन केवल लिखित या चित्रात्मक विज्ञापन भी हो सकते हैं और लिखित और मौखिक दोनों भी। इसके अलावा इस माध्यम के विज्ञापन संगीतमय, गीतात्मक, चित्र चमत्कार से युक्त, संवादात्मक (नाटकीय) आदि प्रकार के हो सकते हैं। यदि आप केबल पर फिल्म देखते हैं या वीडियो फिल्में देखते हैं तो आपको एक विशेष प्रकार के विज्ञापन और दिखाई देते होंगे। ये विज्ञापन आपको वीडियो फिल्म देखने में बाधा पहुंचाने वाले होते हैं जो फिल्म को रोकने के स्थान पर फिल्म के निचले हिस्से में फिल्म के साथ ही दिखा दिए जाते हैं। ये विज्ञापन कंप्यूटर ग्रैफिक्स के चमत्कार के द्वारा आप तक पहुंचते हैं। वैसे तो कंप्यूटर ग्रैफिक्स का चमत्कार दृश्य श्रव्य माध्यमों के अन्य विज्ञापनों में भी रहता है। परंतु उक्त प्रकार के विज्ञापनों में दृश्य-श्रव्य माध्यम की केवल एक क्षमता (दृश्यात्मक क्षमता) का ही उपयोग रहता है। फिल्म के संवाद सुनने या उसे देखने में बाधा (पूरी नहीं) नहीं आती। ये फिल्म के साथ चलते रहते हैं और इस तरह के विज्ञापनों में विज्ञापन कंपनियां अनेक बार फिल्म की आवश्यकता या दृश्य की मांग के अनुरूप विज्ञापन दिखाकर (वीडियो फिल्म में अंकित कर) विज्ञापन की सार्थकता बढ़ा देती हैं। कंप्यूटर के अलावा इस माध्यम के विज्ञापनों में कैमरे की ट्रिक्स का उपयोग तो किया ही जा सकता है इसके अलावा वीडियो कैमरे की सहायता से विज्ञापनों में वास्तविक दृश्य प्रस्तुत किए जा सकते हैं। इससे इस माध्यम के विज्ञापनों का प्रभाव सर्वाधिक होता है। अतः इस तरह के विज्ञापनों में अनेक तरह के चमत्कार करना संभव होता है। ये चमत्कार भाषापरक (लिखित व मौखिक दोनों), संगीतपरक, चित्रपरक, कैमरा ट्रिकपरक, या कंप्यूटर ग्रैफिक्स पर आधारित किसी भी तरह हो सकते हैं। इन सभी प्रकार के सहायक उपकरणों की चर्चा हम इकाई के परवर्ती खंड में करेंगे।

बोध प्रश्न

2) हाँ और नहीं में उत्तर दीजिए :

i) जनसंचार माध्यमों के आधार पर विज्ञापनों का वर्गीकरण किया जा सकता है। ( )

ii) पैंफ्लेट एक श्रव्य माध्यम का विज्ञापन है। ( )

iii) लिखित या मुद्रित विज्ञापन दृश्य विज्ञापनों का एक प्रकार है। ( )

iv) वर्गीकृत विज्ञापन बड़े-बड़े विज्ञापनों को कहते हैं। ( )

v) प्रदर्शनात्मक विज्ञापनों के लिए प्रति शब्द की दर से प्रकाशन व्यय वसूला जाता है। ( )

vi) व्यापारिक विज्ञापन बिक्री बढ़ाने का कार्य करते हैं। ( )

vii) सरकारी विज्ञापन विभिन्न कंपनियां छपवाती हैं। ( )

viii) व्यापारिक विज्ञापनों से कंपनी की प्रतिष्ठा बढ़ती है। ( )

26.4 विज्ञापन : प्रकार एवं भाषा

समाचारों का भाषा की चर्चा करते समय इकाई संख्या 25 में बताया गया था कि जनसंचार के माध्यमों के अपने स्वरूप के कारण दृश्य, दृश्य-श्रव्य और श्रव्य माध्यमों की भाषा में अंतर होता है। यह तथ्य विज्ञापनों की भाषा के लिए भी उतना ही सच है जितना कि समाचारों के लिए। दृश्य श्रव्य माध्यमों में अभिव्यक्ति के दोनों रूपों (लिखित और मौखिक) का उपयोग संभव होता है। इसके साथ-साथ फिल्म का उपयोग करके वातावरण आदि को यथारूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। दृश्य माध्यम में यही कार्य चित्र तथा लिखित भाषा की सहायता से किया जाता है श्रव्य माध्यम में ये सभी कार्य करने के लिए भाषा के मौखिक रूप व संगीत व ध्वनियों का सहारा लिया जाता है।

विज्ञापन भाषा संचार माध्यमों के आधार पर ही भिन्न नहीं होती वरन् विज्ञापनों के प्रकार/भेदों के आधार पर भी भिन्न होती है। सरकारी विज्ञापनों की भाषा अन्य प्रकार के विज्ञापनों की भाषा से भिन्न होती है। इसी तरह वर्गीकृत विज्ञापनों की भाषा सजावटी विज्ञापनों की भाषा से तथा व्यावसायिक विज्ञापनों

की भाषा सजावटी विज्ञापनों की भाषा से भिन्न होती है। इकाई के इस खंड में समाचारपत्र एवं पत्रिकाओं में प्रभावित तथा आकाशवाणी व दूरदर्शन से प्रसारित विज्ञापनों की भाषा की ही चर्चा की जा रही है, पोस्टर, पैम्फलेट, वॉलिंग आदि की नहीं।

सबसे पहले वर्गीकृत विज्ञापनों की भाषा की विशेषताओं की चर्चा की जा रही है। जैसा कि इस इकाई में पहले बताया गया है कि वर्गीकृत विज्ञापनों के अंतर्गत वे विज्ञापन आते हैं जो शब्दों की दर से विभिन्न शीर्षकों जैसे रिक्त स्थान, शिक्षा संबंधी, खोया-पाया, वैवाहिक, वाहन खरीद-विक्रय, किराए हेतु के अंतर्गत प्रकाशित किए जाते हैं। प्रत्येक शब्द के साथ प्रकाशन राशि बढ़ने के कारण इन विज्ञापनों में शब्दों का बहुत अधिक महत्व होता है। विज्ञापनदाता की प्रायः यह कोशिश रहती है कि वह कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक जानकारी प्रदान करे। इस कारण से इन विज्ञापनों के शब्द ऐसे होते हैं जो पूरे वाक्य का कार्य करते हैं। इसलिए यह भी संभव है कि यदि आप ऐसे किसी भी छोटे विज्ञापन की अपने शब्दों में व्याख्या करना चाहेंगे तो पाएंगे कि वह एक अनुच्छेद बन गया। इस तरह के विज्ञापनों की भाषा के कुछ नमूने दिए जा रहे हैं।

26.4.1 वर्गीकृत विज्ञापन

रोजगार

क) **आवश्यकता है डेबू के.ई.सी. किट बनाने** वाले लड़के/लड़कियों और ट्रेण्ड डिश रिसीवर इंजीनियर की मिलें:

शैक्षिक

ग) **प्रवेश आरंभ ब्यूटीशियन/मेहंदी/एम्ब्रायडरी**/निटिंग/टेलरिंग/कटिंग स्टीचिंग फैशन डिजाइनिंग/टेक्सटाइल डिजाइनिंग/इंटीरियर डेकोरेशन/चाईल्डकेयर/कमर्शियल आर्ट/कंम्प्यूटर साइंस/टाइपिंग, शार्टहैंड, सैक्रेटेरियल प्रैक्टिकल, इंगलिश कन्वरशेसन, योगा, भरतनाट्यम, कत्थक, फोकडान्स, ढोलक लाईट म्यूजिक कोर्सेस हेतु महिलाएं सम्पर्क करें:

वैवाहिक

ख) गौरवर्णीय, घरेलू, सुगम संगीत कलाकार, सरयूपारीण ब्राह्मण कन्या 22½, 2/157 सी. आर्च., खाने पर आधा इंच टेढ़ा, काम करने में कोई परेशानी नहीं हेतु सुयोग्य वर चाहिए, आर्किटेक्ट्स इंजीनियर को वरीयता लिखें:

क्रय-विक्रय

घ) **'सपना कार बाजार'** 2209452 2217600 नई/पुरानी मारुति, फिएट, एम्बेसेडर, इम्पोर्टिड कार खरीदें/बेचें, फाइनेंस सुविधा मिलें:

उक्त सभी विज्ञापनों की भाषा की विशेषता यह है कि क्रियाओं का प्रयोग अत्यधिक कम किया गया है। वाक्य प्रायः अधूरे हैं। जितने शब्दों के अर्थ संप्रेषित हो जाए उतने ही और कम से कम शब्दों का प्रयोग किया गया है। वैवाहिक विज्ञापनों को पढ़ने पर आप पाएंगे कि वर और वधू दोनों की ही पूरी की पूरी विशेषताएं एक ही वाक्य में अनेक विशेषणों का प्रयोग करके संजों दी जाती है। इन विशेषताओं को जोड़ा भी "कोमे" (,) की सहायता से जाता है न कि संयोजक शब्दों द्वारा। इसी तरह उम्र, लंबाई और आपके संदर्भ में किया जाता है। इस तरह के विज्ञापनों में अपनी आवश्यकताओं या विशेषताओं की सूचना है और संपर्क स्थल का पता दे दिया जाता है।

26.4.2 प्रदर्शनात्मक विज्ञापन

इस तरह के विज्ञापन सरकारी, रोजगार संबंधी, व्यावसायिक या प्रतिष्ठावर्धक हो सकते हैं। उन तीनों में से पहले हम सरकारी, रोजगार संबंधी व प्रतिष्ठावर्धक विज्ञापनों की भाषा की चर्चा करेंगे। व्यावसायिक विज्ञापन जो कि तीनों माध्यमों में छाए रहते हैं, उनकी भाषा की चर्चा बाद में तथा विस्तार से करेंगे।

सरकारी विज्ञापनों की भाषा: सरकारी विज्ञापनों के भी कई भेद हो सकते हैं। समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित सरकारी विज्ञापन अन्य कोटियों के भी हो सकते हैं। सरकार की तरफ से जो विज्ञापन प्रकाशित करवाएं जाते हैं उनमें प्रमुखता सूचनात्मक विज्ञापनों की होती है। इन विज्ञापनों में केंद्र सरकार के किसी मंत्रालय या विभाग, अथवा किसी राज्य सरकार के कार्यकलापों व गतिविधियों का वर्णन रहता है या मंत्रिमंडल के सदस्य द्वारा संपन्न होने वाले किसी कार्य की सूचना रहती है या विभिन्न सूचनाएं/सूचना मात्र होती है। इन सबके अतिरिक्त कुछ सरकारी विज्ञापनों का संबंध रोजगार से ही होता है। निविदा सूचनाएं (टेंडर आदि), नीलाम आदि की सूचनाएं रेल-वायुयान आरक्षण की सूचनाएं आदि भी सरकारी विज्ञापनों के अंतर्गत आते हैं। सरकारी विज्ञापनों की भाषा प्रायः कठिन होती है क्योंकि ये विज्ञापन अनुवाद होते हैं। इन विज्ञापनों का निर्माण प्रायः अंग्रेजी में किया जाता है फिर उनका अनुवाद करके प्रकाशित करवाया जाता है। यहां यह भी बताना जरूरी है कि सरकारी विज्ञापनों में आम आदमी की भाषा के स्थान पर तकनीकी भाषा व पारिभाषिक शब्दों व औपचारिक शैली का

प्रयोग किया जाता है। इस तरह के विज्ञापनों में अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है। इस सभी के कारण सरकारी विज्ञापनों की भाषा और भी जटिल हो जाती है। सरकारी विज्ञापनों की भाषा को समझने के लिए कुछ सरकारी विज्ञापनों में भाषा देखिए :

बम्बई कस्टम्स के लिए और उसी की ओर से 12, 13, 19, 20, 28 एवं 29 जनवरी, 1993 को।

विशाल नीलाम

बड़ी मात्रा में विभिन्न जब्त किए गए 'अनक्लीयर्ड' बॉन्डिड ट्रेड गुड्स कार्गोज़ यथा स्टील, नॉन फैरस, मशीनरी, बियरिंग्स, यार्न, फाइबर, कैमिकल्स, आयातित/भारतीय वाहन, विभिन्न पेपर्स, इलैक्ट्रॉनिक पार्ट्स एवं बहुत से अन्य आइटम्स इत्यादि इत्यादि का पूर्वा. 11.00 बजे एन.सी.एच. बेल्लार्ड पायर, बम्बई-38 में नीलाम किया जाएगा। कृपया सम्पर्क करें।

कार्यालय आयुक्त बिक्री कर
'एल' ब्लाक, विकास भवन,
नई दिल्ली-2

कृपया ध्यान दें:
समस्त पंजीकृत व्यापारी जिन्हें वर्ष 1991-92 के लिए वैधानिक प्रपत्रों की आवश्यकता है

एक बार पुनः समस्त पंजीकृत व्यापारियों को सूचना दी जाती है कि **वर्ष 1991-92 के लिए समस्त प्रकार के वैधानिक प्रपत्रों को जारी करने की अंतिम तिथि 31 मार्च, सन् 1993 है।**

2. कृपया अपना कम्प्यूटराईज्ड पंजीकरण प्रमाण पत्र सं. सही लिखें। आपकी सेवा करने में हमारी सहायता करें।

आयुक्त: बिक्री कर
दिल्ली

पोस्टरात्मक विज्ञापन

राष्ट्रीय हथकरघा प्रदर्शनी-92

राम़लीला मैदान,
अजमेरी गेट, दिल्ली

यदि रखिए हथकरघा वस्त्र खरीदकर आप:

- ★ **एक बुनकर को रोजी रोटी देते हैं।**
- ★ **पर्यावरण को हरा भरा रखने वाले उत्पाद को सहारा देते हैं।**
- ★ **ऐसे शिल्प को मदद देते हैं जिससे शहरों में दमघुटन और प्रदूषण बढ़ता नहीं, कम होता है।**

UGHI-08/141

सभी राज्यों के हथकरघा वस्त्र यहाँ उपलब्ध हैं।

प्रतिदिन दोपहर 2 बजे से रात्रि 8 बजे तक
शनिवार, रविवार व छुट्टी के दिन
प्रात: 11 बजे से रात्रि 8 बजे तक
18 दिसम्बर 1992 से 16 जनवरी 1993

20% सरकारी छूट

प्रवेश नि:शुल्क

पार्किंग नि:शुल्क

आप स्वयं देखिए इन विज्ञापनों की भाषा कितनी औपचारिक है। पारिभाषिक शब्दों की तो सभी विज्ञापनों में भरमार ही है। निविदा सूचना वाले विज्ञापन के वाक्यों की संरचना देखिए। आपको पढ़कर लगेगा कि इस विज्ञापन की हिंदी की वाक्य रचना हिंदी की संरचना के अनुरूप नहीं है। संरचना वैभिन्य का कारण इस विज्ञापन का अनूदित विज्ञापन होता है। इन सभी सरकारी विज्ञापनों में आम बोलचाल के शब्दों के स्थान पर तकनीकी और पारिभाषिक शब्दों का काफी मात्रा में प्रयोग हुआ है। पोस्टरपरक विज्ञापनों को छोड़ दिया जाए तो शेष सभी प्रकार के विज्ञापनों में वर्गीकृत विज्ञापनों के समान अधूरे वाक्यों का प्रयोग नहीं के बराबर हुआ है। इस प्रकार के विज्ञापनों में पूरी सूचना देना जरूरी होता है अतः अधूरे वाक्यों का प्रयोग नहीं किया जाता है।

26.4.3 प्रतिष्ठावर्धक विज्ञापन

कुछ छोटे-बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठान और कंपनियों या सरकारी विभाग अपने कार्यों व उपलब्धियों का प्रचार करने के लिए इस प्रकार के विज्ञापन प्रकाशित करवाते हैं। इन विज्ञापनों में कोई भी कंपनी उपभोक्ता से केवल अपने उत्पादन खरीदने की अपील नहीं करती वरन् अपने आप-व्यय आदि अपने प्रसार आदि की सूचना देकर सामान्य जनता को अधिकाधिक सूचना देकर अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करती हैं।

जहां कहीं भी हो इस्पात का निशान, वहीं है जिन्दाल का नाम।
और जिन्दाल का दूसरा नाम है नित-नयी खोज। हर दिन
दुनिया में अनोखी उपलब्धियां हासिल की जा सकें।
आज, जिन्दाल देश के सबसे विशाल स्टेनलेस स्टील निर्माता हैं।

टिकाऊपन और मज़बूती का अचूक नुस्खा।

नया अविष्कार। क्योंकि जिन्दाल का अनुसंधान एवं विकास विभाग
दिन-रात नयी-नयी खोजों में जुटा रहता है ताकि इस्पात की

अंतर्राष्ट्रीय क्वालिटी के स्टील में एक अग्रणी नाम। जिस पर
कैमिकल, क्रायोजेनिक्स, पेट्रोलियम, पेपर, फ़ार्मास्युटिकल्स और कंज़्यूमर

उत्पादन उद्योग आंखें बंद करके भरोसा करते हैं... और आप भी।
यही है सही और अचूक नुस्खा... भारतीय उद्योगों के विकास
और जिन्दाल की सतत प्रगति का !

मजबूती इस्पात से भी बढ़कर

दूरदर्शन पर आजकल नील संबंधी एक विज्ञापन नील निर्माता संघ की ओर से प्रसारित किया जा रहा है। यह विज्ञापन की प्रतिष्ठावर्धक विज्ञापन का श्रेणी का है। इस विज्ञापन में सास-बहू का संवाद है।

20.4.4 व्यापारिक विज्ञापन

जनसंचार माध्यमों में जिस प्रकार के विज्ञापनों का सबसे अधिक प्रकाशन या प्रसारण किया जाता है वे हैं — व्यापारिक विज्ञापन। आकाशवाणी व दूरदर्शन पर विज्ञापन प्रसारण प्रारंभ होने के बाद से समाचार-पत्र और पत्रिकाओं में इस तरह के विज्ञापनों की संख्या पहले की अपेक्षा कम हो गई है। इस तरह के विज्ञापनों की भाषा का विश्लेषण इतना विस्तृत एवं व्यापक है कि इसको पूरी तरह से बताने के लिए एक पूरी किताब लिखनी पड़ेगी। आपको इस तरह के विज्ञापनों की भाषा की विशेषताएं बताने से पहले अच्छा यह रहेगा कि इनकी भाषा से आपको परिचित करवा दिया जाए।

डयू पॉन्ट नो-स्टिक® कोटिंग हो तो चिपकने-जलने की फ़िक्र ही क्यों हो!

वो क्या है?

जब कभी आप बिना नो-स्टिक® कोटिंग वाले साधारण तवा, फ्राइंग पैन या सॉस पैन का इस्तेमाल करते है तो अक्सर आपका भोजन बर्तन के तले में चिपक जाता है।

लेकिन दूसरा उपाय क्या है?

डयू पन्टि-नो-स्टिक® कोटिंग के अविष्कारक और विश्व अग्रणी अब आपके लिए भारत में पेश करते है अंतर्राष्ट्रीय क्वालिटी के उत्पादन... एक प्रमाणन योजना के साथ, जो आपको सर्वोत्तम चुनने में मदद करे।

वो कैसे?

अब देखिए डयू पॉन्ट क्वालिटी का प्रमाणित निशान-टैफलॉन® 2. जल्द ही आपके लिए आ रही है सिल्वर स्टोन® कोटिंग भी।

और

और यह कि डयू पॉन्ट नो-स्टिक® कोटिंग में बना खाना सेहतमंद और स्वादिष्ट तो होता ही है... **किफायती** भी है। क्योंकि इसमें कम तेल की जरूरत पड़ती है। (हमारी व्यंजन-विधि आजमाइए)।

यही नहीं, डयू पॉन्ट नो-स्टिक® कुकवेयरी सफाई भी आसान। बस स्पंज और डिटर्जेंट से पोछते ही साफ हो जाए!

लेकिन डयू पॉन्ट प्रमाणित कुकवेयर खरीदें कहां से?

आप किसी भी प्रमुख स्टोर्स से डयू पॉन्ट प्रमाणित टैफलॉन® 2. नो-स्टिक® कुकवेयर खरीद सकते है।

ख) दृश्य श्रव्य माध्यम

अब आप दूरदर्शन से प्रसारित कुक विज्ञापनों की भाषा देखिए:

1) देखो कितना बड़ा बबूल,
   बड़ा बबूल-बड़ा बबूल,
   बड़े बदन वाला बबूल,

   अब किसी भी 200 ग्राम टूथपेस्ट के दामों में कमाल है बबूल 250 ग्राम
   बड़ा बबूल पैसे वसूल
   बबूल टूथपेस्ट

2) वृद्धा : अरे। यह नील फिर ले आई, वह तुम्हारा सिस्टम।

   युवा महिला: फेल हो गया मांजी, जब भी कपड़े धोए, गंदगी तो निकल गई पर नील नहीं लगा, असली चमकंदार सफेदी का मजा ही नहीं आया।

   वृद्धा: ठीक है। चाय कितनी भी बढ़िया हो चीनी के बिना अधूरी है। कोई यह कहे कि बढ़िया चाय में चीनी की जरूरत नहीं तो तुम मान लोगी क्या?

   युवा: चाहे साधारण डिटर्जेंट हो या मँहगा, अब हम घर से नील कभी भी नहीं जाता।

   वृद्धा : अरे वाह।

   (नील निर्माता संघ द्वारा प्रचारित)

UGHI-08/143

3) पुरुष की : अब ताजगी या नया लक्स

आवाज पहले से भी बेहतर
तीन नए रंगों में,
तीन भीनी-भीनी खुशबुओं में,
शुद्ध सौम्य लक्स।

फिल्मस्टार : इसीलिए मुझे पूरा भरोसा है सिर्फ अपने लक्स पर।

ग) श्रव्य माध्यम

दूरदर्शन और आकाशवाणी से प्रसारित विज्ञापन प्रायः समान होते हैं। कभी-कभी केवल चित्रावली का ही अंतर होता है। कभी-कभी परिवेश को ध्वन्यात्मक रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है तो भी अंतर आ जाता है। संगीत गेयता आदि तो दोनों प्रकार के माध्यमों के लिए अनिवार्य सा तत्व होती है। अब आकाशवाणी से प्रसारित कुछ विज्ञापनों की भाषा देखिए।

अपने तीनों प्रकार के माध्यमों के कुछ विज्ञापनों की भाषा के नमूने देखें। अब व्यापारिक विज्ञापनों की भाषा की विशेषताओं की चर्चा की जा रही है। व्यापारिक विज्ञापनों के उद्देश्य-अपने उत्पाद का प्रचार करना, उपभोक्ताओं को अपने उत्पाद व विशेषताओं की जानकारी देना, उपभोक्ताओं को अपने उत्पाद की ओर आकर्षित कर उसे खरीदने को प्रेरित करना होता है। इस कारण से कह सकते हैं कि विज्ञापनों भाषा आम बोलचाल की अन्य प्रकार के भाषा रूपों से कुछ भिन्न होती है। इस तरह की भाषा को हम प्रचारात्मक या उपदेशात्मक भाषा कह सकते हैं। अंग्रेजी में इस तरह की भाषा के लिए "लोडेड लैंग्वेज" पदबंध का प्रयोग किया जाता है। वह भाषा-सरल, स्पष्ट पठनीय, कर्णप्रिय होती हैं, जिन वाक्य संरचनाओं का प्रयोग किया जाता है उनमें निश्चयार्थक और विस्मयादिबोधक वाक्य सर्वाधिक होते हैं। इसकें साथ-साथ प्रश्नोत्तर परक या केवल प्रश्नात्मक वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार की भाषा का उद्देश्य उपभोक्ता की अपने उत्पाद के विषय में राज बदलना (समर्थन में) होता है। पर यह प्रचारात्मक भाषा धार्मिक प्रचार की या राजनैतिक प्रचार की भाषा से भिन्न होती है। यह भाषा कुछ इस प्रकार की होती है कि उपभोक्ता को याद रहती है। व्यापारिक विज्ञापनों में अपने, उत्पादन की दूसरे उत्पादों से तुलना की जाती है व सर्वोच्चता स्थापित की जाती है, इस कारण से इसमें विशेषणों की भरमार रहती है। विशेषणों के साथ-साथ श्रेष्ठ, अति-उत्तम, महा जैसे शब्दों का प्रयोग भी अधिक रहता है।

26.5 विज्ञापनों में भाषा के सहयोगी उपादान

तीनों की प्रकार के जनसंचार माध्यमों में विज्ञापनों को आकर्षक व सुग्राह्य बनाने के लिए कुछ भाषेत्तर उपादानों का भी उपयोग किया जाता है। ये उपादान दो प्रकार के होते हैं : (1) माध्यम विशेष से संबद्ध (2) सार्वभौमिक (अर्थात् सभी माध्यमों में समान रूप से प्रयुक्त होने वाले)। पहले सार्वभौमिक उपादानों की चर्चा करेंगे।

साहित्यिक उपादानों यथा अलंकार, लय, गेयता आदि कुछ ऐसे उपादान हैं जिनका दोनों ही प्रकार के माध्यमों में समान रूप से उपयोग किया जाता है। इनमें आप स्लोगन (नारा), गीत (पुराने फिल्मी गीत) आदि को भी शामिल कर सकते हैं। अन्य सभी उपादान माध्यम आधारित उपादान हैं। पर यहां यह ध्यान रखने योग्य बात है कि दृश्य श्रव्य माध्यम में इन उपादानों के प्रयोग की सर्वाधिक संभावनाएं रहती हैं। सबसे पहले हम दृश्य (मुद्रित) माध्यम को लेंगे।

26.5.1 दृश्य माध्यम (मुद्रित)

मुद्रित माध्यम के सहयोगी उपादान निम्नलिखित प्रकार के हो सकते हैं:

1) वर्तनीगत
2) टाइपगत
3) चित्र प्रयोग
4) रंगों का प्रयोग

वर्तनीगत उपादानों से हमारा अभिप्राय विज्ञापन में — गलत वर्तनी का प्रयोग करने, नयी प्रकार की वर्तनी का प्रयोग करने या किसी वर्ण का उल्टा, आड़ा-तिरछा आदि रखने से हैं। टाइपगत उपादानों

का अर्थ है कि विज्ञापन निर्माता आवश्यकतानुसार मोटे-पतले, आड़े-तिरछे टाइप का प्रयोग करके विज्ञापन को आकर्षक बना सकते हैं। इसी प्रकार वे वाक्यों को नये प्रकार से वृत के रूप में, त्रिभुज के रूप में छाप सकते हैं। जिस पंक्ति को चाहें रेखांकित कर दें, या रिवर्स में छाप दें आदि। इसी प्रकार विज्ञापनदाता उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए रंगीन तारे या बैलून आदि में कई कथन या वाक्य छाप सकता है। चित्र का सहायक उपादान के रूप में प्रयोग करने का लाभ यह होता है कि बहुत सारा अनावश्यक विवरण देने से विज्ञापन निर्माता अपने आपको बचा सकता है, अपने विज्ञापन को प्रभावशाली बना सकता है। वैसे भी यह तो आप जानते ही हैं कि एक चित्र का वर्णन करने के लिए किसी को भी शब्दों की आवश्यकता होती है। चित्र का असर हमारे मस्तिष्क पर पड़ता भी गहरा है। चित्र का प्रयोग करके कोई भी घटना या कार्य घटित रूप में आसानी से दिखाया जा सकता है। अभी-अभी हमने चित्रों के उपयोग की चर्चा की। ये चित्र अगर रंगीन हों तो वातावरण को यथारूप में व्यवस्थित करने में सहायक होते हैं। इसके अलावा विज्ञापन में अनेक रंगों का प्रयोग अनायास ही पाठक को अपनी ओर आकर्षित करने में सहायक होता है। विज्ञापननिर्माता जिस वाक्य को प्रभावशाली ढंग से कहना चाहता है उसे विज्ञापन में प्रयुक्त रंगों से इतर किसी अन्य रंग में छाप देता है। इसी प्रकार उपभोक्ता के समक्ष उत्पाद को उसके वास्तविक रंग रूप में उपस्थित कर सकता है।

26.5.2 श्रव्य माध्यम

श्रव्य माध्यम में लिखित रूप में कुछ भी हमारे सामने नहीं आता अतः इसके सहयोगी उपादान ऐसे हैं जो हमारी श्रवणेंद्रियों के माध्यम से ध्यान आकर्षित करते हैं, बोलचाल की भाषा की अपेक्षा गीत हमें अधिक आकर्षित करते हैं। इसी प्रकार सपाट ढंग से कही गयी बात की अपेक्षा संवाद के रूप में कही गयी बात अधिक आकर्षित करती है। उन्हीं के आधार पर श्रव्य माध्यम के सहयोगी उपकरणों को निम्नलिखित वर्गों में बांट सकते हैं:

1) पात्रानुरूप आवाज, हाव-भाव
2) गेयता — गीत-स्लोगन आदि
3) ध्वन्यात्मक — परिवेश
4) संगीत
5) फिल्मी — पुराने गीत-संवाद, धुनें, या कलाकारों की आवाज

पात्रानुरूप आवाज व आवश्यकतानुसार हाव-भावों का विज्ञापन में प्रयोग करने से वे अधिक आकर्षक और विविधता पूर्ण हो जाते हैं और उपभोक्ताओं के उस विशेष वर्ग को अपनी तरफ आकर्षित करने में सहायक होते हैं। उसी प्रकार यदि विज्ञापन गेय-गीतात्मक होगा या किसी नारे के रूप में उपभोक्ताओं के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है तो वह उसे आसानी से याद हो जाएगा और उसे खरीदारी के समय प्रभावित करेगा। ध्वन्यात्मक परिवेश में कपड़े धोने के साबुन के विज्ञापन के कपड़े पीटने की आवाज या चाय के विज्ञापन में प्याले खनखनाने की आवाज सुनकर उपभोक्ताओं को उस स्थिति में स्वयं को रखकर सोचना पड़ता है। यह परिवेश को उसके मूल रूप में उपस्थित करने में सहायक होता है। इसी प्रकार यदि विज्ञापन में संगीत हो तो वह और भी अधिक आकर्षक बन जाता है। अनेक विज्ञापनों को तो बच्चे बूढ़े सभी उनकी धुन सुनकर ही पहचान जाते हैं।

पिछले कुछ वर्षों से विज्ञापनों में प्रचलित फिल्मी गीतों, धुनों, संवादों आदि का प्रयोग होने लगा है। ये धुन, गीत आदि पुरानी याद ताजा करने के साथ-साथ उपभोक्ता के मन में वस्तु/उत्पाद के प्रति विश्वास भी भर देते हैं।

26.5.3 दृश्य-श्रव्य माध्यम

दृश्य-श्रव्य माध्यम के विज्ञापनों में उक्त सभी उपादानों का प्रयोग तो किया ही जाता है, इसकी सबसे बड़ी खासियत यह होती है कि इसमें परिवेश, वातावरण, पात्र आदि सभी विज्ञापन की आवश्यकता के अनुसार प्रस्तुत किए जा सकते हैं। पर इस सबके अलावा जो इस माध्यम की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें कैमरा तकनीक और ट्रिक्स तथा कंप्यूटर ग्रैफिक्स का बखूबी इस्तेमाल करके आपको आश्चर्य चकित किया जा सकता है। कंप्यूटर ग्रैफिक्स का कमाल दो प्रकार से दिखाया जाता है। एक प्रकार का तो वह है जिसमें आप कंप्यूटर द्वारा बनाए चित्रों का कमाल देखने के साथ-साथ आवाज भी सुन सकते हैं। दूसरा प्रकार वह है जिसका प्रयोग वीडियो फिल्मों में फिल्म के निचले हिस्से में किया जाता है। इस तकनीक से आप फिल्म देखते-देखते व उसके संवाद सुनते-सुनते विज्ञापन भी

देख सकते हैं । यह फिल्म देखने में बाधक होता है या नहीं ये तो शायद आप भी जानते होंगे आदमी को उड़ते दिखाना, कार पूरी बन जाना, मोटरसाइकिल चीता में बदल जाना आदि इन्हीं प्रकार के सहयोग उपादानों के कमाल है।

अभ्यास

1) विज्ञापन का अर्थ क्या है? समझाइए। (पंद्रह पंक्तियों ने उत्तर दीजिए)

2) **विज्ञापन की आवश्यकता क्यों होती है? (दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए)**

3) मुद्रित विज्ञापनों में समय के साथ क्या-क्या परिवर्तन आए है? (दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

4) दृश्य-श्रव्य माध्यमों के विज्ञापनों की विकास यात्रा की चर्चा कीजिए। (पंद्रह पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

5) दृश्य माध्यम के विज्ञापनों किस-किस प्रकार के होते है? (पंद्रह पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

6) व्यापारिक विज्ञापनों के बारे में लिखिए। (पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

7) विज्ञापनों की भाषा की कुछ विशेषताएं बताइए।(पंद्रह पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

26.6 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि:

- विज्ञापनों का प्रयोग जनसंचार माध्यमों में प्रचार के लिए किया जाता है। विज्ञापनों की आवश्यकता इसलिए पड़ी क्योंकि संसार/देश एक छोटा सा शहर या गांव बन गया है, उसके सभी सदस्यों का एक अपनी वस्तुओं या आवश्यकताओं की जानकारी दूसरों तक पहुंचाने के लिए विज्ञापनों की आवश्यकता होती है।
- विज्ञापनों की विकास यात्रा में जनसंचार माध्यमों के विकास का भारी योगदान है। जनसंचार माध्यमों के विकास का परिणाम विज्ञापनों में भी स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता है।
- माध्यम के आधार पर विज्ञापन पर विज्ञापन तीन प्रकार — दृश्य-श्रव्य और दृश्य-श्रव्य प्रकार के होते हैं। विज्ञापनों का वर्गीकरण अन्य आधारों पर भी किया जा सकता है।
- सरकारी विज्ञापनों की हिंदी जटिल होती है।
- भाषा शैली के आधार पर व्यापारिक विज्ञापन तीन प्रकार के होते हैं — सूत्रात्मक/संकेतात्मक शैली वाले, व्याख्यात्मक शैली वाले और मिश्रित शैली वाले विज्ञापन।
- सभी प्रकार के विज्ञापनों भाषेत्तर उपादानों का उपयोग उन्हें आकर्षक एवं सुग्राह्य बनाया जाता है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि विज्ञापनों की भाषा एक अलग प्रकार की भाषा होती है। इस तरह की भाषा को उपदेशात्मक भाषा कहा जा सकता है। इस भाषा का उद्देश्य पाठक को आकर्षित कर उसे अपने विज्ञापित वस्तु को खरीदने या उसका उपयोग करने को प्रेरित करना होता है।

26.7 उपयोगी पुस्तकें

हिंदी विज्ञापनों की भाषा 1986 आशा पांडेय कोकी एंड संस पब्लिसर्स प्रा. लि.

26.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) क) i) √ ii) × iii) × iv) √ v) √
   ख) i) नहीं ii) हाँ iii) नहीं iv) हाँ v) हाँ

2) i) हाँ ii) नहीं iii) हाँ iv) नहीं v) नहीं vi) हाँ
   vii) नहीं viii) नहीं

अभ्यास कार्य के लिए इकाई की सहायता ले सकते हैं।

इकाई 27 संपादन कला

इकाई की रूपरेखा

27.0 उद्देश्य
27.1 प्रस्तावना
27.2 संपादनः अर्थ, प्रकार और दायित्व
  27.2.1 संपादन-अर्थ
  27.2.2 संपादन-प्रकार
  27.2.3 संपादन-दायित्व
27.3 संपादन प्रक्रियाएं
  27.3.1 समाचार वर्गीकरण
  27.3.2 समाचार संक्षिप्तिकरण
  27.3.3 समाचार संश्लेषण
  27.3.4 संवाद छिद्र भरना
  27.3.5 सृजनात्मक संपादन
  27.3.6 कॉपी संपादन
  27.3.7 टेप संपादन
  27.3.8 वीडियो संपादन
  27.3.9 स्क्रिप्ट संपादन
27.4 संपादन तकनीकी पक्ष
  27.4.1 टाइप चयन
  27.4.2 प्रूफरीडिंग
  27.4.3 पृष्ठ सज्जा (मेकअप)
27.5 सारांश
27.6 उपयोगी पुस्तकें
27.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

27.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप बता पाएंगे कि :

- संपादन का अर्थ क्या होता है?
- संपादन कितने प्रकार का होता है?
- संपादन समाचार माध्यमों में किसका दायित्व होता है?
- संपादन प्रक्रियाओं — यथा समाचार वर्गीकरण, संक्षिप्तीकरण, संश्लेषण आदि का अर्थ क्या होता है?
- संपादन से जुड़ी तकनीकी प्रक्रियाओं — टाइप चयन, प्रूफ रीडिंग और सज्जा का अभिप्राय क्या है?

27.1 प्रस्तावना

जनसंचार माध्यमों के इतिहास, विविध रूपों, विविधरूपों की भाषा, समाचार लेखन और विज्ञापनों के विषय में आप पिछली कुछ इकाइयों में पढ़ चुके हैं। संचार माध्यमों में जो भी सामग्री लिखित, मौखिक या दृश्य के रूपों में आपके सामने आती है उस पूरी सामग्री को उस रूप में प्रस्तुत करने में बहुत से व्यक्तियों या कर्मचारियों का सहयोग रहता है। इन कर्मचारियों का मुखिया संपादक होता है तथा ये कर्मचारी उसके संपादक मंडल के सदस्य। इस इकाई में संपादक मंडल से हमारा अभिप्राय किसी भी

माध्यम के लेखा विभाग, प्रसार विभाग आदि को छोड़कर शेष कर्मचारियों से है जो सामग्री के प्रस्तुतीकरण से जुड़े होते है। संपादक की एक छोटी सी भूल कितनी भयंकर होती है अथवा कितनी बड़ी समस्या उत्पन्न कर सकती है इसका आभास आपको नीचे लिखे एक विद्वान विचारक के वक्तव्य से आसानी से हो जाएगा —

"जब डॉक्टर भूल करता है तो वह उसे दफना देता है, जब किसी गैरेज का मालिक भूल करता है तो वह उसे आपके बिल में जोड़ देता है; जब कोई बढ़ई भूल करता है तो वह उसकी आशा के अनुकूल ही होती हैं; जब कोई वकील भूल करता है तो वह वही होती है जिसे वह चाहता था, क्योंकि उसे केस को पुनः नए सिरे से जाँचने का मौका मिलता है, जब कोई न्यायाधीश भूल करता है तो उसकी वह भूल कानून बन जाती है; जब कोई धर्मोपदेशक भूल करता है तो उसे कोई नहीं जानता; किंतु जब कोई संपादक भूल करता है तो संकट प्रारंभ हो जाता है।"

इससे यह तो आपकी समझ में आ ही गया होगा कि संपादन का कार्य किसी भी माध्यम के लिए अत्यधिक आवश्यक है। आपने इकाई 24 पढ़कर यह तो जान ही लिया है कि तीनों प्रकार के माध्यमों में कार्यक्रमों को उन माध्यमों की सीमाओं और विशेषताओं के आधार पर पुनः लिखना या संजोना पड़ता है। यह भी संपादन का एक प्रकार है। इस प्रकार के संजोने के कार्य को लेखन के स्तर पर पुनर्लेखन भी कह दिया जाता है पर वास्तव में यह भी संपादन का ही एक रूप है।

संचार माध्यमों के संदर्भ में जब हम संपादन की चर्चा करते है तो उसके अंतर्गत प्रायः समाचार संपादन की चर्चा ही की जाती है। हमारी इस इकाई का आधार समाचार संपादन ही है परंतु अन्य प्रकार के कार्यक्रमों के संपादन की भी यथा स्थान हम चर्चा करेंगे।

संपादन का अर्थ समझाने के लिए हम कुछ उदाहरणों की सहायता लेंगे आप प्रतिदिन भोजन तो करते ही हैं। आप जो भोजन करते हैं यदि वह आपको बिना पकाए अर्थात् कच्ची दाल कच्ची सब्जियाँ आदि के रूप में दे दिया जाए तो क्या आप उसे खाना पसंद करेंगे? उसी प्रकार जो सामग्री प्रकाशन या प्रचार के लिए आती है वह उस कच्चे भोजन के समान होती है जिसे संपादित करके पाठक या दर्शक या संचार माध्यम के लिए उपयोगी बनाया जाता है। इतना ही नहीं जिस प्रकार सभी व्यक्तियों को सभी प्रकार के भोजन पसंद नहीं होते उसी प्रकार सभी दर्शकों को सभी प्रकार के कार्यक्रम, समाचार आदि पसंद नहीं आते। इनकी ये पसंद या नापसंद समाचार या कार्यक्रम के महत्व को निर्धारित करती है। (वैसे तो आजकल माध्यमों को मिलने वाला पैसा भी इस प्रकार के महत्व को निर्धारित करता है।) उसके आधार पर उनका प्रसारण सयम या प्रकाशन स्थान व दिन आदि तय किया जाता है।

एक दूसरा उदाहरण एक बगीचे का लेते हैं। मान लीजिए आपके घर के पास दो बगीचे हैं। दोनों बगीचों में अनेक तरह के फूल ले हैं, अनेक झूले आदि हैं; पर दोनों बगीचों में एक अंतर है। एक बगीचे में सारे फूल और झूले आदि बड़ी तरतीब से लगे हैं और दूसरे में सभी फूल बिना किसी योजना के इधर-उधर लगे हैं और सारे झूले भी इधर-उधर पड़े हैं। अब आप बताइए आपको कौन सा बगीचा अच्छा लगेगा और आप किस बगीचे में जाना पसंद करेंगे? समाचारपत्र पत्रिकाओं या संचार माध्यमों के विषय में भी यही बात कही जा सकती है। संपादन वास्तव में जनसंचार माध्यम के लिए उसे आकर्षक बनाने का ही कार्य करता है।

27.2 संपादन : अर्थ प्रकार और दायित्व

27.2.1 संपादन अर्थ

संपादन का सामान्य अर्थ है—किसी भी कार्य को पूरा करना, ठीक तरह से पूरा करना, अच्छी तरह से पूरा करना, सुचारू रूप से प्रस्तुत करना आदि। किसी पुस्तक के संदर्भ में संपादन का अर्थ इस पुस्तक को मुद्रणीय/प्रकाशनीय बनाना होता है।

संचार माध्यमों के संदर्भ में जब हम संपादन की चर्चा करते हैं तो उसका संचार माध्यम के अनुरूप अर्थ बदल जाता है। पर इन माध्यमों के संदर्भ में इसका सामान्य अर्थ है संवाददाताओं व लेखकों

से प्राप्त सामग्री को प्रकाशन अथवा प्रसारण योग्य बनाना। प्रत्येक माध्यम के अनुरूप इस प्रक्रिया के अंतर्गत समाहित कुछ कार्य बदल जाते हैं और कुछ कार्य समान रहते हैं। पत्रकारिता संदर्भ कोश के अनुसार इस प्रक्रिया में — "अभीष्ट मुद्रणीय सामग्री का चयन क्रम निर्धारण, मुद्रणानुरूप संशोधन परिमार्जन, साज-सज्जा तथा उसे प्रकाशन योग्य बनाने के लिए अन्य प्रक्रियाएँ आवश्यकता पड़ने पर सामग्री से संबंधित प्रस्तावना, पृष्ठभूमि संबंधी वक्तव्य अथवा टिप्पणी आदि प्रस्तुत करना भी संपादन के अंतर्गत आता है"। इस परिभाषा में पत्रकारिता के केवल मुद्रित स्वरूप को ध्यान में रखा गया है। जब हम संपादन की जनसंचार माध्यमों के संबंध में चर्चा करते हैं तो उसमें लिखित माध्यम के अनुरूप लिखी रचना का श्रव्य यादृश्य श्रव्य माध्यम के अनुरूप लेखन, टेपांकित सामग्री का ध्वन्यांकन तथा वीडियों या सिनेमा की सामग्री का वीडियो संपादन आदि जैसे भी शामिल हो जाते हैं।

इस सबके आधार पर हम कह सकते हैं कि संपादन का अभिप्राय है लेखकों, संवाददाताओं व यदाकदा निर्माताओं आदि से प्राप्त सामग्री को अपने संचार माध्यम में प्रकाशन व प्रसारण के लिए उपयोगी बनाना। यह तो आप इकाई 24 में पढ़ ही चुके हैं कि दृश्य-श्रव्य मध्यमों के लिए फोटोग्राफी का कार्य करने वाले कर्मचारी, अपने-अपने माध्यम के संवाददाता की श्रेणी में आते हैं।

यदि आप इन तीनों प्रकार के संचार माध्यमों के कार्यालयों में सम्पन्न होने वाले संपादन के विषय में सोचे तो आप पाएँगे कि इन तीनों ही माध्यमों में संपादन की सबसे अधिक उपयोगिता समाचारों के संदर्भ में होती है या उन लेखों व कार्यक्रमों के संदर्भ में होती है जिनको माध्यम के तंत्र से जुड़े लोग सम्पन्न करते हैं। रेडियों और दूरदर्शन के उदाहरण से यह कथन और भी अधिक स्पष्ट हो जाएगा। रेडियो व दूरदर्शन के लिए जो विज्ञापन या कार्यक्रम बाहर के निर्माताओं द्वारा बनाकर दिए जाते हैं, उनका रेडियो या दूरदर्शन से प्रसारण मात्र किया जाता है। इनके संपादन संबंधी सभी कार्यों को पहले ही निर्माण संबंधी कार्य करने वाली टीम के सदस्य अपने स्तर पर सम्पन्न करने दूरदर्शन या आकाशवाणी को देते हैं। परंतु दूरदर्शन से प्रसारित होने वाले समाचारों या दूरदर्शन द्वारा निर्मित कार्यक्रमों के संपादन का कार्य विभागीय स्तर पर किया जाता है। यहाँ उल्लेखनीय है कि संपादन का यह कार्य उन कार्यक्रमों के लिए भी नहीं किया जाता जिनका सीधा प्रसारण किया जाता है। सीधे प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की वार्ताओं, साक्षात्कार अथवा आँखों देखा हाल आदि स्क्रिप्ट प्रायः पहले तैयार नहीं होती, अतः ऐसे कार्यक्रमों के लिए संपादन की प्रक्रिया बिल्कुल भी उपयोगी नहीं होती। प्रथम प्रकार के अर्थात् निर्मित रूप में प्राप्त कार्यक्रमों के संदर्भ में संपादन प्रक्रिया की भूमिका उनके चयन व चयन के बाद प्रसारण का समय निर्धारित करने मात्र में होती है?

इसी प्रकार मुद्रित माध्यमों में भी आमंत्रित लेखों के स्तंभकारों द्वारा लिखित स्तंभों आदि के संदर्भ में संपादन की प्रक्रिया का महत्व केवल इस बात में होता है कि उसे किस दिन व किस स्थान, प्रकाशित किया जाए, इसी प्रकार उनके शीर्षक को कितने कॉलम में व किस टाइप में प्रकाशित किया जाए आदि।

अब यह तो आपको समझ में आ गया होगा कि जब संचार माध्यमों में संपादन की चर्चा की जाती है तो उसका केंद्र बिंदु समाचार ही क्यों होते हैं। वैसे यदि आप दूरदर्शन पर समाचार देखते हैं तो आप जानते होंगे कि 15-20 मिनट के समाचारों में प्रायः सभी प्रक्रियाएँ समाहित हो जाती हैं।

"समाचार संपादन का उद्देश्य क्या है?" यदि इस प्रश्न का छोटा सा उत्तर खोजा जाए तो वह यह है — "समाचारों को पाठक दर्शक श्रोता के लिए उपयोगी बनाना।" देखने में तो यह छोटा सा लग रहा है पर इस छोटे से उद्देश्य को पूरा करने के लिए समाचारपत्र अथवा आकाशवाणी अथवा दूरदर्शन के समाचार विभागों में कार्य करने वाले कर्मचारियों को ऐड़ी से चोटी तक का जोर लगाना पड़ता है। समय से टक्कर लेनी पड़ती है और दूरी को बांधना पड़ता है।

समाचार के शीर्षक से लेकर पूरे समाचार को पुनः लिखने से लेकर आपके सम्मुख पहुँचाने तक जितने भी कार्य होते हैं (समाचारपत्रों के विवरण को छोड़कर) उनमें संपादन किसी न किसी तरह उपयोगी होता है।

27.2.2 संपादन-प्रकार

अब आप संपादन का अर्थ अच्छी तरह से जान चुके हैं। संपादन के प्रकारों से भी आपको परिचित करवाते हैं। जैसे तो संपादन का वर्गीकरण कई प्रकार से किया जा सकता है; जैसे (1) माध्यम आधारित

संपादन-दृश्य माध्यम के लिए या श्रव्य माध्यम के लिए। (2) एक ही माध्यम के विभिन्न उपादानों — यथा — मुद्रित माध्यम के संदर्भ में समाचारपत्र संपादन या पत्रिका संपादन आदि तथा दृश्य-श्रव्य माध्यम के संदर्भ में समाचार संपादन या सीरियल या दूरदर्शन नाटक संपादन आदि। यह तो आप जानते ही हैं कि संपादन की प्रक्रिया तीनों माध्यमों के लिए एक सीमा तक ही समान हो सकती है, फिर उसमें माध्यम के अनुरूप परिवर्तन हो जाते हैं। कुछ नयी प्रक्रियाएँ जुड़ जाती हैं और दूसरे माध्यम के लिए उपयोगी न होने के कारण छोड़ दी जाती हैं। उदाहरण के लिए, समाचारपत्र, पत्रिकाओं के लिए यह निर्धारित होगा कि यह समाचार या लेख किस टाइप में प्रकाशित होगा जबकि यह प्रक्रिया श्रव्य-दृश्य माध्यम के लिए अनुपयोगी है।

समाचार संपादन को व्यापक धरातल पर देखें तो इसमें अनेक प्रकार का संपादन निहित होता है। ये प्रकार हैं —

1) समाचार माध्यम की दृष्टि से संपादन
2) समाचार तत्वों की दृष्टि से संपादन
3) समाचार की दृष्टि से संपादन
4) नैतिक संपादन
5) तकनीकी संपादन

उक्त में से तीसरे — *समाचार की दृष्टि से संपादन* के पुनः दो भेद होते हैं जिन्हें

क) विषयगत संपादन, और
ख) भाषागत संपादन कहा जा सकता है।

1) समाचार माध्यम की दृष्टि से संपादन

इकाई क्रमांक 24 में आप यह पढ़ ही चुके हैं कि तीनों प्रकार के माध्यमों में प्रस्तुत समाचारों अथवा अन्य कार्यक्रमों (मुद्रित माध्यम के संदर्भ में कहानी, लेखों आदि की) की अनेक विशेषताएँ अलग-अलग होती हैं। मुद्रित माध्यम में हमे समस्त विवरण लिखित शब्दों के द्वारा व्यक्त करना होता है जबकि श्रव्य माध्यम में हम वर्णन में आए विवरणों को ध्वन्यात्मक रूप में सुनवा सकते हैं और दृश्य-श्रव्य माध्यम में इन विवरणों को वास्तविक रूप में अथवा स्टूडियों में बनावटी ढंग से बनाकर यथा रूप में उपस्थित कर सकते हैं। इस कारण से दृश्य-श्रव्य माध्यम में विवरण को आप पूर्णतः हटा सकते हैं या आवश्यकतानुसार कम कर सकते हैं। इसलिए दृश्य-श्रव्य माध्यम में भाषा का उपयोग अन्य माध्यमों की अपेक्षा थोड़ा कम हो जाता है और तीनों ही माध्यमों में विवरण प्रस्तुत करने का तरीका भी बदल जाता है। इस सबके अलावा प्रत्येक माध्यम की अपनी सीमाएँ, संभावनाएँ और विशिष्टताएँ होती है जिनके अनुरूप संपादन का कार्य करना पड़ता है। इन सभी कार्यों को हम समाचार माध्यम की दृष्टि से संपादन के अंतर्गत समाहित कर सकते हैं। इसमें —

क) समाचार चयन
ख) समाचार क्रम/स्थान निर्धारण
ग) समाचार का समय/आकार निर्धारण
घ) समाचार शैली (माध्यम के अनुरूप) का निर्धारण
ङ) दृश्यात्मक सामग्री/चित्र आदि का निर्धारण
च) समाचार के प्रस्तुतीकरण के स्वरूप का निर्धारण
छ) समाचारपत्र के पृष्ठों की सज्जा

आदि विषयों को समाहित किया जा सकता है। अब हम एक-एक करके इनके विषय में संक्षिप्त चर्चा करेंगे।

क) समाचार चयन: प्रत्येक संचार माध्यम में प्रकाशित प्रसारित होने के लिए प्रतिदिन सैंकड़ों समाचार आते हैं। इन सभी समाचारों को स्थान दे पाना संभव नहीं होता। ऐसी स्थितियों में संपादक मंडल के सदस्यों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे अपने माध्यम की दृष्टि से अथवा समाचार के प्रभाव

अथवा महत्व की दृष्टि से उसे प्रकाशित व प्रसारित करने के लिए चुनें। यदि महत्व और प्रभाव में शक की जरा सी भी गुंजाइश हो तो इसे छोड़ दें। यही कारण है कि आप ऐसे अनेक समाचार अपने समाचार पत्र में पढ़ना पसंद करते हैं जिनको दूरदर्शन या आकाशवाणी से समय की सीमा के कारण संक्षिप्त तौर पर या बिल्कुल ही नहीं देते हैं। यहां यह एक और बात बतानी भी जरूरी है कि अंतिम समय (समाचार प्रसारण के या पत्र मुद्रण के) में कोई महत्वपूर्ण समाचार आ जाने पर संपादक कम महत्वपूर्ण समाचारों पर बेलन फेर देते हैं। बेलन फेरना एक पारिभाषिक शब्द है जिसका अर्थ है छपने या प्रसारित होने वाले समाचार का प्रकाशित प्रसारित न करना।

समाचार के चयन में माध्यम की भूमिका यह होती है कि यदि समाचार दृश्य सामग्री युक्त है तो वह किसी भी माध्यम के लिए उपयोगी हो सकता है पर उसकी सर्वाधिक उपयोगिता दृश्य-श्रव्य माध्यम के लिए होगी।

ख) समाचार स्थान या क्रम निर्धारण : समाचार माध्यमों को प्रसारित व प्रकाशित होने वाले सभी समाचारों को माध्यम की दृष्टि से या उनके महत्व की दृष्टि से एक सुनिश्चित पृष्ठ पर प्रकाशित किया जाता है या एक सुनिश्चित क्रम में प्रसारित किया जाता है। कुछ तरह के समाचारों के लिए पूर्वनिर्धारित मानदंडों का सहारा लिया जाता है, कुछ के महत्व को ध्यान में रखकर इस तरह के मानदंडों को तोड़ दिया जाता है। समाचारपत्रों में प्रत्येक यथा खेल, बाजार, स्थानीय अंतर्राष्ट्रीय आदि तरह के समाचार के लिए एक अथवा अधिक पृष्ठ निश्चित होते हैं। किसी एक विषय से संबद्ध सभी समाचार उसी पृष्ठ विशेष पर प्रकाशित किए जाते हैं। पर किसी अनहोनी के होने पर या कोई महत्वपूर्ण घटना घटने पर उन विषयों के समाचारों के कुछ अंश को प्रथम पृष्ठ पर स्थान दे दिया जाता है और विस्तार विषय से संबंद्ध पृष्ठ पर ही दिया जाता है; यह सब देखना भी संपादन के अंतर्गत आता है। दूरदर्शन व आकाशवाणी आदि में भी समाचारों के प्रस्तुतीकरण का एक सुनिश्चित क्रम है। इस क्रम को तभी तोड़ा जाता है जब किसी विषय से संबंद्ध अत्यधिक महत्वपूर्ण समाचार प्रसारित करना हो या किसी विषय से संबद्ध समाचार उपलब्ध ही न हो।

ग) समाचार का समय अथवा आकार निर्धारण : समाचार माध्यम की दृष्टि से किए जाने वाले संपादन में किसी भी समाचार के प्रसारण के समय की सीमा का या उसके द्वारा घेरे जाने वाले स्थान को नियंत्रित करना भी एक अहम् कार्य है। आकाशवाणी व दूरदर्शन या इन जैसे ही अन्य उपादानों में यह कार्य दो प्रकार से संपन्न किया जा सकता है — 1. तेज गति से समाचार सुनाकर अथवा 2. संक्षिप्तीकरण द्वारा अर्थात् कम समय प्रदान करके। लिखित या मुद्रित माध्यम में यह कार्य संक्षिप्तिकरण व इससे जुड़ी कुछ अन्य प्रक्रियाओं के द्वारा किया जाता है। इन सबकी चर्चा इस इकाई के अगले खंड में की जा रही है।

घ) समाचार माध्यम की दृष्टि से शैली निर्धारण : आपको इकाई 14 में बताया गया था कि प्रत्येक प्रकार के माध्यम के लिए लेखन शैली भिन्न होती है। प्रायः संवाददाताओं से यह एजेंसियों से या प्रेस विज्ञप्तियों द्वारा जो समाचार प्राप्त होते हैं उनका आधार केवल लिखित माध्यम ही होता है। प्रेस विज्ञप्तियों के रूप में प्राप्त समाचार को तो समाचार का रूप भी देना पड़ता है। इसलिए संपादन का कार्य देखने वालों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह यह भी देखें कि संवाददाता आदि से उन्हें जो समाचार प्राप्त हुआ है वह उनके माध्यम द्वारा प्रकाशित होने के उपयुक्त है भी या नहीं। यदि नहीं है तो उसे अपने माध्यम के अनुरूप ढालना या ढलवाना भी संपादन के अंतर्गत आता है।

ङ) चित्रों-दृश्यात्मक सामग्री का निर्धारण : चित्रों व दृश्यात्मक सामग्री का अभिप्राय है चित्र, कार्टून, फोटो फीचर, वीडियो फिल्म आदि। इनका श्रव्य माध्यम के लिए तो उपयोग नहीं है, पर श्रव्य माध्यम में भी यदि आप चाहें तो टेपांकित सामग्री सुनवा सकते हैं। समाचारपत्र के प्रत्येक पृष्ठ पर कौन सा चित्र प्रकाशित किया जाएगा या कोई भी नहीं किया जाएगा? कौन सा कार्टून प्रकाशित करना है आदि का निर्धारण करना भी संपादन के कार्यों के अंतर्गत आता है। इसी प्रकार किस समाचार में चित्र दिखाना है, किस समाचार में वीडियो फिल्म दिखानी है, वीडियो फिल्म के प्रदर्शन के दौरान उसकी आवाज सुनवाई जाएगी या नहीं, उसके साथ समाचारवाचक समाचार पढ़ेगा या नहीं, या वीडियो फिल्म कितने समय तक दिखायी जाएगी। यह सब सोचना भी संपादन के कार्यों में शामिल होता है।

ब) समाचार के प्रस्तुतीकरण का स्वरूप निर्धारण : सभी प्रकार के संचार माध्यमों में समाचार आदि को प्रस्तुत करने का अपना एक सुनिश्चित ढंग होता है, उसका निर्धारण करना भी संपादन के अंतर्गत आता है। पहले हम दृश्य मुद्रित माध्यम को लेते हैं। मुद्रित माध्यम में यह देखा जाता है कि समाचार का शीर्षक, समाचार कितने कॉलम में प्रकाशित होगा टाइप कौन सा होगा, समाचार लंबा है तो एक पृष्ठ पर ही छापना है या शेष सामग्री दूसरे किसी पृष्ठ पर, इस सामग्री का शीर्षक क्या होगा। उन सबसे ऊपर यह सोचना होता है कि प्रथम समाचार द्वितीय समाचार आदि कौन से होंगे। किस समाचार को बॉक्स में छापना है। विज्ञापनों को किस प्रकार से व्यवस्थित करना है, कंपोजिंग के लिए क्या निर्देश देने हैं और उसकी खामियों (प्रूफ रीडिंग) को कैसे दूर करना है आदि कुछ ऐसे कार्य हैं जिनके आधार पर मुद्रित माध्यम में समाचार का स्वरूप निर्धारित होता है। इसके अलावा कुछ प्रक्रियाएँ तो इन सभी माध्यमों के लिए उपयोगी होती हैं।

श्रव्य माध्यमों के संदर्भ में इस प्रक्रिया के अंतर्गत यह देखा जाता है कि किन समाचारों की शीर्ष पंक्तियों को बुलेटिन के प्रारंभ में और अंत में दुहराना है, समाचार के स्रोत का नाम बताना है या नहीं आदि।

दृश्य-श्रव्य माध्यमों में प्रस्तुतीकरण के स्वरूप के निर्धारण का अभिप्राय थोड़ा सा तो आप (ङ) को पढ़कर समझ गए होंगे। वास्तव में इस प्रकार के माध्यम में यह देखना होता है कि शीर्ष पंक्तियों और सारांश में कौन से समाचार सम्मिलित होंगे, किस समाचार के साथ दृश्यात्मक सामग्री होगी, किस समाचार को लिखित रूप में प्रदर्शित करना है, चित्र आदि के प्रदर्शन आदि की अवधि कितनी होगी, समाचार वाचकों के नाम के कैप्शन कब दिखाएँ जाएंगे, आदि।

छ) समाचारपत्र के पृष्ठों की सज्जा : इसका संबंध केवल दृश्य माध्यम (मुद्रित माध्यम) से है शीर्षक (च) के अंतर्गत हमने विज्ञापनों व समाचारों के प्रस्तुतिकरण के संदर्भ में इसकी थोड़ी सी चर्चा की थी। आजकल हम एक ऐसे संसार में जी रहे हैं जिसमें सभी वस्तुओं की महत्ता उनकी बिक्री पर निर्भर होती है। संचार माध्यम भी इसके अपवाद नहीं है। अतः प्रिंट मीडिया अपने को आकर्षित और रंगीन बनाकर अपनी बिक्री बढ़ाने और अन्य प्रतियोगियों से प्रतिस्पर्धा से जुटा रहता है। इस संदर्भ में समाचारपत्र-पत्रिका को रंग बिरंगा बनाकर आकर्षक बना देना ही पर्याप्त नहीं होता बल्कि प्रत्येक पृष्ठ की सज्जा व उसके गेटअप पर भी ध्यान देना पड़ता है। वैसे तो इस कार्य के लिए प्रत्येक बड़े समाचारपत्र-पत्रिका के कार्यालय में एक अलग विभाग भी होता है, पर इस पूरी प्रक्रिया पर ध्यान रखना भी संपादन के अंतर्गत आता है। इसमें प्रत्येक पृष्ठ की सज्जा, समाचार और विज्ञापनों के संदर्भ में तथा पूरे पृष्ठ की पाठक पर अपील को ध्यान में रखा जाता हैं। शीर्षकों के टाइप आकार आदि का चयन, चित्र के स्थान का निर्धारण आदि पत्रिकाओं में इस अपील को ध्यान में रखकर किया जाता है। आजकल कथ्य के साथ-साथ उस कथ्य को प्रस्तुत करने का ढंग भी बिक्री को प्रभावित करता है। इस पक्ष पर सभी पत्र-पत्रिका विशेष बल देते हैं। यह तो आप जानते ही हैं कि रंगीन टी.वी. में जब सभी चित्र रंगीन देखने को मिलते हैं तो पाठक अपेक्षा करता है कि प्रिंट मीडिया में भी उसे वैसी ही सामग्री मिले।

2) समाचार तत्वों की दृष्टि से संपादन

इकाई 25 में आप यह पढ़ चुके है कि समाचार के तीन अंग होते हैं — शीर्षक, आमुख और शरीर और समाचार का लेखन करते समय संवाददाता या समाचार लेखक को यह ध्यान रखना चाहिए कि उसने इन तीनों अंगों में से 6 ककारों में से अधिकाधिक ककारों की व्याख्या या उत्तर प्रस्तुत कर दिया है। समाचार तत्वों की दृष्टि से संपादन करते समय यह देखना होता है कि समाचार के तीनो अंग परस्पर संबद्ध एवं उचित ढंग से समायोजित हैं या नहीं। कहीं इन तीनों में कोई व्यतिक्रम तो नहीं है। यदि है तो उसे ठीक करना संपादन के अंतर्गत आता है। सबसे पहले हम शीर्षक को लेते हैं।

संपादन कार्य करते समय शीर्षक के संदर्भ में यह ध्यान रखना होता है कि शीर्षक आमुख व समाचार से मेल खाता है अथवा नहीं? शीर्षक समाचार के लिए उपयुक्त है अथवा नहीं? (यदि नहीं तो उपयुक्त शीर्षक लिखना)। शीर्षक की लंबाई समाचार के महत्व के अनुरूप है या नहीं? (यदि नहीं तो पुनर्लेखन)। शीर्षक पाठक या दर्शक में समाचार पढ़ने की जिज्ञासा उत्पन्न करता है या नहीं? शीर्षक समाचार विषयक अधिकाधिक जानकारी प्रदान करता है या नहीं? शीर्षक अपने आप में पर्याप्त है या उपशीर्षक की आवश्यकता है? शीर्षक एक कॉलम में छपेगा या एकाधिक कॉलम में, शीर्षक एक पंक्ति में छपेगा या एकाधिक पंक्ति में आदि।

आमुख के संदर्भ में यह देखना होता है — कि आमुख शीर्षक के कथ्य की व्याख्या कर रहा है या नहीं? आमुख की लंबाई बहुत अधिक तो नहीं है। इसकी लंबाई के विषय में मान्यता है कि 30 शब्दों से अधिक नहीं होनी चाहिए। पाठक को समाचार की अधिकांश जानकारी प्रदान कर रहा है अधिकांश ककारों के उत्तर प्रस्तुत कर रहा है या नहीं? ताकि (समयाभाव में पाठक इसे पढ़कर ही काम चला लें) समाचार के शीर्षक और शरीर के मध्य सेतु का कार्य कर रहा है या नहीं? पाठक को शेष समाचार पढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा है या नहीं?

समाचार के शरीर के संदर्भ में जिन तथ्यों का ध्यान रखना होता है, वे हैं — शीर्षक व आमुख को पूर्ण विस्तार यां पूरी व्याख्या प्रदान कर रहा है या नहीं? शीर्षक और आमुख से पाठक के मन में जो जिज्ञासाएं उत्पन्न हुई थी उन्हें शांत कर रहा है अथवा नहीं? 6 ककारों का उत्तर पूरी तरह दिया गया है या नहीं? कथ्य को दुहराया तो नहीं गया है? अनावश्यक विस्तार तो नहीं है? आमुख संबंधी संपादन की विस्तार से चर्चा 29.2.3 में की जाएगी।

6 ककासें के सिद्धांत (अंग्रेजी का 5 W व H का सिद्धांत) के आधार पर संपादन के अंतर्गत यह देखा जाता है कि समाचार के तीनों अंगों में 6 ककारों के सिद्धांतों के अनुरूप सूचनाएँ प्रदान की गई हैं या नहीं? इस सिद्धांत के विषय मे विस्तार से चर्चा इकाई संख्या 25 में की गई है।

3) **समाचार की दृष्टि से संपादन :** संचार माध्यमों के संदर्भ में संपादन का यह रूप/प्रकार सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। जैसा कि आपको पहले भी बताया गया है यह मूलतः दो प्रकार — क. विषयगत और ख. भाषागत होता है। इन दोनों ही भेदों के अंतर्गत अनेक प्रक्रियाएं समाहित होती हैं। इनकी विस्तार से चर्चा की जा रही है।

क) विषयगत संपादन : संपादन के इस प्रकार को कथ्य अथवा भाव का संपादन भी कहा जा सकता है। इसके अंतर्गत यह देखा जाता है कि समाचार में व्यक्त भाव या समाचार के कथ्य के प्रस्तुतीकरण में कोई व्यतिक्रम तो नहीं है। इसके अंतर्गत जिन तथ्यों का ध्यान रखा जाता है वे हैं— **पुनरावृत्त :** समाचार में कोई विवरण एकाधिक बार तो प्रस्तुत नहीं किया गया।

2) **अनावश्यक विवरण :** समाचार में कोई विवरण ऐसा तो नहीं दे दिया गया जिसकी कि समाचार में आवश्यकता न थी। 3. **अप्रत्यक्ष अथवा निजी प्रचार :** समाचार लेखक प्रच्छन रूप से किसी संस्था, व्यक्ति विशेष का अनावश्यक प्रचार तो नहीं कर रहा। 4. **आत्माभिव्यक्ति :** समाचार लेखक ने समाचार में अपनी राय या निजी विचार को व्यक्त नहीं कर दिए। 5. **निंदा/अपमान/दिल्लगी :** समाचार लेखक ने समाचार कुछ ऐसा तो नहीं लिख दिया है जिसमें अपमानजनक या निंदापरक या किसी व्यक्ति आदि का मजाक उड़ाने वाली बातें हों। 6. **लुप्त विवरण :** समाचार लेखक ने जानबूझकर या अनजाने में कुछ विवरण तो नहीं छोड़ दिया। और 7. **लुप्त तथ्य :** समाचार लेखक ने कुछ अत्यावश्यक विवरण छोड़ तो नहीं दिया। विषयगत संपादन की कुछ प्रक्रियाओं की विस्तार से चर्चा इस इकाई के अगले खंड में संक्षिप्तीकरण, संश्लेषण आदि प्रक्रियाओं के अंतर्गत की जाएगी।

ख) भाषागत संपादन : इकाई 24 और इकाई 25 में आप समाचारों की भाषा शैली होनी चाहिए इस तथ्य से परिचित हो चुके हैं। समाचार के भाषागत संपादन के अंतर्गत यही देखा जाता है कि संचार माध्यम से प्रसारित-प्रकाशित होने वाले समाचार की भाषा वास्तव में समाचार की भाषा की विशेषताओं पर खरी उतरती है या नहीं। आपको समझाने के लिए भाषागत संपादन के पुनः तीन भेद किए जा सकते हैं। ये भेद होंगे: 1. शब्दपरक। 2. वाक्यपरक और 3. शैलीपरक।

शब्दपरक संपादन के अंतर्गत यह देखा जाता है कि समाचार में प्रयुक्त वर्तनी शुद्ध है या नहीं तथा यह माध्यम/पत्र की "स्टाइल बुक" के अनुरूप है या नहीं। इस को समझने के लिए दो उदाहरण दिए जा रहे हैं। कुछ समाचारपत्र पत्रिकाओं के पूर्ण विराम (।) के स्थान पर फुल स्टॉप (.) का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार कुछ पत्र-पत्रिकाओं में अर्द्ध पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है जैसे संपादन-सम्पादन आदि। पूरे समाचारपत्र-पत्रिका की वर्तनी की एकरूपता ही उस पत्र की "स्टाइल बुक" का ध्येय होती है। उसमें इस प्रकार के कुछ नियमों का उल्लेख रहता है।

अनेकार्थकता : अनेकार्थकता के अंतर्गत यह देखा जाता है कि समाचार लेखन में जिन शब्दों का प्रयोग किया गया है वे बहुअर्थक (एक से अधिक अर्थ वाले) तो नहीं है। बहुअर्थक शब्दों में यह

संभव होता है कि पाठक समाचार लेखक द्वारा व्यक्त अर्थ के स्थान पर दूसरा अर्थ ग्रहण करके अनर्थ न कर ले। इसी कारण से समाचार में प्रायः बहुअर्थक शब्दों के प्रयोग से प्रायः बचा जाता है।

पुनरावृत्ति के अंतर्गत यह देखा जाता है कि पूरे समाचार में या समाचार के किसी वाक्य आदि में किसी शब्द का बार-बार प्रयोग तो नहीं है। यदि ऐसा होता है तो इसको भी सुधारना होता है, यह संपादन के अंतर्गत आने वाला ही एक कार्य है।

स्थानीयता के अंतर्गत यह देखा जाता है कि समाचार लेखक ने अपने समाचार में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग तो नहीं कर दिया जो स्थानीय दृष्टि से तो महत्वपूर्ण हो पर इन शब्दों से समाचारपत्र के समस्त पाठक परिचित नहीं। ऐसी स्थिति में स्थानीय शब्दों को प्रचलित शब्दों से बदलना पड़ता है।

क्लिष्टता : समाचारपत्रों की बिक्री बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि इन्हें आम आदमी भी पढ़ सके। इसके लिए यह आवश्यक होता है कि इसके समाचारों की भाषा में क्लिष्ट शब्दों के स्थान पर जन सामान्य की शब्दावली का प्रयोग किया जाए। इसी प्रकार समाचार में अप्रचलित शब्दों का भी बहुतायत से प्रयोग नहीं करना चाहिए। इस तरह के प्रयोग निश्चित तौर पर समाचारपत्र की पठनीयता और बिक्री पर प्रश्नचिह्न लगाने वाले होते हैं।

संक्षिप्त शब्द : संचार माध्यमों में समय व स्थान बचाने के लिए लंबे शब्दों के स्थान पर संक्षिप्त शब्दों (एक्रोनिम) का प्रयोग किया जाता है। पर ऐसे शब्दों का प्रयोग करते समय यह सदा ही ध्यान रखना चाहिए कि प्रयुक्त शब्द हमेशा प्रचलित शब्द होने चाहिए। अप्रचलित संक्षिप्त शब्दों का प्रायः प्रयोग नहीं करना चाहिए। यदि ऐसे शब्दों का प्रयोग करना आवश्यक ही हो तो पहली बार प्रयोग करते समय उसका पूरा रूप पहले और संक्षिप्त शब्द कोष्ठक में दे देना चाहिए। संचार माध्यमों की यह एक विशेष प्रवृत्ति होती है कि वे बहुप्रचलित शब्दों के संक्षिप्त शब्दों का निर्माण करते हैं। ऐसे कुछ नाम हैं — जद, भाजपा, वाम दल, वाम मोर्चा आदि।

श्रव्य व दृश्य माध्यमों के संदर्भ में उल्लेखनीय है कि उसमें प्रयुक्त शब्दों को उनकी श्रवण ग्राह्यता की दृष्टि से भी परखना होता है।

वाक्यपरक संपादन

समाचार लेखक प्रायः समाचार लिखते समय यह प्रयास करते हैं कि वे अपने समाचार में अधिकाधिक सामग्री संयोजित कर दें। इस प्रयास में कई बार वे लंबे-लंबे वाक्यों का बहुतायत से प्रयोग कर देते हैं। कई बार वे विरामादि चिह्नों का उपयुक्त स्थान पर प्रयोग करना भूल जाते हैं। कई बार समाचार लिखते समय वे यह भी भूल जाते हैं कि उन्हें समाचार के वाक्यों और पैराग्राफों का परस्पर संयोजन करने के लिए लिंकर्स (योजकों) का प्रयोग करना है। इस भी का ध्यान रखना भी संपादन के अंतर्गत आता है। योजकों के विषय में थोड़ा सा विस्तार करने से आपकी समझ में आ जाएगा कि ये क्या बला है। किसी भी भाषा के सर्वनाम अथवा संज्ञाएँ ही समाचारों के संदर्भ में योजकों का कार्य करती हैं। आप आज जब अपने रेडियो पर समाचार सुने, टी.वी. पर समाचार देखें या समाचारपत्र में समाचार पढ़ें तो इसमें प्रयुक्त संज्ञाओं व सर्वनामों को आपस में जोड़ने का प्रयास कीजिए। मानलीजिए प्रधानमंत्री के किसी वक्तव्य पर आधारित समाचार है तो आप पाएँगे कि उनमें प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव आदि का प्रयोग किया गया है। ये ही वास्तव में उस समाचार के लिंकर्स या योजक हैं।

संचार माध्यमों के लिए मिश्र वाक्यों, लंबे वाक्यों का प्रयोग करना उचित नहीं माना जाता। संपादन करते समय इस तरह के वाक्यों को सरल या आसान वाक्यों में बदल दिया जाता है।

शैलीपरक संपादन शैलीपरक संपादन के दो पहलू हैं: पहला है संचार माध्यम समाचरपत्र की अपनी स्टाइल शीट को ध्यान में रखकर किया गया संपादन तथा दूसरा है समाचार लेखन की शैली को ध्यान में रखकर किया गया संपादन। यह तो आप जान ही गए हैं कि प्रत्येक पत्र पत्रिका की एक स्टाइल शीट होती है, उसका अपना व्यक्तित्व होता है। हिंदी के समाचारपत्रों के संदर्भ में कहें तो कहा जा सकता है कि कोई समाचार पत्र पत्रिका संस्कृत के शब्दों का बहुतायत से प्रयोग करता है कोई पत्र अरबी/फारसी या उर्दू के शब्दों का बहुतायत से प्रयोग करता है, कोई समाचार पत्र जन सामान्य की बोलचाल की भाषा का ध्यान करके उक्त भाषाओं के प्रचलित शब्दों का यथावश्यकता प्रयोग करता है। यह सब कार्य वे अपनी स्टाइल शीट के अनुरूप करते हैं। ये उस समाचारपत्र या पत्रिका विशेष के व्यक्तित्व

का परिचायक होता है। संपादन में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि समाचार लेखक या संवाददाता पत्र के व्यक्तित्व का किसी तरह का अतिक्रमण न करें।

इसी प्रकार समाचार लिखना कहानी या निबंध आदि लिखने से भिन्न है। अतः संपादन के समय यह भी ध्यान रखना होता है कि समाचार समाचार जैसा ही लिखा गया है, कहानी या निबंध की तरह नहीं।

इसके अलावा शैलीगत संपादन के अंतर्गत समाचार के अनुच्छेद गठन को भी देखा जाता है। समाचार के सभी अनुच्छेद परस्पर सही ढंग से सुगठित है या नहीं? यदि उनके परस्पर संगुफन में कोई कमी होती है तो उसे दूर करना भी संपादन के अंतर्गत आता है।

संवाद या समाचार में जो सूचनाएँ दीं गई हैं उनका स्वाभाविक रूप में संयोजन करना भी इसी के अंतर्गत आता है। इसके अलावा आँकड़ों को पाठक या दर्शक के लिए ग्राहय बनाना भी संपादन का एक कार्य है।

4) नैतिक संपादन

नैतिक संपादन से हमारा अभिप्राय नीतिपरक संपादन से है। समाचारपत्र आदि के द्वारा पाठक सदा ही उसके व्यक्तित्व की पहचान करते चलते हैं उसके व्यक्तित्व का परिचायक अधिक माना जाता है। समाचारपत्र में छपे प्रत्येक समाचार का नैतिक दायित्व सम्पादक पर होता है। अतः सम्पादक को चाहिए कि वह समाचारपत्र में छपने वाले समाचार के नैतिक वाले समाचार के नैतिक पत्र की ठीक ढंग से जाँच परख करे और ऐसे करते समय जनहित को अवश्य ध्यान में रखें।

5) तकनीकी संपादन

संपादन से जुड़ी कुछ प्रक्रियाओं के समान ही संपादन के तकनीकी पक्ष से जुड़े विषयों — टाइप चयन, प्रूफ रीडिंग, पृष्ठ मेकअप या सज्जा, आदि की चर्चा इस इकाई के आगामी पृष्ठों में की जाएगी।

27.2.3 संपादन-दायित्व

अन्य संचार माध्यमों की अपेक्षा समाचारपत्रों में स्थान व महत्व दिया जाता है। अन्य माध्यमों में तो समाचार संपादक समाचारों के संपादन के कार्य को सुचारू रूप से देख सकता है अपर समाचारपत्रों में यह कार्य एक बहुत बड़ी टीम करती है। इसे संपादन मंडल कहते हैं। इसमें प्रधान संपादक, उप प्रधान संपादक, स्थानीय संपादक, समाचार संपादक, सहायक संपादक आदि होते हैं। यह पूरी टीम प्रधान संपादक की देखरेख में सारा कार्य करती है। यह सारी टीम कार्यालय में ही कार्य करती है। जहाँ बैठकर यह ठीक कार्य करती है उसे समाचार कक्ष अथवा डेस्क कहा जाता है। समाचारपत्र के संस्करण एकाधिकार स्थान से निकलने पर यह संभव नहीं होता कि प्रधान संपादक उसके सभी संस्करणों को संपादन टीम का हिस्सा बन पाए। ऐसी स्थिति में संपादकीय टीम को दिशा-निर्देश देने का कार्य स्थानीय या कार्यकारी संपादक करता है।

बोध प्रश्न

1) सही कथन के आगे (√) और गलत कथन के आगे (×)का निशान लगाइए।

क) संपादक की छोटी सी भूल भयंकर समस्या उत्पन्न कर सकती है। ( )

ख) संपादक कभी-कभी समाचार का पुनः लेखन भी करता है। ( )

ग) समाचार संपादन का कार्य संवाददाता करता हैं। ( )

घ) चित्रों व दृश्यात्मक सामग्री का चयन भी संपादन में शामिल होता है। ( )

ङ) संपादन तीन प्रकार का होता है। ( )

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

क) समाचार संपादन ..... का दायित्व होता है।

ख) समाचार के वाक्यों को परस्पर जोड़ने में ..... का बहुत महत्व है।

ग) समाचार शरीर संपादन में ..... सिद्धांत का पालन किया जाता है।

घ) समाचारों का क्रम/स्थान निर्धारण उनके ..... के आधार पर।

ङ) जब कोई संपादक भूल करता है तो ..... प्रारंभ हो जाता है।

3) निम्नलिखित वाक्यांशों को पूरा कीजिए।

क) समाचार संपादन का उद्देश्य है — समाचार को .....

ख) समाचार माध्यम की दृष्टि से संपादन में क) ..... ख) ..... प्रक्रियाएँ शामिल हैं।

27.3 संपादन-प्रक्रियाएँ

संपादन के अंतर्गत आने वाले जिन कार्यों की हमने चर्चा की है वे सभी कार्य तथा संपादन कुछ प्रक्रियाओं के द्वारा संपन्न की जाती है ये प्रक्रियाएँ हैं—

1) समाचार वर्गीकरण
2) संक्षिप्तिकरण
3) संश्लेषण
4) संवाद छिद्र भरना
5) सृजनात्मक संपादन
6) कॉपी संपादन
7) टेप संपादन
8) वीडियो संपादन

27.3.1 समाचार वर्गीकरण

संपादन की इस प्रक्रिया की थोड़ी सी चर्चा समाचार क्रमनिर्धारण, स्थान निर्धारण के अंतर्गत की जा चुकी है। इसमें समाचारों का चयन करने के बाद उन्हें उनके महत्व व प्रकार के आधार पर वर्गीकृत कर दिया जाता है। प्रकार के आधार पर वर्गीकरण का अभिप्राय समाचारों को राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, स्थानीय खेल, व्यापार, दुर्घटना आदि के आधार पर वर्गीकृत करना तथा महत्व के आधार वर्गीकरण का अभिप्राय है — अति महत्वपूर्ण, महत्वपूर्ण और साधारण समाचार के रूप में वर्गीकृत करना। यह वर्गीकरण समाचारपत्र के पूरे प्रारूप को स्पष्ट करने में सहायक होता है। इस वर्गीकरण से प्रत्येक समाचार का पृष्ठ प्रारंभिक रूप से तय हो जाता है। समाचारपत्र की सज्जा, मेकअप व कंपोजीटर के लिए यह वर्गीकरण सुविधाजनक रहता है। इसी प्रकार महत्व के आधार पर किए वर्गीकरण से संपादन मंडल के सदस्यों को अचानक आ जाने वाले अति महत्वपूर्ण समाचारों को पत्र में स्थान देने में सुविधा रहती है। वे आसानी से साधारण समाचारों पर बेलन फेर देते हैं।

27.3.2 समाचार संक्षिप्तिकरण

यह समाचार संपादन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया पर विचार करने से पहले यह आवश्यक है कि हम इस प्रश्न पर विचार कर लें कि उसकी आवश्यकता पड़ती ही क्यों है। आजकल हम जिस समाज में जी रहे हैं उनमें जो भी प्रणालियाँ कार्य कर रही हैं उनमें व्यवसाय एक अत्याधिक महत्वपूर्ण प्रणाली बन गया है। हमारे अधिकांश कार्य किसी न किसी न किसी रूप में व्यापार से ही जुड़े हैं। संचार माध्यम दूसरे व्यापारों के प्रचार का साधन तो हैं परंतु वे स्वयं भी एक व्यवसाय बन गए हैं। समाज के व्यवसाय आधारित होने के कारण हम सभी लोग उपभोक्ता बन गए है। जब उपभोक्ता को आकर्षित करना व लुभाना होता है तो निश्चित रूप से अपनी गुणवत्ता के साथ पैकिंग आदि पर भी ध्यान देना होता है। संचार माध्यम अपने उपभोक्ताओं को शब्दों या भाषा के माध्यम से लुभाने का प्रयास करते हैं। यदि एक मिनट के लिए हम इन माध्यमों के मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों को छोड़कर सिर्फ समाचार पर ध्यान दें तो पाएंगे कि प्रत्येक माध्यम कम से कम समय या कम से कम स्थान में अधिक से अधिक जानकारी देना चाहता है। इसके अलावा विज्ञापनों से मिलने वाली अधिकाधिक आय भी इन माध्यमों को प्रेरित करती है कि वे अपने अधिकाधिक समय व स्थान का इस प्रकार से प्रयोग करें कि उससे उनकी (मालिकों की) आय में वृद्धि हो। यह तो हुई माध्यमों की अपनी संक्षिप्तिकरण की व्यक्तिगत आवश्यकता। इसके अलावा उपभोक्ता की दृष्टि से देखें तो पाते हैं कि व्यस्तता भरे इस जीवन

में उसका समय भी बहुत कीमती है। उसकी इच्छा यह रहती है कि कम से कम समय में उसे अधिक से अधिक जानकारी मिल जाए। यही कारण है कि समाचारपत्रों के अनेक व्यस्त पाठक शीर्षक पढ़कर ही समाचारों की जानकारी प्राप्त कर लेते है, उनसे कुछ कम व्यस्त पाठक समाचारों का आमुख भी पढ़ लेते है। जहाँ तक श्रव्य-दृश्य-श्रव्य माध्यमों की बात है उनके पास तो दुनिया भर के समाचारों को सुनाने दिखाने के लिए बहुत कम और सुनिश्चित समय होता है। इस 15-20 मिनट के समय में (जिसमें कि प्रमुख समाचारों के शीर्षक व समाचार सार आदि भी सम्मिलित होते हैं) किसी भी समाचार को दिखा गया एक अतिरिक्त वाक्य दूसरे प्रमुख समाचार के समय को कम कर सकता है। यदि समाचार वाचक की वाचन गति धीमी हो तो पूरे समाचार को बुलैटिन से हटवाने को मजबूर कर सकता है। इस सबसे आपको यह समझ आ गया होगा कि समाचारों को संक्षिप्त करना क्यों आवश्यक होता है। अब यह देखते है कि संक्षिप्तिकरण किया कैसे जाता है।

इस प्रक्रिया में संपादन के दौरान अनावश्यक विवरण को हटा दिया जाता है। बड़े-बड़े वाक्यों को छोटा कर दिया जाता है। अनावश्यक विशेषण आदि हटा दिए जाते है। लंबे शब्दों के स्थान पर संक्षिप्त शब्दों (एक्रोनिम) का प्रयोग किया जाता है। विवरण में यदि पुनरावृत्ति हो तो उसे हटा दिया जाता है। संवाददाता की राय को हटा दिया जाता है। अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग किया जाता है। वाक्यखंडों के स्थान का प्रयोग किया जाता है। समास शैली का प्रयोग किया जाता है पर उस सीमा तक जहाँ तक अर्थ पूरी तरह स्पष्ट हो।

संक्षिप्तिकरण की आवश्यकता और विधि के उपरांत यहाँ यह चर्चा भी अपेक्षित है कि संक्षिप्तिकरण कितना और कैसा होना चाहिए। इसके विषय में कहा जाता है कि समाचार पर कैंची चलाते समय दक्षमाली, दक्ष दर्जी के समान कैंची चलानी चाहिए, या दक्ष सर्जन के समान चाकू का प्रयोग करना चाहिए न कि कीमा बनाने वाले कसाई के समान। संक्षिप्तिकरण के बाद समाचार उस स्कर्ट के समान काम करे जो अपेक्षित से अधिक अथवा कम प्रदर्शन नहीं करती है। अर्थात संक्षिप्त समाचार ऐसा होना चाहिए कि उसमें पूरा विवरण इस प्रकार आ जाना चाहिए कि वह न ज्यादा हो न कम हो। समाचार अधूरा नहीं लगना चाहिए।

समाचार लेखन में आपने पढ़ा होगा कि समाचार (मुद्रित माध्यम के लिए) विलोमसूची शैली में लिखे जाते हैं। विलोमसूची शैली में समाचार लिखने का कारण यह होता है कि आवश्यकता पड़ने पर समाचार को छोटा करने के लिए उसके कम आवश्यक विवरण बिना किसी कठिनाई के हटाया जा सके।

समाचार संक्षिप्तिकरण की इस प्रक्रिया को कटिंग, स्लैशिंग, ट्रिमिंग आदि भी कहा जाता है।

27.3.3 समाचार संश्लेषण

"समाचार संश्लेषण" का प्रयोग अंग्रेजी के **न्यूज कंपाइलिंग** पदबंध के लिए प्रयोग किया जाता है। कई बार ऐसा होता है कि संचार माध्यमों की किसी व्यक्ति से अथवा घटना से जुड़े एक ही समाचार से संबंधित जानकारी एकाधिक सूत्रों से प्राप्त हो जाती है जो भिन्न-भिन्न होती हैं। एक ही व्यक्ति या घटना से जुड़े अनेक समाचार होते हैं, तो समाचार संपादन मंडल के सामने यह समस्या होती है कि इस समस्त सामग्री को एक समाचार के रूप में कैसे ढाला जाए या दूसरी स्थिति में सभी समाचारों को एक ही समाचार में जोड़ दिया जाए या अलग-अलग समाचार के रूप में प्रकाशित किया जाए। इसी प्रकार कुछ समाचार ऐसे होते हैं जिनकी सूचनाएँ समाचारपत्र के मुद्रण के समय भी आ रही होती है तो उसके लिए सीमा निर्धारित करनी होती है कि कितनी सामग्री आज दी जाए। ऐसे समाचारों के परवर्ती प्रकाशन दिवसों में पूर्ववर्ती सामग्री का संकेत अथवा उल्लेख करना आवश्यक हो जाता है। विकासशील समाचार भी ऐसे समाचार होते हैं जिनके संश्लेषण की आवश्यकता होती है। विकासशील समाचार ऐसे समाचार होते हैं जो निरंतर बहुत दिनों तक समाचारपत्रों पर छाए रहते हैं जैसे शेयर घोटाला, अयोध्याकांड, मंडल रिपोर्ट लागू करने के समाचार। इन सभी प्रकार के समाचारों के संदर्भ में संपादक मंडल को समाचार संश्लेषण की आवश्यकता पड़ती है।

अब उदाहरण की सहायता से आप को बताएँगे कि समाचार संश्लेषण होता क्या है? मान लीजिए किसी प्रदेश में बाढ़ आ गई है या अकाल पड़ गया है या भूकंप आ गया है। इन तीनों ही स्थितियों में संवाददाताओं ने मौके पर जाकर समाचारों के लिए सामग्री का संकलन किया। किसी भी संवाददाता के लिए यह संभव नहीं है कि वह पूरे देश में जाकर सामग्री या आँकड़े इक्ट्ठे कर पाए। इस स्थिति

में एकाधिक संवाददाता सामग्री संकलन के लिए जा सकते हैं। या संवाददाता के साथ विभिन्न एजेंसियों से प्राप्त सूचनाओं को संवाददाता से मिली सामग्री के साथ मिलाने की आवश्यकता होगी। तब समाचार संश्लेषण की प्रक्रिया सामने आएगी। दोनों स्रोतों से प्राप्त सामग्री को मिलाकर एक ही समाचार के रूप में संयोजित कर दिया जाएगा।

किसी देश के प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति किसी दूसरे देश की यात्रा पर जाते हैं। यात्रा शुरू करते समय अपने देश के संवाददाताओं के प्रश्नों के उत्तर देते हैं। रास्ते में वे किसी दूसरे देश के हवाई अड्डे पर संवाददाताओं के प्रश्नों के उत्तर देते हैं। गंतव्य पर पहुँचकर उनका भव्य स्वागत होता है। उसके बाद इस देश में भी वे एक भाषण देते हैं। इन चारों ही स्थितियों में प्रधानमंत्री/राष्ट्रपति ने जो कुछ भी कहा था उनकी सूचनाएँ संपादन मंडल (कार्यालय में समाचार लिखने वाले संवाद लेखकों) के सामने हैं। उनके लिए समस्या यह होगी कि वे इन चारों को एक समस्या के रूप में संयोजित करें या अलग-अलग समाचार के रूप में यह कार्य वास्तव में समाचार संश्लेषण के अंतर्गत किया जाता है।

विकासशील समाचारों की पूर्वपीठिका का समावेश करना भी समाचार संश्लेषण के अंतर्गत आता है।

27.3.4 संवाद छिद्र भरना

कई बार संवाददाता की असावधानी के कारण समाचार में कुछ छिद्र या कमियाँ रह जाती हैं। इन छिद्रों को भरना या कमियों को दूर करना भी संपादन के अंतर्गत आता है। समाचार कथा में ये छिद्र तीन प्रकार के होते हैं — (क) लुप्त तथ्य, (ख) लुप्त दृष्टिकोण, और (ग) लुप्त विवरण। इन तीनों से हमारा अभिप्राय क्या है? उदाहरण की सहायता से यह समझाया जा रहा है।

क) लुप्त तथ्य : मान लीजिए किसी कॉलोनी में एक बम विस्फोट हुआ या सड़क पर बस और कार की टक्कर हो गई। संवाददाता ने समाचार तो दिया परंतु जन-धन हानि की चर्चा नहीं की। विस्फोट में या दुर्घटना में कितने व्यक्ति हताहत हुए, अचल संपत्ति की कितनी हुई, कार का कचूमर निकल गया या बस टूट गई यह नहीं बताया। ऐसी स्थिति में संपादक मंडल का यह दायित्व हो जाता है कि वह या तो संवाददाता को पूरा विवरण देने के लिए कहे अन्यथा स्वयं ही इस कार्य को पूरा करे। इस प्रकार का कार्य लुप्त तथ्यों को दूर करना कहलाता है।

ख) लुप्त दृष्टिकोण : कई बार कुछ संवाद ऐसे होते हैं जिनमें विवरण देते हुए एक विशेष प्रकार के नजरिए की आवश्यकता होती है। यदि समाचार में इस प्रकार के विवरण का अभाव हो तो उस दृष्टिकोण की संयोजित करना संपादक मंडल का दायित्व होता है। मान लीजिए किसी पुलिसवाले ने अपना दायित्व कर्त्तव्यपरायणता के साथ निभाया। पर समाचार में उसके कर्तव्य और किए कार्य का विवरण मात्र दे दिया जाए तो यह उस पुलिसवाले के प्रति अन्याय होगा क्योंकि वह पुलिसवाला सहानुभूति या शाबाशी के दो शब्दों की अपेक्षा करता है। इस प्रकार के शब्द समाचार में जोड़ना ही "लुप्त दृष्टिकोण" का संपादन करना कहलाता है।

ग) लुप्त विवरण : कई बार कुछ समाचारों में वर्णित घटना से संबद्ध पूरा विवरण नहीं दिया जाता; इससे पाठक या दर्शक उस पूरे घटनाक्रम से अपरिचित रह जाते हैं। ऐसा विवरण देकर समाचार को पूरा करना भी संवाद छिद्र भरने के अंतर्गत आता है। हड़ताल संबंधी समाचार में हड़ताल के कारणों का अभाव इसका छोटा सा उदाहरण है।

27.3.5 सृजनात्मक संपादन

कई बार समाचार में दिए गए विवरण को सटीक व पूर्ण बनाने के लिए सृजनात्मक संपादन करना पड़ता है। इसे आप उदाहरण की सहायता से आसानी समझ जाएँगे। ऐसे संपादन में संपादक जो अपनी बुद्धि और विवेक से काम लेना पड़ता है। उदाहरण के लिए, एक घटना या व्यक्ति से जुड़े अनेक व्यक्तियों के विचारों/वक्तव्यों के परस्पर संयोजन में तथा एक प्रकार की अनेक घटनाओं को एक समाचार के रूप में संयोजित करने में। ऐसी स्थितियों में शीर्षक-लेखन व आमुख लेखन में भी विवेक का सहारा लेना पड़ता है कि किसी व्यक्ति के वक्तव्य को अथवा घटना को शीर्षक व आमुख का आधार बनाया जाए। ऐसी स्थिति में उसे संवाद लेखन के सिद्धांतों का पालन करना चाहिए। इस तरह का कोई भी कार्य जब संपादक मंडल के सदस्य करते हैं तो वह सृजनात्मक संपादन कहलाता है।

27.3.6 कॉपी संपादन

संवाददाताओं से प्राप्त समाचारों को यथारूप में प्रकाशित न करना हो तो संपादन मंडल के सामने दो स्थितियाँ होती हैं — (क) पूरा समाचार स्वयं लिखें, (ख) संवाददाता से प्राप्त समाचार कॉपी को ही संपादित करके कंपोज करवाने के लिए भिजवा दे। इन दोनों स्थितियों में प्रायः दूसरी प्रक्रिया का सहारा किया जाता है। इसमें प्रेस संशोधन जैसे ही कुछ निश्चित चिह्नों का उपयोग किया जाता है। ये प्रूफरीडर के चिह्नों से प्रायः भिन्न होते हैं। कॉपी संपादन के अंतर्गत नाम, अर्थ, स्थान, पता, आयु, समय तथा शीर्षक, व्याकरण, वर्तनी व उदाहरण आदि से संबद्ध अशुद्धितों को दूर करना संपादन मंडल का दायित्व होता है। इन सबसे अतिरिक्त समाचार में पत्र की रीति-नीति के अनुसार संवाददाता आदि के नाम का उल्लेख करना भी संपादन मंडल का दायित्व होता है।

अशुद्धियों के संशोधन के अलावा समाचार को कंपोज करवाने के लिए निर्देश देने का कार्य भी संपादन मंडल को करना होता है। यह कार्य संपादन मंडल कॉपी एडीटिंग चिह्नों की सहायता से करता है। हिंदी के सार्वभौम चिह्नों के अभाव में अंग्रेजी के चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। यह हैं —

1) bf = "बोल्ड फेस" में कंपोज करो।
2) Lf = "लाइट फेस" में कंपोज करो।
3) Sl = उपशीर्षक लगाओ।
4) dc = डबल कॉलम में कंपोज करो।

कॉपी संपादन के लिए कुछ विशेष निर्देशों का भी कॉपी में प्रयोग किया जाता है:

1) आदेश तक रोकें
2) आवश्यक
3) अधूरा
4) शीर्षक बाद में
5) पृष्ठ निर्देश आदि

"**आदेश तक रोकें**" का अर्थ है आगामी आदेश तक इस समाचार को कंपोज न किया जाए। "**आवश्यक**" का अर्थ है यह महत्वपूर्ण समाचार है पहले इसे कंपोज किया जाए। "**अधूरा**" का अर्थ है कि इस समाचार का विवरण अभी पूरा नहीं है और भी आएगा। "**शीर्ष के बाद में**" का अभिप्राय होता है कि समाचार को कंपोज कर दिया जाए शीर्षक बाद में कंपोज होगा। इसके अलावा समाचारों के पृष्ठ का निर्देश दे देने से कंपोजीटर को यह आसानी रहती है कि वह उस समाचार को उस पृष्ठ विशेष के लिए ही कंपोज करता है।

संपादकीय निर्देश चिह्नों की तालिका दी जा रही है —

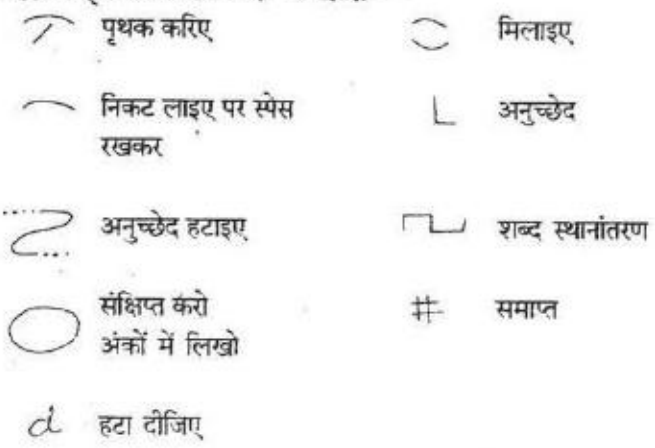

27.3.7 टेप संपादन

अब तक जितनी भी संपादन प्रक्रियाओं की चर्चा की गई हैं उनका संबंध सभी प्रकार के संचार माध्यमों से जोड़ा जा सकता है। अब संपादन के अंतर्गत उन प्रक्रियाओं की चर्चा की जा रही है जिनका संबंध केवल श्रव्य माध्यम या दृश्य-श्रव्य माध्यम से होता है। इन्हें संपादन के तकनीकी पक्ष से भी जोड़ा

जा सकता है। ये प्रक्रियाएँ हैं टेप संपादन और वीडियो संपादन। पहले टेप संपादन की चर्चा की जा रही है।

भारतीय रेडियो के लिए समाचारों के संदर्भ में यह प्रक्रिया अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं क्योंकि भारतीय समाचारों में टेपांकित सामग्री प्रायः नहीं होती। पर साक्षात्कार आदि के प्रसारण में इसका अपना महत्व होता है। किसी भी टेपरिकार्डर पर टेपांकित सामग्री को रेडियो पर यथारूप में प्रस्तुत कर पाना संभव नहीं होता। अतः उसका संपादन करके उसे ठीक करना होता है। उसमें से अनावश्यक विवरण, ध्वनियाँ आदि हटा दी जाती है; जहाँ पर आवाज धीमी होती है उसे तेज कर दिया जाता है और जहाँ आवाज बहुत अधिक तेज होती है उसे धीमा कर दिया जाता है। यदि प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न न सुनवाने हों या लंबे हों तो उन्हें भी संपादन से ठीक बनाया जा सकता है।

संपादन प्रक्रियाओं की प्रारंभिक चर्चा में जिस हमने संक्षिप्तिकरण नाम दिया था वह प्रक्रिया इस प्रक्रिया से मिलती-जुलती हैं।

27.3.8 वीडियो-संपादन

वीडियो संपादन में वे सब प्रक्रियाएँ तो रहती ही है जिनकी चर्चा हमने टेप संपादन में की थी। पर इसमें एक प्रक्रिया और अधिक बढ़ जाती है जिसमें चित्र व आवाज में तालमेल स्थापित करना कहा जाता है। आजकल अन्य क्षेत्रों के समान वीडियो-संपादन में भी कंप्यूटर का उपयोग किया जाता है। कंप्यूटर के उपयोग से वीडियो फिल्म को और भी रोचक बनाया जा सकता है। पर यह मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों के लिए अधिक उपयोगी होता है। कुछ भी हो समाचारों के दूरदर्शन आदि पर प्रसारण के लिए वीडियो संपादन का अपना महत्व होता है। समाचारों के संदर्भ में यह देखना होता है कि कितने समय वीडियो फिल्म और किस प्रकार दिखाई जाएगी यह सब निर्धारित करना भी वीडियो संपादन के अंतर्गत आता है। उसमें यह भी निर्धारित करना होता है कि घटना से जुड़े विवरण से संबंधित किस-किस अंश को समाचार में दिखाना है क्योंकि प्रत्येक घटना या कार्यक्रम की बहुत लंबी वीडियो फिल्म बनायी जाती है जिसमें से अति महत्वपूर्ण अंशों को ही समाचारों का अंग बनाया जाता है।

27.3.9 स्क्रिप्ट संपादन

समाचार संपादन के संदर्भ में आपको यह बताना भी आवश्यक है कि टी.वी. और रेडियो पर प्रसारित करने के लिए जब बुलेटिन लिख लिया जाता है तो उस स्क्रिप्ट के संपादन की आवश्यकता होती है। इस स्क्रिप्ट के संपादन में जिन तथ्यों को ध्यान में रखा जाता है वे इस प्रकार हैं :

1) इन माध्यमों के लिए लिखित माध्यम की अपेक्षा सरल भाषा का प्रयोग होना चाहिए।
2) समाचार की सामन्यतः लंबाई 25 से 40 शब्द तक होनी चाहिए।
3) वाक्य छोटे-छोटे परंतु कृत्रिम नहीं होने चाहिए।
4) समाचार में व्यक्त विचारों में क्रमबद्धता होनी चाहिए।
5) समाचार में सूत्रोल्लेख आवश्यक रूप से होना चाहिए।
6) सामान्यतः विशेषणों व उपाधि नामों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
7) सर्वनामों का बार-बार प्रयोग नहीं करना चाहिए।
8) उद्धरण के बीच-बीच में व्यक्ति का नामोल्लेख आदि होना चाहिए।
9) संख्याओं को सरल बनाकर शब्दों में लिख देना चाहिए ताकि वाचक को पढ़ने में आसानी हो।
10) विरामादि के बाद पर्याप्त स्थान छोड़ना चाहिए।
11) वर्णन के लिए चुने गए शब्दों को श्रवण ग्राह्यता की दृष्टि से परख लेना चाहिए।

बोध प्रश्न

4) हाँ/नहीं में उत्तर दीजिए —

क) संचार माध्यमों और दर्शकों आदि का समय कीमती होता है। (हाँ/नही)

ख) समाचार संश्लेषण में असंबद्ध समाचारों का एक समाचार बना दिया जाता है। (हाँ/नही)

ग) कॉपी संपादन के कुछ विशेष निर्देश होते हैं। (हाँ/नही)

घ) अति आवश्यक समाचार आने परसंपादन साधारण समाचारों पर बेलन फेर देता है। (हाँ/नही)

ङ) संपादक को समाचार पर कसाई के समान चाकू चलना चाहिए। (हाँ/नही)

5) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

क) स्लेशिंग ..... का दूसरा नाम है।

ख) ..... का अर्थ है आगामी आदेश तक समाचार कंपोज न किया जाए।

ग) समाचार माध्यमों में लगातार आने वाले समाचार ..... कहलाते हैं।

27.4 संपादन : तकनीकी पक्ष

तीनों ही प्रकार के संचार माध्यमों में प्रस्तुत होने वाले समाचारों के प्रस्तुतीकरण के कुछ तकनीकी पक्ष भी होते हैं। श्रव्य और दृश्य श्रव्य माध्यमों के कुछ तकनीकी पक्षों की चर्चा पिछले पृष्ठों में की जा चुकी है। अब दृश्य (मुद्रित) माध्यम के तकनीकी पक्षों की चर्चा की जा रही है। इसके अंतर्गत जिन पक्षों की चर्चा की जा रही है वे हैं:

1) टाइप चयन या निर्धारण
2) प्रूफ रीडिंग
3) पृष्ठ (मेकअप)

27.4.1 टाइप चयन

समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रायः समाचारों के आमुख और शरीर के मुद्रण का टाइप पूर्व निर्धारित रहता है। यदा कदा यदि समाचार बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो तो उसके आमुख को या पूरे ही समाचर को भिन्न टाइप में मुद्रित किया जाता है। पर टाइप चयन का वास्तविक महत्व शीर्षकों के प्रकाशन के संदर्भ में होता है। शीर्षकों में अनेक प्रकार के टाइपों का प्रयोग किया जाता है। यह चयन स्वैच्छिक न होकर समाचार और समाचारपत्र की माँग पर आधारित होता है या समाचार के महत्व पर (पाठकों की दृष्टि से)। कुछ समाचार छोटे होने पर भी मोटे या बड़े टाइप वाले शीर्षकों के साथ प्रकाशित करते हैं। कई बार शीर्षक और पूरा समाचार एक ही टाइप में प्रकाशित किया जाता है। समाचार शीर्षक का टाइप जितना मोटा और बड़ा होता है वह समाचार पाठकों की दृष्टि से इतना ही महत्वपूर्ण होता है।

नागरी मुद्राक्षरों में 8 प्वाइंट से 144 प्वाइंट तक के टाइप निर्मित हैं। पर अब कंप्यूटर से प्रकाशन करने वाले को अधिक प्रकार के नये, छोटे पतले मोटे काले तिरछे या सफेद आदि उपलब्ध हैं।

हिंदी समाचारपत्रों में अब कंप्यूटर पेज सेटिंग होने के कारण पतले व छोटे टाइपों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा रहा है। इससे समाचारपत्रों को कुछ अधिक स्थान मिल जाता है। हिंदी समाचार पत्रों पत्रिकाओं में 8-12 प्वाइंट के टाइपों व शीर्षकों में 24 से 60 प्लाइंट के टाइपों का प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी बैनर लाइन शीर्षकों के लिए 144 या 72 प्वाइंट के टाइपों का प्रयोग किया जाता है।

समाचारपत्र पत्रिकाओं में छपने वाले समाचारों व कहानियों आदि के शीर्षकों के टाइप का निर्धारण कर कंपोजीटर को निर्देश देना भी संपादन मंडल के सदस्यों का कार्य होता है। कंप्यूटर सेटिंग में कार्य आसानी से संभव हो जाता है।

27.4.2 प्रूफ रीडिंग

मुद्रित माध्यम (यहाँ तक कि लिखित साइन बोर्ड आदि में भी) में भाषा संबंधी भूलें कई बार अर्थ का अनर्थ तो करती ही हैं साथ ही पाठकों की दृष्टि में इस पत्र अथवा पत्रिका को भी संदेहास्पद बना देती हैं। उसका सम्मान व विश्वसनीयता निश्चित रूप से कम हो जाती है। इन अशुद्धियों को नियंत्रित

करने के लिए समाचार माध्यमों में प्रूफ रीडर नियुक्त किया जाता है। इसका कार्य इस प्रकार की अशुद्धियों का निराकरण करना होता है। समाचार माध्यमों में जिस व्यक्ति को प्रूफरीडर के रूप में नियुक्त किया जाता है। उसमें पत्रकारों की क्षमताएँ होना आवश्यक होता है। यह प्रूफरीडर पत्र की कंपोजीटर द्वारा की गई गलतियों को ही सुधारता है। यदि किसी और प्रकार की गलती हो तो वह कॉपी टिप्पणी के साथ संपादन मंडल को भेज देता है।

प्रूफ का अर्थ है — कंपोज की गई सामग्री की ऐसी छाप जिसका उसकी गलतियों को ढूंढने के लिए प्रयोग किया जाता है। प्रूफ रीडर का कार्य प्रूफ में अशुद्धियाँ ढूँढकर पूर्व निर्धारित चिह्नों की सहायता से उन गलतियों को चिह्नित करना होता है इस प्रक्रिया को प्रूफ पठन (प्रूफरीडिंग) कहा जाता है।

आजकल कंप्यूटर द्वारा सेटिंग होने से प्रूफरीडिंग का कार्य किसी टर्मिनल पर बैठकर ही कर दिया जाता है। यदि आवश्यकता हो तो उसका प्रिंट आउट निकालकर कागज पर भी प्रूफ शोधन किया जा सकता है।

प्रूफरीडर को प्रूफ संशोधन के समय निम्नलिखित तथ्यों का विशेष तौर पर ध्यान रखना चाहिए:

1) आपने मन को प्रूफ पर केंद्रित करके प्रूफ पढ़े तथा यह सोचे बिना कि कंपोजीटर को कठिनाई होगी प्रूफ संशोधन करें।
2) व्याकरण संबंधी भूलों को स्वयं ठीक कर दें व तथ्य/कथ्य संबंधी भूलों के लिए समाचार लेखक या संपादक मंडल से संपर्क करें।
3) प्रूफ साफ न हो तो दूसरा प्रूफ मँगा लें।
4) वर्तनी पुस्तिका (स्टाइल शीट) के अनुसार वर्तनी को एकरूपता प्रदान करें।
5) विराम चिह्नों के प्रयोग तथा तालिकाओं पर विशेष ध्यान दें।

संशोधन चिह्न : प्रूफ रीडिंग के लिए दो प्रकार के चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। ये हैं —

1) अशुद्धि चिह्न (साइन ऑफ एरर) तथा संशोधन चिह्न (साइन ऑफ अमेंडमेंट)। जैसा कि इनके नाम से ही स्पष्ट है अशुद्धि चिह्न वे होते हैं जो कॉपी/समाचार में अशुद्धि की ओर संकेत करते हैं। इनका प्रयोग अशुद्धि स्थल पर किया जाता है। संशोधन चिह्न अशुद्धि के शुद्धि रूप की ओर संकेत किया जाता है और ये कॉपी के बाई और या दायीं और लगाया जाते हैं। इन दोनों प्रकार के संकेतों को मिलाकर कभी-कभी ऐसा किया जाता है कि प्रूफ रीडर अशुद्धि स्थल से एक रेखा खींचता हुआ सुविधानुसार दाएँ या बाएँ हाशिए तक ले जाता है और वहाँ आवश्यक संकेत लगा देता है। इसे प्रूफ रीडर की भाषा में ट्रैकिंग विधि कहा जाता है।

प्रूफ संशोधन में प्रयुक्त होने वाले संकेत चिह्न उदाहरण सहित दिए जा रहे हैं।

- गलत फॉंट, ठीक कीजिए। wf
- तिरछे टाइप में सेट करिए। ital
- लाइट फेस में टाइप कीजिए। lf
- बोल्ड फेस में टाइप कीजिए। bf
- दाहिनी ओर करिए।]
- बांई ओर करिए। [
- अक्षर या शब्द को नीचे कीजिए।
- अक्षर या शब्द को उठाइए। ऊपर कीरिए।
- पंक्ति सीधी कीजिए
- ठीक शब्द बनाइए। tr.
- वृत्त वाले शब्द को यथा स्थान ले जाइए। 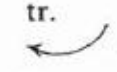
- मिला दीजिए।
- शब्दों के बीच दूरी कम कीजिए।

- शब्दों की दूरी समान कीजिए। eq #
- निकालिए, हटा दीजिए। d
- जैसा है रखिए। बदलो नहीं। stet
- नया अनुच्छेद। ⌐ ¶
- अनुच्छेद नहीं। no paragraph run on
- पूर्ण विराम, कौमा, अर्द्धविराम, विसर्ग, अनुस्वार, चंद्रबिंदु लगाइए। (।) (,) (;) (:) (ं) (ँ)
- एक उदाहरण चिह्न, उदाहरण चिह्न, प्रश्नवाचक चिह्न (प्रश्न), विस्मयादिबोधम चिह्न, डैश लगाइए। ' " ? ! -
- छोटा, बड़ा कोष्ठ लगाइए। (/) [/]
- उल्टा कीजिए। ⟲
- इसे वर्तनी में लिखिए, पूरा शब्द लिखिए। Sb

27.4.3 पृष्ठ सज्जा (मेकअप)

संपादन मंडल के सदस्यों में से एक संपादक निश्चित तौर पर समाचारपत्र के मेकअप का कार्य करता है। जब संपादन मंडल की टीम के अन्य सदस्यों का कार्य समाप्त हो जाता है और पूरी सामग्री (एक या अधिक पृष्ठों की) कंपोज हो जाती है तो सज्जा संपादक क्रियाशील होता है। पहले यह कार्य शीर्षकों और समाचारों की कतरनों को परस्पर संजोकर किया जाता था; आजकल बड़े समाचारपत्रों में यह कार्य कंप्यूटर स्क्रीन पर किया जाता है। सज्जा संपादक प्रत्येक पृष्ठ पर उपलब्ध स्थान (विज्ञापनों आदि के बाद) का अध्ययन करने के पश्चात प्रत्येक समाचार की सामग्री को पृष्ठ के विभिन्न स्थानों पर रखकर देखता है। यदि आवश्यकता हो तो सज्जा संपादक शीर्षक को या समाचार को छोटा या लंबा करता है, अनुच्छेदों को मिला देता है या नये अनुच्छेद बना देता है।

समाचारपत्र-पत्रिका की सज्जा का यह कार्य वास्तव में बहुत ही जटिल या दुष्कर होता है। भारत में प्रायः इस पक्ष पर अधिक ध्यान दिया जाता। वास्तव में जैसे-जैसे समाचार कंपोज होने लगते हैं उनके संमहित आकर प्रकार के आकर पर ही सज्जा का कार्य प्रारभ हो जाता है। सज्जा की तैयारी में समाचार पत्र और पत्रिका के संदर्भ में सबसे पहले सज्जा संपादक को पृष्ठों की संख्या और विज्ञापन द्वारा घिरने वाले स्थान के बाद समाचारों के लिए उपलब्ध स्थान का आकलन करना पड़ता है। प्रत्येक समाचार पत्र में विज्ञापन एक निश्चित समय तक ही स्वीकार किए जाते हैं। अतः इस स्थान का निर्धारण करना अधिक कठिन नहीं होता है। पर इस उपलब्ध स्थान की जानकारी समाचार संपादन से जुड़े सदस्यों को अवश्य ज्ञात होना चाहिए ताकि वे भी समाचारों का संपादन इस उपलब्ध स्थान को ध्यान में रखकर ही करें।

सज्जा के उद्देश्य : समाचारों को क्रमबद्ध करना, समाचार के महत्व के अनुसार शीर्षक के लिए स्थान निर्धारण, समाचारपत्र-पत्रिका के प्रत्येक अंक को आकर्षक बनाकर नए रंग ढंग से प्रस्तुत करना व पत्र-पत्रिका के व्यक्तित्व को उजागर कर लोकप्रिय बनाना, समाचारों आदि को पाठक के लिए बोध-गम्य बनाना व उसे इच्छित समाचार खोजने में सहायता करना आदि है।

वास्तव में प्रत्येक समाचारपत्र का विज्ञापन विभाग सज्जा संपादक को एक "ले आउट शीट" देता है। जिस पर विज्ञापनों के पृष्ठ स्थान और आकार का पूरा विवरण संक्षिप्त किंतु स्पष्ट रूप में दिया होता है। इसके अलावा मेकअप संपादक को संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाली सामग्री व स्थायी स्तंभों में कितना स्थान रखा जाएगा, यह जानकारी पहले से ही होती हैं। इस सबके बाद बचे स्थान को ध्यान में रखकर वह समाचारों के लिए बचे स्थान का निर्धारण करता है। मेकअप संपादक को कुछ दैनिक कार्य भी करने होते हैं। ये कार्य हैं—

समाचारपत्र का नाम, फोलियो, वर्ष, अंक, दिवस, पंजीकरण संख्या, प्रिंट लाइन आदि। इन कार्यों में असावधानी अक्षम्य होती है। उसके अलावा उसे, समाचार शेषांक शीर्षक, समाचार सूची, चित्र परिचय आदि पर भी विशेषरूप से ध्यान देना होता है।

समाचारपत्र-पत्रिकाओं में वह स्थिति हास्यास्पद ही कहलाती है जब चित्र के साथ नाम किसी और व्यक्ति का हो अथवा समाचार शेषांश अपने उल्लिखित स्थान पर न हो या कोई पंक्ति टेढ़ी अथवा टूटी हुई हो।

संपादकीय विभाग द्वारा निर्धारित समाचार पृष्ठ को भी मेकअप संपादक यथावश्यकता बदल सकता है। इसी प्रकार यदि वह चाहे तो उपलब्ध स्थान को ध्यान में रखकर शीर्षक आदि का आकार व. प्रारूप भी बदल लेता है। मेकअप संपादक को शीर्षकों/समाचारों को सजाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि एक ही आकार प्रकार के शीर्षकों को साथ न लगाए, जहाँ पृष्ठ मुड़ता है, वहाँ चित्र अथवा शीर्षक न दें। पृष्ठ के ऊपरी भाग में शीर्षकों की बहुतायत या भीड़ नहीं होनी चाहिए।

सज्जा संपादक को सज्जा का कार्य करते समय पत्र की रीति नीति को भी मुद्दे नजर रखना पड़ता है। पर हम सभी बातों को ध्यान में रखने के बावजूद सज्जा संपादक का कार्य प्रत्येक स्थिति में समाचार पत्र-पत्रिका को पाठकों की दृष्टि से सुदर्शनीय, पठनीय व आकर्षक बनाना होता है।

सज्जा संपादक उक्त सभी कार्यों को पृष्ठ की डमी बनाकर संपन्न करता है। आजकल यह सभी कंप्यूटर पर बनायी जाती है। इसे बनाना अपने आप में एक लंबा चौड़ा विषय है। इस विषय में आप किसी पत्रकारिता की पुस्तक में पढ़ सकते हैं।

किसी भी पत्र-पत्रिका की सज्जा करते समय प्रत्येक पृष्ठ पर दो गई सामग्री परख बिंदु है 1) **संतुलन** : अर्थात् पृष्ठ पर दी गई संपूर्ण सामग्री—चित्र, समाचार शीर्षक समाचार तथा विज्ञापन आदि संतुलित ढंग से प्रस्तुत किए गए हैं या नहीं। इन सबके संतुलन का आधार उनका आकर्ष लगना होता है। 2) **कंट्रास्ट (विभिन्नता)** : अर्थात समाचार शीर्षक या समाचार में ही कम व अधिक महत्वपूर्ण बिंदुओं के कंट्रास्ट। इसके लिए प्रायः भिन्न प्रकार के टाइपों का चयन किया जाता है। साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाओं में तो रूल, बार्डर, डैश आदि के द्वारा भी कंट्रास्ट पैदा किया जाता है। 3) **फोकस बिंदु** : अर्थात पाठक की दृष्टि से समाचारपत्र-पत्रिका व समाचार आदि के केंद्र बिंदु। ये फोकस बिंदु टाइप स्थान निर्धारण द्वारा अथवा भाषा प्रयोग द्वारा अलग किह जाते हैं या उभारे जाते हैं। 4) **गति** : अर्थात पाठक के नेत्रों की समाचार आदि को पढ़ने की गति। और 5) **एकत्व** : अर्थात ऊपर उल्लिखित संतुलन, कंट्रास्ट और गति में समन्वय। इनके समन्वय से प्रत्येक पृष्ठ, प्रभावशाली, आकर्षक एवं पठनीय बन जाता है। किसी पत्र पत्रिका का मेकअप वास्तव में इतना लंबा विषय है कि इसकी चर्चा के लिए कम से कम एक पूरी इकाई की आवश्यकता है। अतः अधिक विस्तार न देकर इसे यहीं छोड़ा जा रहा है।

बोध प्रश्न

अभ्यास

निम्नलिखित विषयों पर 8-10 पंक्तियों को टिप्पणी लिखिए—

1) संपादन का अभिप्राय

.....

.....

.....

.....

2) समाचार तत्वों की दृष्टि से संपादन

.....

.....

.....

.....

3) समाचार माध्यम की दृष्टि से संपादन

.....

.....

.....

.....

4) संपादन दायित्व

.....

.....

.....

.....

5) नैतिक संपादन

.....

.....

.....

.....

6) तकनीकी संपादन

.....

.....

.....

.....

7) समाचार वर्गीकरण

.....

.....

.....

.....

8) समाचार संक्षिप्तीकरण

.....

.....

.....

.....

9) समाचार संश्लेषण

.....

.....

.....

.....

10) संवाद छिद्र भरना

.....

.....

.....

.....

11) कॉपी संपादक

.....

.....

.....

.....

12) स्क्रिप्ट संपादन

.....

.....

.....

.....

13) प्रूफ रीडिंग

.....

.....

.....

.....

14) पृष्ठ सज्जा

.....

.....

.....

.....

27.5 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि —

- संपादन का अर्थ समाचार को पाठक/दर्शक/श्रोता के लिए ग्रहणीय बनाना होता है। समाचार किस रूप में संवाददाता से मिलते हैं उन्हें इसी रूप में समाचार माध्यमों में प्रकाशित/प्रसारित नहीं किया जा सकता।
- संचार माध्यमों में पाँच दृष्टियों से संपादन किया जाता है—समाचार माध्यम को दृष्टि से समाचार तत्वों की दृष्टि से 3. समाचार की दृष्टि से 4. नैतिक दृष्टि से, और 5. तकनीकी दृष्टि से।
- समाचार माध्यम की दृष्टि से संपादन में — समाचार चयन, समाचार क्रम/स्थान निर्धारण आदि पर दृष्टि रहती है।
- समाचार तत्वों की दृष्टि से संपादन में समाचार शीर्षक आमुख और शरीर का 6 ककारों की दृष्टि से संपादन किया जाता है।
- समाचार की दृष्टि से संपादन में विषयगत और भाषागत दुर्बाधता का निवारण किया जाता है।
- नैतिक संपादन में संपादक अपनी, मालिक की व सरकार की नीतियों की दृष्टि से समाचार का संपादन करता है।
- तकनीकी संपादन में समाचारों के प्रस्तुतीकरण के लिए टाइप चयन, शीर्षक प्रकार निर्धारण, समाचार पत्र पत्रिकाओं की सज्जा से संबंधित विषय आते हैं।
- संपादन — संपादक मंडल का सामूहिक दायित्व होता है।
- संपादन के अंतर्गत अनेक प्रक्रियाएँ शामिल शामिल होती हैं जैसे — समाचार वर्गीकरण, संश्लेषण, संवाद छिद्र भरना, सृजनात्मक संपादन, कॉपी संपादन, तथा माध्यम आधारित — टेप संपादन व वीडियो संपादन ।

● प्रूफ रीडिंग व कॉपी संपादन के लिए कुछ विशेष चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

27.6 उपयोगी पुस्तकें

जनमाध्यम और पत्रकारिता, 1983 प्रवीण दीक्षित, भाग-1 सहयोग साहित्य संस्थान, कानपुर।

27.7 बोध प्रश्नों एवं अभ्यास के उत्तर

बोध प्रश्न

1) क) √ ख) √ ग) × घ) √ ङ) ×

2) क) संपादन मुंडल ख) योजक/लिंकर्स ग) 6 ककार
घ) महत्व ङ) संकट

3) क) पाठक/दर्शक/श्रोता के लिए उपयोगी बनाना
ख) पाठ की सहायता लीजिए

4) क) हाँ ख) नहीं ग) हाँ घ) हाँ ङ) नहीं

5) क) समाचार संक्षिप्तिकरण
ख) आदेश तक रोकें
ग) विकासशील समाचार

6) क) नहीं
ख) हाँ
ग) नहीं
घ) हाँ
ङ) नहीं

अभ्यास के लिए इकाई की सहायता ले सकते हैं।

खंड

7

अन्य प्रयुक्तियाँ

इकाई 28
वाणिज्य में हिंदी 5

इकाई 29
बैंकिंग प्रणाली में हिंदी 18

इकाई 30
रक्षा/सेना में हिंदी 31

इकाई 31
विधि/न्याय के क्षेत्र में हिंदी 42

इकाई 32
रेल विभाग में हिंदी 51

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

प्रो. आर.एन. श्रीवास्तव
भाषाविज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-110 007

प्रो. निर्मला जैन
हिंदी विभाग
साउथ दिल्ली कैम्पस
दिल्ली विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. के.सी. भाटिया (सेवा निवृत्त)
लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय
प्रशासन अकादमी
मसूरी-249 179

प्रो. सूरजभान सिंह
अध्यक्ष
वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली
आयोग, वैस्ट ब्लॉक-7,
आर.के. पुरम, नई दिल्ली-110 066

प्रो. यू.एन. सिंह
भाषाविज्ञान विभाग
हैदराबाद विश्वविद्यालय
हैदराबाद-500 134

प्रो. वी.रा. जगन्नाथन
इ.गां.रा.मु.वि., नई दिल्ली

डॉ. मंजु गुप्ता
इ.गां.रा.मु.वि., नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक
प्रो. दिलीप सिंह
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा
हैदराबाद-500 004

(इकाई 28-32)

खंड संयोजक
डॉ. सत्यकाम

संकाय सदस्य
डॉ. गीता रानी पालीवाल
श्रीमती स्मिता चतुर्वेदी
श्रीमती विमल खांडेकर

पाठ्यक्रम संयोजक

डॉ. मंजु गुप्ता
डॉ. सत्यकाम

सचिवालयिक सहायक
श्री नरेश कुमार

गई 1996

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 1994

ISBN-81-7263-712-8

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-68 से प्राप्त की जा सकती है।

UGHI-08/174

खंड परिचय : अन्य प्रयुक्तियाँ

प्रस्तुत खंड इस पाठ्यक्रम का सातवां और अंतिम खंड है। "अन्य प्रयुक्तियों" के तहत इस खंड में वाणिज्य, बैंकिंग, रक्षा-सेना, विधि-न्याय और रेलवे के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग पर विचार किया गया है। ये ऐसे क्षेत्र हैं जिनका संबंध सीधे जनता से है। व्यापार और वाणिज्य का सीधा संबंध जनता और आम आदमी से होता है। बैंक से सब लोगों का वास्ता पड़ता है। रक्षा और सेना में भी हिंदी का प्रयोग सैनिकों को ध्यान में रखकर किया जाता है जो अंग्रेजी नहीं जानते हैं। विधि-न्याय के आदेशों और फैसलों का संबंध भी साधारण जन से होता है। रेलवे तो है ही साधारण जन का वाहन। अत: इन क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग जितना व्यापक होगा हिंदी उतनी ही मजबूत बनेगी। यहाँ हिंदी का प्रयोग जनता के लिए करना होता है अत: सुबोध, सरल और सहज हिंदी का प्रयोग जरूरी होता है।

इस खंड में पाँच इकाइयाँ हैं। इनका विभाजन इस प्रकार किया गया है।

इकाई 28 : वाणिज्य में हिंदी

इकई 29 : बैंकिंग प्रणाली में हिंदी

इकाई 30 : रक्षा/सेना में हिंदी

इकाई 31 : विधि/न्याय के क्षेत्र में हिंदी

इकाई 32 : रेल विभाग में हिंदी।

आइए इन इकाइयों का अध्ययन आरंभ किया जाए।

इकाई 28 वाणिज्य में हिंदी

इकाई की रूपरेखा

28.0 उद्देश्य
28.1 प्रस्तावना
28.2 वाणिज्य के क्षेत्र और भाषा के विविध प्रयोग
28.3 भारत में व्यावसायिक विकास का इतिहास
28.4 भारत में वाणिज्य शिक्षा का विकास
28.5 वाणिज्य का क्षेत्र और हिंदी प्रयोग की संभावनाएं
28.6 वाणिज्य की हिंदी का व्यापक प्रयोग-क्षेत्र
  28.6.1 बैंकिंग
  28.6.2 बीमा
  28.6.3 विपणन
  28.6.4 यातायात और विज्ञापन
  28.6.5 जनसंचार के माध्यम
28.7 सारांश
28.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

28.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई इस पाठ्यक्रम के सातवें और अंतिम खंड की पहली इकाई है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- वाणिज्य क्षेत्र में हिंदी भाषा के प्रयोजनमूलक स्वरूप के विकास की जानकारी दे सकेंगे,
- वाणिज्य के क्षेत्र, कार्य, इतिहास और वाणिज्यिक शिक्षा के प्रसार पर प्रकाश डाल सकेंगे,
- वाणिज्य के विविध क्षेत्रों में प्रयुक्त हिंदी शब्दावली और भाषा संरचना की सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, और
- बीमा, विपणन, विज्ञापन, यातायात आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त हिंदी पर प्रकाश डाल सकेंगे।

28.1 प्रस्तावना

इस इकाई को पढ़ने से पहले आप प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूपों और क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। इस इकाई में हम वाणिज्य के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली प्रयोजनमूलक हिंदी के स्वरूप से आपको परिचित कराने जा रहे हैं।

आज का युग वाणिज्य का युग है। वाणिज्य का संबंध वस्तु के उत्पादन से लेकर उपभोक्ता तक से होता है। आज वाणिज्य में हिंदी का प्रयोग व्यापक पैमाने पर शुरू हो गया है। बैंकिंग, बीमा, विपणन, यातायात, विज्ञापन आदि में हिंदी का प्रयोग काफी प्रचलित है। वाणिज्य से संबद्ध प्रत्येक क्षेत्र में हिंदी भाषा का प्रयोग स्थिर हो चुका है।

इस इकाई में हमने वाणिज्य के व्यापक क्षेत्र और इसमें हिंदी भाषा के उपयोग की संक्षिप्त जानकारी दी है। आइए, हम इस इकाई का अध्ययन आरंभ करें।

28.2 वाणिज्य के क्षेत्र और भाषा के विविध प्रयोग

वाणिज्य का क्षेत्र बहुत व्यापक है। इसके अंतर्गत बेचने और खरीदने के अलावा वे सभी क्षेत्र आते हैं जिनके द्वारा माल या वस्तु उत्पादन से अपने उपभोक्ता तक पहुंचती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वाणिज्य का संबंध वस्तु के उत्पादन से लेकर उपभोक्ता तक से होता है। यह भी कहा जा सकता है कि वाणिज्य का तात्पर्य केवल लेखा जोखा रखना या लेन-देन करना नहीं है। इसीलिए यह हम मान सकते हैं कि वाणिज्य व्यवसाय से कहीं अधिक व्यापक है। इसीलिए कुछ लोग यह मानते हैं कि वाणिज्य की भाषा भी केवल एक स्तर पर नहीं देखी जा सकती।

यहाँ हम लोग पहले वाणिज्य के विस्तृत क्षेत्र को जान लें तब इस क्षेत्र में प्रयुक्त हिंदी भाषा और उसके विविध रूपों को आसानी से और अधिक स्पष्ट ढंग से देख पायेंगे। वास्तव में वाणिज्य के अंतर्गत व्यापार वितरण के समस्त साधन आ जाते हैं। हमें यह समझना चाहिए कि वाणिज्य के क्षेत्र में वितरण सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है। वितरण व्यवस्था के अंतर्गत ही हम बैंकिंग, परिवहन और बीमा आदि को रखते हैं। यदि ये व्यवस्थाएं न हों तो किसी भी उत्पादित वस्तु का विक पाना संभव ही नहीं है और यह तो हम जानते ही हैं कि विक्रय के अभाव में माल का उत्पादन निरर्थक होता है। इस प्रकार वाणिज्य के साधन के रूप में उसके ये वितरण के अंग बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। यह भी ध्यान दीजिए कि इन सभी अंगों में भाषा का वैविध्यपूर्ण प्रयोग मिलता है जिस पर आगे हम लोग उदाहरणों सहित चर्चा करेंगे। इसके पहले आइए वाणिज्य और उसके साधनों को निम्नांकित आरेख द्वारा समझा जाए :

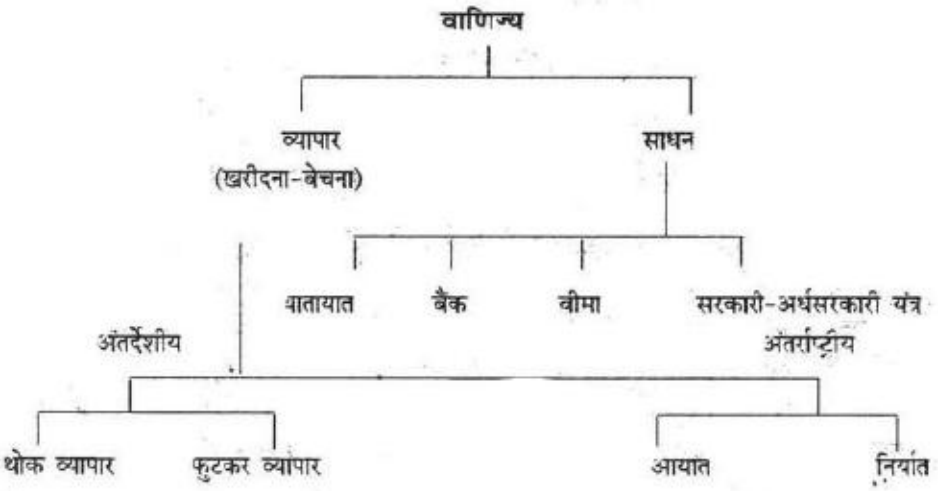

वाणिज्य के इन विविध सहायक अंगों में जिस हिंदी का प्रयोग किया जाता है उसे हम वाणिज्यिक हिंदी या व्यावसायिक हिंदी कह सकते हैं। पहले आप लोगों ने जो इकाइयां देखी हैं उनमें प्रयुक्ति की संकल्पना से आप परिचित हो चुके हैं। प्रयुक्ति की दृष्टि से वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र की हिंदी को हम वाणिज्यिक या व्यावसायिक प्रयुक्ति भी कह सकते हैं।

28.3 भारत में व्यावसायिक विकास का इतिहास

हमें ऐतिहासिक धरातल पर भारत के औद्योगिक विकास तथा व्यावसायिक हिंदी के प्रचार और विकास की स्थिति को देखना चाहिए। यह तो आप जानते हैं कि ब्रिटिश शासन काल में भारत व्यावसायिक दृष्टि से बहुत ही पिछड़ा हुआ देश था। उत्पादन का सारा कार्य ब्रिटेन में होता था और भारत अंग्रेजों के लिए कच्चे माल की एक मंडी बन गया था। यह एक तथ्य है कि कोई भी देश आर्थिक विकास उसी

स्थिति में कर सकता है जब उस देश में औद्योगिक विकास हो। इस दृष्टि से भारत में उसकी परतंत्रता के 200 वर्ष तक आर्थिक और औद्योगिक विकास शोचनीय स्थिति में थे।

कुछ बैंक, परिवहन के साधन या क्रय-विक्रय की जो स्थिति भारत में थी उनके संचालन की भाषा अंग्रेजी ही थी। परतंत्र भारत में प्रशासन, विधि यहाँ तक कि शिक्षा की माध्यम-भाषा अंग्रेजी ही थी जिसे स्वतंत्रता के बाद हमने अपनी भाषाओं से स्थानापन्न करने का प्रयास किया। यह प्रयास वाणिज्य के क्षेत्र में हुआ जब एक निश्चित दिशा में भारत की औद्योगिक प्रगति की ओर ध्यान दिया गया। जैसा कि कहा गया कि अंग्रेजी शासन काल में सारा व्यापार या उत्पादन ब्रिटेन में केंद्रित कर दिया गया था और भारत केवल कच्चा माल पहुंचाने का साधन बन गया था। स्वतंत्रता के बाद एक सुचिन्तित योजना के द्वारा इस स्थिति को मजबूत करने की कोशिश की गई जिसे हम पंचवर्षीय योजना के नाम से जानते हैं। इस योजना में क्रमिक ढंग से व्यापार से उद्योग व्यापार को बढ़ावा मिला जिसके परिणामस्वरूप इन क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग को स्थान मिलने लगा और उसका विकास होने लगा।

आपको यह जानना चाहिए कि पहली पंचवर्षीय योजना की अवधि 1951 से 1956 तक थी। इस योजना में धातु शोधन उद्योग, पेट्रोल शोधन तथा रासायनिक उद्योगों का विकास किया गया। द्वितीय योजना में बड़े उद्योगों को दृष्टि में रखा गया। इसी अवधि में राउरकेला, भिलाई, दुर्गापुर में इस्पात कारखाने स्थापित हुए तथा चितरंजन रेल कारखाने, टाटा आयरन स्टील कंपनी, हिंदुस्तान जलयान कारखाने का भी विकास हुआ। इनके साथ ही अल्युमिनियम, सीमेंट, कोयले की उपलब्धि को भी बढ़ाया गया। इसी प्रकार आगे की पंचवर्षीय योजनाओं में जूट, कपास, चीनी उद्योगों का आधुनिकीकरण कर दिया गया; पेट्रोल, कागज, टायर, इलेक्ट्रॉनिक्स, ट्रेक्टर और भारी विद्युत सामग्री के उत्पादन को बढ़ावा दिया गया तथा आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को लेकर प्रारंभ की गई यह योजना सफल हुई और भारत आज इस्पात, खाद, चीनी, यंत्र निर्माण, औषधि, रेडियो, विद्युत पंखे, साइकिल आदि अनेक उद्योगों में आत्मनिर्भर बन सका है।

इस विकास के कारण ही आज भारत निर्यात की वृद्धि करने और विदेशी मुद्रा अर्जन करने की दिशा में अग्रसर है। इस दृष्टि से लघु और कुटीर उद्योगों की प्रगति की ओर भी ध्यान दिया जा सकता है क्योंकि भारतीय कलात्मक वस्तुएं देश विदेश में लोकप्रियता अर्जित कर रही हैं।

28.4 भारत में वाणिज्य शिक्षा का विकास

जैसे-जैसे भारत का औद्योगिक और व्यावसायिक विकास हुआ वैसे-वैसे भारत में वाणिज्य की शिक्षा की आवश्यकता भी महसूस की गई। यह भी महसूस किया गया कि भारत में वाणिज्यिक शिक्षा का समुचित विकास किया जाए। समुचित विकास से तात्पर्य यह है कि भारत में उत्पादन की, बाजार की, उपभोक्ता की जो आवश्यकताएं या समस्याएं हैं उन्हें दृष्टि में रखकर वाणिज्यिक शिक्षा का ढांचा निर्मित हो सके। कच्चा माल, सस्ते श्रमिक परिवहन, बाजार, बैंकिंग आदि विषय जो इस शिक्षा के अंग हैं उनका समुचित अध्ययन कराते हुए ऐसे लोग तैयार हों जो भारत के औद्योगिक विकास में अपना योगदान दे सकें अर्थात् उनकी दृष्टि भारत की समस्याओं को देखने वाली बन सके। ऐसी स्थिति में कई प्रकार के पाठ्यक्रम वाणिज्य शिक्षा में उपलब्ध कराए गए। माध्यमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक इसके पाठ्यक्रम लागू किए गए। धीरे-धीरे व्यवसाय प्रबंध जैसी संस्थाओं ने उच्चस्तरीय पाठ्यक्रमों के साथ डिप्लोमा कोर्स भी प्रारंभ किए। यह उल्लेखनीय है कि इन सभी स्तरों पर अनेक स्थानों पर अर्थात् भारत के कई राज्यों में इस शिक्षा का माध्यम हिंदी को भी बनाया गया है। अभी हम इस दिशा में कार्य कर रहे हैं कि हर स्तर पर वाणिज्य की शिक्षा व्यावहारिक बन सके। भारतीय संदर्भ में इस शिक्षा को व्यावहारिक बनाने के लिए हमने यह निर्धारित कर दिया है कि हमारी वाणिज्यिक शिक्षा की व्यवस्था भारतीय समाज और संस्कृति के अनुरूप होनी चाहिए और इसके लिए उद्योगों का लाभ तभी सार्थक ढंग से जनसामान्य तक पहुंच सकता है। जब हम ऐसे वाणिज्य स्नातकों को तैयार करें जो यह दृढ़ निश्चय कर के कार्य कर सकें कि वे प्रबंध व्यवस्था को भारतीय परिस्थिति के योग्य बनाएंगे और यह प्रमाणित करेंगे कि व्यावसायिक शिक्षा का उद्देश्य उद्योग व्यापार को अधिक लाभ कमाने की तकनीक बताने तक ही नहीं सीमित होना चाहिए बल्कि यह होना चाहिए कि उससे उद्योग, देश और समाज की जरूरतें पूरी कर

सकें। इस प्रकार की शिक्षा से अधिक से अधिक लोग लाभ ले सकेंगे क्योंकि वाणिज्य का क्षेत्र शहर से गांव तक विस्तृत है। तो यह जरूरी है कि वाणिज्य शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी भाषा को स्थान मिले। ऐसा अनेक क्षेत्रों में कई दृष्टियों से हो भी रहा है।

28.5 वाणिज्य का क्षेत्र और हिंदी प्रयोग की संभावनाएं

वाणिज्य ही नहीं बल्कि व्यवहार के कई ऐसे क्षेत्र आज देखने में आ रहे हैं जहां अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी के प्रयोग की उत्तरोत्तर मांग की जा रही है। ऐसा होने का एक कारण साक्षरता और शिक्षा का प्रचार-प्रसार है। चाहे हम अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा की ओर कितना भी आकर्षित क्यों न हों लेकिन यह सच्चाई है कि अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा का लाभ महानगरों और कुछ बड़े नगरों तक ही सीमित है। गांव व कस्बों की अधिकांश जनता अपनी मातृभाषाओं के माध्यम से ही शिक्षा प्राप्त कर रही है। इनमें भी हिंदी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या बहुत बड़ी है। अत: ऐसे लोग हिंदी भाषा में ही अपना काम-काज करना चाहेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं। इसके साथ ही पिछले कुछ वर्षों में कई क्षेत्रों को व्यापक संदर्भ मिला है। उदाहरण के लिए व्यापार-वाणिज्य क्षेत्र को ही देखें तो कई घटनाएं इस बात की ओर संकेत दे रही हैं कि इस क्षेत्र को विस्तृत बनाकर जनता तक खींच लाया गया है जैसे बैंकों का राष्ट्रीयकरण, लघु, कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन, बहुराष्ट्रीय उत्पादनों को बढ़ावा, अंतर्क्षेत्रीय संदर्भों में गत्यात्मकता आदि। यह तो स्वाभाविक ही है कि जब कोई क्षेत्र जनता तक अपना विस्तार करना चाहता है तो उसे जनता की भाषा को अपने काम-काज में अपनाना ही पड़ता है।

वाणिज्य के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग की मांग बढ़ने या उसके प्रयोग की संभावनाओं का विकास होने का एक प्रमुख कारण यह भी है कि विज्ञान के विकास के कारण क्षेत्रीय महत्व के स्थान पर सर्वदेशीय महत्व को प्रतिष्ठा मिल रही है। इसीलिए कलकत्ता, बंबई, मद्रास जैसे महानगर विशाल भारत के लघु-संस्करण बन गए हैं। इसका कारण औद्योगिक विकास है। सुदूर दक्षिण का निवासी उत्तर भारत के कारखाने में सेवारत है। दुर्गापुर, बोकारो, भिलाई, राउरकेला जैसे औद्योगिक केंद्रों का स्वरूप प्रदेश की सीमाओं से मुक्त होकर सर्वभारतीय प्रकृति धारण कर चुका है। यहाँ विभिन्न भाषा-भाषी समुदाय के लोग एक स्थान पर रहते हैं और ये सभी संप्रेषणीयता की माध्यम-भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग करते हैं। अंग्रेजी का प्रयोग कुछ इने-गुने शीर्षस्थ अधिकारियों तक ही सीमित हो गया है। यह स्थिति धीरे-धीरे उन सभी नगरों में बढ़ रही है जो औद्योगिक विकास की ओर अग्रसर हैं. इन्हें ही हम सर्वजातीय नगर (कॉस्मोपालिटन सिटी) कहते हैं। इस प्रकार के उद्योगों में कार्य करने वाले आम कर्मचारियों के बीच हिंदी या क्षेत्रीय बोलियां ही प्रचलित रहती हैं। इसलिए व्यापारियों तथा व्यवसायियों के लिए भी हिंदी का प्रयोग सुविधाजनक और आवश्यक बन गया है। भारत का कोई भी व्यापारी आज हिंदी की उपेक्षा नहीं कर सकता क्योंकि उसके कर्मचारी हिंदी बोलते हैं और उसके ग्राहक हिंदी समझ लेते हैं चाहे वे कोचीन, विशाखापट्टनम के हों, बंगलोर, कलकत्ता के हों या गोहाटी, एटानगर के।

अन्य सुविधाओं के बढ़ने से भी वाणिज्य के क्षेत्र में हिंदी के प्रसार को बढ़ावा मिला है और उसके प्रयोग की संभावनाएं बढ़ती जा रही हैं। जैसा कि हम जानते ही हैं अंग्रेजी शासन काल में वाणिज्य शिक्षा का एकमात्र माध्यम अंग्रेजी भाषा ही थी। तब भारतीय भाषाओं में वाणिज्य संबंधी पुस्तकों का अभाव था और अध्ययन-अध्यापन की सुविधा भी नहीं थी। परंतु अब ऐसी स्थिति नहीं है। अध्ययन-अध्यापन और पुस्तकों की सुविधा के साथ ही टंकण, मुद्रण, डाक-तार सेवा, बैंक सेवा जैसी सुविधाएं भी हिंदी के माध्यम से पूरे भारत में उपलब्ध हैं। सरकारी और गैर-सरकारी प्रयत्नों से हिंदी में वाणिज्य संबंधी अच्छी से अच्छी पुस्तकें लिखी या अनूदित की जा रही हैं। समस्त व्यावसायिक तथा वाणिज्यिक शब्दावली के हिंदी रूपों का निर्माण हो चुका है। अत: आज यह नहीं कहा जा सकता कि हिंदी में वाणिज्य की शिक्षा के लिए उपयुक्त सामग्री या शिक्षण सुविधाओं का अभाव है। भारत के अधिकांश विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में हिंदी के माध्यम से वाणिज्य शिक्षा स्नातकोत्तर स्तर तक दी जा रही है।

जहां तक वाणिज्य-जगत में हिंदी के अल्प-प्रयोग को लेकर चिंता व्यक्त करने का प्रश्न है तो यह कहा जा सकता है कि कुछ औद्योगिक प्रतिष्ठान अभी भी अपने कारोबार में अंग्रेजी का ही प्रयोग करते हैं।

लेकिन इसका कारण हिंदी के प्रति उदासीनता या अंग्रेजी के प्रति अतिरिक्त मोह नहीं है। इसका कारण हिंदी में प्रशिक्षित कुशल कर्मचारियों का अभाव है। इसके समाधान के लिए वाणिज्य और व्यवसाय प्रबंध की शिक्षा का माध्यम देश भर में हिंदी को बनाकर किया जा रहा है। यह तो साफ तौर पर देखा जा सकता है कि अपने कारोबार में अंग्रेजी का प्रयोग करने वाले उद्योग भी जब जनता तक पहुंचना चाहते हैं तो वे हिंदी का प्रयोग करते ही हैं। आपने देखा ही होगा कि बड़े से बड़ा उत्पादक भी अपने विज्ञापन हिंदी में अवश्य देता है। जहां तक सरकारी प्रयत्नों का सवाल है, इस दिशा में कई योजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं। उद्योग मंत्रालय, कपड़ा मंत्रालय जैसे वाणिज्य व्यापार से संबद्ध मंत्रालय हिंदी के कार्यान्वयन को निरंतर प्रोत्साहित करते हैं। भारत सरकार का प्रकाशन विभाग वाणिज्य-व्यापार के क्षेत्र को केंद्र में रखकर किए जाने वाले मौलिक लेखन को प्रोत्साहित एवं पुरस्कृत करता है। शिक्षा मंत्रालय द्वारा गठित "वैज्ञानिक और शब्दावली आयोग" अन्य क्षेत्रों की शब्दावली के साथ-साथ वाणिज्यिक शब्दों पर भी अनुसंधान और उनका निर्माण कर रहा है। इस तरह वाणिज्य-व्यापार के क्षेत्र में हिंदी प्रयोग की संभावनाएं क्रमशः बढ़ी है और निरंतर बढ़ती जा रही हैं।

बोध प्रश्न

1. वाणिज्य के क्षेत्र पर प्रकाश डालिए। (दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

2. परतंत्र भारत में क्रय-विक्रय के संचालन की भाषा अंग्रेजी क्यों थी? (पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

3. वाणिज्य के क्षेत्र में हिंदी प्रयोग की संभावनाएं कैसे बढ़ी हैं? (पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

4. निम्नलिखित कथनों के सामने के कोष्ठक में सही (√) या गलत (×) का निशान लगाइए।

क) अंग्रेजों के शासनकाल में वाणिज्य में हिंदी का व्यापक प्रयोग होता था। ☐

ख) भारत के कई राज्यों में वाणिज्य शिक्षा का माध्यम हिंदी है। ☐

ग) वाणिज्य के फैलाव के लिए इस क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग जरूरी है। ☐

घ) शीर्षस्थ अधिकारीगण प्रायः हिंदी का प्रयोग करते हैं। ☐

ङ) हिंदी माध्यम में वाणिज्य संबंधी पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। ☐

च) वस्तुओं को आम जनता तक पहुंचाने के लिए आज वाणिज्य में हिंदी का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है। ☐

28.6 वाणिज्य की हिंदी का व्यापक प्रयोग-क्षेत्र

28.6.1 बैंकिंग

वाणिज्य के क्षेत्र की चर्चा इस इकाई के प्रारंभ में की गई है। आधुनिक वाणिज्यिक प्रसार में बैंकों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। बैंकों में हिंदी के संदर्भ में इकाई 29 में विस्तार से आप पढ़ेंगे। यहां केवल यह बता देना आवश्यक है कि वाणिज्य के विकास में आजकल अनेक प्रकार के बैंक अपना योगदान दे रहे हैं। इनमें व्यापारिक बैंक, औद्योगिक बैंक, विनिमय बैंक, भू-विकास बैंक, सहकारी बैंक प्रमुख हैं। यह तो आप जानते ही हैं कि बैंकों का प्रमुख कार्य रुपया उधार लेना या जमा करना, रुपया उधर देना, मुद्रा बदलना, देश के व्यापार में आर्थिक सहायता देना होता है। इन कार्यों को संपन्न करने के लिए बैंक कई प्रणालियां अपनाते हैं। इन प्रणालियों के अंतर्गत ही बैंक विभिन्न प्रकार के खातों की सुविधा अपने ग्राहकों को प्रदान करते हैं। इन खातों में बचत खाता, मुद्दती जमा चालू खाता, आदि प्रमुख हैं। इन खातों के परिचालन के लिए बैंक जमा पर्ची, आदेश पत्र, चैक, प्रपत्रों के अंग्रेजी-हिंदी द्विभाषिक रूप या स्वतंत्र रूप से हिंदी स्वरूप भी उपलब्ध हैं। इनके नमूने आप किसी भी बैंक में देख सकते हैं और इनमें प्रयुक्त हिंदी के स्वरूप को समझ सकते हैं।

इसके साथ ही अपनी नई योजनाओं को जनता तक पहुंचाने के लिए बैंक जिस प्रचार-सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं उनके हिंदी प्रारूप भी देखे जा सकते हैं। आपने देखा होगा कि कई बैंक अब अपनी योजनाओं के प्रचार के लिए पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी में विज्ञापन भी देने लगे हैं। ग्राहकों के खाते से संबंधित परिचालनों के विषय में हिंदी में पत्र-व्यवहार भी बैंकों में बढ़ा है जिसके प्रारूप सभी बैंकों द्वारा प्रकाशित "हिंदी पत्र-व्यवहार" नामक पुस्तिका में हम देख सकते हैं। बैंकों के बाद वाणिज्य के क्षेत्र का जो सबसे प्रबल, उपयोगी और सर्वप्रचलित पक्ष है उसे हम लेखाक्रम और बही खाता (accounting and book keeping) के नाम से जानते हैं। बैंक सहित किसी भी व्यापारिक गतिविधि के लिए ये दोनों पक्ष अनिवार्य हैं। लेखाक्रम को व्यापार संबंधी एक कला माना जाता है। इसके द्वारा पैसे से संबद्ध लेन-देन एवं घटनाओं को मुद्रा में लिखा जाता है और इन्हें वर्गीकृत तथा संक्षेपीकृत करके उनके परिणामों से निष्कर्ष निकाले जाते हैं। परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकालने का तात्पर्य है यह पता लगाना कि एक निश्चित अवधि में लेन-देन से लाभ हुआ है या हानि और कितना लाभ हुआ है या कितनी हानि। लाभ-हानि की स्थिति के साथ ही लेखाक्रम प्रणाली द्वारा यह भी देखा जाता है कि एक निश्चित समय में व्यापार की वित्तीय स्थिति कैसी है। इस स्थिति को जानने के लिए एक विवरण तैयार किया जाता है जिसे स्थिति विवरण (balance sheet या position statement) कहते हैं। इसमें व्यापार की संपत्ति (assets), देयधन (liabilities) और पूंजी (capital) दिखाई जाती है। इससे व्यापारी को अनेक वाणिज्यिक सूचनाएं प्राप्त होती हैं। इन प्रणालियों में अब हिंदी का प्रयोग पूरी तरह होने लगा है। आपकी जानकारी के लिए स्थिति विवरण का हिंदी प्रारूप यहां दिया जा रहा है।

स्थिति विवरण
फर्म का नाम
15 सितंबर, 1991 को

(पूंजी तथा देयधन जो दिया नहीं गया है)	रु.	संपत्तियां	रु.
पूंजी	2,95,500	रोकड़ शेष धन	10,500
लेनदार (माल	1,00,000	बैंक में शेष धन	40,000
खरीदने के लिए बैंकिंग		देनदार (ग्राहकों से प्राप्य)	50,000
अदत्त व्यय के लिए	15,000	शेष माल	90,000
देयता		फर्नीचर	20,000
		संयंत्र (मशीनरी)	1,00,000
		भूमि तथा भवन	1,00,000
रुपया	4,10,500	रुपया	4,10,500

28.6.2 बीमा

वाणिज्य के क्षेत्र में बीमा का महत्व दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। व्यापार में होने वाले आर्थिक संकटों, जोखिमों तथा हानियों से बचने के लिए एकमात्र साधन बीमा है। उपरोक्त संकटों से बचने के लिए अति-अल्प राशि द्वारा बीमा किश्त देकर व्यापारी निश्चित हो जाता है। इस बीमा किश्त द्वारा आर्थिक हानियों का उत्तरदायित्व बीमा कंपनी से लेती है। बीमा जोखिमों से बचने का एकमात्र और महत्वपूर्ण साधन है। जोखिम या दुर्घटना से तात्पर्य "हानि की संभावना" से है। दुर्घटना हमेशा अनिश्चित होती है जिसकी क्षतिपूर्ति करना ही बीमा का मूल कार्य है। बीमा प्रणाली के अंतर्गत बीमाकर्ता, बीमा शुल्क या किश्त तथा बीमा शुल्क या किश्त तथा बीमा पत्र मुख्य घटक हैं।

भारतीय जीवन बीमा निगम के साथ-साथ आज साधारण बीमा के चार सरकारी उपक्रम भी बीमा के क्षेत्र में सक्रिय हैं — नेशनल इंश्योरेंस, ओरिएंटल इंश्योरेंस, न्यू इंडिया एश्योरेंस तथा युनाइटेड इंडिया एश्योरेंस। ये सभी केंद्र सरकार के उपक्रम हैं अत: राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं क्रियान्वयन के सांविधिक प्रावधानों का पालन इनमें किया जाता है। दूसरे बीमा कंपनियां केवल बड़े व्यापारियों से ही नहीं, आम जनता से भी अपना संपर्क बना चुकी हैं इसलिए हिंदी का प्रयोग इनके कार्य में लाभप्रद सिद्ध होता है। ग्राहकों को पत्रादि हिंदी में लिखना, सामान्य प्रपत्रों का हिंदी में प्रकाशन, विज्ञापनों में हिंदी का प्रयोग तथा आंतरिक प्रशासनिक क्रियाकलापों में हिंदी का क्रियान्वयन इन बीमा कंपनियों द्वारा निरंतर किया जा रहा है। बीमा प्रणाली से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली का विकास हिंदी में हो चुका है। इस क्षेत्र में प्रयुक्त कुछ शब्दों को उनके अंग्रेजी पर्यायों के साथ देखें तो यह तथ्य प्रमाणित हो जाएगा :

तकनीकी शब्दावली

जोखिम-Risk, **क्षति**-Loss, **क्षतिपूर्ति**-Indemnity, **बीमा**-Insurance, **बीमा-पत्र**-Policy, **बीमा-किश्त**-Premium, **बीमाधारी**-Policy holder, **उत्तरदायित्व**-Responsibility, **जीवन-बीमा**-Life insurance, **अग्नि बीमा**-Insurance aganist fire, **सामुद्रिक बीमा**-Marine insurance, **संपत्ति**-Asset, **चल संपत्ति**-Movable assets, **अचल संपत्ति**-Immovable assets, **माल**-Goods, **गोदाम**-Godown, **प्रमाण पत्र**-Certificate, **रोकड़ हानि**-Loss of cash, **जांच पड़ताल**-Inquiry, **बीमाकृत**-Insured, **दर**-Rate, **ब्याज**-Interest, आदि

आजकल डाक और रेल-सेवा के कई कार्यों में बीमा प्रणाली अपनाई जा रही है। इनमें भी हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाता है। बीमाकृत पत्र द्वारा रुपये भेजना, बीमाकृत पत्र पार्सल भेजना, बीमाकृत माल रेल से भेजना अब अधिक सुविधाजनक और सुरक्षित माना जाता है। इनके लिए बीमा की फीस साधारण डाक व्यय या रजिस्ट्री की फीस और रेल भाड़े के अतिरिक्त देनी पड़ती है। ऐसे लिफाफों के ऊपर बीमा राशि अंकों और शब्दों में लिख दी जाती है — "600/- (छह सौ रुपये) के लिए बीमा" बीमा की फीस की प्रति सौ रुपये के हिसाब से निश्चित दर है।

28.6.3 विपणन

वाणिज्यिक गतिविधियों में विपणन (marketing) का सर्वाधिक महत्व है। व्यवसाय का संबंध उत्पादन से होता है। उत्पादित वस्तु को उपभोक्ता (consumer) तक पहुंचाना ही व्यापार की सफलता है। इसके लिए वाणिज्य के क्षेत्र में जो अंतिम चरण हमारे सामने आता है वह वितरण (distribution) का है। वितरण के माध्यम से ही वस्तु/माल निर्माता या उत्पादक से उपभोक्ता के पास पूर्वनिर्धारित योजना के अनुसार पहुंचाई जाती है। इस प्रक्रिया को ही विपणन की शृंखला (marketing channel) कहा जाता है। विपणन के माध्यमों के उपयोग के पूर्व वस्तु के संभावित क्रेता की कुल मांग का अध्ययन किया जाता है। आप जानते ही हैं कि मांग व्यापार का मूल है। इस मांग और विपणन को नियंत्रित करने वाले तत्व ये हैं — उत्पादन (production), संवेष्टन (packaging), विज्ञापन (advertisement), मूल्य (price), चिह्न (brand), यातायात (transportation) आदि।

28.6.4 यातायात और विज्ञापन

अन्य तत्वों को यदि छोड़ भी दें तो इनमें से यातायात और विज्ञापन में हिंदी का प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है। तो आज स्पष्ट हो चुका है कि आज की व्यावसायिक प्रगति में यातायात या परिवहन के साधनों का बड़ा योगदान है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजार तक वस्तुओं को पहुंचाने में इनकी मदद ली जाती है। इस दिशा में रेल द्वारा माल भेजने-पहुँचाने में हिंदी का प्रयोग होता है। रेल द्वारा माल की ढुलाई सरकारी आय का महत्वपूर्ण स्रोत है। रेल परिवहन द्वारा वाणिज्य की वितरण-व्यवस्था को गति मिलती है। इस पूरी प्रक्रिया में हिंदी का प्रयोग हो रहा है। इसीलिए इस दिशा में हिंदी के कई शब्द पारिभाषिक रूप में हमारे सामने आए हैं — माल-goods, कच्चा माल-raw material, भारी वस्तु-heavy load, परिवहन-carriage, सुरक्षा-safety, रेलवे का जोखिम-railway risk, रेलवे रसीद-Railway receipt, आयात-import, निर्यात-export, अमानत-deposit, ढुलाई-drayage, सुपुर्दगी-delivery, भाड़ा-freight, लदान क्षमता-loadability आदि।

वाणिज्यिक विस्तार में उपभोक्ता ही केंद्र में रहता है। उपभोक्ता तक वस्तुओं के गुण, मूल्य आदि जानकारी पहुंचाने में जनसंचार के माध्यमों का उपयोग अब बहुत तेजी से होने लगा है। वाणिज्यिक गतिविधि में अब यह प्रश्न महत्वपूर्ण बन गया है कि "बिक्री कैसे बढ़ाएं"? इनमें विज्ञापन सर्वाधिक सहयोगी है। विज्ञापन के महत्व और प्रभाव से तो आप परिचित ही हैं। पत्रकारिता, रेडियो, दूरदर्शन सभी माध्यमों से विज्ञापन प्रसारित होते हैं। छपाई के प्रसार ने भी विज्ञापन को विस्तार दिया है। पोस्टर, पैंफ्लेट, पत्र-पत्रिकाएं छपाई के विस्तार का ही परिणाम हैं। भारत में भी देखते-देखते व्यावसायिक विज्ञापन विश्व स्तर पर पहुंच गए हैं। व्यापारिक क्षेत्र में बढ़ती प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा और प्रतिद्वंद्विता ने विज्ञापनों की भाषा और उनके प्रस्तुतीकरण में भी क्रांतिकारी परिवर्तन कर डाला है। विज्ञापनों में हिंदी का प्रयोग सभी माध्यमों में निरंतर हो रहा है। चाहे वे श्रव्य माध्यम हों (रेडियो), चाहे दृश्य (पत्र-पत्रिकाएं) या चाहे दृश्य-श्रव्य (टी.वी., फिल्म) हमें हिंदी विज्ञापन दिखाई सुनाई पड़ते हैं। विज्ञापनों के चार गुण निर्धारित किए गए हैं — आकर्षक तत्व (attention value), श्रव्यता एवं सुपाठ्यता (readability and listenability), स्मरणीयता (memorability) तथा विक्रय की शक्ति (selling power) । इन चारों गुणों की दृष्टि से हिंदी विज्ञापनों की भाषा सर्वथा संपन्न एवं सफल है।

हिंदी विज्ञापनों का उपयोग वाणिज्य से संबंधित मुख्य तीन क्षेत्रों में आज पूरी तरह विकसित हो चुका है। ये तीन क्षेत्र हैं — उत्पादित वस्तु के वाणिज्यिक प्रसार के क्षेत्र के लिए बैंक, बीमा जैसी सेवाओं के विकास के लिए तथा उत्पादक और उपभोक्ता के बीच एक विश्वसनीय संबंध निर्मित करने के लिए। आपने देखा होगा कि इन सभी क्षेत्रों में हिंदी विज्ञापनों को रंगों, शीर्षक, नारों आदि के माध्यम से और भी अधिक प्रभावशाली बनाया जा रहा है। यह भी ध्यान दें कि विज्ञापनों में प्रयुक्त हिंदी का अब एक अपना ही स्वरूप विकसित हो चुका है। पत्र-पत्रिकाएं, रेडियो और टी. वी. विज्ञापनों में सहज और आकर्षक हिंदी का प्रयोग करते हैं। इसीलिए विज्ञापनों में प्रयुक्त हिंदी को हिंदी की एक विशिष्ट प्रयुक्ति मान कर उसके अध्ययन विश्लेषण की ओर भी विद्वानों का ध्यान गया है। यह देखा गया है कि ध्यानाकर्षण आदि गुणों को प्राप्त करने के लिए हिंदी विज्ञापन कई प्रकार की वाक्य संरचनाओं का प्रयोग करते है। ऐसा करने से हिंदी विज्ञापन की प्रभावशीलता में वृद्धि होती है। हिंदी विज्ञापनों के कुछ उदाहरण देखिए तो आपको यह बात और अच्छी तरह समझ में आ जाएगी तथा जब आप हिंदी विज्ञापनों को पढ़ेंगे या देखेंगे तो विज्ञापन की हिंदी के स्वरूप की ओर आप वैज्ञानिक और भाषायी दृष्टि से देख सकेंगे :

(i) सामान्य रूप से "और" का प्रयोग दो वाक्यों के बीच में किया जाता है। हिंदी विज्ञापनों में हमें "और" का प्राथमिक प्रयोग भी मिलता है। इस प्रकार का प्रयोग वस्तु के गुण और उसकी लोकप्रियता को जताने के साथ-साथ अतिरिक्त (additional) प्रभावशीलता भी पैदा करता है जैसे :

"और नैसकैफे अब नए पैक में"
"और इनके निर्माता हैं डिपी"।
"और आज सरिता लाखों पाठकों की पारिवारिक पत्रिका है"।

(ii) "और" की भांति ही "क्योंकि" और "सिर्फ" का भी प्रारंभ में प्रयोग हिंदी विज्ञापनों को प्रभावी बनाता है जैसे :

"क्योंकि इसमें अधिक सफेदी की ताकत है"

(iii) विज्ञापनों में शीर्ष पंक्तियां पाठक, दर्शक और श्रोता पर सबके अधिक प्रभाव डालती है। ये शीर्ष पंक्तियां ध्यानाकर्षण का भी प्रमुख कार्य करती हैं। विज्ञापनों में प्रयुक्त इस प्रकार की शीर्ष पंक्तियों को संक्षिप्त वाक्य (minor sentences) की संज्ञा दी गई है। आपने भी हिंदी विज्ञापनों की ऐसी कई शीर्ष पंक्तियां देखी होंगी जिन्होंने बरबस ही आपका ध्यान अपनी ओर खींच लिया होगा :

"जोड़ी अनोखी मेल अनोखा (विल्स सिगरेट)"
"ममता की कसौटी घर खरा (डालडा)"
"रंग रूप में आज भी वही बालापन (पियर्स)"
"मासूम कयामत" (Fa)

(iv) हिंदी विज्ञापनों में "लीजिए" "मांगिए" "दीजिए" जैसी अनुरोधात्मक क्रियाओं के प्रयोग द्वारा उत्पादनकर्ता अपने ग्राहक से अपनी वस्तु खरीदने का अनुग्रह करता है। इस प्रकार के प्रयोग स्मरण रखने में भी आसान होते हैं :

"सेरिडोन लीजिए"।
"आयोडेक्स मलिए, काम पर चलिए"।
"उषा के पास आइए"।
"हमेशा टैगों ही मांगिए"।

(v) ग्राहक को सुझाव देने के लिए हिंदी विज्ञापनों में अनेक प्रकार के वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। ये सुझाव वस्तु, गुण और उपयोगिता के आधार पर ग्राहक का ध्यान आकर्षित करते हैं :

"हार्लिक्स ज्यादा शक्ति देता है"।
"शुद्ध और सौम्य लक्स"।
"बढ़ते बच्चों के लिए कॅम्पलान"।
"आज की सवारी शान की सवारी (एटलस)"।

(vi) काव्यमय भाषा द्वारा भी हिंदी विज्ञापनों को रोचक बनाया जाता है। इसमें एक ओर शब्द की पुनरावृत्ति द्वारा प्रभाव को बढ़ाया जाता है तो दूसरी ओर काव्यमय पंक्तियों का प्रयोग किया जाता है।

क) फैशन निखर-निखर उठता है (वॉम्बे डाइंग)

ख) सरदर्द हटाए, मुस्कान जगाए (एस्प्रो)
"सनी की दिलकश अदा पर हर जवां दिलफिदा"
"लाइफबॉय है जहां तंदुरुस्ती है वहां"

(vii) विज्ञापनों में विस्मयादिबोधक रूपों द्वारा शीर्ष पंक्तियां निर्मित की जाती हैं :

वाह ! ताज
नया ! एरियल
नया ! प्रेस्टीज

(viii) कई हिंदी विज्ञापनों में संस्कृत, उर्दू तथा अंग्रेजी शब्दों के सटीक प्रयोग द्वारा विज्ञापन अधिक रोचक, प्रभावशाली और संप्रेषणीय बन जाता है :

"रोबिन ब्लू : प्राकृतिक एवं मनोरम शुभ्रता के लिए"

"खूबसूरत रंग और दिलकश डिजाइनें (एल्पार)"

"लिप्टन : जायका और तेजी"

"मजेदार भोजन का राज़ (डालडा रिफाइंड तेल)"

वाक्य संरचना के अन्य अनेक धरातल और हैं जो विज्ञापन की हिंदी को एक विशेष स्वरूप प्रदान करते हैं। ऊपर के कुछ उदाहरणों द्वारा आपको इसकी प्रकृति को समझने में मदद मिलेगी। वाक्यों के अतिरिक्त शब्द स्तर पर भी विज्ञापन की हिंदी का विशिष्ट स्वरूप आप देख सकते हैं। विज्ञापनों में संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी के शब्दों का सुंदर प्रयोग किया जाता है। कुछ उदाहरण देखिए :

Unique — असाधारण, अपूर्व, अद्भुत, अद्वितीय, अनुपम, अनूठा, बेजोड़, बेमिसाल, लाज़वाब

Charming — सुहाना, लुभावना, आकर्षक

Attractive — मनमोहक, मनोरम, मनोहारी

Pleasant — खुशनुमा, सुखद, आनंददायक, मजेदार

Soft — कोमल, मुलायम, मखमली

Tasty — मज़ेदार, स्वादिष्ट, ज़ायकेदार, लज़्ज़तदार

Fresh — उमंगभरा, ताज़गीदायक, ताज़ा

इस प्रकार विभिन्न स्रोतों के शब्द भी विज्ञापन की हिंदी में देखे जा सकते हैं :

आराम-comfort, राहत-relief, छुटकारा, मुक्ति-freedom, असर-effect, शक्ति, बल, ताकत-strength, तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य-health, कुरकुरापन-crisp आदि।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि वाणिज्य के क्षेत्र में विज्ञापनों के माध्यम से हिंदी भाषा का विकास हुआ है। इन विज्ञापनों में हिंदी के शैलीगत वैविध्य का सौंदर्य उभरा है और हिंदी की संप्रेषणक्षमता उसकी प्रवाध्मय प्रकृति के साथ उद्घाटित हुई है। भारतीय संदर्भ में वाणिज्यिक विकास का मार्ग प्रशस्त करने में हिंदी भाषा विज्ञापनों के द्वारा बहुस्तरीय सहयोग दे रही है।

28.6.5 जनसंचार के माध्यम

जनसंचार के माध्यमों में पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी भाषा का प्रयोग वाणिज्य के एक अन्य क्षेत्र में भी पूरी तरह विकसित हुआ है। इस क्षेत्र को बाज़ार समाचार (market report) कहा जाता है। व्यवसाय जगत की गतिविधियों की रपट देने के लिए बाज़ार समाचार प्रकाशित होतें हैं। अधिकांश पत्र-पत्रिकाएं नियमित रूप से बाज़ार संबंधी सूचनाएं देती हैं। हिंदी पत्रकारिता ने भी इन्हें महत्वपूर्ण स्थान देना प्रारंभ कर दिया है। वाज़ार समाचार की हिंदी का अपना ही स्वरूप निर्मित हो चुका है बाज़ार समाचार की हिंदी में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों और वाक्यांशों का संबंध बाज़ार की स्थिति, मूल्यों की स्थिति, बाज़ार की प्रवृत्ति, बाज़ार के भविष्य आदि से रहता है। अत: ये प्रयोग बड़े ही विशेषीकृत होते हैं। अत: इनका अर्थ समझने के लिए बाज़ार की गतिविधियों की जानकारी भी आवश्यक है। इसीलिए यह कहा गया है कि बाज़ार समाचार की भाषा शैली तकनीकी होती है और बाज़ार समाचार लेखन एक कला है। हिंदी भाषा ने अपना यह तकनीकी स्वरूप पूरी तरह प्राप्त कर लिया है और वाणिज्य की समस्त गतिविधियों को व्यक्त करने के लिए उसने अभिव्यक्तियाँ व शब्दावली गढ़कर स्थिर कर ली है :

वस्तु बाज़ार-commodity market, स्कंध बाज़ार-stock market, मुद्रा बाज़ार-money market, मूल्यवृद्धि-price hike, सौदा-transaction, भुगतान-payment, पूंजी-capital, मांग-demand, आपूर्ति-supply, अवधि-period, आमद-arrival, बाज़ार मूल्य-market price, कुल व्यापार-turnover, मूल्य-hard price, मंदा मूल्य-soft price

अभिव्यक्तियां

सबल बाज़ार, मजबूत बाज़ार	– जब वस्तु की बाज़ार से मांग अधिक हो और पूर्ति कम।
शांत बाज़ार, सरल बाज़ार	– जब बाज़ार में पूर्ति अधिक हो और मांग कम तथा वस्तु कम मूल्य पर बिकने लगे।
खुशहाल बाज़ार, विश्वसनीय बाज़ार	– बाज़ार की स्थिति जब अच्छी हो। जब मांग के अनुसार पूर्ति होती रहे और वस्तु बिकती रहे।
तेज बाज़ार, ऊंचा बाज़ार	– जब बाज़ार की प्रवृत्ति मूल्य वृद्धि की ओर हो।
मृत बाज़ार, मंदा बाज़ार	– जब बाज़ार की प्रवृत्ति मूल्य ह्रास की ओर हो।
बाज़ार में खामोशी रहना	– जब कम सौदे हों।
बाज़ार गिरना	– मूल्यों में कमी

आपने देखा कि बाज़ार की स्थिति बताने के लिए हिंदी भाषा में लिखित बाज़ार समाचार में जिन शब्दों-अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया जाता है उनका अर्थ विशिष्ट होता है। मूल्य वृद्धि और मूल्य ह्रास के लिए आपने दैनिक अखबारों में हिंदी की कई अभिव्यक्तियां पढ़ी होंगी, नहीं पढ़ीं तो किसी दिन के दैनिक-पत्र में पढ़िए, आपको इस प्रकार के प्रयोग मिल जाएंगे :

मूल्य वृद्धि : चांदी उछली दाल तेज,
मूल्य ह्रास : सोना लुढ़का, चावल नरम,

वाणिज्य के क्षेत्र में बाज़ार समाचार की उपयोगिता असंदिग्ध है। व्यापारी, अर्थशास्त्री, व्यापार-वाणिज्य के छात्र के लिए इन समाचारों का अपना महत्व है। इस दिशा में हिंदी भाषा ने अपना स्वरूप विकसित करके प्रमाणित किया है कि विशिष्टतम सूचनाओं को प्रदान कर पाने की क्षमता भी उसके भीतर है।

बोध प्रश्न

5. लेखा कर्म क्या है ? (पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

6. कंपनियों में हिंदी प्रयोग की स्थिति स्पष्ट कीजिए। (पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

7. विपणन का क्या अर्थ है? (दो पंक्तियों में उत्तर दीजिए।)

....

....

8. विज्ञापन के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग के महत्व पर प्रकाश डालिए। (दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए।)

....

....

....

....

....

....

अभ्यास

1. नमूने के अनुसार नीचे दिए गए शब्दों की व्याख्या एक पंक्ति में कीजिए।

   नमूना : आयात : विदेश से वस्तु मंगाना

   1. यातायात - ....
   2. निर्यात - ....
   3. कच्चामाल - ....
   4. कुटीर उद्योग - ....
   5. विपणन - ....

2. Godown- गोदाम, इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के हिंदी रूप लिखिए :

   Treasury, Comedy, Tragedy, Interim

....

....

3. एक शब्द से तीन शब्द बनाइए :

   (1) बीमा : ....
   (2) खाता : ....
   (3) उत्पादन : ....
   (4) बाज़ार : ....
   (5) निर्यात : ....

4. नीचे दिए अंग्रेजी शब्दों के लिए दो-दो हिंदी शब्द लिखिए :

   (1) Charming : ....
   (2) Durable : ....
   (3) Soft : ....
   (4) Tasteful : ....
   (5) Strong : ....

5. निम्नलिखित शब्दों की सहायता से सार्थक वाक्य बनाइए।

(1) प्रतिस्पर्धा : .....
(2) विक्रय की शक्ति : .....
(3) उपभोक्ता : .....
(4) मांग : .....
(5) क्षतिपूर्ति : .....

28.7 सारांश

आपने इस पाठ के माध्यम से यह देखा कि वाणिज्य से संबंधित प्रत्येक क्षेत्र एवं उपक्षेत्र में हिंदी भाषा का प्रयोग स्थिर हो चुका है। किसी भी राष्ट्र के औद्योगिक एवं व्यावसायिक विकास में उस राष्ट्र की भाषा ही पूर्ण सहायक हो सकती है, इस तथ्य को आज सभी स्वीकार करते हैं। वाणिज्य का क्षेत्र बड़ा ही व्यापक क्षेत्र है। इसकी कई शाखाएं, उपशाखाएं हैं। वाणिज्य की हिंदी ने परंपरागत व्यापार केंद्रित भाषा से, अर्थशास्त्र की पारिभाषिक और संकल्पनात्मक शब्दावली से, लोक बोलियों से, अरबी-फारसी से शब्द आदि लेकर वाणिज्य की भाषा के रूप में अपने को स्थापित किया है।

28.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

1. देखिए 28.2
2. देखिए 28.3
3. देखिए 28.5
4. (क) × (ख) √ (ग) √
   (घ) × (ङ) × (च) ।
5. देखिए 28.6.1
6. देखिए 28.6.2
7. देखिए 28.6.3
8. देखिए 28.6.4

अभ्यास

इन अभ्यासों का उत्तर देने के लिए आप हिंदी और अंग्रेजी कोश की सहायता ले सकते हैं।

इकाई 29 बैंकिंग प्रणाली में हिंदी

इकाई की रूपरेखा

29.0 उद्देश्य
29.1 प्रस्तावना
29.2 भारत में बैंकिंग का इतिहास
29.3 बैंकों में हिंदी की आवश्यकता
29.4 राजभाषा हिंदी और राष्ट्रीयकृत बैंक
29.5 राष्ट्रीयकृत बैंकों में प्रयुक्त हिंदी
29.6 हिंदी प्रशिक्षण योजनाएं
29.7 सारांश
29.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

29.0 उद्देश्य

यह इकाई बैंकों में हिंदी के प्रयोग से संबंधित है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- बैंकिंग प्रणाली के इतिहास, महत्व और कार्यप्रणाली का वर्णन कर सकेंगे,
- बैंकों में हिंदी के प्रयोग की व्यावहारिक एवं वैधानिक आवश्यकता-अनिर्वायता को देख समझ सकेंगे,
- बैंक की हिंदी के मूलभूत स्वरूप को देखने की दृष्टि प्राप्त कर सकेंगे, तथा
- बैंकों की शब्दावली, अभिव्यक्ति, वाक्य रचना एवं द्विभाषिक प्रयोगों को सीख सकेंगे।

29.1 प्रस्तावना

यह इस खंड की दूसरी इकाई है। पहली इकाई में हमने वाणिज्य के विविध क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग का अवलोकन किया। इस क्रम में हमने बैंकों में हिंदी-प्रयोग की भी संक्षिप्त जानकारी हासिल की। वस्तुत: यह जानकारी इस इकाई के लिए पूर्वपीठिका का काम करेगी।

अब इस इकाई में हम बैंकों में हिंदी के प्रयोग पर विस्तार से बात करेंगे। सबसे पहले हमने इसमें बैंकिंग प्रणाली के इतिहास, बैंकों के महत्व तथा बैंकों की कार्यप्रणाली की चर्चा की है। इसके साथ-साथ बैंकों में हिंदी के प्रयोग के व्यावहारिक और वैधानिक पक्ष पर विचार किया गया है।

बैंकों के इतिहास, महत्व, कार्य प्रणाली, व्यावहारिक वैधानिक पक्षों की जानकारी प्राप्त करने के बाद बैंकों के हिंदी के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। उदाहरण देकर इन्हें समझाया गया है। बैंकों में राजभाषा हिंदी से संबंधित अधिनियमों, आदेशों की चर्चा भी इस पाठ में है। राजभाषा में हिंदी प्रयोग की वैधानिक स्थिति से आप परिचित हो सकेंगे। भारत सरकार और रिजर्व बैंक के अधिनियमों के माध्यम से कहां और किस सीमा तक हिंदी का प्रयोग आज अनिवार्य है इसकी भी जानकारी दी जाएगी।

पूरी इकाई पढ़ने के बाद विद्यार्थी प्रयोजनमूलक हिंदी के एक विशिष्ट रूप में या प्रयुक्ति के रूप में बैंक की हिंदी को देख समझ कर उसकी विशिष्ट प्रकृति से भी परिचित हो सकेंगे।

29.2 भारत में बैंकिंग का इतिहास

इसके पहले की इकाई में हमने देखा कि बैंक व्यवसाय का एक महत्वपूर्ण अंग है। किसी भी देश की प्रगति में बैंक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। बैंकों का काम केवल रुपयों का लेन-देन नहीं है। बैंक समाज की आर्थिक प्रगति में सक्रिय भाग लेते हैं। जरुरतमंद व्यक्ति और समाज की सहायता करते हैं तथा बचत की आदत डालकर लोगों को सुंदर और सुरक्षित भविष्य प्रदान करते हैं। इस प्रकार बैंकों की भूमिका समाज में सहयोग और सहकारिता की होती है।

वर्तमान बैंकिंग प्रणाली का विकास पहले विदेशों में हुआ। लेकिन हमारे देश में हजारों साल पहले भी बैंकिंग किसी न किसी रूप में थी। इस परंपरागत बैंकिंग प्रणाली को देशी (indigenous) कहा गया है। इसे ही हम "महाजनी व्यवस्था" का एक अंग मानते हैं। प्राचीन भारत की अर्थव्यवस्था में देशी बैंकों का बहुत बड़ा हाथ था। वे ऋण देते थे तथा जमा राशियां भी स्वीकार करते थे। जब भारत में अंग्रेजी राज्य का विस्तार हुआ तब ये देशी बैंक समाप्त होने लगे और इनके स्थान पर व्यक्तिगत स्तर पर बैंकिंग का कार्य करने वाली महाजनी व्यवस्था पनपने लगी। महाजनी व्यवस्था में साहुकार, महाजन या सर्राफ जरुरतमंद लोगों को उधार देकर उसके बदले ब्याज प्राप्त करते थे या लोगों के सामान गिरवी रखकर उन्हें धन देते थे। लोगों से जमाराशि स्वीकार करना, ऋण देना, वस्तुएं गिरवीं रखना, ऋण के बदले ब्याज प्राप्त करना — ये कार्य इस प्रणाली द्वारा चलाए जाते थे।

भारत में ब्रिटिश शासन के उत्कर्ष के साथ ही भारत की देशी और महाजनी बैंकिंग प्रणाली सिमटने लगी। ब्रिटिश शासन ने बैंक ऑफ बंगाल, 1840 में बैंक ऑफ बाम्बे तथा 1843 में बैंक ऑफ मद्रास की स्थापना हुई। बाद में इन तीनों को एक में मिलाकर 1921 में इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना की गई। यह उस समय भारत सरकार का बैंक था तथा यह मुद्रा जारी करने का काम भी करता था। भारत की आजादी के बाद 1955 में इंपीरियल बैंक का नाम बदलकर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया कर दिया गया। यह बैंक आज भारत के सबसे बड़े वाणिज्यिक बैंक के रूप में जाना जाता है। मुद्रा जारी करने का काम भारतीय रिजर्व बैंक को दिया गया। इसकी स्थापना 1934 के अधिनियम के अनुसार हुई। भारतीय रिजर्व बैंक सभी बैंकों की गतिविधियों पर नियंत्रण करता है। यह बैंकों का बैंकर है तथा भारतीय बैंकों का शीर्ष बैंक है।

बैंकिंग व्यवसाय को चलाने के लिए 1860 में एक अधिनियम पास कर भारत में बैंकों की स्थापना के लिए अनुमति दी गई। इसके बाद यहां वाणिज्य बैंकों की स्थापना की गई। बैंकिंग व्यवसाय ने भारत में कई उतार-चढ़ाव देखे और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में लगे रहे। स्वदेशी आंदोलन का भी भारतीय बैंकिंग व्यवसाय पर काफी प्रभाव पड़ा। उसकी वजह से यहां भारतीयों की देख-रेख में कई वाणिज्य बैंक खुले जिनका देश की आर्थिक प्रगति में बहुत योगदान है।

19 जुलाई 1969 देश के बैंकिंग व्यवसाय का एक ऐतिहासिक दिन है। इस दिन चौदह अनुसूचित वाणिज्य बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। अब ये बैंक सीधे सामाजिक नियंत्रण में आ गए। बैंकों की धारा अब गांवों की ओर भी बहने लगी। ये राष्ट्रीयकृत बैंक छोटे-छोटे कस्बों में अपनी शाखा खोलने लगे। इनकी सहायता से बेरोजगारों को रोजगार मिलने लगा, किसानों के सूखे खेतों को कुएं और ट्यूबवेल मिलने लगे और जो छोटे उद्योग-धंधे आर्थिक सहायता के अभाव में अपनी अंतिम सांस ले रहे थे उन्हें भी एक नई जिंदगी मिली। 15 अप्रैल 1980 को और छह बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया।

यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि भारत में सहकारिता आंदोलन सहकारी सोसायटी अधिनियम, 1904 के पारित होने के बाद से ही शुरू हो गया था। इसकी वजह से सहकारी बैंकों की स्थापना हुई। ये बैंक सहकारिता के आधार पर चलाए जाते हैं। इन पर भी भारतीय रिजर्व बैंक का नियंत्रण रहता है। सामाजिक और आर्थिक विकास में सहकारिता बैंकों का अपना महत्व है। इनका उद्देश्य छोटे-मझोले किसानों, छोटे उद्योगों और कुटीर उद्योगों की सहायता करके विकसित करना तथा इनसे जुड़े लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाना है।

राष्ट्रीयकरण के बाद अनुसूचित वाणिज्य बैंकों का लाभ किसानों तक पहुंचाने के लिए एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया गया। प्रत्येक राज्य में स्थानीय आवश्यकताओं को देखते हुए अनुसूचित वाणिज्य बैंकों को क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की स्थापना के लिए कहा गया। ये बैंक स्थानीय जनता की आवश्यकता के अनुसार अपनी योजनाएं बनाते हैं तथा सीधे जनता से संपर्क स्थापित करके गरीब और पिछड़ी हुई जनता के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने की कोशिश करते हैं।

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच पंक्तियों में दीजिए।

1. बैंक के प्रमुख कार्य क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2. प्राचीन भारत में बैंकिंग व्यवसाय की क्या स्थिति थी ?

.....

.....

.....

.....

.....

3. स्वतंत्रता के बाद बैंकों का विकास कैसे हुआ?

.....

.....

.....

.....

.....

29.3 बैंकों में हिंदी की आवश्यकता

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय बैंकिंग व्यवसाय जनता की सेवा का एक माध्यम है। बैंकों को आम जनता तक पहुंचना है। भाषा जन-संपर्क का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। बैंक आज दूर-दराज के क्षेत्रों तक पहुँच गए हैं। अपने कारोबार को फैलाने के लिए जनता की भाषा का प्रयोग करना बैंको के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह तो हम जानते ही हैं कि भारत के कुछ ऐसे भूभाग हैं जिनका सत्तर प्रतिशत क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्र है तथा हम यह भी जानते हैं कि भारत के सत्तर प्रतिशत लोग देहातों में बसते हैं। अत: इनके लिए व्यावहारिक संपर्क की भाषा इनकी अपनी भाषा ही होनी चाहिए अंग्रेजी नहीं। इनके पास पहुंचने के लिए हिंदी भाषा ही श्रेष्ठतम् संपर्क माध्यम है। इसका मूल कारण यह है कि कई वर्षों से संपर्क भाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी जनता के बीच रहती और फलती-फूलती चली आ रही है। आज यही हिंदी भारत संघ की राजभाषा है। इस बात में तो कोई संदेह ही नहीं कि विदेशी भाषा के माध्यम से हम जनता तक नहीं पहुँच सकते। बैंकों में हिंदी का प्रयोग इसीलिए तेजी से हो रहा है कि बैंक सीधे जनता के बीच जाकर उन्हीं के लिए कार्य करते हैं।

जनता तक आसानी से पहुंचने और व्यावहारिक संपर्क भाषा के रूप में हिंदी को अपनाने की अनिवार्यता से तो बैंक परिचित हैं ही। इसके साथ ही बैंकों में हिंदी के प्रयोग के वैधानिक पक्ष भी है। जैसा कि हमने अभी चर्चा की थी कि बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया है। इस प्रकार राष्ट्रीयकृत बैंक पूरी तरह भारत सरकार के स्वामित्व और नियंत्रण में कार्य करते हैं। आपने बैंकों के नामपट्ट पर लिखा देखा होगा — "भारत सरकार का उपक्रम" या "भारत सरकार के स्वामित्व में" । इसका तात्पर्य यह है कि राष्ट्रीयकरण के बाद बैंक उसी प्रकार कार्य करते हैं जिस प्रकार केंद्र सरकार के अन्य उपक्रम या प्रतिष्ठान। इसलिए बैंकों को केन्द्र सरकार द्वारा अनुमोदित उन नियमों आदि का पालन करना पड़ता है जो केंद्र सरकार के मंत्रालयों, विभागों, अनुभागों, शाखाओं या उपक्रमों पर लागू होते हैं। अत: इन बैंकों के लिए भारत सरकार या संघ सरकार की नीतियों का पालन करना अनिवार्य है। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बैंकिंग कामकाज में करना बैंकों का एक संवैधानिक दायित्व भी बन गया है।

29 4 राजभाषा हिंदी और राष्ट्रीयकृत बैंक

आपको शायद मालूम हो कि हमारे संविधान के अनुच्छेद 343 में यह कहा गया है कि "संघ की राजभाषा हिंदी और उसकी लिपि देवनागरी होगी।" अत: संघ सरकार के कार्यालय राजभाषा हिंदी के प्रयोग से अनिवार्यत: बंधे हुए हैं। राजभाषा अधिनियम 1963 एवं राजभाषा अधिनियम 1976 के अनुसार राष्ट्रीयकृत बैंकों का कामकाज अधिकांश मात्रा में हिंदी में किया जाना चाहिए। जैसा कि अभी बताया गया इन अधिनियमों का अनुपालन भारत सरकार के नियंत्रण या स्वामित्व में कार्य करने वाले सभी प्रतिष्ठान, कंपनियां, वित्तीय संस्थाएं, मंत्रालय आदि करते हैं। अत: बैंकों को भी इनका अनुपालन करना ही है।

यहां संक्षेप में हमें राजभाषा अधिनियम 1963 और राजभाषा अधिनियम 1976 की जानकारी ले लेनी चाहिए। भारत के संविधान में राजभाषा का जो प्रावधान है उसके अनुसार 26 जनवरी 1965 के बाद संघ के सरकारी कामकाज में अंग्रेजी पूरी तरह हटा दी जाएगी और अंग्रेजी के स्थान पर राजभाषा के रूप में केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा। परंतु हिंदी को पूर्णत: राजभाषा बनाने का विरोध प्रबल होने के कारण संविधान के अनुच्छेद 343 के खंड 3 द्वारा किए प्रावधानों के अनुसार 1963 में जो अधिनियम बना उसे ही राजभाषा अधिनियम 1963 के नाम से जाना जाता है। इस अधिनियम का मूल वाक्य यह है — "संघ के उन सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए जिनके लिए 26 जनवरी 1965 से तत्काल पूर्व अंग्रेजी का प्रयोग किया जा रहा था और संसद में कार्य-निष्पादन के लिए 26 जनवरी 1965 के बाद भी हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखा जाय।" हमें यह समझना चाहिए कि राजभाषा अधिनियम 1963 के कारण सरकारी कामकाज में द्विभाषिक स्थिति उत्पन्न हुई। अर्थात् अंग्रेजी और हिंदी के साथ-साथ प्रयोग के कई क्षेत्र इस अधिनियम ने निश्चित कर दिए। इस अधिनियम से दो बातें उभर कर हमारे सामने आईं। एक तो यह कि संघ की राजभाषा होते हुए भी 1965 तक हिंदी की स्थिति अंग्रेजी की तुलना में गौण ही बनी रह गई थी। इस अधिनियम द्वारा हिंदी का स्थान प्रमुख बना और अंग्रेजी का गौण; क्योंकि अधिनियम में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यदि कोई अपने कामकाज में अंग्रेजी का प्रयोग करना चाहे तो वह उसे हिंदी के अतिरिक्त कर सकता है। (English language may, as from the appointed day continue to be used in addition to Hindi) । इसका तात्पर्य यही है कि हर प्रकार के सरकारी कामकाज में हिंदी अनिवार्यत: रहेगी, अंग्रेजी उसकी पूरक भाषा के रूप में काम में लाई जा सकती है। दूसरे यह कि सरकारी कामकाज में इस अधिनियम ने हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी युग का सूत्रपात कर दिया। क्योंकि अधिनियम ने यह घोषित कर दिया कि कार्यालयी परिपत्र, करार, संधियां, प्रेस विज्ञप्तियाँ, फॉर्म, रबड़ की मोहरें, नामपट्ट, पत्र - शीर्ष, सभी प्रकार की स्टेशनरी एवं अन्य कागजात आदि हिंदी और अंग्रेजी दोनों में तैयार किए जाएंगे। राजभाषा अधिनियम 1976 द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सरकारी कार्यालयों में अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास केंद्र सरकार ने किया। इन नियमों को लागू करने के लिए भारत को तीन क्षेत्रों में बांटा गया :

(1) "क" क्षेत्र, अर्थात् हिंदी भाषी वे राज्य जिन्होंने हिंदी के राजभाषा घोषित होते ही उसे अपने राज्य की राजभाषा स्वीकार कर लिया था। इन राज्यों के अंतर्गत बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्र[illegible] दिल्ली संघ राज्य आते हैं।

(2) "ख" क्षेत्र में गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब, अंडमान और निकोबार द्वीप तथा चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र सम्मिलित हैं।

(3) "ग" क्षेत्र के अंतर्गत उड़ीसा, जम्मू और काश्मीर, आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक, गोवा, पांडिचेरी, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, आसाम तथा अन्य क्षेत्र शामिल हैं।

वैसे तो यह अधिनियम राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के कई नियम देता है जिसके बारे में आप अन्य इकाई में पढ़ भी चुके हैं। यहां प्रमुखता से यह समझने की आवश्यकता है कि बैंक भारत-सरकार के उपक्रम हैं। अत: केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के लिए जो व्यवस्था इन अधिनियमों तथा नियमों में है, वह यथावत् बैंकों पर भी लागू होती है। जनता तक, जनता की भाषा के माध्यम से पहुंचने की नैतिक आवश्यकता तथा संविधान द्वारा प्रदत्त वैधानिक आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए बैंक हिंदी के प्रगामी प्रयोग की ओर झुके। ऐसा करने से उन्हें अपनी शाखाओं को विस्तार देने तथा कारोबार को फैलाने में मदद मिली। बैंकों के कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी में काम करने की आदत पड़े, इसके प्रयत्न भी जोर-शोर से शुरू हुए। राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक काम शुरू हो तथा सभी कर्मचारी इसे एक राष्ट्रीय दायित्व समझ कर पूरा करें, इसका प्रयत्न बैंक पूरी गंभीरता से कर रहे हैं। भारत सरकार की राजभाषा नीति के अंतर्गत कई कार्य बैंकों में किए जा रहे हैं। अपने कर्मचारियों पर बिना कोई अनावश्यक दबाव डाले राजभाषा का कार्यान्वयन करने का प्रयास सभी राष्ट्रीय बैंक कर रहे हैं। बैंकों के सुचारू परिचालन के लिए जिस प्रकार रिजर्व बैंक नियम व अनुदेश जारी करता है उसी प्रकार राजभाषा प्रयोग से संबधित नियम और अनुदेश भी वह बैंकों को देता है। अत: बैंकों का कोई भी कार्यपालक, अधिकारी या कर्मचारी इनका उल्लंघन नहीं कर सकता। भारत सरकार और रिजर्व बैंक द्वारा हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित जो अनेक नियम और अनुदेश हैं उनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं:

(1) बैंक का कामकाज करते समय हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाय और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूपों का प्रयोग किया जाय जैसे 1, 2, 3, 4, आदि।

(2) कार्यालय से जारी किए जाने वाले सभी परिपत्र द्विभाषी हों (हिंदी और अंग्रेजी में)।

(3) जिन अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त नहीं है, उन्हें सेवाकाल के दौरान हिंदी प्रशिक्षण दिया जाय।

(4) सभी कार्यालय और शाखाओं के साइनबोर्ड "क" क्षेत्र में हिंदी और अंग्रेजी में द्विभाषिक हों तथा "ख" और "ग" क्षेत्र में क्षेत्रीय भाषा, हिंदी और अंग्रेजी में। इन भाषाओं का क्रम भी इसी प्रकार होना चाहिए।

(5) "क", "ख", "ग" तीनों क्षेत्रों के सभी कार्यालयों एवं शाखाओं में रबड़ की मुहरें केवल हिंदी-अंग्रेजी में हों।

(6) सभी कार्यालय एवं शाखाएं हिंदी के प्रगामी प्रयोग की तिमाही रिपोर्ट संबंधित कार्यालय को नियमित रूप से भेजें।

(7) सभी कार्यालय एवं शाखाओं में जनता एवं ग्राहकों के लिए उपलब्ध सामग्री केवल हिंदी-अंग्रेजी में उपलब्ध करानी चाहिए।

(8) किसी भी देश, प्रदेश, कार्यालय अथवा शाखा से प्राप्त हिंदी पत्रों का उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में देना चाहिए।

(9) "क" क्षेत्र के सभी कार्यालय आपस में केवल हिंदी का प्रयोग करें। "ख" "ग" क्षेत्र के कार्यालय भी कुछ प्रतिशत पत्र-व्यवहार मूल रूप से हिंदी में करें।

(10) कर्मचारी द्वारा हिंदी में दिए आवेदन पत्र आदि को स्वीकार करना चाहिए। यदि कर्मचारी किसी प्रपत्र को हिंदी में मांगता है तो उसे मांगा गया पत्र, ज्ञापन आदि हिंदी में ही दिया जाना चाहिए।

(11) प्रत्येक शाखा कार्यालय में हिंदी की एक अलग फाइल रखनी चाहिए। शाखा को इस आशय का बोर्ड लगाना चाहिए "यहां हिंदी में लिखे भरे गए चेक, फार्म आदि स्वीकार किए जाते हैं।"

(12) कार्यालय एवं शाखाओं में प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को "हिंदी दिवस" का आयोजन करना चाहिए। हिंदी/राजभाषा सप्ताह मनाकर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

राजभाषा हिंदी से संबंधित ये सभी आदेश और अनुदेश भारत सरकार तथा भारतीय रिजर्व बैंक ने समय-समय पर जारी किए हैं। इनका कड़ाई से पालन करना सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों के कार्यालयों एवं शाखाओं में कार्यरत् प्रत्येक कार्यपालक, प्रबंधक, अधिकारी और कर्मचारी का नैतिक और कानूनी उत्तरदायित्व है।

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पांच पंक्तियों में दीजिए।

4. बैंकों में हिंदी किन कारणों से आवश्यक है ?

.....

.....

.....

.....

.....

राजभाषा अधिनियम 1963 का परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

6. "क", "ख" और "ग" क्षेत्र से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

.....

7. राजभाषा हिंदी से संबंधित रिजर्व बैंक के अनुदेशों में से किन्हीं तीन को लिखिए।

.....

.....

.....

.....

29.5 राष्ट्रीयकृत बैंकों में प्रयुक्त हिंदी

जैसा कि पहले भी बताया गया कि राष्ट्रीयकरण से पहले बैंकों के सभी कार्यों का माध्यम अंग्रेजी भाषा ही थी। इसका एक प्रमुख कारण यह भी था कि राष्ट्रीयकरण के पहले बैंकों का क्षेत्र और उद्देश्य सीमित थे। सामान्य जनता के साथ भी बैंकों का संबंध नहीं था। राष्ट्रीयकरण के बाद बैंकिंग सेवाओं में विस्तार हुआ है और अब हिंदी के प्रयोग को बैंकों में स्थान न देना बैंकों की व्यावसायिक प्रगति को रोकना होगा। इसमें भी संदेह नहीं कि राजभाषा के रूप में जिन-जिन प्रयुक्ति क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग प्रारंभ हुआ, उस क्षेत्र की हिंदी (प्रयुक्ति) पर जटिलता, कठिनाई आदि के आरोप भी लगाए जाते रहे। ये आरोप वही लोग लगाते हैं जो अपनी भाषाओं के स्थान पर अंग्रेजी में काम करना पसंद करते हैं वे लोग जो हिंदी को असक्षम बताकर अपनी हिंदी प्रयोग संबंधी अक्षमता को छुपाना चाहते हैं।

यह तो स्पष्ट है कि बैंक की हिंदी का अपना स्वरूप है। जैसा कि आप पिछली इकाइयों में देख भी चुके होंगे कि प्रत्येक प्रयुक्ति की अपनी विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली होती है, उसकी अपनी अभिव्यक्तियां होती हैं तथा उसकी विशिष्ट वाक्य संरचना होती है। इस प्रकार की भाषा को हम विशिष्ट प्रयोजनों की भाषा (लैंग्वेज फॉर स्पेशल परपजेज) कहते हैं। अत: बैंक की हिंदी साहित्यिक हिंदी से नितांत भिन्न है। हां, हम यह कह सकते हैं कि बैंकों में प्रयुक्त हिंदी में प्रशासनिक/कार्यालयीन हिंदी तथा व्यावसायिक हिंदी का मिला-जुला प्रयोग होता है। इसकी वजह यह है कि बैंकों के भीतर की कार्यप्रणाली कार्यालयों की ही भांति है। बैंक व्यावसायिक लेन-देन से संबद्ध होते हैं इसलिए बैंक की हिंदी में व्यावसायिक भाषा का स्वरूप भी अनिवार्यत: आ जाता है। इतना ही नहीं बैंकों के विस्तार के साथ बैंक जब ग्रामीण क्षेत्रों से जुड़े हैं तो इसकी शब्दावली और अभिव्यक्ति में हमें कृषि, पशुपालन, दुग्ध व्यवसाय, कृषि उपकरणों, कुक्कुट पालन, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन से संबंधित भाषा-प्रयोग भी दिखाई देने लगे हैं।

इन सभी क्षेत्रों में बैंक की हिंदी ने अपना एक स्वरूप निर्मित किया है। यह भी कहा जा सकता है कि बैंक की हिंदी प्रयुक्ति की एक से अधिक उपप्रयुक्तियां हैं जिनका प्रयोग विभिन्न बैंक आवश्यकतानुसार करते हैं। यदि हम ध्यान से देखें तो यह भी स्पष्ट हो जाता है कि बैंकों की हिंदी शब्दावली भी संस्कृतनिष्ठ या जटिल नहीं है। अंग्रेजी के कई प्रचलित शब्द इसमें यथावत् स्वीकार कर लिए गए हैं जैसे: बैंक, वाउचर, ड्राफ्ट, चेक, बिल, रजिस्टर, लेजर, पासबुक, टोकन, शेयर आदि। इसी प्रकार भारत में प्रचलित परंपरागत देशी बैंकिंग व्यवस्था की शब्दावली को भी बैंकों ने अंग्रेजी शब्दों के स्थान पर पारिभाषिक बनाकर स्वीकार किया है, जैसे, रेहन, गिरवी, कर्ज, लेनदार, देनदार, ब्याज, जमा बंधक, घाटा, बीजक, खाता आदि। अत: यह कहना कि हिंदी में बैंकिंग शब्द नहीं है या कठिन हैं, गलत है। बल्कि यदि हम विश्लेषणात्मक ढंग से देखें तो बैंक की शब्दावली, अभिव्यक्तियां और वाक्य रचनाएं काफी सहज और बोलचाल की भाषा के निकट हैं। बैंकिंग शब्दावली की रचना को हम निम्नलिखित प्रकारों में विश्लेषित कर के देख सकते हैं :

(1) **विदेशी शब्द (अंग्रेजी, अरबी-फारसी के प्रचलित शब्द)** — अमानत, नुकसान खपत, ट्रेड यूनियन, रेंट कंट्रोल, गबन, बेदखली, वसीयत, कंपनी, जालसाजी, कूपन, बजट, किश्त, पेशगी, मुआवजा, पार्सल, रकम, नीलाम, दलाल, बकाया, बैंकर, सौदा, अदायगी, दावा, सिक्का, आदि।

(2) **संस्कृत और प्रचलित शब्द का साथ-साथ प्रयोग** — अग्रिम-पेशगी, राशि-रकम, कारोबार-व्यवसाय, मुआवजा-क्षतिपूर्ति, क्रय करना-खरीदना, क्रेता-खरीदार, प्रतिष्ठा-हैसियत, कर-टैक्स, सांविधिक-कानूनी, क्षति-नुकसान, आवेदन-अर्जी, शेष-बाकी, मूल्य-कीमत, संपत्ति-जायदाद, आदि।

(3) **संकर शब्द** — चुकौती पत्र, दैनिक मिलान, रद्द नोट, नगदी प्रमाण पत्र, वसूली प्रभार, लेखा शीर्ष, बैंक उधार, संशोधित बजट, नीलाम कमीशन, शेयरधारी, आदि।

(4) **देशी बैंकिंग प्रणाली से गृहीत शब्द** — फुटकर, चुंगी, वसूली, बोली (बिड), पट्टा, साहूकार, उधार, चालान, हुंडी, गिरवी, दर, बट्टा, घाटा, बीजक, बेबाकी पत्र, साख, भुनाना, कटौती, निपटान आदि।

(5) **निर्मित अभिव्यक्तियां** — निविदा (टेंडर), देयता (लाइबिलिटी), शीर्ष (एपेक्स), तदर्थ (एड-हॉक), आदि।

(6) **अंग्रेजी शब्दों के शब्दानुवाद** — वार्षिक लेखा-Annual account, वित्तीय-Financial, मुक्त अर्थव्यवस्था-Free economy, स्वर्ण मान-Gold standard निर्यातोन्मुखी-Export oriented, कराधान-Taxation, अनधिकृत-Unauthorised, आदि।

(7) **संस्कृत शब्द** — वाहक, उद्योग, संयुक्त, निधि, संचय, आवंटन, अनुबंध, असंगत, धारक, निकाय, ऋण, विलेख, अवमूल्यन, विगद, उद्यम, प्राक्कलन, अतिदेय, स्वामित्व, संसाधन, आदि।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि बैंकों की हिंदी शब्दावली पारिभाषिक होने के साथ-साथ सहज है। यह शब्दावली विभिन्न स्रोतों से ली गई है और इसका विकास बैंकिंग हिंदी के जनता में प्रचलन को ध्यान में रखकर इस प्रकार किया गया है कि इसे सामान्य व्यक्ति को समझने या प्रयोग करने में कोई कठिनाई न हो। बैंक की हिंदी पारिभाषिक शब्दावली में कई संस्कृत के शब्द लिए गए हैं, पर इससे बैंक की हिंदी कठिन नहीं बन पाई है। ऐसे शब्दों के प्रयोग द्वारा एक शब्द से कई शब्द बनाने की सुविधा प्राप्त हुई है। हमें यह समझना चाहिए कि संस्कृत के शब्दों में एक से अनेक शब्द बनाने या निर्मित करने की अपार क्षमता है। अन्य स्रोत के शब्दों में यह शक्ति या तो नहीं या बहुत सीमित है। इसे हम संस्कृत शब्दों की प्रजनक शक्ति कह सकते हैं। इस शक्ति का लाभ हमें हिंदी की प्रत्येक प्रयुक्ति की पारिभाषिक शब्दावली के विकास में मिला है। जबकि अंग्रेजी में इनके लिए भिन्न-भिन्न शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है। उदाहरण के लिए नीचे दिए गए शब्दों को देखें :

(क) आदेश (आर्डर), अनुदेश (इंसट्रक्शन), अध्यादेश (ऑर्डिनेंस), समादेश (रिट), धनादेश (मनीआर्डर)।

(ख) कथन (स्टेटमेंट), प्राक्कथन (फोरवर्ड), अभिकथन (एलेगेशन)।

(ग) कार्य (ड्यूटी/वर्क), कार्यकारी (एक्टिंग), कार्यभार (चार्ज), कार्यक्षमता (एफिशिएंसी), कार्यपालक (एक्जीक्यूटिव), कार्यवृत्त (प्रोसीडिंग्स), कार्यान्वयन (इंप्लीमेंटेशन)।

(घ) क्रिया (एक्शन), प्रक्रिया (प्रोसेस), क्रियाविधि (प्रॉसीजर), क्रियाकलाप (एक्टिविटीज)।

(च) पत्र (लेटर), विपत्र (बिल), प्रपत्र (फार्म), परिपत्र (सर्क्युलर), मांग पत्र (इन्डेंट), प्रतिज्ञा पत्र (प्लेज), अनुज्ञा पत्र (लाइसेंस), आवेदन-पत्र (एप्लीकेशन)।

(छ) योग (टोटल), अभियोग (प्रासिक्यूशन), विनियोग (इन्वेस्टमेंट), दुरुपयोग (मिसयूज), योगदान (कॉन्ट्रिब्यूशन)।

(ज) लेख (आर्टिकल), प्रलेख (डॉक्यूमेंट), विलेख (डीड), आलेखन (ड्राफ्टिंग)।

(झ) शोधन (प्यूरीफिकेशन), परिशोधन (रिवीजन), संशोधन (एमेंडमेंट), प्रशोधन (प्रॉसेसिंग), समाशोधन (क्लियरिंग)।

बैंक की हिंदी में प्रशासनिक और व्यावसायिक कामकाज को निपटाने के लिए कुछ अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया जाता है। इनमें से अधिकांश अभिव्यक्तियां कार्यालय में भी प्रयुक्त होती हैं, कुछ बैंक की अपनी हैं। बैंकों में प्रयुक्त अभिव्यक्तियों की सूची भारतीय रिजर्व बैंक ने निर्मित की है। सभी बैंक इसी सूची का अनुसरण करते हैं और अपने कर्मचारियों के लिए इन्हीं अभिव्यक्तियों के द्विभाषी संस्करण उपलब्ध कराते हैं। यदि इन अभिव्यक्तियों का स्वरूप देखा जाये तो यह स्पष्ट होता है कि ये अभिव्यक्तियां अंग्रेजी और हिंदी में तीन प्रकार से तुलनीय है। पहले स्तर पर अंग्रेजी की एक शब्द की अभिव्यक्ति के लिए हिंदी में एकाधिक शब्दों की अभिव्यक्ति निर्मित की गई है। दूसरे स्तर पर अंग्रेजी की कई शब्दों में व्यक्त अभिव्यक्ति को हिंदी के एक शब्द द्वारा स्पष्ट कर दिया गया है और तीसरे स्तर पर अंग्रेजी और हिंदी अभिव्यक्तियां समान हैं। अर्थात् यहां अंग्रेजी अभिव्यक्तियां का हिंदी में शाब्दिक अनुवाद किया गया है। तीसरे प्रकार की अभिव्यक्तियों की संख्या सर्वाधिक है। अत: हिंदी अभिव्यक्तियों के प्रयोग में कोई कठिनाई नहीं होती। इन तीनों के कुछ उदाहरण हम यहां दे रहे हैं जिससे कि आप बैंक की हिंदी की अभिव्यक्तियों के सरल स्वरूप को देख और समझ सकें :

स्तर : I की अभिव्यक्तियां :

Sealed - मोहर लगा दी गई
Condone- क्षमा करना
Inerement- वेतन वृद्धि
No bar -कोई प्रतिबंध नहीं

स्तर : II की अभिव्यक्तियां :

above mentioned - उपर्युक्त
by force - जबरदस्ती
at an early date - शीघ्र
early as possible - यथाशीघ्र
incumbent of an office - पदस्थ
on an average - औसतन
in due course - यथासमय
yours faithfully - भवदीय

स्तर : III की अभिव्यक्तियां :

Tax deducted at source - स्रोत पर काटा गया कर
Claim accepted, - दावा स्वीकृत
Accepted conditionally - सशर्त स्वीकृत
A brief note is kept below - संक्षिप्त टिप्पण नीचे रखा है

बैंक की वाक्य रचना की अधिकांश संरचनाएं कार्यालयीन हिंदी की ही भांति निर्वैयक्तिक और पैसिव होती है। कई अभिव्यक्तियां भी वाक्यों की तरह काम करती है, परतु विशिष्ट रूप से केवल बैंकों के कामकाज में प्रयुक्त होने वाले वाक्यों की संख्या भी कम नहीं है। कुछ वाक्यों को उनके अंग्रेजी पर्याय वाक्यों के साथ देखें :

नकद प्राप्त - Cash recieved
भुगतान किया - Paid
खाता बंद - Account Closed
अधिक देर हो चुकी है, - Too late for
आज जमा नहीं होगी - todays learins
इस पर विचार किया जाएगा - It will be considered
मामला विचाराधीन है - Matter is under consideration

कार्यालय ध्यान दे और पालन करे - Office to note and comply
प्रश्न उठाया गया है - Question has been raised
प्रश्न नहीं उठता - Question does not arise
अदा करना पड़ेगा - Shall be liable to pay
आप अपने प्रस्ताव शीघ्र प्रस्तुत करें - You may kindly submit your proposals early

हिंदी प्रयोग और द्विभाषीकरण :

बैंकों में हिंदी का प्रयोग स्वतंत्र रूप से धीरे-धीरे होने लगा है। "क" क्षेत्र में तो ऐसा होता ही है "ख" और "ग" क्षेत्रों में भी प्रोत्साहन देकर और कर्मचारियों में जागरुकता पैदा करके हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। द्विभाषीकरण की स्थिति में तो हिंदी का अनिवार्यत: और पहले स्थान पर प्रयोग किया जा रहा है। सभी प्रकार के फार्म, पत्र-शीर्ष, चेक, ड्राफ्ट, वाउचर, खाता, बहियां, पास बुक आदि सभी हिंदी और अंग्रेजी में रहते हैं।

साइन बोर्ड और काउंटर बोर्ड पर द्विभाषिक प्रयोग में हिंदी की वरीयता को आप किसी भी बैंक में जाकर देख सकते हैं। यहां कुछ नमूने आपकी जानकारी के लिए दिए जा रहे हैं :

(1) साइन बोर्ड :

देना बैंक
Dena Bank
गोरखपुर शाखा
Gorakhpur Branch

(2) काउंटर बोर्ड :

शाखा प्रबंधक Branch Manager	लेखाकार Accountant	चालू खाता Current Account
बचत खाता Savings Bank Account		विदेशी मुद्रा विभाग Foreign Exchange Department
नकदी प्रमाण पत्र Cash Certificates		मांग ड्राफ्ट Demand Draft
	भुनाए गए बिल Discounted Bill	

(3) रबर की मुहरें :

स्वीकृत Sanctioned कृते इंडियन बैंक For Indian Bank	राजभवन रोड शाखा Rajbhavan Road Branch
अदायगी प्राप्त Recieved Payment	शाखा प्रबंधक Branch Manager
हस्ताक्षर सत्यापित Signature Attested	नकद भुगतान करें Pay cash

29.6 हिंदी प्रशिक्षण योजनाएं

इस प्रकार बैंकों में हिंदी का प्रयोग अपनी दिशा और गति पकड़ चुका है। अपने कर्मचारियों को हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए सभी राष्ट्रीयकृत बैंक हिंदी शिक्षण योजनाएं चलाते हैं। इनके एक से अधिक प्रकार हैं। आज यह माना जाता है कि राष्ट्रीयकृत बैंक केवल एक संस्था या संगठन मात्र नहीं रह गए हैं। वे एक उद्योग बन गए हैं। ऐसा उद्योग नहीं जो केवल लाभ कमाने के उद्देश्य को लेकर आगे बढ़े, बल्कि ऐसा उद्योग है जो राष्ट्रीय उत्थान और जन-सेवा को प्राथमिकता देता है। बैंकिंग की विविध प्रणालियों की जानकारी कर्मचारियों को दी जा सके, वे कृषि बैंकिंग, लघु-उद्योगों एवं ग्राहक सेवा के संदर्भों को समझ सकें तथा राजभाषा के कार्यान्वयन से संबंधित वैधानिक स्थितियों को जान सकें, इन सबके लिए बैंकों में प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था है। यहां हम हिंदी प्रशिक्षण से संबंधित कुछ बातों की जानकारी आपको देंगे। हिंदी का प्रगामी प्रयोग राजभाषा अधिनियमों के अनुकूल हो, इसके लिए बैंक कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान दिया जाना बहुत ही अनिवार्य है। इसका कारण यह है कि अधिकतर कर्मचारी हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान नहीं रखते। यह भी ध्यान देने की बात है कि हिंदी का ज्ञान रखना या उसकी सामान्य व्यवहार के लिए प्रयोग करना भिन्न स्थिति है। ऐसे लोगों को भी बैंकिंग जैसे तकनीकी क्षेत्र में कामकाज करते हुए बैंकिंग हिंदी की विशिष्ट प्रयुक्ति का तथा उसके प्रयोग-संदर्भों का ज्ञान देना अनिवार्य है अन्यथा राजभाषा संबंधी नियमों का कोई लाभ ही नहीं रह जाएगा। अपनी कमियों एवं सीमाओं के बावजूद बैंकों में तीन माध्यमों से हिंदी प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है :

(1) हिंदी शिक्षण योजना
(2) बैंकों के प्रशिक्षण केन्द्र
(3) हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

हिंदी शिक्षण योजना का महत्व इसलिए है कि 27 अप्रैल 1960 के राष्ट्रपति के आदेश के अनुसार सभी सरकारी कर्मचारियों के लिए हिंदी सीखना तथा उन्हें हिंदी का प्रशिक्षण प्रदान करना अनिवार्य है। इन सरकारी कर्मचारियों में राष्ट्रीयकृत बैंकों के कर्मचारी भी शामिल हैं। राष्ट्रपति के इस आदेश का अनुपालन गृह मंत्रालय, भारत सरकार का राजभाषा विभाग करता है। इसके माध्यम से ही हिंदी शिक्षण योजना कार्यान्वित होती है। इस योजना में जो कर्मचारी हिंदी नहीं जानते उनके लिए हिंदी शिक्षण कार्यक्रम बनाया गया है। इस कार्यक्रम को चलाने के लिए भारत भर में हिंदी शिक्षण केंद्र स्थापित किए गए हैं। इस योजना के अंतर्गत तीन परीक्षाएं ली जाती हैं — **प्रबोध**, जिसका स्तर प्राथमिक स्कूल की हिंदी के बराबर होता है। यह परीक्षा हिंदी न जानने वाले कर्मचारियों के लिए उपयोगी होती है। **प्रवीण**, जिसका स्तर प्रबोध से थोड़ा ऊंचा होता है और इसे मिडिल स्कूल की हिंदी के स्तर का माना जा सकता है। **प्राज्ञ**, जो हिंदी शिक्षण योजना का अंतिम पाठ्यक्रम है और जिसका स्तर हाईस्कूल की हिंदी के बराबर होता है। इस योजना का संचालन पत्राचार पाठ्यक्रम के द्वारा भी उन स्थानों के कर्मचारियों के लिए किया जाता है। जहां शिक्षण योजना केंद्र नहीं है। इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण कर्मचारियों को सरकारी आदेश के अनुसार नकद प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिए जाते हैं।

बैंकों के हिंदी प्रशिक्षण केंद्र भी राजभाषा हिंदी के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन केंद्रों की स्थापना स्वयं बैंकों ने विविध स्थानों पर की है। ये केंद्र कर्मचारियों के लिए अलग और अधिकारियों के लिए अलग होते हैं। इनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही ये केंद्र अपने कार्यक्रम बनाते और चलाते हैं। प्रशिक्षक के रूप में इन केंद्रों पर बैंकों के क्षेत्रीय और आंचलिक कार्यालयों के हिंदी अधिकारियों को नियुक्त किया जाता है। हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन बैंक सरकार की भाषानीति और भारतीय रिजर्व बैंक के अनुदेशों के अनुसार करते हैं। इन कार्यशालाओं का आयोजन करना बैंकों लिए अनिवार्य है। तीन महीने में कम से कम एक कार्यशाला का आयोजन तो बैंकों को करना ही होता है। इन कार्यशालाओं में उन्हीं कर्मचारियों और अधिकारियों को प्रशिक्षित किया जाता है जिन्होंने शिक्षण योजना के माध्यम में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है। इन कार्यशालाओं में प्रयोजनमूलक हिंदी का अभ्यास करवाना प्रमुख कार्य होता है। पत्र लेखन, लेजर लेखन, टिप्पण, आलेखन, पासबुक की

प्रविष्टियां आदि कर्मचारी लिख सकें तथा व्यावहारिक और सरल हिंदी में इन्हें लिख सकें, यह प्रयास इन कार्यशालाओं में किया जाता है। अधिक से अधिक अभ्यास कार्य करवाना तथा कर्मचारियों की हिंदी प्रयोग संबंधी सामान्य त्रुटियों को दूर करना इस प्रकार की कार्यशालाओं का मूल उद्देश्य होता है।

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दस पंक्तियों में दीजिए।

8. बैंक की भाषा का स्वरूप कैसा है ?

.....

.....

.....

.....

.....

9. बैंकिंग शब्दावली की रचना के प्रकारों को उदाहरण सहित समझाइए ।

.....

.....

.....

.....

.....

10. निम्नलिखित के हिंदी पर्याय लिखिए।

(क) Branch Manager .....

(ख) Cash received .....

(ग) Paid .....

(घ) Accountant .....

(ङ) Savings Bank Account .....

(च) Demand Draft .....

(छ) Sealed .....

(ज) Order .....

(झ) Current Account .....

(ञ) Yours Faithfully .....

29.7 सारांश

इस प्रकार हम देखते हैं कि बैंकों में हिंदी का प्रयोग और उसका कार्यान्वयन तेजी से किया जा रहा है। सामग्री के रूप में सभी बैंक द्विभाषिक पारिभाषिक शब्दावली कोश, अभिव्यक्तियों का संग्रह, वाक्यावली की सूची तथा प्रमुख पत्रों के नमूने अपने कर्मचारियों एवं अधिकारियों को उपलब्ध कराते हैं। जनसंपर्क की भाषा के रूप में तथा राजभाषा के रूप में हिंदी के कार्यान्वयन की ओर बैंकों का पूरा ध्यान है। इस प्रयास के फलस्वरूप ही बैंकों की हिंदी आज प्रयोजनमूलक हिंदी के विशिष्ट और सर्वाधिक प्रयुक्त रूप या प्रयुक्ति के रूप में देखी जा रही है तथा इसके अध्ययन और विश्लेषण की ओर भी भाषा अध्येताओं का ध्यान आकर्षित हो रहा है।

29.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

1. देखें 29.2
2. देखें 29.2
3. देखें 29.2
4. देखें 29.3
5. देखें 29.4
6. देखें 29.4
7. देखें 29.4
8. देखें 29.5
9. देखें 29.5
10. देखें 29.5

इकाई 30 रक्षा/सेना में हिंदी

इकाई की रूपरेखा

30.0 उद्देश्य
30.1 प्रस्तावना
30.2 क्षेत्र की विशेषता
30.3 क्षेत्र की भाषा की विशेषता
30.4 रक्षा और सेना में हिंदी
30.5 क्षेत्र में हिंदी का स्वरूप
  30.5.1 प्रशिक्षण में हिंदी
  30.5.2 हिंदी का सामान्य प्रयोग
  30.5.3 सैनिक क्रियाकलापों में हिंदी
  30.5.4 सेना में तकनीकी हिंदी
  30.5.5 सेना के प्रशासन में हिंदी
30.6 सारांश
30.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

30.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम रक्षा/सेना में प्रयुक्त होने वाली हिंदी का परिचय प्राप्त करेंगे। इसे पढ़ने के बाद आप :

- सेना/रक्षा में प्रयुक्त होने वाली हिंदी के स्वरूप का उल्लेख कर सकेंगे,
- संपर्क भाषा के रूप में सेना में हिंदी के प्रयोग पर विचार कर सकेंगे,
- तकनीकी भाषा और प्रशासनिक भाषा के रूप के सेना में हिंदी के प्रयोग को रेखांकित कर सकेंगे, और
- सेना में हिंदी के बहुआयामी प्रयोग, हिंदी की विशिष्टताओं और पारिभाषिक शब्दावलियों का ज्ञान अर्जित कर सकेंगे।

30.1 प्रस्तावना

रक्षा या सेना में हिंदी का प्रयोग विविध स्तरों पर होता है। यहां हिंदी संपर्क भाषा के रूप में भी प्रयुक्त होती है और कामकाज के लिए तकनीकी और विशेषीकृत भाषा का भी प्रयोग किया जाता है। इसमें प्रशासनिक भाषा, वैज्ञानिक भाषा और सेवाओं के नियंत्रण के लिए व्यावहारिक भाषा का प्रयोग होता है। हम इन तीन स्तरों पर इकाई में विचार करेंगे।

30.2 क्षेत्र की विशेषता

रक्षा या सेना का संबंध राष्ट्र की सुरक्षा से भी है और राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने से भी। देश की रक्षा संबंधी नीति बनाने तथा उसे क्रियान्वित करने और सेना का संचालन एवं प्रशिक्षण करने का दायित्व रक्षा

मंत्रालय का है। रक्षा मंत्रालय केंद्र सरकार से संबद्ध है अत: राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रशासनिक स्तर पर बढ़ावा देना भी इसका दायित्व बन जाता है।

रक्षा मत्रालय का कार्य केवल सना तक सीमित नहीं मानना चाहिए। वैज्ञानिक विकास द्वारा रक्षा उपकरणों के निर्माण, उपयोगी अस्त्र-शस्त्र के निर्माण, अणु-परमाणु ताकतों को रक्षा साधन के रूप में विकसित करना आदि अनेक कार्य रक्षा मंत्रालय करता है। अत: रक्षा मंत्रालय का कार्य बहु आयामी है।

इसी प्रकार सेना का स्वरूप भी विविधतापूर्ण है। आपको मालूम ही है कि सेना के तीन अंग होते हैं — जल सेना (Navy), वायु सेना (Air force), और थल सेना (Army)। ये तीनों सेवाएं देश की जल, वायु और थल सीमा की चौकसी करती हैं तथा अवसर आने पर रण कौशल प्रदर्शित करती हैं। इन तीनों सेनाओं के रंगरुटों के लिए प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था भी रक्षा मंत्रालय करता है।

30.3 क्षेत्र की भाषा की विशेषता

ऊपर आपने देखा कि सेना या रक्षा के इस प्रयुक्ति क्षेत्र (Domain) में एक ओर प्रशासनिक भाषा की आवश्यकता है, दूसरी ओर वैज्ञानिक भाषा की और तीसरी ओर सेवाओं के नियंत्रण की व्यावहारिक भाषा की। आगे हम देखेंगे कि रक्षा के क्षेत्र में प्रशासनिक भाषा हिंदी के प्रयोग के वही विधान लागू होते हैं जो केंद्र सरकार के उपक्रमों पर लागू होते हैं। इस विधान के परिणामस्वरूप रक्षा मंत्रालय को भी अन्य मंत्रालयों की भांति राजभाषा हिंदी का प्रयोग प्रशासनिक तथा अन्य स्तरों पर करना अनिवार्य है। रक्षा मंत्रालय का कार्यक्षेत्र व्यापक है इसलिए प्रशासन के साथ-साथ यहां भाषा का प्रयोग अनुसंधान, प्रशिक्षण आदि के लिए भी होता है। इसीलिए रक्षा मंत्रालय में भाषा की अनेक प्रयुक्तियों का प्रयोग होता है। रक्षा मंत्रालय के परमाणु ऊर्जा विभाग, सर्वे विभाग, मौसम, विभाग, मैपरीडिंग विभाग ..... आदि में वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा प्रमुख है। थलसेना के प्रशिक्षण के लिए हिंदी की भिन्न प्रयुक्ति का प्रयोग किया जाता है जिसमें भूगोल, मौसम विज्ञान से संबंधित पारिभाषिक शब्दों का भी प्रयोग करना पड़ता है। वायु सेना में तकनीकी भाषा की प्रमुखता होती है। इसके साथ ही स्टोर, पाठशाला, अतिथि गृह आदि से संबंधित भाषा एवं शब्दावली का रूप भी सेना की हिंदी में विकसित हुआ है। अत: यह कहा जा सकता है कि सेना या रक्षा के क्षेत्र में भाषा की विभिन्न प्रयुक्तियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जाता है।

30.4 रक्षा और सेना में हिंदी

हिंदी का प्रयोग इस दिशा में बढ़ रहा है। राजभाषा संबंधी अधिनियम का पालन इस क्षेत्र में उसी तरह किया जाता है जैसे केंद्र सरकार के अन्य मंत्रालयों और कार्यालयों में किया जाता है। हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दिए जाते हैं, केंद्र सरकार और "क" "ख" क्षेत्र के राज्यों के बीच पत्र व्यवहार में हिंदी को वरीयता दी जाती है। "क" क्षेत्र के अंतर्गत वे सात राज्य आते हैं जिन्होंने अपने राज्य की राजभाषा हिंदी को स्वीकार किया है जैसे, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, केंद्र शासित दिल्ली और हरियाणा तथा "ख" क्षेत्र के अंतर्गत वे राज्य आते हैं जिन्होंने अपने राज्य की भाषा के साथ हिंदी के प्रयोग को भी मान्यता प्रदान की है।

सात हिंदी भाषी राज्यों में भेजे जाने वाले पत्रों पर पता देवनागरी में लिखा जाता है। इसी प्रकार सूचनापट, रबर की मोहर, लेटर हेड, छपे हुए लिफाफे, रजिस्टर और फाइलों के शीर्षक आदि रक्षा मंत्रालय में भी और सेना में भी द्विभाषिक (हिंदी-अंग्रेजी) बनाना अनिवार्य है।

रक्षा-मंत्रालय की राजभाषा सलाहकार समिति भी है। इस समिति के अध्यक्ष स्वयं रक्षा मंत्री होते हैं। रक्षा मंत्रालय राजभाषा परिपालन समिति भी गठित करता है। इस समिति का चेयरमैन संयुक्त सचिव होता है। इसी प्रकार सेना की अपनी राजभाषा परिपालन समिति होती है जिसका अध्यक्ष ब्रिगेडियर होता है और रक्षा मंत्रालय से संबंधित निदेशालयों के प्रतिनिधि इसके सदस्य होते हैं। इस प्रकार इस क्षेत्र में

राजभाषा हिंदी के प्रयोग और विकास के लिए राजभाषा सलाहकार समिति और राजभाषा प्रतिपालन समिति कार्य करती है।

30.5 क्षेत्र में हिंदी का स्वरूप

30.5.1 प्रशिक्षण में हिंदी

सेना में प्रशिक्षण महत्वपूर्ण ही नहीं अनिवार्य भी माना जाता है। सेना में भर्ती होने वाले नए व्यक्ति (रंगरूट) को सेना के बारे में विषद जानकारी नहीं होती । इसलिए सेना में भर्ती करने के बाद उसे छह महीने का प्रशिक्षण अवश्य दिया जाता है। सेना में इस प्रकार के प्रशिक्षण विद्यालय तथा प्रशिक्षण केंद्र होते हैं। इस प्रशिक्षण में प्रमुख माध्यम भाषाएं हिंदी और अंग्रेजी हैं। देश के कोने-कोने से विभिन्न भाषा-भाषी सेना में भर्ती होते हैं। इनका शैक्षिक स्तर भी बहुत ऊंचा नहीं होता अत: हिंदी को प्रशिक्षण के लिए उपयुक्त माना जाता है।

अशिक्षित जवानों या सामान्य (पाठशाला स्तर तक) शिक्षित जवानों को शिक्षित बनाने के लिए सेना में उचित प्रबंध किया गया है। इसे हम सेना का प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम भी कह सकते हैं। इस प्रकार के पाठ्यक्रमों द्वारा सैनिक को इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, साहित्य का सामान्य परिचय दिया जाता है। हिंदी भाषा का अभ्यास भी इस पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य अंग है। शिक्षा की माध्यम भाषा भी हिंदी को ही रखा जाता है। इन पाठ्यक्रमों को कई स्तरों पर चलाया जाता है और सैनिकों को प्रमाण पत्र दिए जाते हैं। इन प्रमाण पत्रों के आधार पर उन्हें वेतन वृद्धि और पदोन्नति भी मिलती है। सैनिकों को शिक्षित बनाना सेना का प्रमुख लक्ष्य है। इस दृष्टि से सेना ने एक कोर की स्थापना की है जिसका नाम है — "सेना शिक्षा कोर"। इस कोर के सुशिक्षित जवान प्रशिक्षण पा कर अन्य जवान को शिक्षा देते हैं। इस कोर का मुख्य केंद्र पंचमढ़ी में है जिसे "आर्मी एजुकेशन ट्रेनिंग कालेज" कहा जाता है। विविध राज्यों के तथा विविध भाषा भाषी सैनिकों को दृष्टि में रखकर इस प्रकार की शिक्षा के लिए माध्यम भाषा के रूप में हिंदी को ही स्वीकार किया गया है। अत: इस शिक्षण कार्यक्रम में हिंदी की प्रमुख भूमिका है।

इन परीक्षाओं में हिंदी परीक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसमें हिंदी के चारों कौशलों (बोलना, सुनना, पढ़ना, लिखना) का विकास बोधन के साथ कराया जाता है। प्राथमिक स्तर पर बाल गीत एवं छोटे-छोटे निबंध रखे जाते हैं। इनका संबंध राष्ट्रीय भावना और जीवन के अनुभवों से रहता है ताकि जवान इन पाठों को अपने से जोड़ सकें और इसके बोधन में उन्हें कठिनाई न हो। जवान अधिक से अधिक बोल सकें और हिंदी में अपने विचारों को व्यक्त कर सकें इसके लिए हिंदी में वार्तालाप कराए जाते हैं। वार्तालाप का विषय सैनिक जीवन से ही संबद्ध होता है, जैसे आपकी दिनचर्या, साहब का इंस्पेक्शन, गणतंत्र दिवस परेड, मेस की व्यवस्था आदि। जवान हिंदी के बोलने की कोशिश करते हैं और उनकी त्रुटियों को प्रशिक्षक दूर करता चलता है। माध्यमिक स्तर पर लेख निबंध या कविताओं का स्तर थोड़ा ऊंचा हो जाता है। वार्तालाप का वि[illegible] सैनिक के दैनिक जीवन से [illegible] थोड़ा व्यापक हो जाता है जैसे, सेना में शिक्षा का महत्व, आपका प्रिय नेता, दीपावली, सेना में [illegible] महत्व [illegible] ही पत्रलेखन, विभिन्न फार्मों को भरने, मनीआर्डर तथा रजिस्ट्री करने आदि की जानकारी भी सैनिकों को दी जाती है। उच्चतर स्तर पर हिंदी व्याकरण एवं उसके शुद्ध प्रयोग पर बल दिया जाता है। साहित्य शिक्षण के साथ आवेदन पत्र आदि लिखने का अभ्यास भी कराया [illegible] है। इस स्तर पर अन्य विषय भी हिंदी माध्यम से ही पढ़ाए जाते हैं। इस प्रकार शिक्षण प्रशिक्षण के स्तर पर सेना में हिंदी का प्रयोग नियोजन एवं सुविचारित ढंग से किया जा रहा है।

30.5.2 हिंदी का सामान्य प्रयोग

यह तो हम सभी जानते हैं कि विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच हिंदी संपर्क भाषा (लिंक लैंग्वेज) का काम करती है। औद्योगिक विकास के कारण भारत के कई नगर औद्योगिक नगर के रूप में विकसित हुए हैं जैसे दुर्गापुर, बोकारो, भिलाई, जमशेदपुर आदि। इन नगरों को स्थानीय नहीं कहा जा सकता। यहां

पूरे भारत से विभिन्न भाषा-भाषी आते हैं और एक साथ रहते हैं। एक प्रकार से ये नगर "लघु भारत" के संस्करण हैं। सामान्य बोलचाल, बाजारों, आस-पास के कस्बों में ये सभी हिंदी को ही संपर्क भाषा के रूप में अपनाते हैं। ऐसी ही स्थिति सेना की भी है। इसमें भी विभिन्न प्रदेश के लोग एक साथ रहते हैं। इनके बीच भी व्यावहारिक हिंदी का प्रयोग ही आपसी संपर्क का माध्यम बनता है। चाहे सैनिक महाराष्ट्र का हो या पंजाब का, हरियाणा का हो या मद्रास का, बिहार का हो या आंध्र का, इस सामान्य हिंदी का प्रयोग वह अपने दैनिक व्यवहार में करता है। इस व्यावहारिक हिंदी के प्रचलन के कारण ही सेना में कुछ शब्द अखिल भारतीय स्तर पर प्रयुक्त होते हैं: जवान, दरख्त, लंगर, सैनिक गाड़ी, चारपाई, चाय, सब्जी, साबुन, तौलिया, चमड़ा, कान, पीठ, पोशाक, वर्दी, घुड़साल, छुट्टी, झंडा, गोली, टिकिया, दारु, तम्बू, तालाब, थानेदार, नक्शा, नायक, चढ़ाई, पहाड़, बारूद, मच्छर, रोगी शीशा आदि।

30.5.3 सैनिक क्रियाकलापों में हिंदी

सेना के क्रियाकलापों में हिंदी के प्रयोग को व्यापक स्तर पर बढ़ावा दिया जा रहा है। सेना के पदनामों, उसकी चिकित्सा सेवाओं, सैन्य गतिविधियों, आदि अनेक क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दावली के हिंदी पर्याय विकसित किए गए हैं। ये हिंदी प्रयोग हिंदी की विविध शैलियों के आधार पर निर्मित है। इस शब्दावली को यहां संक्षेप में दिया जा रहा है। इन्हें देखने से यह भी स्पष्ट होगा कि सेना की यह पारिभाषिक शब्दावली अपने प्रयोक्ताओं को ध्यान में रखते हुए संस्कृतनिष्ठ नहीं बनाई गई है बल्कि इसके निर्माण में प्रचलित, लोकप्रिय और आसान शब्दावली को स्थान दिया गया है। हिंदी के ये शब्द सेना के क्रियाकलापों में लोकप्रिय हो चुके हैं और अंग्रेजी शब्दों की तुलना में इनका अधिक प्रयोग भी किया जा रहा है। यहां इन शब्दों के साथ उनके अंग्रेजी पर्याय भी दिए जा रहे हैं तथा उनका स्रोतगत परिचय भी। साथ ही किसी विशेष संदर्भ में टिप्पणी भी दी जा रही है ताकि आप इनके स्वरूप को भलीभांति समझ सकें।

बारूदघर, आयुध घर	-	Magazine	बारूद उर्दू का शब्द है और आयुध संस्कृत का। इन दोनों के साथ देशज शब्द "घर" जुड़ा है। अत: यह संकर शब्द है।
मेजर	-	Major	(अंग्रेजी का आगत शब्द)
सजगता	-	Alertness	(संस्कृत)
आयुधागार	-	Arsenal	(संस्कृत)
तोपखाना	-	Artillary	(उर्दू)
हमला, प्रहार	-	Assault	(दोनों प्रचलित हैं। "हमला" अधिक लोकप्रिय है।
बैरक	-	Barrack	(अंग्रेजी आगत शब्द)
गश्ती गारद	-	Beat guard	"गश्ती" उर्दू शब्द "गारद" गार्ड का ध्वनि परिवर्तित रूप है।
सीमा रेखा	-	Border line	(संस्कृत, शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद)
शिविर, कैंप	-	Camp	"शिविर" संस्कृत का शब्द है। कैंप, अंग्रेजी का आगत शब्द है। दोनों प्रचलित हैं।
छावनी	-	Cantonment	(देशज, बहुत ही प्रचलित)
अस्त्र विराम	-	Cease fire	(संस्कृत, शब्दप्रति-शब्द अनुवाद)
जांच चौकी	-	Check Post	(देशज, शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद)
रसोइया बावर्ची	-	Cook	रसोइया-देशज, बावर्ची-उर्दू दोनों प्रचलित
नजरबंदी	-	Dotontion	(उर्दू)
विस्फोट	-	Explosior	(संस्कृत)
गोलीबारी, फायर	-	Fire	"गोलाबारी" उर्दू, फायर-अंग्रेजी का आगत शब्द। दोनों ही प्रचलित।
शौर्य पुरस्कार	-	Gallantryaward	(संस्कृत, शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद)
सम्मान गारद, सैनिक सलामी	-	Guard of honour	(दोनों संकर। पहले में संस्कृत + अंग्रेजी दूसरे में संस्कृत + उर्दू

तलाशी	-	Search	(उर्दू)
प्रशिक्षण केंद्र	-	Training centre	(संस्कृत, शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद)
देशद्रोही, गद्दार	-	Traitor	देशद्रोही : संस्कृत, गद्दार : उर्दू दोनों ही प्रचलित।
टोली, सैन्यदल	-	Troop	टोली:देशज, सैन्यदल: संस्कृत दोनों ही प्रचलित।
सुरंग	-	Tunnel	(उर्दू)
बारमैन	-	Barman	(अंग्रेजी)
कर्नल	-	Colonel	(ध्वनि परिवर्तन के साथ अंग्रेजी शब्द)
कप्तान	-	Captain	(ध्वनि परिवर्तन के साथ अंग्रेजी शब्द)
तोपची, गनर	-	Gunner	तोपची-उर्दू, गनर-अंग्रेजी दोनों ही प्रचलित।
सशस्त्र सेना चिकित्सा कोर	-	Armed forees medical corps	कोर: ध्वनि परिवर्तन के साथ अंग्रेजी शब्द शेष शब्द-प्रति अनुवाद संस्कृतनिष्ठ।
शस्त्रागार अधिकारी	-	Armoury officer	(संस्कृत, शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद)
थल सेना मुख्यालय	-	Army headquarters	(शब्द, शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद)
सेना अस्पताल	-	Army hospital	सेना : संस्कृत अस्पताल-ध्वनि परिवर्तन के साथ अंग्रेजी शब्द
बटालियन कमांडर	-	Battalion commandar	(अंग्रेजी)
बैरक अफसर	-	Barrack officer	(अंग्रेजी)
कैंटीन प्रबंधक	-	Canteen Manager	कैंटीन : अंग्रेजी प्रबंधक : संस्कृत संकर शब्द।
बेतार मेकैनिक	-	Wirelease Mechanic	बेतार-उर्दू मैकैनिक-अंग्रेजी संकर शब्द
सेनापुलिस	-	Military Police	सेना-संस्कृत पुलिस- अंग्रेजी संकर शब्द
लंगर	-	Mess	(देशज)
संतरी	-	Santry	ध्वनि परिवर्तन के साथ अंग्रेजी शब्द इनके साथ ही सेना के क्रियाकलाप में व्यायाम और कवायद अनिवार्य होते है। इन कार्यों में भी हिंदी का प्रयोग किया जाता है। कवायद के समय निर्देशों के रूप में हिंदी के निर्देश तो एन.सी.सी का प्रशिक्षण लेते समय या गणतंत्र दिवस की परेड के समय आपने भी सुना होगा, जैसे-
सावधान	-	Attention	
विश्राम	-	At ease	
बाएं मुड़	-	Turn left (leftturn)	
दाहिने मुड़	-	Turn right (rightturn)	"दाएं" का प्रयोग नहीं किया जाता क्योंकि "दाए" "बाएं" में ध्वनि साम्य है अत: भ्रम उत्पन्न हो सकता है।
सामने देख	-	See straight	
तेज चल	-	Quick March	

इसी तरह अन्य हिंदी प्रयोग भी देखे जा सकते हैं :

कवायद, परेड	-	Parade	कवायद : उर्दू परेड: अंग्रेजी का आगत शब्द
दौड़ना	-	To run	(हिंदी)
कूदना	-	To jump	(हिंदी)
रूट मार्च	-	रूट मार्च	(अंग्रेजी)
वर्दी	-	Uniform	(उर्दू)

30.5.4 सेना में तकनीकी हिंदी

सेना के अनेक विभाग और अनुभाग ऐसे हैं जिनमें वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी का प्रयोग अनिवार्य है। वैसे तो तकनीकी क्षेत्र में अंग्रेजी भाषा का प्रचलन ही अधिक होता है। लेकिन सामान्य सैनिकों और अधिकारियों के लिए तकनीकी हिंदी का प्रचलन भी जरूरी होता है। वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र में सामान्य प्रशिक्षण के लिए सेना में कई कोर्स चलाए जाते हैं यहां मूलरूप से हम उन्हीं क्षेत्रों को देखेंगे जिनमें हिंदी-प्रशिक्षण की सुविधा है और इन क्षेत्रों में हिंदी का अपेक्षा के अनुकूल विकास भी हुआ है और उसका प्रयोग भी हो रहा है। सामान्यत: इन क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दावली का विकास सेना में इनके प्रचलन पर प्रकाश डालेगा।

(क) **सर्वे विभाग और सर्वे प्रशिक्षण में हिंदी :** यह सेना का प्रमुख विभाग है। आवश्यकता पड़ने पर यह विभाग अपने राष्ट्र के क्षेत्रों और शत्रु के इलाके को भी नापता है। कैंप कहां लगाना चाहिए, कितनी गहराई में बैरक बनाने चाहिएं भारी शस्त्रों को किस स्थान पर स्थापित करना चाहिएं आदि कई जानकारियां यह विभाग सेना को प्रदान करता है। साथ ही यह भूमि की मजबूती, पर्वतों, खाइयों, टीलों की प्रकृति, विभिन्न मौसमों में इनकी स्थिति पर भी विविध जानकारियां देती है। इन जानकारियों के आधार पर सेना अपने शिविर लगाती है और रणनीति तैयार करती है।

इनमें प्रचलित हिंदी शब्दों की प्रकृति एवं स्वभाव को देखें :

सूखा	:	dry
उठान	:	lift
आरोह दर	:	climbing rate
सतह	:	surface
दाब बल	:	pressuring power
दूरबीन	:	bianacular
क्षैतिज	:	horizontal
ऊर्ध्व	:	high

(ख) **मौसम विभाग :** सेना के लिए मौसम की जानकारी बहुत आवश्यक है। अत: यह विभाग मौसम संबंधी विवरण प्रदान करता है।

तापमान	:	Temperature
अधिकतम	:	Maximum
न्यूनतम	:	Minimum
पवन दिशा	:	Direction of the wind
वायु दाब	:	Atmosphere
आर्द्रता	:	Humidity

(ग) **मैपरीडिंग विभाग :** सेना में विभिन्न प्रकार के नक्शों को पढ़ने की आवश्यकता हमेशा पड़ती है। इसी कार्य के लिए सैनिकों को प्रशिक्षित करने के लिए यह विभाग स्थापित किया गया है। नक्शे में एक कागज के टुकड़े पर किसी निश्चित भू-भाग को उसकी विशेषताओं के साथ दर्शाया जाता है। सेना में मैपरीडिंग का प्रशिक्षण प्रत्येक सैनिक के लिए अनिवार्य है। इनके अभाव में न तो वह किसी अपरिचित क्षेत्र में प्रवेश कर सकता है और न ही वहां से वापस आ सकता है। शत्रु के इलाके की जानकारी के लिए, अपने को छिपाते हुए शत्रु पर आक्रमण करने के लिए तथा किसी क्षेत्र की पूरी जानकारी के लिए मैपरीडिंग आवश्यक है। इस महत्वपूर्ण कार्य से सामान्य सैनिक भी जुड़ा है अत: इसके प्रशिक्षण में सेना में हिंदी का प्रयोग तेजी से हो रहा है :

निश्चित संकेत	: Conventional signs
वास्तविक उत्तर	: True North
चुबकीय उत्तर	: Magnetic North
ढलान	: Slope

नक्शे का संदर्भ : Grid Reference
स्थानीय अंतर : Local variation
मापक : Scale
रात्रि प्रचलन : Night March

30.5.5 सेना के प्रशासन में हिंदी

जैसा कि पहले भी कहा गया है अन्य मंत्रालयों की भांति ही रक्षा मंत्रालय भी राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन से जुड़ा हुआ है। तीनों रक्षा सेवाएं अपने असंविधिक साहित्य का अनुवाद स्वयं करती हैं। यह अधिकार रेल और डाकतार सेवा के अतिरिक्त केवल सेना को ही दिया गया है।

सेना में भी हिंदी में योग्यता प्राप्त करने पर (वे सैनिक या कर्मचारी जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है) प्रोत्साहन दिया जाता है। अत: प्रशासनिक स्तर पर सेना में भी हिंदी में काम होता है और राजभाषा हिंदी या कार्यालयीन हिंदी का जो स्वरूप संघीय उपक्रमों में है उसी का प्रयोग सेना में भी होता है।

सेना मुख्यालय राजभाषा संबंधी क्रियान्वयन की तिमाही रिपोर्ट भी अपने निदेशालयों से मांगता है। इस दृष्टि से सेना में भी वही प्रक्रिया अपनाई जाती है जो केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में । सेना में प्रयुक्त तिमाही-रिपोर्ट से संबंधित फार्म को यहां दिया जा रहा है जिससे राजभाषा के रूप में प्रशासनिक स्तर पर सेना की गतिविधियां स्पष्ट हो सकेंगी :

यूनिटों से मांगने के लिए तिमाही प्रगति रिपोर्ट का फार्म

यूनिट का नाम .....
तारीख ..... को समाप्त हुई तिमाही

(1) हिंदी पत्रों का उत्तर
- (क) कितने पत्र/ नोट/ दूसरे दस्तावेज हिंदी में आए।
- (ख) कितनों के उत्तर हिंदी में दिए।
- (ग) कितनों के उत्तर अंग्रेजी में दिए।
- (घ) अंग्रेजी में उत्तर क्यों दिए।

(2) अपनी ओर से भेजे गए हिंदी के मूल पत्र
- (क) अपनी ओर से भेजे गए पत्र/नोट
- (ख) "क" और "ख" क्षेत्र में कितने तार हिंदी में भेजे।
- (ग) नानकमीशंड कार्मिकों को भेजे गए पत्र।

(3) हिंदी और अंग्रेजी दोनों में जारी होने वाले कागज़ात का ब्यौरा

	अंग्रेजी और हिंदी में	हिंदी में	अंग्रेजी में
(क) सामान्य आदेश			
(ख) स्टेशन आदेश			
(ग) प्रेस विज्ञप्तियां			
(घ) टेंडर और करार			
(च) लाइसेंस और परमिट			

(4) कर्मचारियों का हिंदी ज्ञान
- (क) कुल कितने कर्मचारी
- (ख) कार्यसाधक हिंदी जानने वाले कितने
- (ग) हिंदी में 25 काम वाले कितने

(5) टाइपिस्ट और स्टेनोग्राफर
- (क) कुल कितने
- (ख) हिंदी टाइपिंग/स्टेनोग्राफी जानने वाले कितने
- (ग) कितनों से हिंदी टाइपिंग/स्टेनोग्राफी कराई जाती है
- (घ) कितनों को हिंदी टाइपिंग सिखाने जा रहे हैं

(6) हिंदी में कामकाज
- (क) कितने फाइलों पर हेडिंग लिखे गए
- (ख) फाइलों पर कितने पत्र या नोट हिंदी में जारी हुए
- (ग) हिंदी पत्रों का इंदराज हिंदी में हो रहा है
- (घ) कुल कितने सेक्शन
- (च) कितनों में 25 हिंदी में काम होता है

पहले तो इस फार्म में ही हिंदी के स्वरूप को देखा जाय। आप देख रहे हैं कि टाइपिस्ट, स्टेनोग्राफर, फाइल, हेडिंग, सेक्शन, नोट, टेंडर जैसे शब्दों को यथावत् अंग्रेजी से स्वीकार ही नहीं किया गया है बल्कि इनके प्रयोग से कार्यालयीन हिंदी की संकर रचना अधिक बोधगम्य बनी है। वैसे इन अंग्रेजी शब्दों के पर्याय पारिभाषिक शब्द हिंदी में निर्मित हैं, जैसे — टाइपिस्ट-टंकक, स्टेनोग्राफर-आशुलिपिक, फाइल-मिसिल, हेडिंग-शीर्षक, सेक्शन-अनुभाग, नोट-टिप्पणी, टेंडर-निविदा।

इस फार्म के महत्वपूर्ण पारिभाषिक शब्दों पर ध्यान दें :

पत्र	-	Letter	(संस्कृत)
टिप्पणी	-	Note	(संस्कृत)
दस्तावेज़	-	Document	(उर्दू)
सामान्य आदेश	-	General order	(संस्कृत)
प्रेस विज्ञप्ति	-	Press commoune	(संस्कृत)
करार	-	Agreement	(उर्दू)
कार्यसाधक	-	Working	(संस्कृत)
इंदराज	-	Entry	(उर्दू)

सामान्य रूप से सेना में प्रशासनिक हिंदी का वही रूप प्रयुक्त होता है जिसके विषय में आप अन्य किसी इकाई में जान चुके होंगे। फिर भी वहां कुछ पारिभाषिक शब्दावलियों को तथा कुछ अभिव्यक्तियों को दिया जा रहा है जिनका प्रयोग प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए अपेक्षाकृत अधिक होता है।

अनुशासन	-	discipline	(संस्कृत)
अधिकारी	-	officer	(संस्कृत)
पदोन्नति	-	promotion	(संस्कृत)
वेतनवृद्धि	-	Increment	(संस्कृत)
सूचना	-	notice	(संस्कृत)
प्रशासन	-	administration	(संस्कृत)
गोपनीय	-	confidential	(संस्कृत)
अनुरोध	-	request	(संस्कृत)
छांटना	-	to sort out	(देशज)
अनुमोदित	-	approved	(संस्कृत)
पास करना	-	to pass	(संकर)
मंजूरी	-	sanction	(उर्दू)
समिति	-	committee	(संस्कृत)
भत्ता	-	allowance	(देशज)
निरीक्षण	-	inspection	(संस्कृत)
विराम	-	half	(संस्कृत)
मूलवेतन	-	basic pay	(संस्कृत)
मुझे निदेश हुआ है	-	I am directed	
प्रतिनियुक्ति (पर)	-	(on) deputation	
कार्यमुक्त	-	relieved	(संस्कृत)
लेखा अनुभाग	-	accounts section	(संकर)
चेतावनी	-	warning	(संस्कृत)
आचरण	-	conduct	(संस्कृत)
पहचान पत्र	-	indentity card	(संकर)
मुख्यालय	-	headquarter	(संस्कृत)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पांच-पांच पंक्तियों में दीजिए-

1. सेना में भाषा के किन-किन रूपों की आवश्यकता होती है ?

.....

.....

.....

.....

2. रक्षा मंत्रालय की राजभाषा समितियों का परिचय दीजिए ?

.....

.....

.....

.....

3. सैनिकों को शिक्षित बनाने के कार्यक्रम का परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

4. निम्नलिखित कथनों में सही कथन के सामने (√) चिह्न तथा गलत कथन के सामने (×) चिह्न लगाइए :

(i) रक्षा मंत्रालय का कार्य केवल सेना तक सीमित है।
(ii) सेना के पांच अंग होते हैं।
(iii) विभिन्न भाषा भाषियों के लिए हिंदी मातृ भाषा है।
(iv) सेना में लोकप्रिय, प्रचलित और आसान शब्दावली अपनाई जाती है।
(v) "-संतरी" और "कप्तान" संकर शब्द हैं।

5. इन शब्दों के सामने इनके स्रोत का नाम लिखिए :

(i) तोपखाना .....
(ii) विस्फोट .....
(iii) छावनी .....
(iv) बैरक .....
(v) सजगता .....

6. इन शब्दों के अंग्रेजी पर्याय लिखिए ।

(i) तलाशी .....
(ii) टोली .....
(iii) तोपची .....
(iv) दाव वल .....
(v) न्यूनतम .....

7. इन शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए :

(i) Attention .....

(ii) Quick March .....

(iii) turn left .....

(iv) Uniform .....

(v) At ease .....

8. इनका सही ढंग से मिलान कीजिए :

(क)	सतह	(i)	horizontal
(ख)	क्षैतिज	(ii)	humidity
(ग)	आद्रता	(iii)	temperature
(घ)	तापमान	(iv)	surface
(च)	ढलान	(v)	scale
(छ)	मापक	(v)	slope

9. इनकी अंग्रेजी अभिव्यक्तियां लिखिए

(i) मुझे निदेश हुआ है .....

(ii) प्रतिनियुक्ति पर .....

(iii) अनुमोदित .....

(iv) छांटना .....

(v) कार्यमुक्त .....

10. इनके स्रोत सामने लिखिए :

(i) दस्तावेज .....

(ii) टिप्पणी .....

(iii) मंजूरी .....

(iv) कार्यसाधक .....

(v) भत्ता .....

30.6 सारांश

इस इकाई के अंतर्गत अभी तक जितनी चर्चा की गई उससे यह स्पष्ट होता है कि सेना के कई क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग हो रहा है। यदि सेना में प्रयुक्त विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली को देखा जाए तो उसमें हमें पर्याप्त लचीलापन दिखाई देता है। इसका कारण यही है कि रक्षा-सेवाओं में देश के विभिन्न भागों से लोग आते हैं और वे भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलते हैं अत: सर्वस्वीकार्य, सहज, शब्दावली को अपनाने पर बल दिया गया है। इसीलिए सेना की शब्दावली में पहले प्रचलित शब्दों को ही ग्रहण किया गया है। इस दिशा में कई महत्वपूर्ण सुझाव भी रक्षा मंत्रालय, शब्दावली आयोग आदि देते रहे हैं। जैसे कि यह बात सभी ने स्वीकार की है कि सैनिक रैंक अंतर्राष्ट्रीय स्वीकृति पा चुके हैं इसलिए सेना के ओहदों या पदों के अंग्रेजी रूप को ही ज्यों का त्यों अपनाकर देवनागरी लिपि में लिप्यंतरित करना ही उचित है। जो पद अंतर्राष्ट्रीय स्तर के नहीं हैं उनके हिंदी पर्याय तय कर लिए गए। इस प्रकार जनरल, कर्नल, मेजर आदि को यथावत् अपनाया गया और डायरेक्टर ऑफ एकाउंट्स, डायरेक्टर जनरल, साइंटिफिक आफिसर के लिए क्रमश: लेखा निदेशक, महानिदेशक, वैज्ञानिक अधिकारी को अपनाया गया।

रक्षा शब्दावली आयोग के तत्वाधान में कई राष्ट्रीय स्तर की बैठकों के बाद तय की गई है। इन बैठकों में रक्षा सेनाओं के प्रतिनिधियों, सैन्य विभागों के अधिकारियों, भाषाविदों आदि ने अपना सहयोग दिया। शब्दावली में कमांड शब्दावली, पदनाम शब्दावली, स्थानीय यूनिटों के हिंदी नाम, प्रशासन में काम आने वाले हिंदी वाक्यांशों के परिशिष्ट भी जोड़े गए।

30.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

1. 1, 2, 3, के लिए इकाई पुनः पढ़िए।

4. (i) गलत (ii) गलत (iii) गलत
   (iv) सही (v) गलत

5. (i) उर्दू (ii) संस्कृत (iii) देशज
   (iv) अंग्रेजी (v) संस्कृत

6. (i) search (ii) troup
   (iii) gunman (iv) pressuring power
   (v) minimum

7. (i) सावधान (ii) तेज चल
   (iii) बायें मुड़ (iv) वर्दी
   (v) विश्राम

8. (क) iv (ख) i
   (ग) ii (घ) iii
   (च) vi (छ) v

9. (i) I am directed to,
   (ii) on deputation,
   (iii) sanctioned,
   (iv) to sort out,
   (v) relieved

10. (i) उर्दू (ii) संस्कृत
    (iii) उर्दू (iv) संस्कृत
    (v) देशज

इकाई 31 विधि/न्याय के क्षेत्र में हिंदी

इकाई की रूपरेखा

31.0 उद्देश्य
31.1 प्रस्तावना
32.2 विधि अथवा न्याय का क्षेत्र एवं तात्पर्य
31.3 विधि/न्याय के क्षेत्र में हिंदी भाषा : इतिहास
31.4 विधि क्षेत्र में हिंदी : स्वरूप
31.5 विधि के क्षेत्र में हिंदी : सीमाएं
31.6 विधि की हिंदी का विस्तार
31.7 सारांश
31.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

31.0 उद्देश्य

इस इकाई में विधि/न्याय क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग से संबद्ध आयामों की चर्चा की गई है। इसे पढ़ने के बाद आप :

- विधि क्षेत्र की व्यापकता और आम आदमी के जीवन में इसके महत्व पर प्रकाश डाल सकेंगे,
- विधि में क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग की अनिवार्यता को रेखांकित कर सकेंगे,
- विधि के क्षेत्र में हिंदी प्रयोग संबंधी प्रयासों की चर्चा कर सकेंगे,
- विधि की हिंदी की प्रकृति पर प्रकाश डाल सकेंगे, और
- विधि क्षेत्र में हिंदी के प्रचलन की चर्चा कर सकेंगे।

31.1 प्रस्तावना

यह इकाई विधि और न्याय के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग से संबंधित है। अब तक आप इस खंड में वाणिज्य, बैंकिंग और रक्षा क्षेत्र में हिंदी के वहुविध प्रयोग का अध्ययन कर चुके हैं। विधि का क्षेत्र जनता के जितना नजदीक है, उसकी भाषा उतनी ही जटिल है। कभी इसकी भाषा अरबी-फारसी बनती है तो कभी अंग्रेजी और कभी क्लिष्ट, दुरुह और कृत्रिम हिंदी। अभी तक विधि के क्षेत्र में सरल और सुबोध हिंदी के प्रयोग में सफलता नहीं मिल पाई है। इस खंड में हम इन्हीं कुछ प्रश्नों को सुलझाने का प्रयत्न करेंगे। आइए इकाई का अध्ययन आरंभ करें।

31.2 विधि अथवा न्याय का क्षेत्र एवं तात्पर्य

विधि का क्षेत्र भी वाणिज्य के क्षेत्र की ही भांति बहुत ही विस्तृत है। सरकारी कामकाज के लिए जो नियम एवं शर्तें बनाई जाती हैं वे भी इस क्षेत्र में आ जाती हैं। हमारे संविधान में जो अनेक अनुच्छेद हैं वे भी विधि के अंतर्गत आ जाएंगे, कानूनी दृष्टि से जो भी खरीदने बेचने के प्रपत्र, गिरवी रखने के प्रपत्र, जमीन जायदाद के बंटवारे के प्रपत्र या विलेख आदि होते हैं वे भी विधि के क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। इसके साथ ही हमारे या भारतीय नागरिक के अधिकारों कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए प्रशासन के विभिन्न क्षेत्रों में जो नियम, विनियम, धाराएं आदि निर्मित हैं उन्हें भी हम विधि का क्षेत्र मानते हैं और वाक्यांशों के निर्णय के लिखित रूप तथा विधानसभाओं में हुए विचार-विमर्श के दस्तावेजीकरण

(documentation) को भी इसके अंतर्गत रख सकते हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रशासन, न्यायपालिका, कार्यपालिका आदि के अनुशासित क्रियान्वयन के लिए जो नियमादि बनाए जाते हैं वे सभी विधि क्षेत्र से ही संबद्ध होते हैं।

यह तो आप जानते ही हैं कि विधि के क्षेत्र की भाषा मुगल शासनकाल में फारसी थी और अंग्रेजी शासनकाल में अंग्रेजी थी। अर्थात् विधि या कानून की भाषा के रूप में हिंदी भाषा का विकास अन्य सभी क्षेत्रों की ही भांति स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हुआ। तब हिंदी को हमारे संविधान ने संघ की राजभाषा घोषित किया और सभी ने महसूस किया कि जनता को न्याय से संबंधित उपबंधों की जानकारी उनकी अपनी भाषा में देने के साथ ही उन्हें न्याय भी उनकी अपनी भाषा में मिलना चाहिए।

आप पिछली इकाइयों में यह जान चुके हैं कि संघ की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने के बाद हिंदी के प्रयोजनमूलक रूपों के विकास का प्रयत्न तेजी से प्रारंभ किया गया। कृषि, विज्ञान, व्यापार, वाणिज्य, प्रशासन जैसे क्षेत्रों के साथ ही विधि के क्षेत्र में भी इसके विकास के प्रयास प्रारंभ हुए। यह भी कहा जाता है कि राजभाषा हिंदी के प्रयोजनमूलक रूपों के विकास में कृषि, विधि एवं विज्ञान के क्षेत्र को प्राथमिकता दी गई। आप यह भी जान चुके होंगे कि संविधान में राजभाषा हिंदी की स्वीकार्यता के साथ ही संविधान में यह भी कहा गया था कि राजभाषा हिंदी के तीव्रगामी विकास के लिए राष्ट्रपति एक आयोग गठित करेंगे। इस आयोग का गठन हुआ, जिसे हम राजभाषा आयोग के नाम से जानते हैं। यह भी कहा गया कि यह आयोग राजभाषा हिंदी के प्रयोग, क्रियान्वयन तथा विकास के संबंध में अपने सुझाव देगा। विधि के क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी के विकास के लिए आयोग ने राष्ट्रपति को दो सबसे महत्वपूर्ण सुझाव दिए — (i) विधि की हिंदी शब्दावली का विकास करना, तथा (ii) समस्त अधिनियमों को हिंदी में पुन: अधिनियमित करना। आयोग ने उसके सुझाव में यह भी कहा कि विधि की पारिभाषिक हिंदी शब्दावली में एकरूपता होनी चाहिए तथा केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा विधि की शब्दावली के विकास का जो प्रयत्न किया जा रहा है उनमें समन्वय लाने का कार्य करना चाहिए। यह सुझाव देने का मूल कारण यह था कि अखिल भारतीय स्तर पर विधि की एकरूप शब्दावली का प्रयोग किया गया जिससे कि आगे भिन्नता के कारण समस्याएं न उत्पन्न हों। अयोग की इन सिफारिशों के आधार पर राष्ट्रपति ने 1960 में अपने आदेश जारी किए और 1961 में राजभाषा (विधायी) आयोग स्थापित हुआ जिसे विधि के क्षेत्र में हिंदी के विकास एवं निर्माण का कार्य सौंप दिया गया। आयोग ने हिंदी में मानक विधि शब्दावली के निर्माण के साथ ही अधिनियमों के अनुवाद का कार्य भी करना प्रारंभ किया। इससे हिंदी शब्दों के पाठगत प्रयोग के संदर्भ में अनुवाद करने में भी सुविधा हुई और विधि की हिंदी शब्दावली को प्रयोग के साथ देखने-समझने से उसका अर्थ भी सुनिश्चित होता गया। राजभाषा अधिनियम में यह स्पष्ट कहा गया है कि अधिनियमों, अध्यादेशों, आदेशों, नियमों, विनियमों या उपविधियों के जो अनुवाद हिंदी में लाए जाएंगे उन्हें हिंदी में उनका प्राधिकृत पाठ माना जाएगा। अर्थात् प्राधिकृत पाठ को आदर्श माना जाएगा और इस पाठ के आधार पर न्यायालय अपने निर्णय दे सकता है। इस प्रकार विभिन्न नियमों आदि के हिंदी अनुवादों को जो मान्यता और प्रतिष्ठा मिली उससे विधि की हिंदी में अपने आप ही परिष्करण, स्पष्टता और अर्थ स्थैर्य आ गया।

जब हिंदी राजभाषा बनी तो सामाजिक आवश्यकता के अनेक क्षेत्रों में उसकी पारिभाषिक शब्दावली, अभिव्यक्तियों, वाक्य संरचना का विकास हुआ।

31.3 विधि/न्याय के क्षेत्र में हिंदी भाषा : इतिहास

यह तो सभी स्वीकार करते हैं कि एक स्वतंत्र राष्ट्र को अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वाह अपनी भाषा में करना चाहिए। यह भी आवश्यक माना गया है कि कानून के क्षेत्र में जनता को अपनी भाषा के प्रयोग की छूट होनी चाहिए। बल्कि यहां तक कहा जाता है कि जिन प्रशासनिक, न्यायिक, व्यापारिक कार्य का संबंध जन सामान्य से हो वहां अपनी भाषा का प्रयोग अनिवार्यत: करना चाहिए। इसे तो हम एक विडंबना ही मानेंगे कि भारत के न्यायालयों में निर्णय एक ऐसी भाषा में सुनाया जाय, जिसे वह व्यक्ति जानता ही नहीं जिसके बारे में निर्णय लिया गया है या जनता तक पहुंचने वाले उसके

अधिकार-कर्तव्यों-संहिताओं की जानकारी उसे अंग्रेजी में दी जाय जो उसके लिए निरर्थक है।

हमें यह जानना चाहिए कि आज भारत में विधि या न्याय की जो व्यवस्था चल रही है वह अंग्रेजों की ही दी हुई है। कानून जनता के लिए होते हैं, अत: उन्हें जनता की भाषा में ही प्रस्तुत एवं लागू करना चाहिए। इसीलिए स्वतंत्र भारत में संविधान के माध्यम से विधि को जनता की भाषा में प्रस्तुत एवं लागू करने की व्यवस्था की गई। अंग्रेजी शासन काल में भी हिंदी के माध्यम से न्याय व्यवस्था को चलाने के प्रयास किए गए थे। उदाहरण के लिए, 1797 ई. में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने यह कानून बनाया था कि भारत से संबंधित कानूनों के अनुवाद हिंदी और भारतीय भाषाओं में प्रकाशित किए जायें। आगे भी ब्रिटिश शासनकाल में इस प्रकार के आदेश निकाले जाते रहे और विधि से संबंधित काफी सामग्री हमें हिंदी में मिलती है जो उस काल की देन है। यह एक रोचक सूचना है कि हिंदी की पहली विधि शब्दावली एच.एच. विल्सन ब्रिटिश शासक ने बनाई। इस शब्द संग्रह का नाम था — ग्लॉसरी ऑफ जुडीशियल एण्ड रेवेन्यू टर्म्स"। यह संग्रह सन् 1855 में प्रकाशित हुआ था। 1983 में परमेश्वर दयाल श्रीवास्तव ने "श्रीवास्तव लॉ डिक्शनरी" प्रकाशित की। 1948-51 के बीच जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी का "विधि शब्दसागर" चार खंडों में प्रकाशित हुआ। इस प्रकार स्वतंत्रता से पहले भी विधि के क्षेत्र में हिंदी भाषा के प्रयोग एवं विकास को लेकर एक चेतना कार्य कर रही थी।

इसी चेतना ने स्वतंत्रता के बाद एक सांविधिक रूप ले लिया। स्वतंत्रता के बाद व्यक्तिगत स्तर पर डॉ. मोतीबाबू ने "हिंदी विधि शब्दावली नामक कोश 1969 में निकाला। स्वतंत्रता के बाद सरकारी स्तर पर राजभाषा विधायी आयोग द्वारा "विधि शब्दावली" का मानकीकृत प्रथम संस्करण 1970 में सामने आया और फिर क्रमश: 1979 और 1984 में इसके परिवर्धित नए संस्करण आए। जैसा कि पहले भी बताया गया कि इसी आयोग द्वारा बहुत से नियमों/अधिनियमों का प्राधिकृत अनुवाद भी हिंदी में प्रस्तुत किया गया।

31.4 विधि क्षेत्र में हिंदी : स्वरूप

इस प्रकार विधि, न्याय अथवा कानून के क्षेत्र की हिंदी एक विशिष्ट प्रयुक्ति के रूप में उभरी। इसीलिए अन्य प्रयुक्तियों की ही भांति विधि की हिंदी में भी शब्दों का प्रयोग विशेष अर्थ में किया जाता है। विधि का क्षेत्र भी विशिष्ट प्रकार का है। प्रशासन तथा मानव अधिकारों, नागरिकों पर अनुशासनिक नियंत्रण एवं कार्यव्यापार के नियमादि विधि क्षेत्र के मूल विषय हैं। अत: विधि के क्षेत्र में शब्दों की संकल्पनात्मकता है। इस संकल्पनात्मकता को सुरक्षित रखना अनिवार्य है। हम देख सकते हैं कि विधि की हिंदी में यह प्रयास किया जाता है कि वह हिंदी क्रमबद्ध ढंग से स्पष्ट रूप में इस प्रकार की हो कि उससे केवल वही अर्थ निकले जो अभीष्ट हो। इसे हम "एकार्थता का नियम" कहते हैं। इसीलिए विधि में शब्दों के अर्थ परिसीमित कर दिए जाते हैं और वाक्य रचना भी इस प्रकार की जाती है कि उनसे एक ही अर्थ का बोध हो। इसीलिए कभी-कभी विधि की हिंदी पर यह आक्षेप भी लगाया जाता है कि यह कठिन, जटिल या दुर्बोध है। हमें यहां यह भी ध्यान रखना चाहिए कि किसी विषय में जब भाषा का प्रयोग होता है तो भाषा उस विषय के अनुरूप ही अपना कठिन-सरल रूप ग्रहण करती है। विधि का क्षेत्र वैधानिक एवं नियमावलीबद्ध कथनों को प्रकट करता है, अत: उसकी कठिनाई को सहजता से स्वीकार करना चाहिए। अत: विधि के क्षेत्र में सरलीकृत हिंदी के प्रयोग की बात को निरर्थक मानना चाहिए।

जैसा कि पहले भी कहा गया राष्ट्रपति के आदेश के अनुसार 1961 में विधि मंत्रालय के अधीन राजभाषा विधायी आयोग का गठन हुआ। विधि की हिंदी शब्दावली के निर्माण में तथा उसकी एकरूपता बनाए रखने में इस आयोग ने अपना पूरा योगदान दिया। इस शब्दावली का प्रयोग विधि के भिन्न प्रपत्रों या दस्तावेजों में किया गया। विधि की हिंदी शब्दावली के निर्माण में अंग्रेजी के एक शब्द के लिए हिंदी में भी एक शब्द का चयन विधि क्षेत्र के संकल्पनात्मक अर्थ को ध्यान में रखकर किया गया है। कुछ उदाहरण देखें :

नियम-रूल, उपनियम-बाई लॉज, विनियम-रेगुलेशन, अधिनियम-एक्ट, नियमावली-rules & regulation, विधेयक-बिल, धारा-सेक्शन, उपधारा-सब सेक्शन, खंड-क्लॉज, उपखंड-सब क्लॉज, अभियोग-चार्ज, अभियोजन-प्रोसीक्यूशन, अभियोक्ता-प्रोसीक्यूटर, अभियुक्त-क्रिमिनल, दोष-कन्विक्शन, दोषयुक्त-एविक्टेड, दोषी-एक्यूज्ड, वादी-प्लैंटिफ, प्रतिवादी-डिफैंडेंट ।

इस प्रकार आप देख सकते हैं कि विधि की हिंदी शब्दावली में एक शब्द एक निश्चित संदर्भ में ही चुना जाता है और उस संदर्भ में उसका एक ही अर्थ होता है। यह फिर कह देना चाहिए कि हिंदी की इस पारिभाषिक शब्दावली को कठिन नहीं मानना चाहिए। जब हम पारिभाषिक शब्दों की संकल्पना को बोधन के स्तर पर कर लेते हैं या कहा जाय जब हम पारिभाषिक शब्द के संकल्पनात्मक अर्थ को समझ लेते हैं तो वह शब्द हमारे लिए स्वत: सुबोध हो जाता है। इस विषय में हमें भ्रांत धारणा को भी मन में नहीं लाना चाहिए कि संस्कृत की तत्सम शब्दावली कठिन होती है और हिन्दुस्तानी के शब्द सरल होते हैं। पारिभाषिक शब्दों की कठिनता या सरलता का संबंध उस शब्द के साथ हमारे परिचय से है, न कि उसके तत्सम, तद्भव या देशज होने से। वैसे विधि के क्षेत्र में हिंदी की जो पारिभाषिक शब्दावली स्थिर की गई है उसमें पहले से इस क्षेत्र में प्रयुक्त एवं प्रचलित अरबी-फारसी तथा अंग्रेजी के शब्दों को भी यथावत् ग्रहण कर लिया गया है। आप जानते ही हैं कि ऐसा हिंदी की प्रत्येक प्रयुक्ति के विकास में किया गया है। अत: हमारे सामने यह स्पष्ट होना चाहिए कि विधि की शब्दावली में उन शब्दों को भी पूरी तरह स्वीकार करना होगा जिन्हें हम अनजाने में भी उनके बाहरी रूपाकार के आधार पर कठिन मान बैठते हैं। सरलता एवं प्रचलन को दृष्टि में रखकर तथा संविधान के अनुच्छेद 351 का सम्मान करते हुए ही हिंदी का विधि शब्दावली में समन, अर्जी, हलफनामा, बयान, बहस, मुकदमा, जिरह, वारंट, वकील, अपील, करार, मुहरबंद, नालिश, हुक्म, मार्फत, वाकिफ, दस्तावेज, लाजिम, हाजिर, जवाबदेही, इत्तिला, दस्तखत, मुहर आदि अरबी-फारसी तथा अंग्रेजी की शब्दावली को अपनाया गया है। विधि शब्दावली के मानक कोशों में भी ऐसे शब्दों को निरंतर सम्मान दिया जा रहा है।

अत: हमें ध्यान रखा चाहिए कि विधि की शब्दावली में एकार्थता और एकरूपता पहली शर्त है। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारे संविधान में राजभाषा हिंदी के विकास के लिए मूलत: संस्कृत से शब्दावली एवं अभिव्यक्तियां ग्रहण करने की बात कही गई। इसका एक कारण तो यह है कि तत्सम शब्दावली में एक प्रकार गांभीर्य होता है, जिससे कि विषयों की वैचारिकता एवं गरिमा उभरकर सामने आती है। दूसरे, संस्कृत की शब्दावली में प्रजनक क्षमता होती है। अर्थात् तत्सम शब्दावली में एक मूल शब्द से उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर कई शब्द बनाए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, "विधि" शब्द को ही देखा जाय। इस तत्सम शब्द के पर्याय के रूप में कानून शब्द को प्रचलन के आधार पर स्वीकृति दी गई है। "विधि" शब्द से कई शब्द प्रजनित या निर्मित हो पाते हैं जैसे-उपविधि (बाई लॉ), विधायक (लेजिस्लेटर), विधानपालिका (लेजिस्लेचर), विधिक (लीगल), विधिवेत्ता (कानून का जानकार), निश्चित ही केवल "कानून" शब्द से इतने शब्दों का निर्माण करना संभव नहीं हो सकेगा। इसी प्रकार हम अन्य शब्दों को भी देख सकते हैं, जो "विधि" के आधार पर निर्मित हैं; वैधानिक, संविधान, वैधानिकता, संवैधानिकता आदि।

विधि की हिंदी में जिस तरह शब्दों में एकार्थता और स्पष्टता जरूरी है उसी प्रकार कानून की भाषा में वाक्य भी सटीक होने चाहिए। अत: यदि हम विधि के क्षेत्र में प्रयुक्त हिंदी वाक्यों को जटिलता से मुक्त करने और सरल और सुबोध बनाने का प्रयास करेंगे तो अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है। विधि के क्षेत्र में प्रयुक्त वाक्यों में एकरूपता तथा निश्चितार्थता सबसे अधिक आवश्यक है। एकार्थता के साथ ही विधि की भाषा में सरलता और बोधगम्यता का होना भी आवश्यक है। वाक्यों में जो शब्द आते हैं वे अपने में किसी विधि संबंधी संकल्पना की व्याख्या या परिभाषा होते हैं। इन शब्दों का प्रयोग यदि बोधगम्य, संक्षिप्त और स्पष्ट वाक्य संरचनाओं में किया जाएगा तो विधि की भाषा सुबोध और अर्थवान बन सकेगी। जैसा कि हमने प्रारंभ में संकेत दिया था कि विधि सामग्री के प्राधिकृत पाठ अनूदित होकर ही हमारे समक्ष आए हैं। अत: वाक्यों की रचना के स्तर पर हिंदी में कई बातों को ध्यान रखा गया है, जिससे कि अनुवाद होते हुए भी उनमें अभिव्यक्त अर्थ अपरिवर्तित या मूल के समान ही बना रहे। उदाहरण के लिए, नीचे दिए गए वाक्य देखिए :

opportunity of being heard — सुनवाई का अवसर
all concerned — सभी संबंद्ध व्यक्ति
has been done by — क ने किया है

31.5 विधि के क्षेत्र में हिंदी : सीमाएं

यह सच है कि विधि के क्षेत्र में हिंदी भाषा के प्रयोग की अनिवार्यता में कोई संदेह या मतभेद नहीं किया जा सकता। यह भी सच है कि विधि की हिंदी के विकास के लिए व्यक्तिगत और सरकारी दोनों स्तरों पर काफी प्रयास किए गए और विधि तथा कानून से संबंधित आवश्यक सामग्री हिंदी में उपलब्ध कराई गई। सिद्धांत के स्तर पर हमने हमेशा यह स्वीकार किया कि स्वतंत्र देश के नागरिकों को उनकी भाषा में न्याय देना उस राष्ट्र का कर्तव्य है और नागरिकों का अधिकार। इस सिद्धांत के कारण ही भारत में विधि के क्षेत्र में ऊपर उल्लिखित प्रयास भी किए गए। परंतु व्यावहारिक स्तर पर विधि के क्षेत्र में व्यापक स्तर पर हिंदी भाषा का प्रयोग नहीं हो पा रहा है। हिंदी का राजभाषा के रूप में प्रयोग न हो पाने की यह विडंबना अन्य क्षेत्रों में भी दिखाई देती है, लेकिन विधि के क्षेत्र में यह कुछ ज्यादा ही है। इस प्रकार की स्थिति की जिम्मेदार कुछ सीमाएं हैं। पहली सीमा राजभाषा अधिनियम 1963 के उपबंध हैं। इनमें यह कहा गया है कि उच्च न्यायालयों और उच्चतम न्यायालय में सारी कार्रवाई अंग्रेजी में करना अधिक सुविधाजनक होगा। इसमें राज्य सरकारों को अपने अधीनस्थ न्यायालय में हिंदी में कार्य करने की अनुमति तो दी गई है पर साथ ही यह प्रतिबंध भी लगा दिया गया है कि राज्य सरकार की अदालतें अपनी जो अपीलें उच्च न्यायालय के सामने रखें वे अंग्रेजी में या हिंदी के साथ अंग्रेजी पाठ (प्रामाणिक) सहित हों। इसमें यह भी उपबंध है उच्च न्यायालय अपने साथ आदेश, फैसले या निर्णय केवल अंग्रेजी में ही देंगे। इस प्रकार की सीमा के कारण ही व्यावहारिक स्तर पर हिंदी का प्रयोग अवरुद्ध हो गया है। इतना ही नहीं इसी सीमा के कारण देश के सभी राज्यों की जिला और सत्र अदालतों में अंग्रेजी का प्रयोग ही अधिक होता है और हिंदी को धीरे-धीरे ढकेला जा रहा है। अंग्रेजी के विधि के क्षेत्र में बढ़ते वर्चस्व के लिए कुछ लोग अंग्रेजी शासन को दोष देते हैं तो कुछ लोग हिंदी को एक असक्षम भाषा मान कर उसके प्रयोग की अवहेलना को उचित ठहराते हैं। जबकि ये दोनों ही बातें ठीक नहीं हैं। यह हमने पहले भी देखा कि ब्रिटिश शासन काल में विधि के क्षेत्र में हिंदी भाषा के विकास के कई महत्वपूर्ण कार्य किए गए। साथ ही यदि अंग्रेजी शासन काल में ईस्ट इंडिया कंपनी की नीति को देखा जाय जो वह भी अंग्रेजी के प्रति पूर्वाग्रह से बंधी नहीं थी। उसकी नीति जनता को उसी की भाषा में न्याय दिलाने की थी। यदि हम सन् 1803 में ब्रिटिश पार्लियामेंट के निम्नलिखित आदेश को देखें तो यह बात साफ हो जाएगी :

"Every regulation with marginal notes, shall be translated in the Persian and Hindostanee language by the translators". इसी प्रकार 1830 में ब्रिटिश सरकार के सामने जब यह प्रश्न उठा कि न्यायालयों की भाषा अंग्रेजी हो या हिन्दुस्तानी/फारसी तो निष्कर्ष यह निकला था — "इसमें संदेह नहीं कि न्याय प्रशासन न्यायाधीश की भाषा में हो किन्तु यह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है कि यह ऐसी भाषा में हो जो मुकदमें के पक्षकारों, उनके वकीलों और आम जनता की भाषा में हों। जनता द्वारा न्यायाधीश की भाषा सीखने की अपेक्षा न्यायाधीश द्वारा जनता की भाषा सीखना आसान है।"

इन तथ्यों से पता चलता है कि ब्रिटिश शासन भी अदालतों में अंग्रेजी को नहीं हिन्दुस्तानी अथवा फारसी को मान्यता देने के पक्ष में था। यहां तक कि फारसी कोर्ट की भाषा बनी भी और उसके जटिल रूप को देखते हुए सरकार ने कड़े आदेश निकाले कि "कचहरी में अफसरों को यह कड़ी ताकीद की जाती है कि सरकारी कागज ऐसी भाषा में लिखें जाएं कि उन्हें सर्वसाधारण भलीभांति समझ सकें।" आगे चलकर इस स्थिति में सुधार भी हुआ। आगे भी ब्रिटिश सरकार समय समय पर कोर्ट की भाषा में सुधार एवं बोधगम्यता के संबंध में प्रयत्न करती रही। परन्तु आज भारतीय लोकतंत्र में संवैधानिक मान्यता मिलने के बाद भी हिंदी भाषा के प्रयोग के प्रति हमारी उदासीनता ने विधि के क्षेत्र में हिंदी के विकास में रुकावटें पैदा कर दी हैं। इस सीमा का मूल कारण कुछ तो हमारे संवैधानिक नियमों का अंग्रेजी के प्रति सहिष्णु दृष्टिकोण है और कुछ हमारी मानसिक गुलामी जो आज भी अपनी भाषाओं की तुलना में अंग्रेजी को अधिक विकसित और सक्षम भाषा स्वीकार करता है।

हिंदी के प्रयोग के प्रति उदासीनता की दूसरी सीमा उसकी अनुवाद संबंधी सीमा है। अनुवाद की गहरी जानकारी न होने के कारण हिंदी के अनूदित पाठों को अनावश्यक रूप से जटिल बना दिया गया है। इसका समाधान यही है कि अनुवाद हिंदी भाषा की प्रकृति को समझ कर किए जाएं, वे अंग्रेजी वाक्यों का अंधानुकरण न करें। ऐसा करने से ही हिंदी के अनूदित पाठों में सहज प्रवाह और बोधगम्यता

बढ़ेगी। दूसरा और सबसे उत्तम समाधान तो यही है कि हिंदी में विधि के क्षेत्र में मौलिक लेखन को खूब बढ़ावा दिया जाये। ऐसा लेखन जो सरलता से नियमों आदि को व्यक्त कर सके। विधेयकों, करारों, नियमावलियों आदि को मूलत: हिंदी में प्रारूपित करना अब कठिन भी नहीं है क्योंकि हिंदी में विधि संबंधी शब्द-अभिव्यक्तियां पूर्णत : उपलब्ध हैं। अत: अंग्रेजी भाषा के पाठों की बैसाखी के सहारे हिंदी के विकास की गलत पद्धति को छोड़ना होगा और हिंदी की अपनी प्रकृति के अनुरूप अंग्रेजी पाठों को ढालना होगा।

यह तो हम जान ही चुके हैं कि राजभाषा हिन्दी के विकास में अंग्रेजी भाषा ही मूल आधार बनी। अंग्रेजी की विधि शब्दावली के आधार पर ही हिन्दी की विधि शब्दावली का निर्माण और विकास हुआ तथा अंग्रेजी के विधि संबंधी पाठों के अनुवाद द्वारा ही हिंदी की विधि सामग्री हमारे सामने आई। लेकिन पाठों के अनुवाद में हिंदी भाषा की प्रकृति और संरचना पर ध्यान दे पाने के कारण विधि की हिंदी का स्वरूप कृत्रिम या बनावटी बन गया। यदि देखा जाय तो यह साफ दिखाई देता है कि भारतीय अदालतों में तीन ऐसी संहिताएं हैं, जिनका प्रयोग सबसे ज्यादा किया जाता है —

(1) भारतीय दंड संहिता (Indian Penal Code), (2) दंड प्रक्रिया संहिता (Criminal Procedure Code) और (3) भारतीय साक्ष्य अधिनियम (Indian Evidence act) । यह भी साफ दिखाई देता है कि इनका हिंदी अनुवाद उपलब्ध है। लेकिन इनके अनुवाद की भाषा (हिंदी) इतनी बोझिल, अटपटी और कृत्रिम बना दी गई है कि इन्हें समझ पाना ही कठिन है। निश्चित ही इस प्रकार के अनुवाद विधि की हिंदी के प्रसार और अमल में बाधा उत्पन्न करते हैं। उदाहरण के लिए, दंड संहिता की बहुप्रचलित धारा 420 का हिंदी अनुवाद देखिए :

> "यदि कोई छल करता है और एतद्द्वारा उस व्यक्ति को जिसे धोखा दिया गया है बेईमानी से उत्प्रेरित करता है कि वह कोई संपत्ति किसी व्यक्ति को परिदत्त करदे या किसी मूल्यवान प्रतिभूति को या किसी वस्तु को जो हस्ताक्षरित या मुद्राकित है और जो मूल्यवान में संपरिवर्तित किए जाने योग्य है पूर्णत: या अशत: खरच दे, परिवर्तित करदे तो उसे दोनों में से किसी भांति के कारावास से, जिसकी अवधि सात वर्ष तक की हो सकेगी, दंडित किया जाएगा और वह जुर्माने से भी दंडनीय होगा।"
>
> (Whoever cheats and thereby dishonestly induces the person decieved to deliver any property to and person or to make alter or destroy the whole or anypart of a valuable security, or anything which is signed or sealed, any which is capable of being converted into a valuable secutity, shall be punished with imprisonment of either description for a term which may extend to seven years and shall also be liable to fine.)

यह सच है कि विधि संबंधी दस्तावेजों में मूल के प्रत्येक अंश को आना चाहिए। न जो कोई बात छूटनी चाहिए, न ही गलत रूप में जानी चाहिए। इसलिए विधि की भाषा (अंग्रेजी या हिंदी दोनों) संश्लिष्ट वाक्य रचना का प्रयोग करती है। संश्लिष्ट वाक्य रचना का तात्पर्य है ऐसी वाक्य रचना जिसमें कई-कई उपवाक्य, वाक्यांश समाहित होते हैं। लेकिन हमें यह भी देखना चाहिए कि अंग्रेजी भाषा की प्रकृति ऐसी है कि उसमें एक ही वाक्य में कई-कई वाक्य जुड़ते जाते हैं और तब भी वे कृत्रिम या बोझिल नहीं लगते, जबकि हिंदी भाषा की प्रकृति ऐसी नहीं है। हिंदी में छोटे वाक्यों की रचना ही संभव व सहज है। इसलिए जब हम अंग्रेजी की लंबी जटिल वाक्य रचना को उसी रूप में हिंदी में अनूदित करने लगते हैं तो हिंदी कठिन और बनावटी भी लगने लगती है और उसका अर्थ बोध भी नहीं हो पाता, इसलिए इस सीमा से हमें बचना चाहिए। अनुवाद करते समय हिंदी में छोटे-छोटे वाक्यों द्वारा बात को समझाते हुए कहना चाहिए। हिंदी भाषा की शक्ति एवं क्षमता को भी हमें पहचानना चाहिए। अनुवाद की हिंदी को उसकी प्रकृति और शैली के अनुरूप रख कर ही हम विधि की हिंदी को बोधगम्य और स्वीकार्य बना सकते हैं। इसी प्रकार अब हमें शब्द चयन के प्रति भी सचेत होना पड़ेगा। फारसी के ढांचे पर कई पाठ ऐसे बने हैं जिनके शब्द अबोधगम्य और अप्रचलित हो गए हैं लेकिन अदालतों में इनके प्रचलन को सुरक्षित रखा गया है और समाचार-पत्रों तक में इस प्रकार की अदालती सूचनाएं छपती हैं :

सम्मन *वास्ते करारदार उमूर ततकीत* तलब। वादिनी ने आपके नाम एक नालिश बाबत धारा-13 हिंदू मैरिज एक्ट के दायरे की हैं। *लिहाजा* आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 16, माह 5, सन् 1993 बवक्त 10.30 बजे दिन के *असालतन* या मार्फत वकील के जो मुकदमें के हालात से करार वाकई वाफिक किया गया हो ..... आपको इतिला दी जाती है कि अगर बरोज मजबूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपको *मसमूअ* और फैसला होगा"

इसमें ध्यान दें कि नालिश, दायर, हुक्म, मार्फत, मुकदमा, वकील, हालात, इतिला, हाजिर, फैसला जैसे हिंदी में पूरी तरह स्वीकार्य भी हैं और आम जनता भी इसके प्रयोग और अर्थ से अनजान नहीं है। लेकिन रेखांकित शब्दों का चयन इस सूचना को अबोधगम्य बनाते हैं। इनके स्थान पर सरल और प्रचलित हिंदी या उर्दू शब्दों का प्रयोग भी किया जा सकता है। इसलिए विधि की भाषा को कुछ अप्रचलित परंपरागत शब्दों के दायरे में बांधे रखना उसके विकास और प्रसार में बड़ी बाधा बन सकता है। इसे दूर करके ही विधि के कामकाज को और उसकी भाषा को गति दे सकते हैं। यदि हम थोड़ी-सी सूझबूझ से काम लें, शब्द चयन के प्रति सतर्क रहें और वाक्य विन्यास को हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुरूप रखने का प्रयास करें तो न्यायालय की भाषा के रूप में हिंदी का स्वरूप और भी निखर सकता है। अन्यथा हिंदी की कृत्रिमता उसे अंग्रेजी का स्थान लेने में और कठिनाइयां ही पैदा करेगी। इस दिशा में विद्वानों ने बहुत से सुझाव दिए हैं, जिनका पालन करते हुए विधि की हिंदी की जटिलता को समाप्त करके उसे अधिक निखारने का प्रयास किया जा रहा है।

ऊपर दी गई अदालती सूचना का दूसरा नमूना भी देखें जो शब्द चयन के कारण ही कृत्रिम बन गया है :

"चूंकि *उपरिनामांकित* वादी प्रार्थी ने इस न्यायालय में यह आवेदन किया है। आपको *एतद्द्वारा* चेतावनी दी जाती है कि आप उस आवेदन के खिलाफ़ *हेतु संदिर्शत* करने के लिए 1993 के *5* के *तेरह दिवस* को 10.30 बजे पूर्वाह्न में स्वयं या *सम्यकरुपेण अनुदिष्ट* अपने अभिवक्ता द्वारा *उपसंगति* हों और ऐसा करने में असफल रहने पर उक्त आवेदन एकपक्षीय रूप से सुना जाएगा और *अवधारित* किया जाएगा।

यहां भी आप देख सकते हैं कि प्रार्थी, न्यायालय, आवेदन, चेतावनी, अभिवक्ता, एकपक्षीय जेसे शब्द बोधगम्य हैं परंतु रेखांकित शब्द गढ़े गए और बनावटी हैं जिनमें से कई को छोड़कर या बदलकर आसान ढंग से यही बात इस प्रकार कही जा सकती है :

> ऊपर लिखे नाम के प्रार्थी ने इस न्यायालय में एक प्रार्थनापत्र दिया है। इसलिए इस सूचना के जरिए आपको सावधान किया जाता है कि यदि आपको इस प्रार्थना-पत्र के स्वीकार कर लिए जाने के विरोध में कुछ कहना है तो इस मामले की भलीभांति जानकारी रखने वाले वकील के माध्यम से 13.5.93 को दिन के 10.30 बजे इस न्यायालय में उपस्थित हो जाये।"

आपने देखा के पहले और दूसरे नमूनों की अतिवादिता ने हिंदी अनुवाद को कृत्रिम बना दिया है जबकि तीसरे नमूने में हिंदी की सहज प्रकृति को समझते हुए अनुवाद किया गया है जिससे कि इसकी बोधगम्यता और स्पष्टता बढ़ गई है तथा हिंदी भाषा कृत्रिम नहीं, सहज लगती है। इस प्रकार की कृत्रिमताओं को दूर करते हुए विधि और न्यायालय की हिंदी को सहज बनाने के सुझाव विद्वान दे रहे हैं और इनके पालन द्वारा विधि की हिंदी को लचीला बनाया जा रहा है।

31.6 विधि की हिंदी का विस्तार

विधि एवं कानून की हिंदी को जनता तक पहुंचाने तथा उसका लाभ सभी को देने का प्रयास जारी है। इस दिशा में विधि की हिंदी के आदर्श स्वरूप पर भी चर्चा की जा रही है। धीरे-धीरे विधि की हिंदी की कई विशेषताओं को पहचान भी लिया गया है। साथ ही साथ उसकी सीमाओं को भी पहचान लिया गया है। जैसा कि पहले भी कहा गया विधि की भाषा विशिष्ट होती है, अत: उसमें मिश्र या जटिल वाक्यों का प्रयोग होता है। पर अब हिंदी में इस जटिलता को तोड़-तोड़ कर छोटे-छोटे वाक्यों के माध्यम से रखने का प्रयत्न किया जा रहा है। इसी प्रकार अप्रचलित शब्दावली को हटाकर उसके स्थान पर प्रचलित शब्दों के व्यवहार पर बल दिया जा रहा है। इस प्रकार हिंदी भाषा के प्रयोग विस्तार को भी बल मिला है।

विधि की हिंदी के सहज प्रयोग ने इसे विधि शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रतिष्ठित किया है। आज भारत के कई विश्वविद्यालयों में विधि शिक्षा की माध्यम भाषा हिंदी है और विधि-कानून-न्याय प्रक्रिया-दंड संहिता-आयकर-बिक्रीकर आदि से संबंधित कई मौलिक रूप से लिखित पुस्तकें भी हिंदी में उपलब्ध हैं। कई राज्यों में मुंसिफी (सब-जज) की परीक्षा का माध्यम भी हिंदी भाषा को बनाया गया है। न्यायालयों में

हिंदी में बहस करने और हिंदी में निर्णय देने की स्थिति भी हिंदी भाषी कई राज्यों में उत्पन्न हो चुकी है। साथ ही हिंदी भाषी कई राज्यों में न्यायालयों में हिंदी टंकण को भी पूरा प्रोत्साहन मिल रहा है जो इस बात का प्रमाण है कि न्यायालयों के कार्य कई राज्यों में हिंदी के माध्यम से भी संपन्न किए जा रहे हैं।

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर हां या नहीं में दीजिए।

   (क) हिंदी की पहली विधि शब्दावली डॉ. कामिल बुल्के ने तैयार की थी। ☐

   (ख) "विधि शब्द सागर" के लेखक जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी हैं। ☐

   (ग) "हिंदी विधि शब्दावली" का निर्माण डॉ. मोतीबाबू ने किया। ☐

   (घ) "विधि शब्दावली" का मानकीकृत प्रथम संस्करण 1959 में सामने आया। ☐

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो पंक्तियों में दीजिए।

   (क) न्यायालयों में निर्णय अंग्रेजी में क्यों नहीं देने चाहिए ?

   .....

   .....

   (ख) राजभाषा अधिनियम 1963 के उपबंध क्या कहते है ?

   .....

   .....

3. विधि के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग संबंधी क्या-क्या सीमाएं और कठिनाइयां हैं? (दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

4. विधि की हिंदी को अधिक सक्षम बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? (दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

निम्नलिखित शब्दों के हिंदी पर्याय बताइए।

(क) Rule .....

(ख) Bylause .....

(ग) Regulation .....

(घ) Bill .....

(ङ) Change .....

(च) Prosecution .....

(छ) Prosecuter .....

(ज) Conuiction .....

(झ) Evicted .....

(ञ) Accused .....

6. *विधि* शब्द से चार शब्द बनाइए।

(क) .....

(ख) .....

(ग) .....

(घ) .....

31.7 सारांश

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि विधि/न्याय का क्षेत्र अति विशिष्ट है। इसमें भाषा का सरल प्रयोग कर पाना बहुत संभव नहीं है। आपने यह भी जाना और समझा कि विधि के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग के प्रयास काफी पहले से किए जा रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद इसका एक स्वरूप बना। आपने यह भी देखा कि कुछ संवैधानिक छूटों के कारण इस क्षेत्र में अंग्रेजी का प्रयोग अधिक हो रहा है लेकिन हिंदी के प्रयोग में भी वृद्धि हो रही है। अनुवाद ने विधि की हिंदी को कृत्रिम बनाया है लेकिन इसमें भी सुधार के सुझाव दिए जा रहे हैं और सुझाव के प्रयास किए जा रहे हैं।

31.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

1. (क) नहीं (ख) हाँ (ग) हाँ (घ) नहीं

2. (क) इसलिए कि भारत की अधिकांश जनता अंग्रेजी नहीं समझती है। देखिए 31.3
   (ख) इस उपबंध के अनुसार उच्च न्यायालयों और उच्चतम न्यायालय में सारी कार्यवाई अंग्रेजी में करना सुविधाजनक होगा। देखिए 31.5

3. देखिए 31.5

4. देखिए 31.5 और 31.6

5. देखिए 31.4

6. (क) वैधानिक
   (ख) विधाई
   (ग) विधान
   (घ) प्रविधि

इकाई 32 रेल विभाग में हिंदी

इकाई की रूपरेखा

32.0 उद्देश्य
32.1 प्रस्तावना
32.2 राजभाषा हिंदी और रेलवे
  32.2.1 सवारी यातायात और माल-परिवहन
  32.2.2 तकनीकी क्षेत्र
  32.2.3 सिगनल और दूर-संचार
  32.2.4 प्रशासन एवं प्रबंध
  32.2.5 कंप्यूटरीकरण
32.3 सारांश
32.4 शब्दावली
32.5 उपयोगी पुस्तकें
32.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

32.0 उद्देश्य

इस इकाई में रेलवे में हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों की चर्चा की गई है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- रेलवे में हिंदी प्रयोग के विविध रूपों पर प्रकाश डाल सकेंगे,
- रेलवे में हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के प्रयोग एवं उनके शैलीगत भेदों की ओर संकेत कर सकेंगे, और
- रेलवे में हिंदी प्रयोग के सभी आयामों को उदाहरण सहित समझा सकेंगे।

32.1 प्रस्तावना

भारतीय रेल का विस्तार देश के कोने-कोने तक हो चुका है। भारत को जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य रेल के माध्यम से होता है। भारतीय रेल का संचालन भारत सरकार के रेल मंत्रालय द्वारा होता है। रेल मंत्रालय भारत सरकार के कुछ व्यापक और महत्वपूर्ण मंत्रालयों में से एक है। रेल मंत्रालय भी भारतीय संघ की राजभाषा नीति का उसी प्रकार पालन करता है जिस प्रकार केन्द्र सरकार के अन्य मंत्रालय करते हैं। परंतु रेलवे के कार्य विविधरूपी हैं अत: इसमें विभिन्न प्रयुक्तियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग होता है।

रेल मंत्रालय के अंतर्गत प्रशासन के कार्य प्रमुख हैं। अत: प्रशासनिक या कार्यालयीन हिंदी इसकी एक प्रमुख प्रयुक्ति है। हम रेलवे को सवारी गाड़ी के रूप में ही जानते हैं। सामान्य व्यक्ति रेलवे के संबंध में यही धारणा रखता है कि वह उसकी यात्रा में सहायक है। इस संदर्भ में सवारी गाड़ी की श्रेणियों : प्रथम, द्वितीय, वातानुकूलित प्रथम श्रेणी, वातानुकूलित द्वितीय श्रेणी, वातानुकूलित कुर्सीयान, सामान्य श्रेणी आदि शब्दों से सभी परिचित हैं। इसी प्रकार पैसैंजर ट्रेन, एक्सप्रेस ट्रेन, सुपर फास्ट ट्रेन, डीलक्स ट्रेन जैसे प्रयोग भी जन-जन की ज़बान पर चढ़े चुके हैं। आरक्षण, आरक्षण-चार्ट, आर.ए.सी., वेटिंग लिस्ट (प्रतीक्षा-सूची) सिटिंग चार्ज, वर्थ (शायिका) आदि पारिभाषिक शब्द भी अब अति प्रचलित हो चुके हैं।

यात्रा की सुविधा प्रदान करने के साथ ही रेलवे भारी-माल की ढुलाई में यातायात के एक प्रमुख साधन के रूप में खूब लोकप्रिय हो चका है। इस कार्य के लिए रेल-मंत्रालय व्यावसायिक प्रयुक्ति का प्रयोग

करता है। माल, क्षति, क्षतिपूर्ति, सुपुर्दगी, बुकिंग, आर. आर., भाड़ा, ढुलाई, ढुलाई-दर जैसे शब्दों का प्रयोग इस संदर्भ में देखा जा सकता है।

इन बातों से पता चलता है कि भारतीय रेल का संबंध सीधे जनजीवन और आम आदमी से जुड़ा हुआ है। तभी तो हम यह कहते हैं कि भारतीय रेल देश का सबसे बड़ा सार्वजनिक उद्यम है। जब इस प्रकार की प्रमुख परिवहन व्यवस्था में हिंदी का प्रयोग किया जाता है तो निश्चित ही हिंदी का बहुआयामी स्वरूप निर्मित होता है। रेलवे में प्रशासनिक प्रयुक्ति और यातायात से संबंधित प्रयुक्ति के साथ ही अन्य कई प्रयुक्तियों का प्रयोग भी होता है। इन सब के विकास में रेलवे का योगदान महत्वपूर्ण है।

भारतीय रेलवे देश के औद्योगिक एवं आर्थिक विकास में भी अपना भरपूर योगदान देती है। स्वतंत्रता के बाद इसने देश के बहुमुखी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस विकास के लिए अखिल भारतीय स्तर पर राजभाषा हिंदी के प्रयोग और प्रचलन को बढ़ावा देने का कार्य रेलवे निरंतर करती आ रही है। इस चुनौती का सामना रेलवे ने पूरे साहस एवं निष्ठा के साथ किया है। रेल मंत्रालय का यह प्रयास रहा है कि जन-सुविधा का एक अंग होने के कारण विभाग में अंग्रेजी का प्रयोग क्रमशः कम हो और अंग्रेजी का स्थान हिंदी ले सके।

32.2 राजभाषा हिंदी और रेलवे

व्यावहारिक दृष्टि से रेलवे एक विशिष्ट प्रकार का व्यवहार क्षेत्र है। राजभाषा हिंदी का प्रयोग इन क्षेत्रों में किया जाय, यह रेल मंत्रालय की जिम्मेदारी है। रेलवे में हिंदी के ये क्षेत्र निम्नलिखित है :

1. सवारी यातायात और माल-परिवहन
2. तकनीकी क्षेत्र
3. सिगनल और दूर-संचार
4. प्रशासन एवं प्रबंध
5. कंप्यूटरीकरण

32.2.1 सवारी यातायात और माल-परिवहन

जैसा कि आज देख रहे हैं कि भारतीय रेल का जाल पूरे देश में फैला हुआ है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने औद्योगिक विकास में तेज गति से प्रगति की है। औद्योगिक विकास के कारण यातायात और परिवहन की देश-व्यापी व्यवस्था अनिवार्य हो गई है। इन आवश्यकताओं को पूरा करने की चुनौती भारतीय रेल ने स्वीकार की। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के वर्षों में रेलवे ने अपना पुनर्गठन किया, विस्तार किया और अपने ढांचे को आवश्यकतानुसार बदल डाला। आज डीज़ल और इलैक्ट्रिक इंजन के कारण तथा नई कर्षण प्रणाली और आधुनिक चल-स्टाक के कारण सवारी यातायात और माल परिवहन के क्षेत्र में रेलवे ने आशातीत सफलता प्राप्त की है। इस प्रकार के विकास से लंबी दूरी की सवारी यात्रा सेवा भी हमें सुलभ हुई है और खाद्यान्नों, कोयला, खनिज, गैस, पेट्रोल आदि के परिवहन में भी रेलवे ने नए कीर्तिमान स्थापित किए है। इस प्रकार देश के आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्रों के विकास में रेल ने अपनी पूरी जिम्मेदारी निभाई है। इस क्षेत्र में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बड़ी मात्रा में हमें दिखाई देता है। बहुत सामान्य स्तर पर देखें तो सवारी यात्रा के लिए प्रयुक्त आरक्षण-फार्म की हिंदी, माल भेजने के लिए प्रयुक्त फॉर्म एवं रेलवे-रसीद पर प्रयुक्त हिंदी की लोकप्रियता और उसका प्रचलन आम जनता तक हो गया है। "राजभाषा" हिंदी की प्रकृति अखिल भारतीय स्तर पर स्वीकार्य होनी चाहिए, उसमें संस्कृत, हिंदुस्तानी और अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों, अभिव्यक्तियों को भी स्वीकार करना चाहिए। यह बात हमारे संविधान के अनुच्छेद 351 में राजभाषा हिंदी के स्वरूप के संबंध में कही गई है। इस क्षेत्र में प्रयुक्त हिंदी में इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है। उदाहरण के लिए इस क्षेत्र में अति-प्रचलित कुछ शब्दावली देखें तो यह बात एकदम स्पष्ट हो जाएगी :

(क) **संस्कृत के तत्सम शब्द** : यातायात, यात्री सेवाएँ, आरक्षण, क्षतिपूर्ति, आरक्षण-प्रणाली, आदि।

(ख) **अंग्रेजी के आगत शब्द** : स्टेशन, ड्राइवर, इंजन, गार्ड, डीजल इंजन, स्लीपर, क्रासिंग, सीट, ब्रॉड गेज, बर्थ, मीटर गेज, सिगनल, कोच, बोगी, स्टीम इंजन आदि

(ग) **दो स्त्रोतों के शब्द-योग से निर्मित संकर-शब्द** : सवारी यात्रा (देशज+ संस्कृत), रेल पथ (अंग्रेजी + संस्कृत), बड़ी लाइन (देशज + अंग्रेजी), आरक्षण-चार्ट (संस्कृत + अंग्रेजी), माल परिवहन (देशज + संस्कृत), छोटी लाइन (देशज + अंग्रेजी), तेज़ गति (उर्दू + संस्कृत) आदि।

(घ) **बोलचाल के या देशज शब्द** : पटरी, भार, रख़-रखाव, कोयला, माल डिब्बे, खपत, माल गाड़ी, सवारी डिब्बे आदि।

(च) **उर्दू के शब्द** : कलपुर्जे, जंजीर, जिम्मेदारी, दावा, रवानगी, खर्च, वजन, जोखिम आदि।

इस क्षेत्र की हिंदी सहज और सरल है। इसका रूप बहुत संस्कृतनिष्ठ नहीं है। यदि Berth के लिए शायिका जैसे तत्सम शब्द को लिया भी गया है तो "शायिका" उतना प्रचलित नहीं हो सका है। इसका प्रमाण यह है कि इस प्रकार के अंग्रेजी शब्दों का रूप-परिवर्तन भी हिंदी के रूप-परिवर्तन के नियमों के अनुसार होता है। जैसे — बर्थ, बर्थें, सीट, सीटें, बोगी, बोगियों आदि।

32.2.2 तकनीकी क्षेत्र

रेल पथ निर्माण और उसका आधुनिकीकरण भारतीय रेल के तकनीकी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण अंग है। रेल पथ रेलवे की रीढ़ है। गाड़ियाँ अधिक से अधिक भार ढो सकें और तेज़ गति से चल सकें, इसके लिए रेल पथ से संबंधित तकनीकी विकास आवश्यक हो गया है। इसी प्रकार स्टीम इंजन के स्थान पर डीजल इंजन एवं विद्युत-इंजन के विकास में भी तकनीकी क्षेत्र के विशेषज्ञों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज जब देश में कोयला जैसे परंपरागत ऊर्जा स्त्रोत कम हो रहे हैं तब इस प्रकार की तकनीक ऊर्जा-बचत को भी प्रोत्साहित कर रही है और ढुलाई की अधिक क्षमता, कम खर्च, विश्वसनीयता को भी बढ़ावा दे रही है। इसके साथ ही आधुनिक ढंग के सवारी एवं माल डिब्बों का निर्माण भी रेलवे के तकनीकी क्षेत्र का एक व्यापक आयाम है। डिब्बों का वज़न कम हो, ये अधिक टिकाऊ हों, सीटें और बर्थ आरामदायक हों, तेज़ गति से चलने पर उनमें एयर ब्रेक पद्धति हो तथा उनके कलपुर्जे टिकाऊ और रख-रखाव में सुविधाजनक हों, इसका ध्यान रखते हुए रेल कोच फैक्टरी उच्च तकनीक का सहारा ले रही है। इसका तात्पर्य यह है कि बदलते हुए परिवेश में भारतीय रेल अपना परंपरागत स्वरूप बदल रही है। ऐसा करने के लिए रेल प्रौद्योगिकी ने अपने को आधुनिकीकृत भी किया है और तकनीकी विकास का पूरा लाभ उठाया है। हिंदी के प्रयोग के स्तर पर भारतीय रेल का यह क्षेत्र भी पीछे नहीं है। इसने मिलीजुली संप्रेषणीय हिंदी को आधार बनाया है। अंग्रेजी शब्दों को इसने बड़ी मात्रा में आत्मसात किया है और अनुवाद के माध्यम से हिंदी के कई शब्दों को अपने तकनीकी व्यवहार के लिए अपनाया है। अंग्रेजी के शब्दों में स्टील रेल, हार्स पावर, बियरिंग प्लेट, ट्रैक सर्किटिंग, कास्ट आयरन, लोकोमोटिव, सालिड स्टेट इंटरलाकिंग आदि को, संस्कृत के अनूदित शब्दों में ऊर्जा स्त्रोत, (एनर्जी सोर्स,), चालन शक्ति (लोकोमोटिव), यांत्रिक अभियंता (टेक्निकल इंजीनियर) आदि को और संकर रचना में विद्युत रेल इंजन, रेल विद्युतीकरण, लाइन क्षमता, एयर ब्रेक पद्धति, तकनीकी हस्तान्तरण, इंजन कारखाना आदि को देखा जा सकता है।

32.2.3 सिगनल और दूर-संचार

रेलवे का यह क्षेत्र भी तकनीकी विकास और उसके आधुनिकीकरण से संबंधित है। इलेक्ट्रानिकी के क्षेत्र में हुए विकास के कारण दूर-संचार की सुविधाओं में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। भारतीय रेल इस सुविधा क पूरा लाभ उठा रही है। इसके माध्यम से गाड़ियों के परिचालन और यात्रा में सुरक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने में रेलवे, सिगनल और दूर-संचार के अत्याधुनिक उपकरणों एवं तकनीक का उपयोग कर रही है। इस दिशा में रेलवे में सिगनल और दूर-संचार से संबंधित कई शब्द आए है। तकनीकी क्षेत्रों में यह ध्यान देने की बात है कि अंग्रेजी की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग बड़ी मात्रा में करना ही पड़ता है। कामकाज में प्रयुक्त होते हुए ये शब्द प्रचलित हो जाते हैं। तकनीकी शब्द निश्चित संकल्पना से जुड़े रहते हैं, इसलिए उनका हिंदी अनुवाद उस संकल्पना को सुरक्षित रखते हुए करना चाहिए। साथ ही कई तकनीकी प्रक्रियाओं, पद्धतियों, तत्वों या संकल्पनाओं का अनुवाद करने से हिंदी भाषा में किलष्टता भी आ सकती है और उनके प्रयोग में कठिनाई भी। इसीलिए इस क्षेत्र में सिगनल, वारनिंग सिस्टम, ट्रेक-सर्किटिंग जैसे अंग्रेजी शब्दों के साथ दूर-संचार, सूचना प्रेषण, केन्द्रीकृत यातायात नियंत्रण प्रणाली जैसे अंग्रेजी से अनूदित हिंदी शब्दावली भी प्रचलन में आ चुकी है।

32.2.4 प्रशासन एवं प्रबंध

यह क्षेत्र रेलवे का व्यापक क्षेत्र है। रेलवे के अंतर्गत कार्य करने वाले कर्मचारियों की संख्या बहुत बड़ी है। इस क्षेत्र में रेल मंत्रालय प्रशासन एवं प्रबंध का कार्य राजभाषा हिंदी के अधिनियमों और नियमों के आधार पर करता है। जिसका रेलवे ने प्रशासन के स्तर पर राजभाषा हिंदी की क्षमता को बढ़ाने में अपना पूरा योगदान दिया है। उसने आधुनिक प्रबंध व्यवस्था भी लागू की है। राजभाषा हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन तथा उसके विकास के प्रयत्नों में रेलवे अग्रणी है। राजभाषा हिंदी की कार्यशालाएँ चलाना, राजभाषा सप्ताह का आयोजन तथा राजभाषा में कार्य करने वाले कर्मचारियों को प्रोत्साहन देने का कार्य रेलवे द्वारा निरंतर किया जा रहा है। रेलवे बोर्ड में निदेशक, राजभाषा, संयुक्त निदेशक, राजभाषा और संपर्क अधिकारी, राजभाषा के पद इस बात को प्रमाणित करते हैं कि रेल मंत्रालय ने राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन एवं विस्तार के लिए अपेक्षित कदम उठाए है। रेल मंत्रालय का राजभाषा निदेशालय और विभिन्न रेलवे के अंतर्गत कार्यरत मंडल प्रशासन एवं प्रबंध के क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के विकास एवं प्रचलन को लेकर प्रयत्नशील हैं। इस संदर्भ में विभिन्न रेलवे क्षेत्रों के नाम एवं अधिकारियों के पदनामों का हिंदीकरण हुआ है। ये सभी अब उतने ही प्रचलित एवं लोकप्रिय हैं जितने कि इनके अंग्रेजी पर्याय।

रेलवे के नाम

पश्चिम रेलवे, उत्तर रेलवे, पूर्वोत्तर रेलवे, दक्षिण रेलवे, दक्षिण-मध्य रेलवे, मध्य रेलवे, पूर्वोत्तर रेलवे।

पदनाम

महाप्रबंधक, मंडल रेल प्रबंधक, अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक, मंडल अधिकारी, प्रवर मंडल कार्मिक अधिकारी, प्रवर मंडल परिचालन निरीक्षक, प्रवर मंडल इंजीनियर, सहायक यांत्रिक अभियंता, राजभाषा सहायक, निदेशक, राजभाषा, संयुक्त निदेशक, राजभाषा, उपमुख्य राजभाषा अधिकारी, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी।

यह ध्यान देने की बात है कि प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयोग में संकर शब्दावली का प्रयोग बड़ी मात्रा में होता है। संकर शब्दावली में संयुक्त शब्द का एक अंश हिंदी की किसी एक शैली का होता है तो दूसरा किसी दूसरी शैली का - उदाहरण के लिए ऊर्जा खपत (संस्कृत + हिंदुस्तानी), सवारी यात्रा (हिंदुस्तानी + संस्कृत)। इसी प्रकार एक शब्द हिंदी का होता है तो दूसरा अंग्रेजी का। अंग्रेजी-हिंदी संकर शब्दों की संख्या हिंदी में बहुत अधिक है। संकरता, प्रयोजनमूलक हिंदी में पारिभाषिक शब्द-निर्माण की प्रमुख प्रक्रिया है। संकरता के द्वारा सरलीकरण भी होता है, शब्दों की जटिलता भी कम होती है और प्रचलित

शब्दावली का मिलाजुला प्रयोग नए शब्द के प्रयोग को आसान बनाता है जैसे — रेलकर्मी, को कंप्यूटरीकृत आदि। ऐसे शब्दों की चर्चा आगे की जाएगी और रेलवें की हिंदी से उनके उदाहरण भी दिए जाएंगे। प्रशासन और प्रबंध के क्षेत्र में भी संकर शब्दावली का प्रयोग होता है, जैसे — उपस्थिति रजिस्टर, वेतन बिल, भविष्य निधि फॉर्म, अनुपालन रिपोर्ट आदि।

प्रशासनिक एवं प्रबंध क्षेत्र में रेलवे में उसी कार्यालयीन हिंदी का प्रयोग होता है जिसका प्रयोग केन्द्र सरकार के सभी कार्यालय करते हैं। अत: इस स्तर पर केन्द्र सरकार के राजभाषा नियमों आदि का पालन करते हुए रेलवे के विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रशासनिक स्वरूप का प्रयोग किया जाता है। इसीलिए रेलवे में भी कार्यवृत्त, कार्यान्वयन, आशुलिपि, लिपिक, नेमी कार्य, पृष्ठांकन, आवेदन पत्राचार, मूल पत्राचार, अनुपालन, मंडल, प्रविष्टि, प्रमाण पत्र, अधिसूचित, कार्यसाधक ज्ञान, प्रमारी, दौरा कार्यक्रम जैसे शब्दों का प्रयोग भी एक विशेष कार्यक्षेत्र के अंतर्गत किया जाता है।

प्रशासनिक स्तर पर कार्यालयीन हिंदी का एक विशिष्ट स्वरूप केन्द्र सरकार के कार्यालयों में व्यवहार में लाया जाता है। इस स्वरूप के कारण ही कार्यालयीन हिंदी को एक विशेष प्रकार की प्रयुक्ति माना जाता है। इसकी विशिष्टताएँ निम्नलिखित है :

(1) सामासिक वाक्य

जहाँ हिंदी-उर्दू-हिंदुस्तानी के समन्वित प्रयोग द्वारा वाक्य रचना को दुरूह होने से बचाया जाता है, जैसे-

(i) इन *कागज पत्रों* को पेश करें।

(ii) रेल मंत्रालय से सहमति मांगने के लिए पत्र का *मसौदा पेश* है।

(iii) हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए *हिदायतें* जारी की जा रही हैं।

(iv) जो *कर्मचारी* नियमों का पालन नहीं करेंगे, उनके *खिलाफ* कड़ी कार्यवाही की जाएगी।

(2) अंग्रेजी शब्दों का लिप्यंतरित प्रयोग

जहां हिंदी वाक्यों के बीच अंग्रेजी की प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली को देवनागरी लिपि में लिप्यंतरित करके प्रयोग किया जाता है, जैसे-

(i) निदेशक के सामने *केस* पेश किया जाएगा।

(ii) आपके *एक्सप्लेनेशन* पर विचार किया जा रहा है।

(iii) हेडक्वार्टर छोड़ने की *परमिशन* दी जा सकती है।

(iv) *डिसीज़न* हो जाने पर आपको *इन्फार्म* किया जाएगा।

(3) आदेशात्मक/अनुरोधात्मक वाक्य

(i) कृपया चर्चा करें।

(ii) आवश्यक कार्यवाई करें।

(iii) अर्जित छुट्टी प्रदान करने की कृपा करें।

(iv) संगत कागजपत्र प्रस्तुत करें।

(v) सभी कर्मचारियों को सूचित करें।

(vi) बचे हुए काम का शीघ्र निपटान करें।

(vii) प्रस्ताव को मंजूरी के लिए भेजें।

(4) अपरोक्ष पैरि. वाक्य रचना

(i) संबंधित विवरण प्रस्तुत किया जाए।

(ii) विवरण प्रस्तुत किए जाएँ।

(iii) इस सूचना को सभी अनुभागों में घुमाया जाए।

(iv) इन कागजपत्रों कों संबंधित अधिकारियों को दिखाया जाए।

(v) वेतन के भुगतान की व्यवस्था की जाए।

(vi) श्री मोहन को अधीक्षक के पद पर नियुक्ति किया जाता है।

(vii) अग्रिम राशि स्वीकृत की जाती है।

(viii) अनुमति प्रदान की जाती है।

(5) सूचनात्मक वाक्य

(i) श्रीमती नय्यर को अस्थायी तौर पर पदोन्नत किया जा रहा है।

(ii) इस संबंध में आवश्यक आदेश प्राप्त किए जा रहे हैं।

(iii) सभी प्रश्नों के उत्तर आज ही भेज दिए जाएंगे।

(iv) इन कागजपत्रों को सभी अधिकारियों में घुमाया जाएगा।

(v) मंत्रालय को इस विषय में पत्र भेज दिया गया है।

(vi) यह मिसिल अगले आदेश तक रोक ली गई है।

(vii) इस संबंध में पहले ही निर्णय हो चुका है।

प्रशासन के साथ-साथ रेलवे में प्रबंध का व्यापक क्षेत्र भी समाहित है। इस क्षेत्र की व्यापकता के कारण रेलवे की हिंदी में अनेक प्रकार के शब्द आ गए हैं। सवारी गाड़ी, माल गाड़ी, यातायात नियंत्रण, खान-पान व्यवस्था, आरक्षण-व्यवस्था आदि के कारण रेलवे के माध्यम से राजभाषा हिंदी का स्वरूप विस्तार भी हुआ है और उसका प्रयोग भी अखिल भारतीय स्तर पर किया जा रहा है। आप भारत में रेल से यात्रा करें तो आप देखेंगे कि इस रेल-प्रबंध में स्थान-स्थान पर हिंदी का प्रयोग दिखाई देता है - स्लीपर, क्रासिंग, मीटर गेज, ब्राड गेज, सिगनल, आदि अंग्रेजी शब्दावली की लोकप्रियता की चर्चा पहले भी की गई है। इसी प्रकार रेल-तंत्र के पूरे प्रबंध में हिंदी का प्रयोग उसे अखिल भारतीय स्तर पर प्रयुक्त होने की क्षमता प्रदान करती है। सामान्यतः यहाँ रेलवे प्लेटफार्म पर और सवारी डिब्बे के भीतर हिंदी का जो प्रयोग पूरे भारत में दिखाई दे रहा है उस पर दृष्टि डालें :

प्लेटफॉर्म पर

- सामिष खान-पान गृह, निरामिष खान-पान गृह, शाकाहारी, शाकाहारी भोजनालय, जलपान गृह, चाय।
- प्रतीक्षालय-महिलाएँ, प्रतीक्षालय-पुरुष, सहायता, सूचना केन्द्र, पुलिस सहायता, पूछताछ।
- टिकट घर, पार्सल घर, पार्सल कमरा,, अमानती सामान, ठंडा पानी, फल की दुकान, पीने का पानी, गाड़ियों का समय।
- मुख्य टिकट निरीक्षक, उप मंडल अधीक्षक।
- आफिसरों का विश्राम गृह, चल टिकट निरीक्षकों का आराम गृह।

प्रतीक्षालय: ऊँचे दर्जे के यात्रियों तथा शायिका यात्रियों के लिए, पहली श्रेणी, वातानुकूल यान और दूसरी श्रेणी के शायिका टिकटधारी मात्र, पैसा दे कर शौचालय का इस्तेमाल कीजिए, मंगलूर की ओर, इंजन से, यहाँ पहिया कुर्सी उपलब्ध है।

यहाँ आप प्रयोग भेद पर ध्यान दें। निरामिष-शाकाहारी, खान-पान गृह-भोजनालय, गृह-घर-कमरा, विश्राम गृह-आराम गृह। साथ ही टिकट-घर, पार्सल घर, टिकटधारी जैसे संकर प्रयोगों की ओर भी ध्यान दें। इन प्रयोगों का संबंध आम जनता से है अत: इनके सामान्य प्रयोगों को भी स्थान भी दिया जाता है।

सवारी डिब्बे में

- आगे रोकिए
- रेल डिब्बे के अंदर : माचिस की जलती तीलियाँ और सिगरेट/बीड़ी के जलते टुकड़े मत फेंकिए।
- पटाखे, गैस सिलिंडर आदि जैसे विस्फोटक और खतरनाक सामान मत ले जाइए।
- मिट्टी का तेल, पेट्रोल जैसे ज्वलनशील पदार्थ मत ले जाए।
- स्टोव अथवा सिगड़ी मत जलाइए।
- दोषी व्यक्ति को दो वर्ष तक की कैद और तीन हजार रुपये तक का जुर्माना हो सकता है।

यह सूचना अंग्रेजी के साथ दी गई है अत: इसके अंग्रेजी रूप को भी देख लिया जाय। इससे पता चलेगा कि हिंदी में अंग्रेजी का अंधानुकरण न करते हुए हिंदी की प्रकृति को समझते हुए सरल ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

- **Prevent fire**
- Do not throw lighted match stick and cigarette/Bidi ends.
- Do not carry explosives and dangerous goods like fire-crackers, gas cylinders etc.
- Do not carry inflamable articles like Kerosin, petrol etc.
- Do not light up stove or sigri inside the train compartment.
- Offenders are punishable with imprisonment upto two years and fine upto rupees three thousand.

इसी प्रकार इस प्रयोग को भी देखें :

Help Railways. Reach you Safely.

रेलवे की सहायता करें।

सुरक्षित यात्रा करें।

32.2.5 कंप्यूटरीकरण

भारत आज तकनीकी विकास के मार्ग पर अग्रसर है। तकनीकी विकास के साथ ही सूचनाओं के आदान-प्रदान और संकलन की आवश्यकता भी बढ़ी है। इस प्रकार के कार्य में आज कंप्यूटर बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हो रहे हैं। विभिन्न सूचनाओं को एकत्रित कर के उन्हें सुरक्षित रखने का कार्य सूचना

प्रौद्योगिकी करती है। पूंजी, ऋण, धन आदि से संबंधित असंख्य सूचनाओं के लिए बैंक भी आज कंप्यूटरों का प्रयोग कर रहे हैं। जनशक्ति, मशीन, कच्चा माल, पूंजी स्त्रोत आदि से संबंधित सूचनाएँ बड़े उद्योगों के लिए भी अनिवार्य हो गई हैं। ऐसे में कंप्यूटर उनकी मदद करते हैं। आपने देखा होगा कि भारतीय रेल ने प्रमुख नगरों में कंप्यूटरीकृत आरक्षण प्रणाली प्रारंभ की है। इससे आरक्षण कार्य में तेजी आई है, यात्रियों को सुविधा मिली है और आगे की यात्राओं और वापसी यात्राओं के लिए आसानी से आरक्षण मिल जाता है क्योंकि स्थान है या नहीं इसकी जानकारी कंप्यूटर दे देता है। पहले इसी कार्य के लिए तार या फोन का सहारा लिया जाता था जिसमें समय भी अधिक लगता था और अनिश्चितता भी रहती थी। प्रशासनिक प्रणाली में भी सूचनाओं का सही रूप में और शीघ्रता से संचार आवश्यक है। रेलवे के लिए तो यह और भी आवश्यक है क्योंकि उसका जाल भारत के कोने-कोने में फैला हुआ है। यातायात के परिचालन और नियंत्रण के लिए, अभिलेखों के रख-रखाव के लिए, तकनीकी प्रारूपों की संरचना के लिए तथा भंडारण आदि की दिशा में भारतीय रेल के लिए कंप्यूटरों का उपयोग अब आवश्यक ही नहीं अति उपयोगी भी सिद्ध हो चुका है। अधिक से अधिक क्षेत्र में रेलों की कार्यकुशलता बढ़ाने में, प्रशासनिक ढांचे को चुस्त-दुरुस्त बनाने में, महत्वपूर्ण आंकड़ों को प्रस्तुत करने में तथा सही निर्णय लेने में कंप्यूटरों ने अपना योगदान दिया है। सी.आर.आई.एस. (सेंट्रलाइज्ड रेलवे इन्फारमेशन सिस्टम) इस दिशा में कार्य कर रहा है। यह कार्य रेलवे के कार्य में भी गति लाएगा तथा इसके द्वारा हिंदी के प्रयोग को भी निर्धारित दिशा में प्रयोग करने के अवसर प्राप्त होंगे।

32.3 सारांश

संक्षेप में कहा जाय तो इस इकाई से यह स्पष्ट है कि रेलवे के माध्यम से हिंदी की कई प्रयुक्तियों का विकास एवं प्रयोग संभव हो सका है। रेलवे की सेवाएँ कई प्रकार से महत्वपूर्ण हैं। अखिल भारतीय स्तर पर यह मंत्रालय सबसे विस्तृत है। साथ ही इसका कार्य-क्षेत्र भी बहुत व्यापक है। हिंदी के प्रयोजनमूलक स्वरूप के प्रयोग की दृष्टि से रेलवे का योगदान बहुमुखी और बहुआयामी है। उसकी इसी विशेषता को यह इकाई सामने रखती है।

32.4 शब्दावली

वैसे तो इकाई के साथ उदाहरण के रूप में कुछ शब्दावलियाँ स्वत: आ गई हैं पर रेलवे की अन्य प्रचलित एवं महत्वपूर्ण शब्दावली की सूची यहाँ दी जा रही है। इस सूची से आपको पता चलेगा कि विभिन्न क्षेत्रों में रेलवे कितने प्रकारों एवं स्तरों पर हिंदी शब्दावली का प्रयोग कर रही है। सुविधा के लिए हिंदी शब्दों के साथ उनके अंग्रेजी पर्याय भी दिए गए हैं और हिंदी शब्दों का स्त्रोगत परिचय भी कोष्ठक में दिया गया है:

भाड़ा	- hire (देशज)
प्रोत्साहन	- incentive (तत्सम)
पूछताछ	- inquiry (देशज)
सामान घर	- luggage room (संकर : उर्दू + देशज)
नीलामी	- auction (उर्दू)
गाड़ी भाड़ा, ढुलाई	- cartage (देशज)
चार्ट	- chart (अंग्रेजी)
पार्सल	- parcel (अंग्रेजी)
पैक करना	- packing (संकर : अंग्रेजी + हिंदी)
रेल डाक सेवा	- Rail Mail Service (संकर : अंग्रेजी + देशज + संस्कृत)
जोखिम	- risk (देशज)
पारी	- shift (देशज)
अधिभार	- surcharge (तत्सम)

मज़दूरी	- wage (उर्दू)
चेतावनी	- warning (तत्सम)
टूट-फूट	- wear & tear (देशज)
महाप्रबंधक	- General Manager (तत्सम)
निदेशक	- Director (तत्सम)
लदान सहायक	- loading assistant (संकर : देशज + संस्कृत)
राजभाषा	- official language (तत्सम)
तोलना	- weight (देशज)
प्लेटफार्म निरीक्षक	- Platform Inspector (संकर : अंग्रेजी + संस्कृत)
रेल बोर्ड	- Railway Board (अंग्रेजी)
माल	- Goods (देशज)

बोध प्रश्न

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो पंक्तियों में लिखिए :

(i) सवारी यातायात के रूप में रेलवे में कौन-से हिंदी-अंग्रेजी शब्द प्रचलित हैं? पांच-पांच शब्द लिखिए।

.....

.....

(ii) रेल मंत्रालय के कार्य पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

(iii) भारतीय रेलवे में राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देना क्यों आवश्यक है?

.....

.....

(iv) "संकरता" का तात्पर्य उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए ।

.....

.....

(v) रेलवे में प्रचलित चार संकर शब्द लिखिए तथा उनके स्त्रोत का भी परिचय दीजिए।

.....

.....

(vi) प्लेटफार्म पर दिखाई देने वाले पाँच शब्दों या अभिव्यक्तियों को लिखें।

.....

.....

(2) निम्नलिखित में से सही कथनों पर (√) चिह्न तथा गलत कथनों पर (×) चिह्न लगाएँ :

(i) रेलवे के कार्य में केवल प्रशासनिक हिंदी का प्रयोग होता है। ( )

(ii) रेलवे भारत का सबसे बड़ा सार्वजनिक उद्यम है। ( )

(iii) रेलवे की हिंदी में कई प्रयुक्तियों का प्रयोग होता है। ( )

(iv) सवारी यात्रा में रेलवे हिंदी का प्रयोग नहीं करती। ( )

(v) अखिल भारतीय स्तर पर प्रयुक्त होने वाली हिंदी में केवल संस्कृत के शब्दों को स्थान देना चाहिए। ( )

(vi) तकनीकी क्षेत्र की हिंदी ने बड़ी मात्रा में अंग्रेजी शब्दों को आत्मसात किया है। ( )

(vii) रेलवे में कार्यालयीन हिंदी का प्रयोग केन्द्र सरकार के अन्य कार्यालयों की भाँति ही होता है। ( )

(viii) जलपान-गृह, पीने का पानी, गाड़ियों का समय जैसे प्रयोग प्रशासनिक प्रयोग हैं। ( )

(3) इन शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :

बर्थ, सीट, बोगी, स्लीपर, गार्ड

.....

.....

(4) शब्दों को पहचान कर इनके सामने इनके स्त्रोत लिखिए, जैसे तत्सम, अंग्रेजी से आगत, संकर, देशज, उर्दू

(i) कोच — .....
(ii) आरक्षण — .....
(iii) बोगी — .....
(iv) हार्स पावर — .....
(v) ईंधन — .....
(vi) कारखाना — .....
(vii) रेल पथ — .....
(viii) भार — .....
(ix) जंजीर — .....
(x) खपत — .....
(xi) उपकरण — .....
(xii) टिकाऊ — .....
(xiii) छोटी लाइन — .....

(5) इन शब्दों के अंग्रेजी पर्याय लिखिए :

(i) आरक्षण — .....
(ii) पूछताछ — .....
(iii) मालगाड़ी .....
(iv) जोखिम .....
(v) पश्चिम रेलवे — .....
(vi) महाप्रबंधक — .....
(vii) निदेशक — .....
(viii) राजभाषा — .....

(6) निम्नलिखित वाक्यों को पहचान कर इनके सामने-सामासिक, अंग्रेजी शब्दों का लिप्यंतरित प्रयोग, आदेशात्मक, अपरोक्ष, सूचनात्मक लिखिए :

(1) कृपया चर्चा करें। .....
(2) इन कागजपत्रों को पेश करें। .....
(3) विवरण प्रस्तुत किए जाएँ। .....
(4) निदेशक के सामने केस पेश किया जाएगा। .....
(5) इस संबंध में पहले ही निर्णय हो चुका है। .....
(6) अनमति प्रदान की जाती है। .....

(7) हिंदी में इनका अनुवाद कीजिए :

(1) Do not throw lighted match stick and cigarette/Bidi ends.

.....

.....

(2) Help Railways, Reach you sefely.

.....

.....

32.5 उपयोगी पुस्तकें

व्यावहारिक हिंदी, कृष्ण विकल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

व्यावसायिक हिंदी, दिलीप सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

प्रयोजनमूलक हिंदी, विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

व्यावसायिक हिंदी, राम प्रकाश/दिनेश गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

प्रयोजनमूलक हिंदी, राम प्रकाश/दिनेश गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

भाषा संरचना एवं प्रयोग, राम प्रकाश/दिनेश गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

बैंकिंग शब्दावली, ओम निश्चल, गुमान सिंह, किताब घर, दिल्ली

बैंकिंग हिंदी पत्राचार, स्वरूप और संप्रेषण, ओम निश्चल, गुमान सिंह, किताब घर, दिल्ली

बैंकों में हिन्दी प्रशिक्षण प्रबंध एवं पाठ्यक्रम, ओम निश्चल, गुमान सिंह, किताब घर दिल्ली

बैंकिंग अनुवाद प्रविधि और प्रक्रिया, ओम निश्चल, गुमान सिंह, किताब घर, दिल्ली

(ये पुस्तकें पूरे खंड के लिए उपयोगी हैं)

32.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

(1) इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए इकाई गौर से पढ़िए।

(2) (i) × (ii) √ (iii) √ (iv) × (v) × (vi) √ (vii) √ (viii) ×

(3) बर्थें, बर्थों, सीटें, सीटों, स्लीपरों, गार्डों

(4) (i) अंग्रेजी, (ii) संस्कृत (iii) अंग्रेजी (iv) अंग्रेजी (v) संस्कृत (vi) उर्दू (vii) संकर (viii) देशज (ix) उर्दू (x) देशज (xi) संस्कृत (xii) देशज (xiii) संकर

(5) (i) Reservation, (ii) Enquiry, (iii) Goods Train, (iv) Risk, (v) Western Railway, (vi) General Manager, (vii) Director (viii) Official language

(6) (1) अनुरोधात्मक (2) संकर वाक्य (3) आदेशात्मक (4) संकर वाक्य (5) सूचनात्मक (6) अपरोक्ष

(7) (1) रेल डिब्बे के अंदर : माचिस की जलती तीलियाँ और सिगरेट/बीड़ी के जलते टुकड़े मत फेंकिए।

(2) रेलवे की सहायता करें, सुरक्षित यात्रा करें।